राजस्थानी
…जादी के दीवाने

भूमिका लेखक:—
श्री रामनारायणजी चौं

लेखक व प्रकाशक:—
हरिप्रसाद अग्रवा

प्रबन्धक:—
प्रताप प्रकाशन,
श्यामजीकृष्ण वर्मा पुस्तका…,
महादेवजी की छत्री, ब्यावर।

प्रथम संस्करण १०५१

६४ वां बजाज जन्म दिवस
(सेठ जमनालाल बजाज)
सं० २०१० कार्तिक सुद १२
१८ नवम्बर १९५३

मूल्य पांच रुपये

— श्रद्धेय श्री हरिभाऊजी उपाध्याय की नजरों में —

'श्री रामनारायणजी चौधरी' (१८ साल पूर्व)

"........ आपकी कार्य दक्षता की धाक, सब कोई मान हैं........ राजस्थान के देशी राज्यों की सेवा के लिए जो राजस्था सेवक मण्डल हाल ही में बना है, चौधरीजी उसके प्राण हैं। जैसा इनमें त्याग है, वैसा ही सेवा की उमंग और लगन है। हृद से एक आतुर सेवक और बुद्धि से राजकाजी (Statesman) चौधरीजी राजस्थान की एक आशा है। ..... 'चौधरीजी रा स्थान के भावी पुरुष हैं।' मेरी आंखें तो उस शुभ दिन की राह दे रही हैं। आज भी कुछ गुणों में चौधरीजी अपनी सानी नहीं रख हैं।........ साधक की जो तीव्रता मैंने उनमें यहां पाई वह औ में नहीं।........ श्री सेठीजी आपके शिक्षकों में थे। बाद में पथिकज का और आपका साथ 'राजस्थान सेवा संघ' में हुआ। एक सम सेवा संघ के प्रताप की बड़ी धाक सरकार पर बैठी थी।........ यदि पथिकजी २-३ सदी पहले हुए होते तो कहीं के ठाकुर बन ग होते और चौधरीजी किसी रियासत में होते तो दीवान । गये होते।"

नोटः—मुख पृष्ठ पर दोहा कविवर श्री हरिकृष्णजी प्रेमी ने विशे रूप से भेजा है प्रकाशक उनका आभारी है। छोटेलालजी पथिकजी, चौधरीजी पर टिप्पणियां जोड़ी गई हैं।

श्री रामस्वरूप मिश्र के प्रबन्ध से
मनोहर प्रिन्टिङ्ग प्रेस, पाली बाजार, ब्यावर में मुद्रित।

समर्पण

श्रद्धेय पिताजी

स्वर्गीय श्री बाबू चौथमलजी अग्रवाल

की

पुण्य स्मृति

में

जिनकी

सबल प्रेरणा तथा सक्रिय प्रोत्साहन के फलस्वरूप

राजस्थान के राष्ट्रीय वीरों

की

गौरव - गाथा

पाठकों के समक्ष प्रस्तुत की गई।

—हरिप्रसाद अग्रवाल

तिलक युग के भामाशाह सेठ दामोदरदासजी राठी
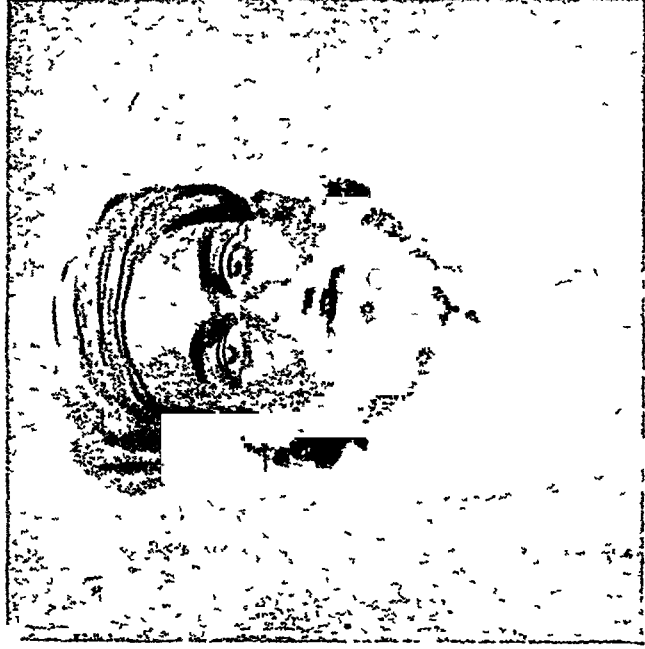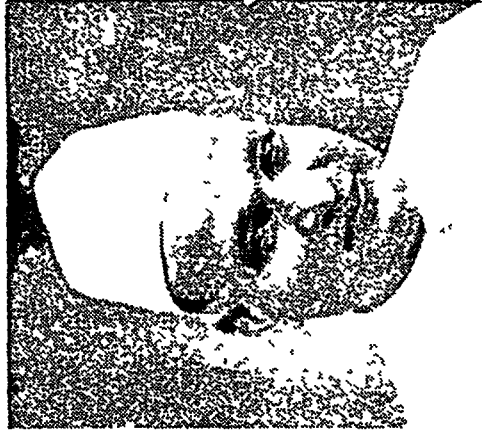
'नररत्न राठीजी महामना थे...राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस के मंच पर स्थान पाने वाले पहले मारवाड़ी सज्जन थे"

—श्री पं० झाबरमलजी शर्मा, खेतड़ी

प्रथम राजस्थानी राष्ट्रपति

(२०-५-३४ से २४-१०-३४)

देवदत्त सेठ जमनालालजी बजाज

बिजोलिया सत्याग्रह संग्राम केसेना-नायक
श्री विजयसिंहजी पथिक

"Pathik is a Soldier"

—महात्मा गांधी

देशभक्त सेठ श्रीमूलालजी जाजोदिया

गांधी जी की नजरों में श्री छोटेलाल जैन

(सेठीजी के शिष्य जयपुर के रहने वाले, व चौधरीजी के सहपाठी)

——❀——
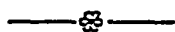
"........ छोटेलाल की मूक सेवा का वर्णन भाषा बद्ध नहीं हो सकता। ऐसा करना मेरी शक्ति से बाहर है।.........
उनकी बुद्धि तीव्र थी।...... वे भाषा-शास्त्री भी थे। राजपूताना निवासी होने से उनकी मातृभाषा हिन्दी थी। पर वह गुजराती, मराठी, बंगाली, तामिल, संस्कृत और अंग्रेजी भी जानते थे। नई भाषा या नया काम हाथ में लेने की उनकी जैसी शक्ति मैंने और किसी में नहीं देखी। आश्रम (साबरमती) के स्थापना-काल से ही छोटेलाल ने उससे अपना सम्बन्ध जोड़ लिया था।........
उनके शब्द कोष में 'थकान' के लिये स्थान नहीं था।..........
ग्राम-उद्योग-संघ स्थापित हुआ तो घानी का काम दाखिल करने वाले छोटेलाल, धान दलने वाले छोटेलाल।..... और मधु-मक्खियां पालने वाले भी छोटेलाल।.... छोटेलाल मधु-मक्खियों के पीछे जैसे दीवाने होगये थे। उनकी शोध में उन्हें हलके प्रकार के मियादी बुखार ने पकड़ लिया। यह उनके प्राणों का ग्राहक निकला। मालुम होता है, उन्हें छः सात दिन अपनी सेवा कराना भी असह्य लगा। अतः ३१ अगस्त, मंगलवार की रात को ग्यारह और दो बजे के बीच में सब को सोता हुआ छोड़ कर वह मगनवाड़ी के कुंए में कूद पड़े। आज पहली तारीख को शाम के चार बजे लाश हाथ में आई। मैं सेगांव में बैठा रात के आठ बजे यह लिख रहा हूं। छोटेलाल की देह का इस समय वर्धा में अग्नि-दाह हो रहा होगा।

इस आत्मघात के लिये छोटेलाल को दोष देने की मुझ में हिम्मत नहीं। छोटेलाल तो वीर पुरुष थे। उनका नाम १९१५ के

दिल्ली षडयन्त्र-केश में आया था, पर उसमें वह वरी हो गये थे। किसी आफिसर को मार कर खुद फांसी के तख्ते पर चढ़ने का स्वप्न वह उन दिनों देखते थे। ...... अपनी तीव्र हिंसक बुद्धि को उन्होंने बदल दिया और अहिंसा के पुजारी बन गये। .. उन्हें इस बीमारी मे अपनी सेवा लेना असह्य मालूम दिया और गहरी पैठी हुई हिंसा को खुद अपनी बलि देदी। .. छोटेलाल मुझे अपना देनदार बना कर ४५ वर्ष की उम्र में चल बसे। उनसे मैं अनेक आशायें रखता था।" (हरिजन सेवक, ११-९-३७)

श्री बनारसीदासजी चतुर्वेदी की नजरों में श्री पथिकजी (विजयसिंहजी)

" .... .. बड़े दुःख के साथ मैंने पत्रों में पढ़ा कि पथिकजी के शरीर में खून नहीं है उनकी बीमारी बढ़ रही है और उनका स्वास्थ्य गिरता जाता है। .. .. अधिकारी लोग .. .. असत्य विचार फैलाने का प्रयत्न कर रहें है। वे लिखते हैं कि पथिक मानिन्द एक डाकू के राजस्थान में गड़बड़ मचा रहा था। सिंह को पिंजड़े में बन्द करके उस पर थूकना इसी को कहते हैं। .. . ... यदि पथिकजी महाराणा प्रताप के समय में होते तो वे प्रताप की सेना के एक वीर सेनाध्यक्ष होते। आज प्रताप के वंशज उन्हे जिन्दा गाड़ने का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं।..... .. राजस्थान के तेजस्वी बालक, अपनी माताओं से पूछेंगे 'मां! पथिक कौन थे? और वे उत्तर देंगी, 'बेटा पथिक स्वाधीनता-संग्राम के एक सिपाही थे, कायर शासकों ने घोल घोल कर उनके प्राण ले लिये। न वे राजा रहे न वे शासक।' लोग तब यह कह सकेंगे कि महात्माजी के इस वाक्य का कितना, गम्भीर अर्थ है Pathik is a soldier "पथिक एक सिपाही हैं।" (दिसम्बर १९२३,) 'रेखाचित्र' से

स्वामी कुमारानन्दजी

श्री रामनारायणजी चौधरी
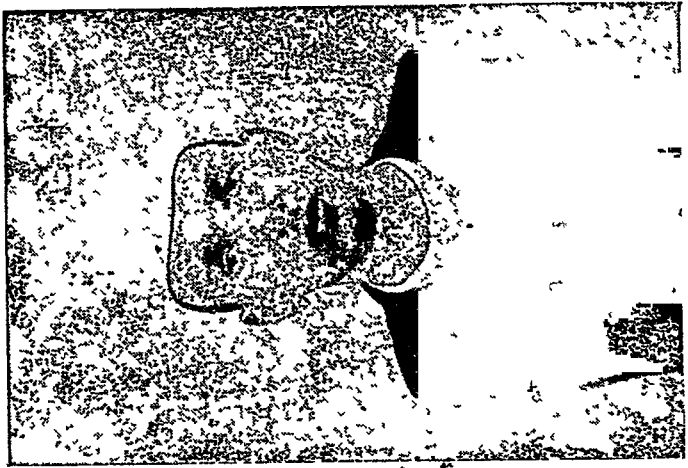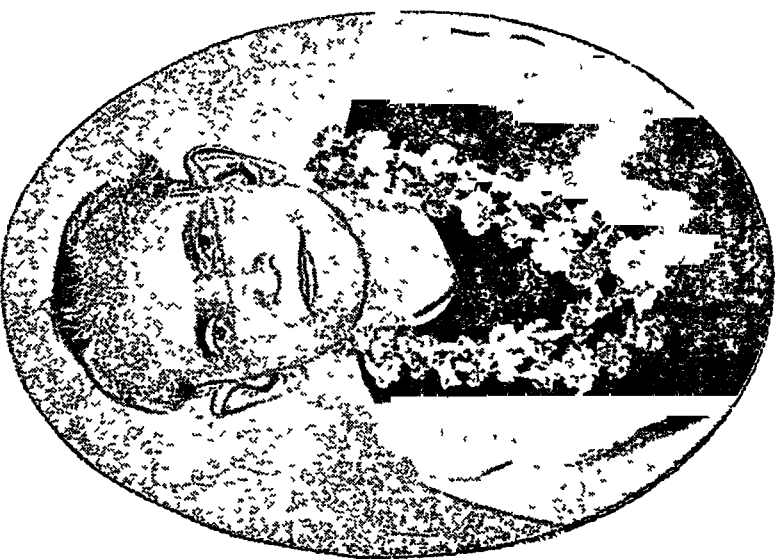
प्रताप प्रकाशन के संस्थापक

अर्जुनलालजी
सेठी
राष्ट्रीय ग्रंथमाला
के संरक्षक

सेठ श्री
राधाकृष्णजी
लाहिया
कामठी
(मध्यप्रदेश)
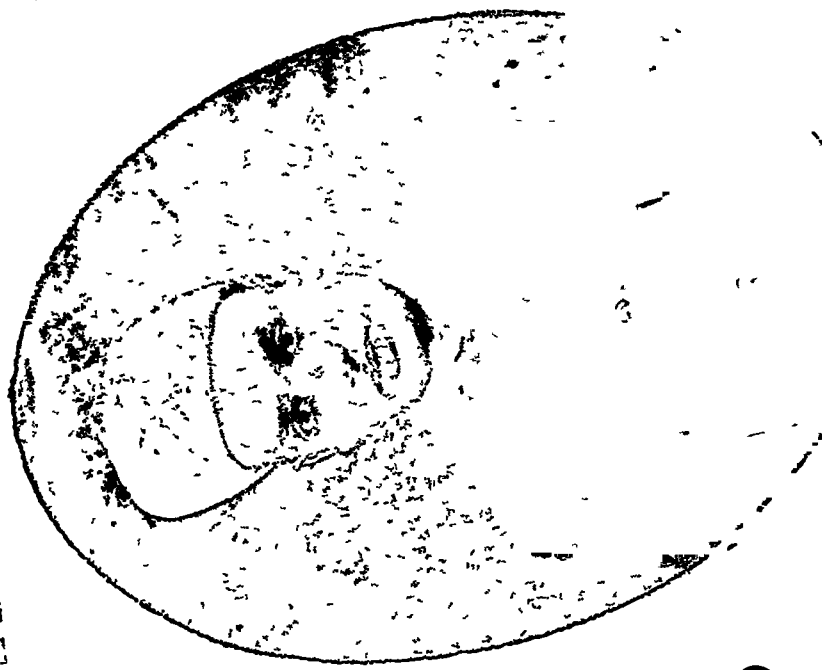
॥ ओ३म् ॥

स्वर्गीय श्री बाबू चोथमलजी अग्रवाल

श्री बाबू चोथमलजी अग्रवाल का जन्म ८ जनवरी १८८६ ई० को माता सुन्दरी देवी से हुआ। आपके पिता सेठ रामानन्दजी सलेमाबादी ब्यावर के प्रसिद्ध व्यौपारी थे। आप बचपन से ही बहुत होनहार थे। आपकी बुद्धि पढ़ने में बहुत तीव्र थी। बंग भंग व स्वेदशी आन्दोलन के क्रान्तिकारी युग में आपने 'तिलक लाइब्रेरी' की स्थापना की। आज से करीब पचास साल पूर्व राष्ट्रीय क्रान्तिकारी साहित्य का प्रचार करने वाली 'तिलक लाइब्ररी' ब्यावर की प्रथम राष्ट्रीय शाला थी। माता ऐनीबीसेन्ट के होमरूल आन्दोलन में भी आपने दिलचस्पी ली। मालवीयजी 'की अध्यक्षता में सन १९१८ ई० में होने वाली ३३ वीं राष्ट्रीय महासभा के दिल्ली अधिवेशन में आप प्रतिनिधि बन कर गये। सन् १९२१ में प० मोतीलाल नेहरु की अध्यक्षता में होने वाली राजनैतिक परिषद्, अजमेर में भी आपने भाग लिया। सन् २०-२१ में ब्यावर मे कांग्रेस की स्थापना में भी अपना योग दिया। सन् २०-२१ से मृत्यु पर्यन्त आप प्रायः स्वदेशी वस्त्र ही धारण करते रहे। १९४८ में जयपुर कांग्रेस की स्वागत समिति के भी आप सदस्य बने, परन्तु अस्वस्थता के कारण न जा सके। आप राष्ट्र के मूक सेवक थे, आपने कभी भी कोई पद ग्रहण नही किया, परन्तु गुप्त रूप से काफी कार्य किया। यथा शक्ति धन की भी सहायता राष्ट्रीय कार्यों में करते रहे। आपकी देश प्रेम की उत्कर्ष भावना से प्रेरित होकर ही आपका छोटा पुत्र

अगस्त ४२ में सत्याग्रह करके कृष्ण मन्दिर का पथिक बना। सन् १९३३ में 'हरि पुस्तकालय', सन् १९४२ में 'साहित्य निकेतन' व सन् १९५० मे 'श्यामजी कृष्ण वर्मा पुस्तकालय' व 'अर्जुनलाल सेठी वाचनालय' की स्थापना व संचालन में आपका प्रमुख हाथ रहा। 'अर्जुनलाल सेठी राष्ट्रीय ग्रन्थमाला' 'मगल पाण्डे चित्रशाला' 'प्रताप-प्रकाशन' के आप ही अध्यक्ष व प्रणेता रहे। १९४८ मे 'सुभाष-सदन' की स्थापना मुख्यतया आपकी राष्ट्रीय भावनाओ की प्रेरणा से ही हुई। नगर पालिका ब्यावर को, सेठ घीसूलालजी जाजोदिया, सेठ दामोदरदासजी राठी व सरदार पटेल के विशाल हाथ के बने चित्र, 'सुभाष सदन' द्वारा ही भेंट किये गये। सरदार पटेल के चित्र का अनावरण ता० १०-१-५२ को श्रीमती विजय लक्ष्मी पण्डित के कर कमलों द्वारा हुआ। 'सुभाष सदन' द्वारा राष्ट्रीय व साहित्यिक आयोजन भी समय २ पर किये गये। सेठीजी की स्मृति में 'प्रणवीर' साप्ताहिक के आप ही प्रकाशक थे। २५ सितम्बर १९५२ को ('आसोज सुद ६) आपका देहावसान अचानक दिन के ३ बजे हार्ट फेल होने से हो गया। मृत्यु के समय आपकी आयु करीब ६४ साल की थी।

बचपन में दिवाली के दिन पटाके के जलने से आपका दाहिना हाथ कट गया। एक हाथ होने पर भी आपने अपने जीवन में काफी परिश्रम व व्यवसाय किया। खांड की दुकान, तेल की एजेन्सी, रुई, चांदी, सोने, मेंह, पानी, बादल का सट्टा किया। आप वायु शास्त्र के आचार्य, रुई, चांदी, सोने के व्यौपार के विशेषज्ञ, रेडियो के ब्यावर में प्रथम प्रसारक थे। सैंकड़ों रुपये के यंत्र व पुस्तकें आप देश-विदेशों से समय २ पर मंगवाते थे। वैज्ञानिक ढंग पर मनन करके आप व्यौपार करते थे। पूना में आज के करीब ३५ साल पूर्व, महीनों रह कर घी की परीक्षा का काम सीखने वाले आप अजमेर राज्य के प्रथम व्यक्ति थे। बम्बई, इन्दौर बीकानेर में आप व्यौपार के सिलसिले में

अगस्त ४२ के वीर सत्याग्रही

श्री सूर्यमल मौर्य, एम० एल० ए०
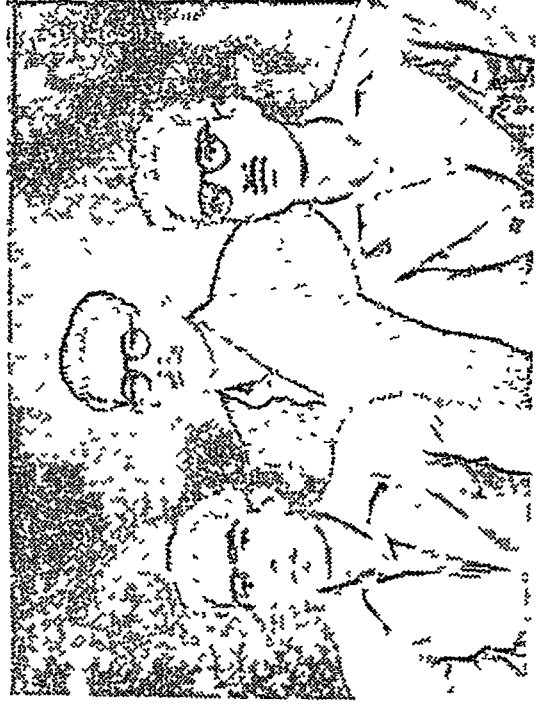
अगस्त क्रान्ति ४२ के राजस्थान के सर्व प्रथम सत्याग्रही श्री अंवरलाल आर्य (तीसरे नं० साथी कल्याणसिंह केसरीमल के साथ) जिनका खून से लिखा पत्र, डा० श्यामाप्रसादजी की अध्यक्षता मे, फरवरी ४४ मे सत्यार्थ-प्रकाश सम्मेलन में दिल्ली मे विशाल जनसमूह के बीच तालियो की गड़गड़ाहट मे पढ़ा गया।

समाज प्रकाशन के संस्थापक

स्व० बाबू चौथमलजी के सबसे बड़े पुत्र

...जी बी० टी० प्रधान अध्यापक,

स्व० बाबू चौथमलजी के द्वितीय पुत्र सेठ
राधाकिशन लोढ़िया (कामठी) के सुपुत्र
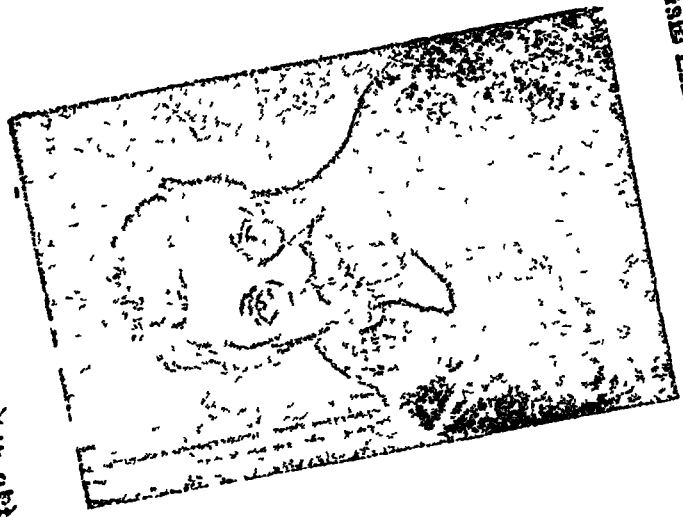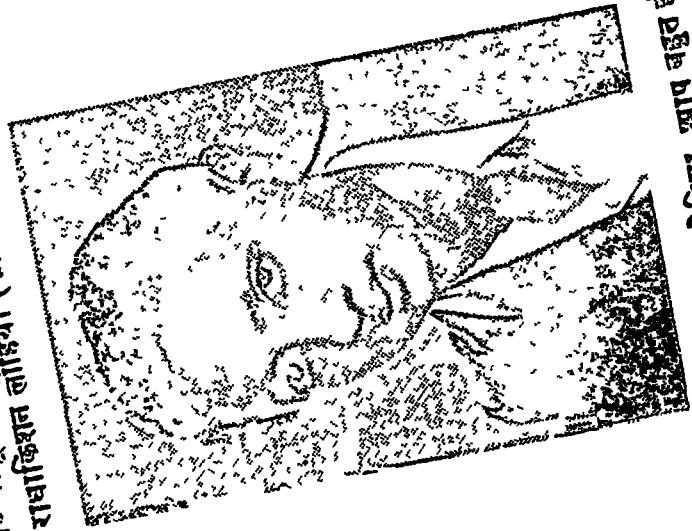
कुंवर रमाशंकर लोढ़िया, आप बहुत ही
होनहार व प्रतिभाशाली छात्र हैं।

वर्षों रहे। बम्बई व पूना में पुराने राष्ट्रीय नेताओं के भाषण सुनने तथा वहां की राष्ट्रीय प्रवृत्तियों को देखने का भी आपको सौभाग्य मिला। आपका धर्म, दर्शन, व्यौपार, डाक्टरी, आयुर्वेद, वायु शास्त्र, रेडियो सम्बन्धी भारी अध्ययन था। आप सात भाषाएं संस्कृत, हिन्दी मराठी, बंगला, गुजराती, उर्दू, व अंग्रेजी जानते थे आप एक अच्छे लेखक भी थे। व्यौपार व रेडियो सम्बन्धी आपके लेख समय २ पर टाइम्स आफ़ इंडिया, बोम्बे क्रोनिकल, हिन्दुस्तान टाइम्स, अर्जुन व रेडियो सम्बन्धी पत्रों में छपते थे। पत्र व्यवहार आपका देश देशान्तरों में होता था। पढ़ने व सिनेमा का आपको भारी शौक था, यहां तक कि कलकत्ते की इम्पीरियल लाइब्रेरी से पुस्तकें पढ़ने को मंगवाते थे। आपके तीन पुत्र [जगदीशप्रसाद, राधाकिशन (जोकि कामठी में गोद चले गये), व हरिप्रसाद] वर्तमान हैं। आपकी धर्म पत्नी भूरीबाई, जोकि आदर्श महिला रत्न थी, ३२ साल की अल्प आयु में ही सूरजयन्ती के दिन सन् १९२२ में ही स्वर्ग सिधार गईं।

बाबू चोथमलजी ने एक साधारण स्थिति में होते हुये भी, हजारों रुपये राष्ट्र हित खर्च किये। आपका आत्मिक बल व ईश्वर-विश्वास अटूट था। करीब पांच हजार रुपया तो जिन्दगी के आखिरी ४ वर्षों में 'सुभाष सदन' 'पुस्तकालय' 'वाचनालय' 'प्रताप प्रकाशन' व 'प्रणवीर' आदि में झोंक दिये।

आप जैसे घोर परिश्रमी तथा अध्यवसायी का जीवन आज के युवकों के लिए एक-आदर्श के रूप में रहेगा।

प्रताप प्रकाशन की पुस्तिकाओं पर कुछ सुप्रसिद्ध साहित्य सेवियों व पत्रों के मत

श्रद्धेय श्री हरिभाऊजी उपाध्याय लिखते हैं:—

"ब्यावर अजमेर राज, के 'प्रताप प्रकाशन' की ओर से कुछ चरित्रात्मक पुस्तिकाएं मिली हैं, जिनकी संख्या ११ है। 'अर्जुनलाल जी सेठी राष्ट्रीय ग्रंथमाला' में यह चरित्र पुष्प गूंथे गये हैं। इनमें स्व० सेठीजी, स्व० रावगोपालसिंह राष्ट्रवर, स्व० ठाकुर जोरावरसिंह, स्व० जमनालालजी बजाज, श्री घीसूलालजी जाजोदिया, स्वामी कुमारानन्दजी स्व० श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्व० गणेशशंकरजी विद्यार्थी स्व० सेठ दामोदरदास राठी, श्री मुकट बिहारीलाल भार्गव इनके संक्षिप्त चरित्र दिये गये हैं। राजस्थान और खास कर अजमेर राज में रह कर जिन्होने राजनैतिक जागृति के प्रारम्भिक युग में इस प्रदेश को जगाया और सेवा तथा बलिदान का मार्ग दिखाया उनकी जीवन गाथा से हिन्दीभाषी जनता का परिचय कराने के लिए 'प्रताप प्रकाशन' के संचालक श्री चोथमलजी अग्रवाल और लेखक श्री हरिप्रसाद अग्रवाल (ब्यावर) जो परिश्रम लगन के साथ कर रहे हैं वह सराहनीय है। साधनों की कमी से पुस्तिकाओं के प्रणयन, छपाई, सफाई आदि में काफी सुधार की गुंजाइश है। फिर भी इसमें खोज के साथ कुछ चरित्र-नायकों की ऐसी जानकारी पाठकों को मिलेगी जो अन्यत्र आसानी से नहीं मिलेगी।"

सम्पादक 'हिन्दी जगत', बम्बई, अक्टोबर-नवम्बर १६५१ ई० के अङ्क में लिखते हैं—

"पुस्तिकाओं के लेखक, जहां तक मै समझ पाया हूं, प्रधानतया साहित्यिक व्यक्ति नहीं, परन्तु ईमानदार, उत्साही एवं भावुक कार्यकर्ता हैं। .. .. इनके प्रत्येक शब्द में ईमानदारी, अपने वीरों के जीवन के सम्बन्ध की पूर्ण जानकारी टपकती है। इसीलिये उनकी

भाषा बहुत ही सरल एवं ओजपूर्ण है।............................ उनने हर विचार श्रेणी के साथ न्याय किया है, पक्षपात नहीं, अपने राजनैतिक विचारों को अपनी लेखनी पर हावी नहीं होने दिया। यह एक महान कार्य है। राजस्थानी एवं राजस्थान में दिलचस्पी रखने वाले लोग तो लेखक के आभारी होंगे ही, परन्तु उनने भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम के इतिहास की एक खोई हुई कड़ी को जोड़ दिया है, जो भावी इतिहासकार के लिये उपयोगी सिद्ध होगी।"

सम्पादक 'जागृति' अजमेर ता० २-६-४६ के अंक में लिखते हैं—

"लेखक एक समाज सेवी हैं और धुन के पक्के हैं। आपने अगस्त ४२ से पूर्व 'हरि वाचनालय' (पुस्तकालय) का संचालन कर ब्यावर नागरिकों की अच्छी सेवा की थी इन्हीं दिनों आप हरिजन सेवक संघ के मन्त्री रह कर भी हरिजनों की सराहनीय सेवा कर चुके हैं। जैसा कि आप अपनी धुन के पक्के हैं, को चरितार्थ करने के लिये अपने व्यौपार को त्याग कर अचानक अगस्त ४२ के सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लिया।...... ...ऐसे उत्साही एवं लग्नशील सज्जन से यह लिखी गई पुस्तक अत्यन्त रुचिकर एवं लाभ प्रद है। पुस्तक अवलोकन से प्रतीत होता है कि सेठी जी हमारे में अभी भी विद्यमान हैं।"

सम्पादक "नवभारत" दिल्ली ६-४-५० के अंक में लिखते हैं—

"यह अर्जुनलाल सेठी राष्ट्रीय ग्रन्थ माला का प्रथम पुष्प है। .... स्व० सेठीजी उन व्यक्तियों में से थे जिन्होने राष्ट्र-हित को सदा अपने सामने रखा था। उनकी स्मृति कायम रखने के लिए इस प्रकाशन का आयोजन अत्यन्त लाभ-प्रद सिद्ध होगा।"

श्री अयोध्याप्रसादजी गोयलीय 'ज्ञानोदय' दिस० १६५१ में लिखते हैं:—

श्री अर्जुनलाल सेठी राष्ट्रीय ग्रन्थमाला के पुष्प (११)—

श्री सेठीजी, दामोदरदासजी राठी, सेठी-बजाज-पथिक, मुकुट-बिहारीलाल भार्गव, गणेशशंकर विद्यार्थी, श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा, स्वामी कुमारानन्द, सेठ घीसूलाल जाजोदिया, दो उज्जवल तारे, ठाकुर जोरावरसिंह, राव गोपालसिंह (कुल पृष्ठ करीब २४० मूल्य दो रुपये एक आना)

"उक्त ग्रन्थ माला के संस्थापक, लेखक और प्रकाशक ब्यावर के श्री हरिप्रसाद अग्रवाल एक उत्साही और लगन के पक्के युवक हैं। आपने श्री सेठीजी की पवित्र स्मृति में उक्त ग्रन्थमाला चालू की है। हर एक प्रान्त में ऐसे मूक साधक और देश भक्त कार्यकर्ता हुए हैं जिनका वहां की जन जागृति में बहुत अधिक हाथ रहा है। उन्हीं की त्याग तपस्या और कर्मवीरता के सहारे वे प्रान्त उठे है, उनके हर आदेश को उस प्रान्त की जनता आदर्शवाक्य समझती रही है। लेकिन ऐसे हजारों शहीदों और कर्मवीर कार्य कर्ताओं के परिचय से इतर प्रान्त तो अपरिचित रहते ही है, उसी प्रान्त की अगली पीढ़ी भी उनके जीवन परिचय से अनभिज्ञ होती है। और इसका कारण यही है कि हमारे यहां परिचय सकलन की परिपाटी नहीं है। यही वजह है कि हमारे यहां सम्राटो, सूरमाओं, साधकों, साहित्यिकों, देशभक्तों आदि किसी का भी इतिहास सुरक्षित नहीं है। जो हमारे लिये विदेशियों ने यत्र-तत्र से एकत्र कर दिया है। उसी को सीने से चिपकाये हुए है। यही छोटे छोटे जीवन परिचय इतिहास की शृंखला को जोड़ने में बड़े काम के साबित होते हैं।

श्री अग्रवाल, सेठी जी की पवित्र स्मृति में ग्रंथमाला ही निकाल कर चुप नहीं हो गये, उन्होंने स्मारक स्थापित करने के लिए भी अनथक और सराहनीय प्रयत्न किये हैं।"

भूमिका
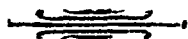
जैसे राजस्थान का राजरोग उसकी परम्परागत प्रतिशोध वृत्ति है वैसे ही उसके मौजूदा कार्यकर्ताओं की सबसे बड़ी कमजोरी उनमें कृतज्ञता का अभाव है। यद्यपि बदला लेने की भावना के शिकार खास तौर पर हमारे प्रान्त के शासक और उनके आस पास के वर्ग ही रहे हैं और कृतघ्नता का माद्दा ज्यादातर सेवक समुदाय तक ही सीमित रहा है फिर भी इन दोनों दुर्गुणों का असर दूसरे वर्गों और आम जनता मे भी पहुँचता ही है। इससे हमारे सार्वजनिक और व्यक्तिगत चरित्र की बड़ी हानि होती है और बड़े व्यक्तियो का विकास नहीं हो पाता इन दुष्प्रवृत्तियो को रोकना हर देशभक्त राजस्थानी का फर्ज है।

खुशी की बात है कि अहसान फरामोशी और वैर भाव की मरुस्थली में कुछ हरे भरे स्थान भी है—इक्के-दुक्के अहसान मन्द और कृतज्ञ प्राणी भी मौजूद हैं। प्रस्तुत पुस्तक के लेखक या सम्पादक श्री० हरिप्रसाद अग्रवाल उन्ही विरले राजस्थानी युवकों मे से हैं जिन्हें राजस्थान के प्रमुख सेवकों और खास कर परलोक वासी देशभक्तो के विचारो और कार्य प्रणालियो के प्रति पूर्वग्रह न होकर शुद्ध श्रद्धा की भावना है और जो राजस्थान की अज्ञात विभूतियों को प्रकाश में लाकर अपने प्यारे प्रान्त के माथे से कृतघ्नता के कलंक का टीका धो देना चाहते है। किसी के प्रति श्रद्धा होने का यह मतलब हरगिज नहीं है कि आप उसके तमाम खयालात से सहमत हों, उनके सभी तरीको को पसन्द करते हों या उसे हर बात में

देवता ही समझे। परन्तु यह अनिवार्य रूप से आवश्यक है कि जिन लोगों ने हमारे प्रान्त की, हमारे देश की सेवा की हो, उसके लिये कुर्बानियां दी हो और सचाई के साथ अपने हृदय और बुद्धि के प्रकाश में उसे आगे बढ़ाने का प्रयत्न किया हो उन लोगो की देश-प्रेम की भावना की, उनकी त्याग वृति की और उनकी सार्वजनिक सेवाओ की खुली और लेख-बद्ध सराहना की जाय और आने वाली पीढ़ियों को उनके उदाहरणों से प्रेरित होने का अवसर दिया जाय। इन विभूतियो के कारनामो के उल्लेख के बिना कोई इतिहास सम्पूर्ण और सत्य नहीं हो सकता।

श्री० हरिप्रसाद ने इस किताब के द्वारा इस दिशा में हार्दिक प्रयत्न किया है। इसलिए वह स्तुत्य है। यद्यपि पुस्तक के लिए जितनी खोज और जानकारी दी जानी चाहिये उतनी वे नहीं जुटा सके हैं, फिर भी काफी नई और ज्ञातव्य बातें संग्रह करने में लेखक सफल हुए हैं, कम से कम ऐसी पुस्तकों को आधार मान कर हरेक स्वर्गवासी राजस्थानी नेता का विशद जीवन-चरित्र तैयार किया जा सकता है।

मेरी राय मे राजस्थान प्रान्तीय कांग्रेस को अपना भवन या जीवनी आदि और कोई स्मारक पं० अर्जुनलालजी सेठी के नाम पर निर्माण करके और राजस्थान सरकार को उसमें मदद देकर इस सिलसिले को शुरू करना चाहिये क्योंकि राजस्थान मे राष्ट्रीयता के जन्मदाता सेठीजी ही थे और उन्हीं को भूल कर राजस्थानियो ने कृतज्ञता के अभाव का सबसे अधिक परिचय दिया है।

रेवाड़ी
२१-३-५०

—रामनारायण चौधरी

दो शब्द

करीब पौने चार वर्ष पूर्व २६ जनवरी सन् १६५० ई० को श्यामजी कृष्ण वर्मा की जीवन-झलक संक्षिप्त रूप में लिखी, न तो वृहद् रूप में पुस्तक लिखने का विचार ही था और न इस रूप में प्रकाशित करने का, किन्तु कलेवर बढ़ता गया। फरवरी सन् १६५० के अन्त तक अधिकांश मेटर छप कर तैयार भी हो गया। मार्च में श्रद्धेय श्री रामनारायणजी चौधरी ने इसकी भूमिका भी लिख देने की कृपा की, जिनका कि मैं हृदय से आभारी हूं। किन्तु चित्र प्राप्त करने में और ब्लॉक बनाने में बड़ी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। कुछ ब्लॉक तो भारी कीमत पर टाइम्स ऑफ इन्डिया प्रेस, बम्बई से बनवाये। इधर ब्लॉक बनते रहे, उधर मेटर के लिये खोज भी जारी रही। इस कार्य के लिये कई स्थानों की यात्रा करनी पड़ी और जो मसाला विशेष रूप से मिला, उसे परिशिष्ट रूप में दे दिया गया। इस तरह मार्च ५१ में पुस्तक करीब २ तैयार हो गई। कुछ प्रतियों की बाइडिंग भी कराली गई, दो चार प्रतियां नमूने के तौर पर इधर उधर भेजी भी गई।

किन्तु सितम्बर ५१ में पुस्तक में कुछ और सामग्री व चित्र बढ़ाने का विचार हो गया, इसके लिये नवम्बर-दिसम्बर ५१ में दिल्ली, बम्बई, नागपुर, ग्वालियर, भरतपुर (बूढ़े शेर गोकुलजी वर्मा के पास) मथुरा (सेठीजी के पुराने मित्र हकीम बृजलालजी के पास) वृन्दावन, (क्षेमानन्दजी राहत के भाई व राजा महेन्द्र प्रतापजी के पास) कोटा (बारहट परिवार से मिलने) जयपुर, जोधपुर, उदयपुर, बीकानेर आदि २ स्थानों की यात्रा भारी खर्चे पर की। पचासों चित्र व करीब दो सौ पेज की सामग्री और जोड़ने की योजना थी, किन्तु प्रकाशक बाबू चोथमलजी के सितम्बर ५२ में अचानक देहावसान के कारण सारी आशाओं पर पानी फिर गया। इसलिये मामूली

संशोधन के साथ पुस्तक मूल रूप में पाठकों के हाथ में जा रही है, सावधानी रखने पर भी बहुतसी गलतियां रह गई। स्वामी कुमारानन्दजी की जीवनी में बाबू शिवप्रसादजी गुप्त (काशी के सुप्रसिद्ध देश भक्त व दानवीर, जिन्हें श्यामजी कृष्ण वर्मा की मृत्यु के कर्म काण्ड भारतीय ढंग से विदेशों में स्वयं करने का सौभाग्य प्राप्त हुवा) के स्थान पर श्री श्री प्रकाशजी छप गया है। वैसे मैं न तो लेखक ही हूं और न साहित्यकार ही जो भी टूटे फूटे भाव थे, उनको राजस्थानी आजादी के दीवानों की स्मृति में लिख डाला।

मेरी भाषा को संशोधन करने में "प्रणवीर" सम्पादक श्री रामनिवासजी शर्मा 'रानीश', श्री वंशीधरजी जड़िया एम० ए० वकील और श्री पं० रामस्वरूपजी मिश्र ने अपना काफी अमूल्य समय दिया है। विशेष रूप से श्री रामनिवासजी ने तो करीब १५ दिन तक दिन रात परिश्रम किया। इसके लिये मैं इन सब का बड़ा आभारी हूँ।

इस पुस्तक के संकलन में जिन अनेक पुस्तकों, पत्रों से (जिनके नाम यथा स्थान दिये गये हैं) सहायता मिली है, उन सब के लेखकों व सम्पादकों का भी मैं आभारी हूं।

जनता के सन्मुख यह टूटी फूटी चीज है, इसमें जो अपूर्णतायें है वह सब मेरी है। यदि पाठकों ने नये सुझाव दिये तो दूसरे संस्करण में सुधार कर दिये जावेंगे। श्रद्धेय हरिभाऊ जी उपाध्याय ने कुछ सामग्री ['राजस्थान' में १८ वर्ष पूर्व लिखित कुछ रेखा-चित्र (पुस्तकेजी, महोदयजी, देशपाण्डेजी, चौधरीजी, शोभालालजी आदि २ के)] मुझे जनवरी ५२ में पुस्तक के उपयोग के लिये बड़ी मेहनत से पुराना रेकार्ड ढूंढ कर दी, उनको अलग पुस्तका-कार रूप में पाठकों को भेंट किया जावेगा।

मेवाड के भीष्म पितामह श्री मोतीलालजी तेजावत, भरतपुर के गोकुलजी वर्मा, जोधपुर के भंवरलालजी सर्राफ, किशनगढ जेल

में शहीद होने वाले पं० जगदीशजी शर्मा, मद्रास में आज के ३५ साल पूर्व हिन्दी का प्रचार करने वाले अनूठे रणबांकुरे, भक्त प्रवर क्रान्तिकारी देशभक्त व महान् साहित्यिक श्रद्धेय श्री क्षेमानन्दजी राहत आदि २ का परिचय आगामी संस्करण में देने का प्रयत्न किया जावेगा।

पिताजी की मृत्यु के बाद, बड़े भ्राता सहृदय दानवीर सेठ राधाकिशनजी लोहिया (आप सेठ रामनाथजी बीड़ी उद्योगपति कामठी वालों के यहां सन् २४ में दस वर्ष की आयु में ब्यावर से दत्तक चले गये) कामठी (मध्य प्रदेश) का मैं बहुत ही आभारी हूँ, जिनकी आर्थिक सहायता बिना यह पुस्तक पाठकों के समक्ष नहीं आ सकती थी।

पुस्तक की कीमत कुछ और कम रखने का विचार था, किन्तु करीब तीन हजार रुपया नये खिलाड़ी होने से खर्च हो जाने से लागत मात्र मूल्य ही रखा गया। पुस्तक को ९ सितम्बर को प्रकाशित करने का विचार था, किन्तु अब ४ अक्टूबर श्यामजी का ९७ वीं जन्म दिवस को प्रकाशित हो रही है।

२५ सितम्बर ५३ ई०

पूज्य बाबू चोथमलजी
का प्रथम पुण्य स्मृति दिवस } हरिप्रसाद अग्रवाल

चित्र-सूची

क्रम	नाम	पृष्ट संख्या

विषय सूची

— परिशिष्ट भाग —

कुल पृष्ट संख्या—१ से १३८ + १ से ३६ + १ से १४ + १ १२ + १ से १० + १ से १८ = २२८।

———

जिला कांग्रेस कमेटी ब्यावर के
भूतपूर्व प्रधान
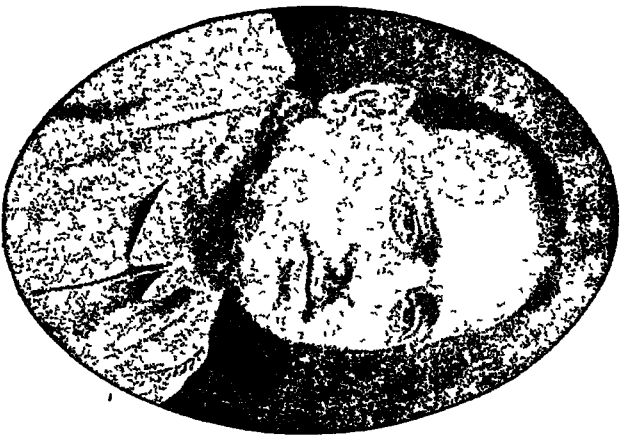
स्व० श्री नाथूलालजी घीया वकील

अगस्त क्रान्ति (१६४२) की भेंट

* स्व० चान्दकरण भवन ब्यावर *

— तिलक युग के राणा प्रताप —

※ राष्ट्रवर श्री राव गोपालसिंहजी खरवा ※

योरोप में भारतीय क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रथम सूत्रधार स्वर्गीय श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा

ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के प्रथम भारतीय स्नातक व प्रोफेसर, राजपूताना कॉटन प्रेस ब्यावर के संस्थापक
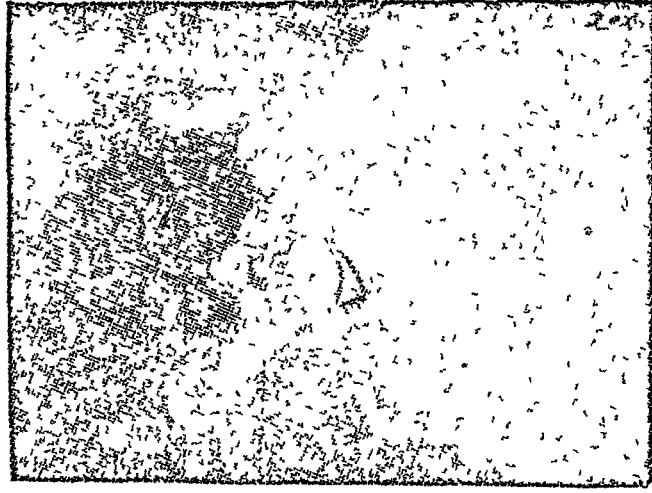
श्यामजी के पुराने मित्र

आज के ६५ साल पूर्व सन् १८८८ ई० में कांग्रेस के चतुर्थ अधिवेशन में सम्मिलित होने वाले भारत के सब से पुराने जीवित व्यक्ति दी. ब. हरविलासजी सारदा

श्यामजी के सुप्रसिद्ध शिष्य

वीर श्रेष्ठ सावरकर

अमर शहीद गणेशशंकर विद्यार्थी
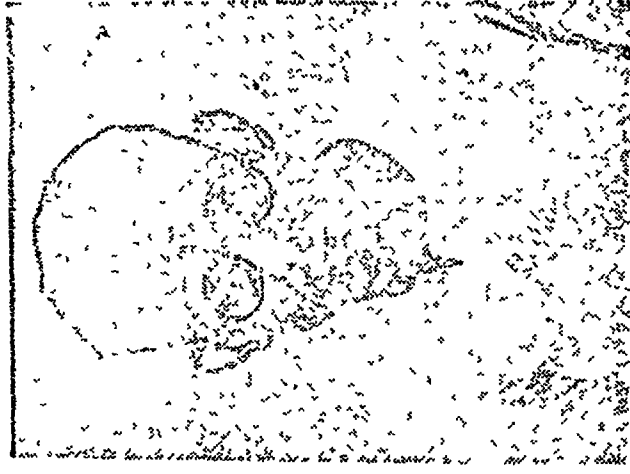
हम पक्षपातवश किसी को भी राजस्थानी जागृति का जनक कहें परन्तु सही अर्थों मे जन जागृति के सूत्रपात कर्त्ता तो गणेशजी ही थे'–विजयसिंह पथिक

अजमेर राज्य के प्रथम मु० मंत्री श्रीहरिभाऊजी उपाध्याय

अगस्त ४२ में राष्ट्र के लिए मृत्यु से लड़ने वाले

शिक्षा मंत्री श्री बृजमोहनलालजी शर्मा

—: नगरपालिका अजमेर के दो भूतपूर्व अध्यक्ष व पुराने जनसेवक :—

श्री जीतमलजी लूनिया
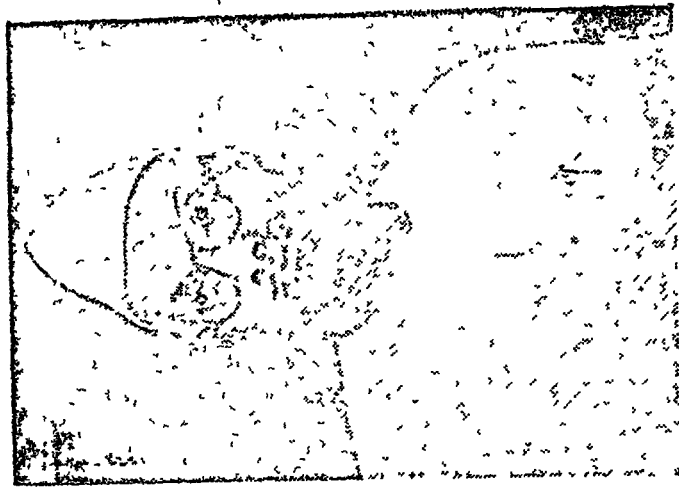
श्री विशम्भरनाथजी भार्गव

— १६ मार्च सन् ५० को सुभाष सदन ब्यावर का निरीक्षण करने वाले —

बरार केसरी श्री बृजलालजी बियाणी
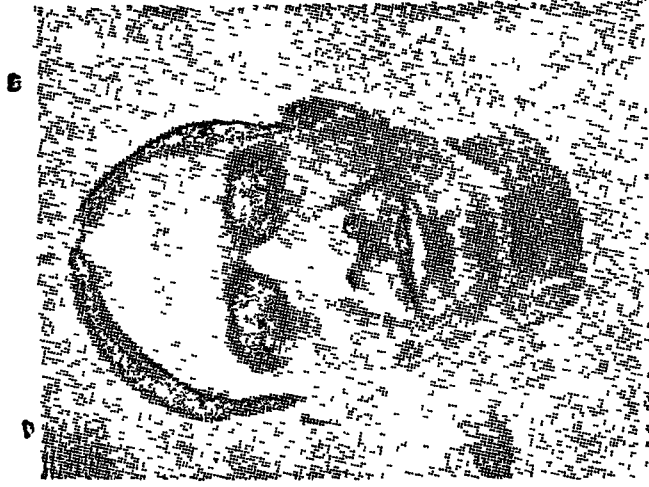
सुप्रसिद्ध प्रवासी राजस्थानी नेता, मंत्री मध्यप्रदेश

शेरे राजस्थान श्री जयनारायण व्यास

मुख्य मंत्री राजस्थान, भूतपूर्व मंत्री जिला कांग्रेस कमेटी ब्यावर (नवम्बर ३१)

राष्ट्रवर श्री राव गोपालसिंहजी खरवा

२२ साल बाद राव गोपालसिंहजी के काश्मीर के अपूर्ण कार्य को पूर्ण करने वाले
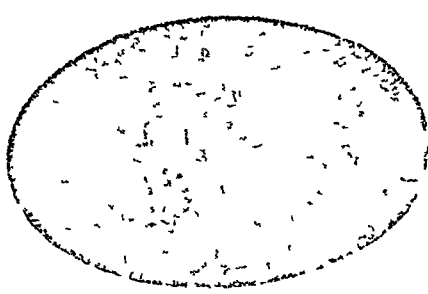
ब्यावर के मालवीय, लोकप्रिय सेवक

श्री जगन्नाथजी वकील एम. एल. ए.

अध्यक्ष नगरपालिका, ब्यावर

कर्मठ नेता श्रीमहेशदत्तजी वकील

❋ जय-हिन्द ❋

[१]

स्वर्गीय श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा

"वे तो पुराने जमाने की एक यादगार थे। लेकिन फिर भी उनकी आंखों में पुराना तेज था और यद्यपि उनमें और मुझ में एक ी कोई चीज नहीं फिर भी उनके प्रति मैं अपनी हमदर्दी और इज्जत ो नहीं रोक सकता था।"

पं० जवाहरलाल नेहरू —

(मेरी कहानी, पेज १८३-८४-८५, प्रथम हिन्दी संस्करण)

अभी तक अनेक लेखक गण यही लिखते आये हैं कि काठिया- ाड़ ने भारत को दो महान विभूतियें, दयानन्द तथा महात्मा गांधी, ान की किन्तु मेरा अनुमान है कि काठियावाड़ ने देश को तीन ा पुरुष भेंट किये तथा यह तीसरा व्यक्ति अन्य कोई नहीं अपितु, ामजी कृष्ण वर्मा ही है।

सन् १८५७ की महान क्रान्ति के युग में भारतवर्ष में जिन ान आत्माओं ने जन्म ग्रहण किया उनमें दो प्रमुख है एक तो कमान्य तिलक तथा दूसरे श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा ।

श्यामजी का जन्म सन् १८५७ में काठियावाड़ में हुआ । बाल्यकाल से ही आप बहुत होनहार थे। सन् १८७५ में जब श्यामजी १८ वर्ष के थे (इसी वर्ष महर्षि दयानन्द ने बम्बई में आर्य-समाज की स्थापना की) आप स्वामी दयानन्द के सम्पर्क में आये। स्वामीजी आपकी व्यवहार कुशलता तथा विशेष गुणों से अत्यन्त प्रभावित हुए तथा उन्होंने श्यामजी को विदेशो में भेजने की इच्छा प्रकट की।

विदेश जाकर श्यामजी ने अध्ययन प्रारम्भ किया और वहीं वैरिस्टरी पास की। उनकी प्रकाण्ड योग्यता तथा विद्वत्ता का पता इसी बात से लग जाता है कि उन्हें उनके ज्ञान के फल स्वरूप आज से ७० वर्ष पूर्व आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी द्वारा संस्कृत का प्रोफेसर नियुक्त किया गया।

सुविख्यात विदेशी विद्वान मैक्समूलर तथा अन्य अनेकों व्यक्ति श्यामजी के प्रगाढ़ पाण्डित्य से अत्यन्त प्रभावित हुए। अपने अनेकों विद्वता पूर्ण लेखों तथा भाषणों द्वारा उन्होंने विदेशों में वैदिक धर्म की ध्वजा को समुन्नत किया। तथ्य तो यह है कि अपने अथक परिश्रम द्वारा श्यामजी ने विदेशों में उस कार्य की नींव डाली जिस पर स्वामी विवेकानन्द ने बाद में भारतीय संस्कृति के विशाल भवन का निर्माण किया। ऋषि दयानन्द ने आपको अपनी, परोप-कारणी सभा का सदस्य भी नियुक्त किया।

विदेश से लौटने के पश्चात लगभग १५-१६ साल आप भारत में रहें। इसका अधिकांश भाग आपने अजमेर मेरवाड़ा तथा राज-स्थान प्रान्त में ही व्यतीत किया। १८६२ में आपने ब्यावर में राज-पूताना काटन प्रेस की तथा अजमेर में राजपूताना प्रिन्टिंग प्रेस की स्थापना की। राजपूताना काटन प्रेस के आप १६१३ तक (विदेश

में.भी) मैनेजिंग डाइरेक्टर रहे। आप रतलाम के दीवान बनाये गये। सन् १८९४ में वे उदयपुर के प्राइम मिनिस्टर रहे तथा बाद में जूनागढ़ के दीवान पद को सुशोभित किया।

किन्तु इन बातों को अतिरिक्त जिस कार्य ने उन्हें महान गौरव प्रदान किया है। १८५७ की सशस्त्र क्रान्ति के पश्चात भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधारों में से श्यामजी कृष्ण वर्मा भी एक थे। उन्होंने हृदय में गुलामी के प्रति धधकने वाली ज्वाला की चिनगारियां भारतीय युवकों में डाल दी भारत तथा विदेश में रहकर उन्होंने क्रान्ति का शंखनाद भारतीय जनता में फूंका तथा अनेकों महान् क्रान्तिकारियों का निर्माण उनके हाथों हुआ। सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त लिखते हैं—

"श्यामजी कृष्ण वर्मा काठियावाड़ रियासत के एक धनी परिवार के युवक थे। जिस सभा में, पूना में मिस्टर रैण्ड पर गोली चलाई गई थी तब वे बम्बई में थे। पीछे उनके कथन से मालूम हुआ कि उसी हत्या काण्ड की जांच पड़ताल में पुलिस जब उनको भी फँसाने का कुछ ढंग करने लगी तो वे बम्बई से लन्दन चले गये। लन्दन में जाकर श्यामजी बहुत दिनों तक चुपचाप बैठे रहे, किसी राजनैतिक हलचल में भाग नहीं लिया। किन्तु १९०५ में उन्होंने "इण्डिया होम रूल सोसाइटी" नाम की एक सभा स्थापित की और खुद उस सभा के सभापति हुए। उस सभा ने एक मासिक मुख पत्रिका निकाली जिसका नाम "इण्डियन सोशियोलौजिस्ट" पड़ा। इस सभा का उद्देश्य भारतवर्ष के लिए स्वराज्य प्राप्त करना तथा हर प्रकार से इंगलैन्ड में उसके लिए जनमत जागृत करना था। इंगलैंड के जनमत को जागृत करके जो स्वाराज्य लेने की चेष्टा

करता है उसको हम और कुछ भी कहें, क्रान्तिकारी कदापि नहीं कह सकते। किन्तु यह तो संस्था का खुला उद्देश्य था। उनका असली उद्देश्य और ही कुछ था। वे चाहते थे कि भारतवर्ष के अच्छे २ छात्र इंगलैंड में पढ़ने के लिए आते हैं, उनमें वहां के स्वतन्त्र वातावरण में स्वाधीनता की भावनायें भरी जायें। यही उनका असली उद्देश्य था। तदनुसार दिसम्बर १६०५ में श्यामजी ने यह ऐलान किया कि वे हजार हजार रुपये की ६ छात्र वृत्तियां दे रहे हैं, जिससे कि लेखक, पत्रकार तथा दूसरे योग्य भारतवासी यूरोप, अमेरिका तथा अन्य देशों में आ सकें और स्वदेश लौट कर स्वाधीनता तथा राष्ट्रीय एकता का ज्ञान फैला सकें।"

(भारत में सशस्त्र क्रान्ति का रोमांचकारी इतिहास–पेज २१-२२)

सन् १८६७ में श्यामजी बम्बई से लन्दन चले गये थे तथा मृत्यु पर्यन्त लगभग ३७ साल वहीं गुजारे। जीवन का अधिक काल उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति के साधनों में व्यतीत किया। ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत भारत में होने वाले जुल्मों व भीषण अत्याचारों का वर्णन अपने भाषणों एवं लेखों आदि द्वारा करने में वे सदा निर्भीकता से काम लेते थे। लोकमान्य तिलक के आदेशानुसार श्यामजी ने ही श्री विनायक दामोदर सावरकर को विदेशों में भारतीय क्रान्ति के सम्बन्ध में अध्ययन करने के हेतु भेजने का प्रबन्ध किया था तथा छात्रवृत्ति प्रदान की थी। यह कहना अत्योक्ति नहीं कि भारतीय क्रान्ति की पृष्ठ भूमि पर यदि श्यामजी व सावरकर नहीं होते तो क्रान्ति का इतिहास शून्य नहीं तो नगण्य अवश्य होता।

श्यामजीकृष्ण वर्मा की प्रतिभा सर्वतोन्मुखी थी। एक सफल बैरिस्टर होने के साथ ही साथ वे एक संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान

एवं प्रोफेसर भी थे। पत्र कला तथा लेखन कला में सिद्ध हस्त होने के अलावा आप प्रभावोत्पादक व्याख्यानदाता भी थे। आपकी प्रोमिजरी नोटस सम्बन्धी आलोचनाओं से युक्त लेखमाला ने सरकारी क्षेत्र में पर्याप्त हलचल मचा दी थी। आप एक ओर उग्र क्रान्तिकारी तथा समाज सुधारक थे तथा इसके विपरीत एक सफल शासन कर्त्ता भी थे। अपनी प्रखर बुद्धि तथा कौशल द्वारा आपने पर्याप्त धन संग्रह किया किन्तु राष्ट्रीय हितों की दृष्टि से उसे भामाशाह की भांति ही उदारता पूर्वक खर्च भी किया। कुशल व्यापारी व धर्म चिन्तक तथा उच्च कोटि के राजनीतिज्ञ का अभूतपूर्व सामजस्य आपके महान व्यक्तित्व में ही दृष्टिगोचर होता है।

संसार के इतिहास में श्यामजी कृष्ण वर्मा की भाँति ऐसा कोई व्यक्ति शायद ही उत्पन्न हुआ हो जिसमें उनकी ही भांति समस्त गुणों का समावेश रहा हो।

जन्म लेते ही इस महान व्यक्ति ने १८५७ की महान क्रान्ति के दिनों में तलवारों की झङ्कार सुनी, यौवन में पदार्पण करते ही ऋषि दयानन्द का दिव्य सन्देश सुना, विदेशी शासकों से देश को मुक्त कराने के प्रयास में राष्ट्रीय महासभा काँग्रेस की स्थापना उसके जीवन में ही हुई, धूल में पड़े हुए अनेकों पत्थरों को चुन कर उसने उन्हें अमूल्य रत्न बनाया, जिन रत्नों के दैदीप्यमान प्रकाश से भारतीय इतिहास उज्ज्वल हो उठा है, अनेकों राजनीतिज्ञों तथा विद्वानों का उसने संसर्ग प्राप्त किया तथा प्राचीन व अर्वाचीन राजनीति के विकाश में भी सहयोग दिया। अपने तेजयुक्त व्यक्तित्व से भारत के वर्तमान प्रधान मन्त्री पं० नेहरू को भी वह प्रभावित

कर सका, वास्तव में श्यामजी कृष्ण वर्मा अपने युग के महान पुरुष थे। साथ ही उनके आकर्षक व्यक्तित्व ने भी उन सब को प्रभावित किया जो भी उनके सम्पर्क में आये। उनका ललाट, गोरा मुँह तथा रौबीली मूछें देख कर अनेकों विदेशी अधिकारी भी भय मानते थे।

१९३३ ई० में देश के महान व्यक्ति की मृत्यु होगई। जीवन भर जो व्यक्ति, देश धर्म तथा संस्कृति की रक्षा में रत रहा। ऐसी विभूति की स्मृति रक्षा में उसी के देशवासी कितने प्रयत्नशील हैं इस बात का अनुमान तो इसी बात से लगाया जा सकता है कि अधिकांश जनता उनके नाम को भी भूल गई है।

आज के २६ जनवरी के इस शुभ जनतन्त्र दिवस को लाने में जिस महान आत्मा ने अपने जीवन का उत्सर्ग किया, उस महान आत्मा के प्रति आज हम श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

॥ जय-हिन्द ॥

[२]

— राजस्थान केसरी —

स्व० ठाकुर केशरीसिंहजी बारहठ

स्व० ठाकुर केशरीसिंहजी का जन्म विक्रम संवत् १९२९ के मार्गशीर्ष कृष्ण ६ को पूर्वजों की जागीर के गांव देवपुरा में हुआ। जन्म से एक मास बाद ही आप अपनी जन्मदात्री माता की स्नेहमयी गोद से वंचित हो गये। माता के अभाव में आपकी शिक्षा दीक्षा का भार उन तेजस्वी पिता श्री कृष्णसिहजी बारहठ पर रहा जो अपनी बुद्धि वैभव से राजपूताने के समस्त नरेशों से सम्मानित थे और अपने समय में वे राजपूताना एवं मध्य भारत के प्रधान राजनीतिज्ञ माने गये थे।

ठाकुर केशरीसिंहजी ने भी अपनी प्रखर बुद्धि तथा योग्यता के बल पर अपने पूर्वजों की परम्परा को कायम रखा है। अपनी तरुण अवस्था में ही वे अपनी विलक्षण बुद्धि के प्रभाव से महाराणा उदयपुर के सलाहकारों की श्रेणी में पहुँच गये। सम्वत १९५६ में

कोटा नरेश श्री उम्मेदसिंहजी ने इनके गुणों पर मुग्ध हो कर इन्हें कोटा बुला लिया। आप वहीं रहने लगे।

देश की तत्कालीन परिस्थितियों ने ठाकुर साहब के हृदय को क्षुब्ध बना दिया था। स्वदेश की पतित दशा पर उनका ध्यान सदैव बना रहता था। १६ वर्ष की आयु से ही आप सामाजिक कार्यों में उत्साह पूर्वक भाग लेते रहते थे। आपका ध्यान अधिकतर शिक्षा प्रचार और नवयुवकों को संगठित करने की ओर अधिक था। विदेशी शासक भला क्यों ऐसे कार्यों को सहन कर सकते थे जिनके कारण किसी दिन उनका अस्तित्व ही संकट में पड़ जाय। ब्रिटिश शासन काल में तो सरकार की यह नीति ही रही है कि हर ऐसे कार्य को प्रारम्भ से ही निर्मूल कर दिया जाय जो भविष्य में वृक्ष बन कर साम्राज्यवाद की उन्नति में भयंकर रोड़ा सिद्ध हो। यही कारण था कि आप की प्रारम्भिक गति विधि से ही सरकार सतर्क हो गई। किन्तु सरकार को उस समय अवसर प्राप्त न हो सका क्योंकि स्वजाति की हित कामना की दृष्टि से राजस्थान व मध्य भारत के अनेकों नरेश और ठाकुर आप के कार्यों का समर्थन किया करते थे।

धीरे धीरे ब्रिटिश शासकों ने अनुभव किया कि ऐसे व्यक्ति को, जिसके हृदय में अपने देश के प्रति प्रेम तथा विदेशी शासकों के प्रति विद्रोह की भावनाऐं विद्यमान हो, स्वतन्त्र रहने देना भविष्य में सरकार के लिये एक भयकर आघात सिद्ध होगा। अतएव ३१ मार्च सन् १६१४ में आपको गिरफ्तार कर लिया गया। अन्य कोई दोष न मिलने पर उन्हें "दिल्ली षड़यन्त्र" "आरा केस" आदि में फंसाने का प्रयत्न किया गया। इन दो अभि-

महाराणा फतहसिंहजी की आन के रक्षक

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी
ठाकुर श्री केशरीसिंहजी बारहठ

लार्ड हार्डिंज पर बम फेंकने वाले सन् १२ से ३६
- तक यानी मृत्यु पर्यन्त अज्ञातवास मे रहने वाले
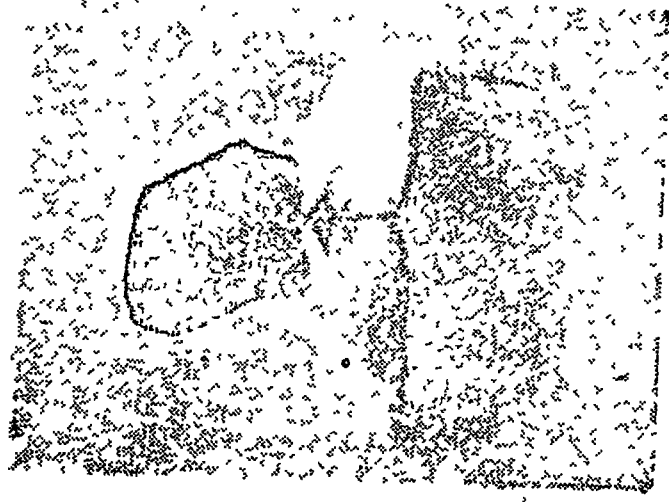
ठाकुर जोरावरसिंहजी 'इस आदमी की दिलेरी व बहादुरी अपना सानी नहीं रखती'—लाला लाजपतराय

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी ठाकुर श्री केशरीसिंहजी बारहठ, श्री किशोरसिंह ठाकुर श्री जोरावरसिंहजी बारहठ अपने तेजस्वी पिता श्री कृष्णसिंहजी बारहठ के साथ। जोरावरसिंह (बाल्यावस्था में)

अमर शहीद वीर कुंवर प्रताप की माँ
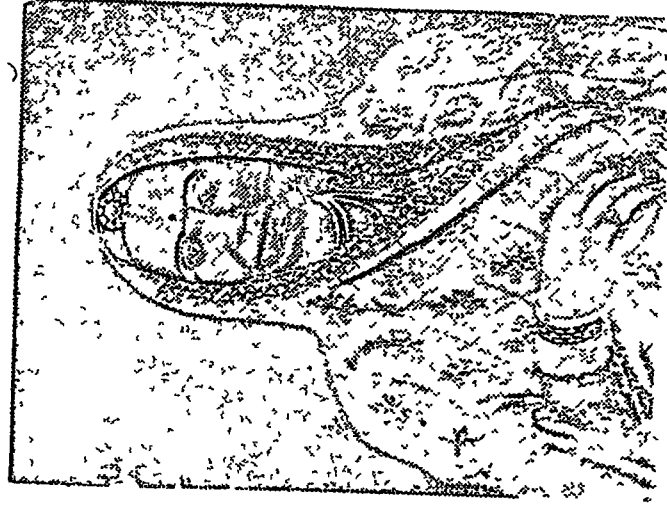
स्वर्गीय श्रीमती मानिकदेवी

वीर कुंवर प्रताप की सी आभा रखने वाले
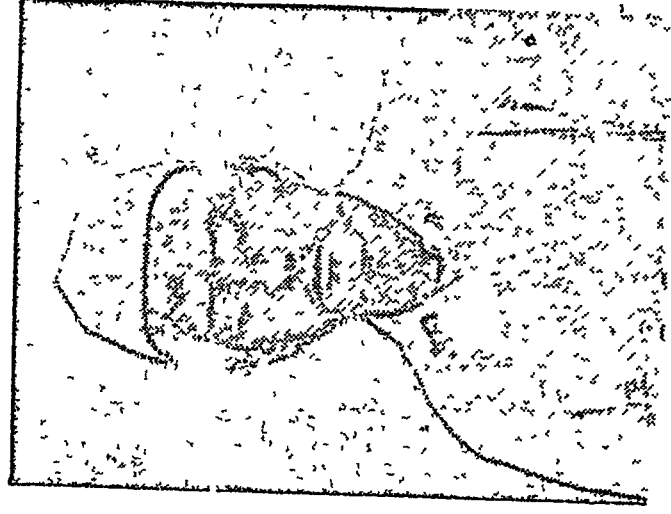
ठाकुर केशरीसिंहजी के पौत्र कुंवर नरेन्द्रसिंह

—:* दिल्ली में १६१८ में स्थापित 'राजपूताना मध्यभारत सभा' के दो पुराने नेता *:—
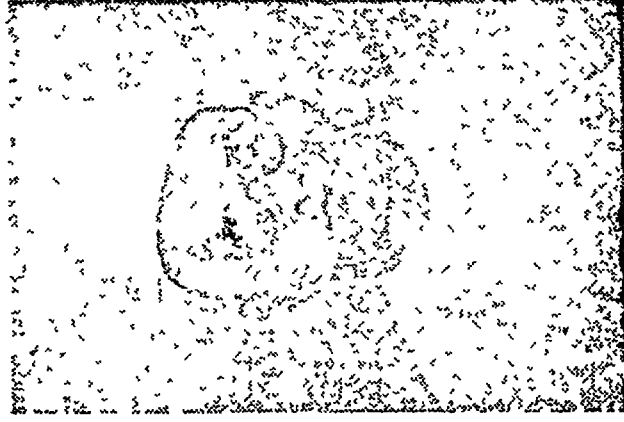
देशभक्त चांदकरणजी शारदा, अजमेर — श्री कन्हैयालालजी कलयंत्री, फलोदी

योगों में असफल होने पर आपके विरुद्ध सम्राट का शासन उलट देने की नियत का दोष लगाया। इसके साथ ही एक हत्या का अभियोग भी जोड़ दिया गया।

कोटा में ही आपके विरुद्ध केस चलाया गया। राजद्रोह का अपराध प्रमाणित न होने पर भी उन्हें २० वर्ष की सजा देकर सरकार ने न्याय-प्रियता (?) का प्रमाण दिया। यही नहीं आपको भयंकर अपराधी मान कर सरकार ने राजपूताने से अन्यत्र, सुदूर हजारी-बाग जेल भेज दिया।

इसके कुछ दिन पश्चात ही ठाकुर साहब ने अन्न न लेने की प्रतिज्ञा की। हजारी बाग जेल पहुँचने के पश्चात् कठिन परीक्षा प्रारम्भ हुई। सदैव भारतीयों के संकल्पों की उपेक्षा करने वाली सरकार को यह क्यों कर सहन होता? आपका अनशन प्रारम्भ हुआ। निरन्तर २८ दिन निराहार बीते। परन्तु अभी परीक्षा बाकी थी अत्याचारों की पराकाष्ठा नहीं हुई थी। अधिकारी भला यह कैसे सहन करते कि पूर्ण रूप से पैशाचिक कृत्यों को भुगतने के पूर्व ही उनको मुक्ति मिल सके? अधिक कष्ट भोगने के लिये उस कृश शरीर को जीवित रखना तो आवश्यक था। उन्हें २९वें दिन थोड़ा-सा दूध दिया गया किन्तु एक सप्ताह पश्चात् फिर अनशन करने पर विवश होना पड़ा। महीनों तक रबर की नली से पानी में थोड़ा-सा चावल का मांड मिला कर पेट में उंडेला जाता रहा। यह युद्ध निरन्तर १८ माह तक चलता रहा, इतनी अवधि तक उन्हें काल कोठरी से बाहर भी नहीं निकाला गया आखिर सरकार ने विवश हो जून सन् १९१९ में ठाकुर साहब को छोड़ दिया।

स्व० ठाकुर केशरीसिंहजी के निश्चय में दृढ़ता थी। ठाकुर साहब साहसी प्रकृति के निर्भीक पुरुष थे। जिस अपूर्व साहस का

परिचय अपने बन्दी जीवन (हजारी बाग जेल) में उन्होंने दिया उसे देख कर बिहार-उड़ीसा की जेलों के प्रधान अधिकारी (आई० जी०) भी दंग रह गये उस समय उन्होंने जो शब्द कहे वे वास्तव में ठाकुर साहब व भारत के गौरव के सर्वथा उपयुक्त हैं उन्होंने कहा— "केशरीसिंह! राना प्रताप की हिस्ट्री से हम मेवाड़ के पानी की ताकत को पहले ही जानते थे, शाबास बहादुर! तुम जीत गये, सरकार हार गई। आज से दूध ही मिलता रहेगा।" कहने की आवश्यकता नहीं, रहस्य दूध में नहीं था वरन् संकल्प की अचलता में था।

ठाकुर केशरीसिंहजी की लेखनी एवं वाणी में भी ओज था जिसके द्वारा उनके क्रान्तिकारी विचार जनता पर अपना प्रभाव स्थापित कर लेते थे। उपरोक्त जेल यात्रा के पूर्व १९०३ में भारत के वाइसराय लार्ड कर्जन का मस्तिष्क इस देश में एक अभूतपूर्व एवं प्रभावशाली "दरबार" करने का सुन्दर स्वप्न देख रहा था, ऐसा महान 'दरबार' जिसे देख सुन कर ब्रिटेन के प्रभुत्व की चकाचौंध से संसार की आंखें आश्चर्य से भर उठें। अपने इस दरबार की सफलता के लिये कर्जन का मस्तिष्क अथक परिश्रम करने में लीन था। अपनी सफलता का उसे पूर्ण विश्वास था। डर था तो केवल यही कि कहीं उदयपुर का स्वाभिमानी राणा इस अवसर पर अनुपस्थित न हो जावे। किन्तु जहाँ उदयपुर के स्वाभिमान को नष्ट करने में मुगल साम्राज्य की समस्त शक्ति असफल रहीं, वहां गोरी शासक जाति की कूट नीति अपना कार्य कर गई। महाराणा ने निश्चय कर लिया कि वे दिल्ली जायेंगे।

महाराणा के इस निश्चय पर देश के अन्य लोगों की भांति स्व० केशरीसिंहजी को भी महान शोक हुआ और स्वाभाविक भी

था क्योंकि क्षात्र स्वतन्त्रता का अनुपम स्वप्न देखने वाला यह कैसे सह सकता कि एक ऐसा महाराणा जिसका अतीत महान तथा गौरवयुक्त रहा है, अब एक परकीय सत्ता के सम्मुख अपना सिर झुकादे। उनके उच्च हृदय में उनकी परम्परा गत विशेषता जागृत हो उठी, उनके हृदय में वही आन्तरिक प्रेरणा हुई जिस प्रेरणा द्वारा उनके ही पूर्वजों ने कर्त्तव्य च्युत होते हुए अनेकों देशवासियों को समय समय पर उत्साह प्रदान किया था। उसी प्रेरणा के वशीभूत महाराणा को पुनः क्षात्र-धर्म का ज्ञान कराने की बलवती इच्छा से उन्होंने सुबोध और वीर रस पूर्ण प्रभावशाली डिङ्गल (मरु) भाषा में १३ दोहे लिख कर उदयपुर भेज दिये।

दिल्ली की स्पेशल ट्रेन में ही यह कविता महाराणा के हाथों में पहुंची और पढ़ी गई। महाराणा ने क्या किया ? यह विश्व विदित है। अभिमानी कर्जन का सुनहरी स्वप्न छिन्न भिन्न हो गया। उस १ फरवरी १९०३ के मध्याह्न में सम्राट के प्रतिनिधि लार्ड कर्जन उस भरे दरबार में महाराणा की खाली कुर्सी की ओर देख रहा था। ठीक उसी समय उदयपुर की स्पेशल ट्रेन महाराणा को हृदय में रख कर विजयनाद करती हुई चित्तौड़ की ओर तीव्रगति से दौड़ रही थी। सत्य की ओजस्वी भाषा का कितना बड़ा प्रभाव पड़ा। महाराणा के गौरव की रक्षा मे इस कविता ने प्रधान भाग लिया है। ये दोहे "चेतावनी का चूँगट्या" नाम से प्रसिद्ध हैं और जानकारी के लिये भावार्थ सहित नीचे दिये जाते हैं।

— सौराष्ट्री दोहा (सिन्धु राग) —

पग पग भम्यां पहाड़, धरा छाड राख्यो धरम।
(ईँशूँ) महाराणा र मेवाड़, हिरदै बसिया हिन्द रै ॥१॥

घण घलिया घमशाण, राणा शदा रहिया निडर।
(अब) पेखन्तां फुरमाण, हलचल किम फतमल ! हुवै ॥२॥
गिरद गजां घमशाण, नहचै घरमाई नहीं।
(ऊ) मावे किम महाराण, गज दो शैरा गिरद में ॥३॥
ओरां ने आशाण, हांकां हरवल हालणो।
किम हालै कुल/राण, (जिण) हरवल शाहां हक्किया ॥४॥
नरियन्द शह नजराण, झुक करशी शरशी जिकाँ।
(पण) पशरेलो किम पाण, पाण छतां थारो फता ! ॥५॥
शिर झुकिया शहशाह, शिंहाशण जिण शांम्हने।
(अब) रलणों पङ्गत-राह, फाबे किम तोनें फता ! ॥६॥
शकल चढ़ावे शीश, दान धरम जिणरो दियो।
शो खिताब वखशीश, लेवण किम ललचावसी ॥७॥
देखेला हिन्दवाण, निज सूरज दिश ने हशूँ।
पण तारा परमाण, निरख निशाशा न्हाँकशी ॥८॥
देखे अञ्जस दीह, मुलकेलो मन ही मनां।
दम्भी गढ़ दिल्लीह, शीश नमन्तां शीशवद ! ॥९॥
अन्तवेर आखीह, पातल जे बाँता पहल।
(वे) राणा शह राखीह, जिणरी साखी शिर जटा ॥१०॥
कठिन जमानो कोल, बांधे नर हीमत बिना।
(यो) बीरा हिन्दो बोल, पातल शाँगे पेखियो ॥११॥
अब लग शागाँ आश, राण रीत कुल राखशी।
रहो रहाय शुख राश, एकलिङ्ग प्रभु आपरै ॥१२॥
मान मोद शीशोद ! 'राजनीति बल राखणो।'
(ईं) गवरमिण्ट री गोद, फल मीठा दीठा फना ! ॥१३॥

— अर्थ —

१—पावों पावों पहाडों में भटकते फिरे, पृथ्वी छोड़कर धर्म को बचाया, इसीलिए ही "महाराणा" और "मेवाड़" ये दो शब्द हिन्दुस्थान के हृदय में बस गये हैं।

२—अनेकों युद्ध हुए तब भी महाराणा निर्भय रहे। हे फतेहसिंह! अब सिर्फ फरमानों को देखते ही यह कैसी हलचल मच गई।

३—जिसके हाथियो के युद्ध की उड़ी हुई गिरद (धूलि) निश्चय ही पृथ्वी पर नहीं समाती थी, वह महाराणा स्वयं दो सौ गज के गिरद (घेरे) में कैसे समा जायगा?

४—दूसरे राजाओं के लिए यह आसान होगा कि वे हकाले जाने पर शाही सवारी में आगे बढ़ते रहें, चलते रहें। परन्तु जिस महाराणा-वंश ने अपने हरोल में (आगे) बादशाहों को हांक लिया था (भगा दिया था) वह शाही सवारी में कैसे चलेगा?

५—दूसरे सब राजा झुक झुक करके नजराना दिखायेंगे, यह उनके लिये तो सहज होगा। परन्तु हे फतेहसिंह! तेरे हाथ में तो तलवार रहती है, उसके रहते हुए नजराने का हाथ आगे कैसे फैलेगा?

६—जिसके सिंहासन के आगे बादशाहों के सिर झुके हैं, फतेहसिंह! अब पक्ति में मिल जाना तुझे कैसे फबेगा?

७—जिसके दिये हुए धर्म के दान को संसार सिर पर चढा रहा है वह (हिन्दू पति) खिताबों की बख्शीश लेने के लिये कैसे ललचायगा?

८—समस्त हिन्दू अपने 'सूर्य' की ओर स्नेह से ताकेंगे, परन्तु जब उनको तुम 'तारा' बने हुए (स्टार ऑफ इण्डिया) दिखाई दोगे तो वे अवश्य ही निश्वास डालेंगे।

९—हे शीशोदिया ! दिल्ली का दम्भी किला तुझे सिर झुकाते देखकर मन ही मन हँसेगा, और इस दिन को अपने लिये अभिमान का दिन समझेगा।

१०—पहिले महाराणा प्रताप ने अन्तिम समय में जो प्रतिज्ञायें की थीं, उनको आज तक सब महाराणाओं ने निभाया है, और इसकी साक्षी खुद तुम्हारे सिर की जटा है।

११—मनुष्य अपने में हिम्मत न होने पर ही यह सिद्धान्त बांध लिया करता है कि "जमाना मुश्किल है।" इस वीर वाणी के रहस्य को सांगा और प्रताप समझे थे।

१२—अब तक सब को यही आशा है कि महाराणा अपने वंश की रीति को रखेंगे। सुख के राशि भगवान एकलिङ्ग आपकी सहायता पर रहें।

१३—हे शिशोदिया ! फतेहसिंह, अपनी प्रतिष्ठा और हर्ष को राजनीति के बल से रखना ही होगा। इस गवर्नमेन्ट की गोदी में मीठे फल देखे हैं ?

❀ जय-हिन्द ❀

[३]

अमर-शहीद वीर कुंवर प्रतापसिंह

"भारत का दुर्भाग्य है कि प्रताप सा युवक आज इस जगत में नहीं है। बरेली जेल में अंग्रेजों का दण्ड भोगते भोगते उसका नश्वर शरीर उस दिव्य आत्मा का साथ न निबाह सका।"

—श्री शचीन्द्रनाथ सन्याल

भारत मां की स्वतंत्रता की वेदी पर बलिदान होने वाली महान् आत्माओं में से वीर कुंवर प्रताप भी एक थे। आपका जन्म विक्रम सम्वत् १९५० की ज्येष्ठ शुक्ला ६ को उदयपुर में राजपूताना की इतिहास-प्रसिद्ध वीर चारण-जाति के ठाकुर श्री० केसरीसिंहजी के घर माता श्री० मानिकदेवी की दक्षिण कुक्षि से हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा कोटे में हुई। बाद में दयानन्द एङ्गलो वैदिक स्कूल अजमेर में मेट्रीक तक पढ़े परन्तु परीक्षा में नहीं बैठे कारण आपको सार्टिफिकेट लेने की इच्छा नहीं थी। आपने अंग्रेजी इस लिये पढ़ी कि इसके द्वारा भारत के किसी भी प्रान्त में मातृभूमि की सेवा करके अपने को खपा सकें। आपके पिता ठाकुर केसरीसिंहजी विश्वविद्यालय की शिक्षा को दासत्व का सांचा मानते थे, अतः

आपको १५ वर्ष की आयू में ही (सन् १९०८ ई० में) स्वतन्त्र शिक्षण के लिये सुप्रसिद्ध देशभक्त श्री अर्जुनलालजी सेठी के 'जैन वर्धमान विद्यालय' जयपुर में भेज दिया। सेठीजी के विद्यालय को जयपुर से इन्दौर लेजाये जाने पर आप दिल्ली के प्रसिद्ध देशभक्त वीर अमीरचन्दजी के यहां रख दिये गये। आपके संसर्ग में जो कोई भी आया। मुग्ध हो गया। ऐसी मोहनी-मूर्ति और दिव्य-आत्मा क्वचित् ही मिलती है।

राजस्थान के सुप्रसिद्ध नेता व पत्रकार श्री रामनारायणजी चौधरी ने वीर कुंवर प्रताप का वर्णन करते हुये लिखा है:—"सच तो यह है कि महात्मा गांधी को छोड़ कर और किसी पर मेरी इतनी श्रद्धा नहीं हुई जितनी प्रतापजी पर वे विदेश की खातिर हिंसा के पक्षपाती जरूर थे, लेकिन उनका दूसरा सारा व्यवहार किसी अहिंसावादी से कम न था। वे जहां रहते वहां का वातावरण सरलता, प्रेम और पवित्रता से भर देते थे।"

अमीरचन्दजी के गिरफ्तार होने से कुछ ही दिन पूर्व आप अपने पिता के पास आगये। और पिताजी के पकड़े जाने के एक सप्ताह पहले अज्ञातवास (under Ground) में चल दिये।

प्रताप अपने चचा बलिष्ठवीर ठाकुर जोरावरसिंहजी के साथ मार्च सन् १९१४ के तीसरे सप्ताह में शाहपुरा से रवाना हो गये। ३१ मार्च के दिन ठाकुर केशरीसिंहजी के समस्त पुरुष-परिवार पर वारन्ट निकले। चचा-भतीजे ढूंढे गये, ब्रिटिश शाही के गुरगों ने राजपूताना और मध्यभारत का घर घर छान मारा पर कहीं पता न लगा सके। आखिर पिता पर कोटे में मुकदमा चलने पर, आप कोटा आये। पिता को कैसे-कैसे झूठे जाल में फांसा जा रहा है, यह सब
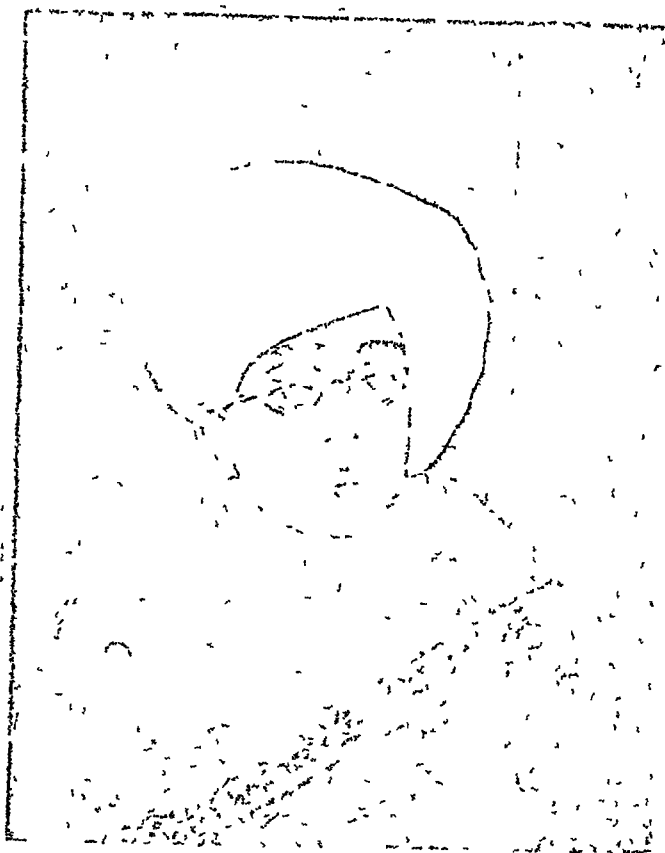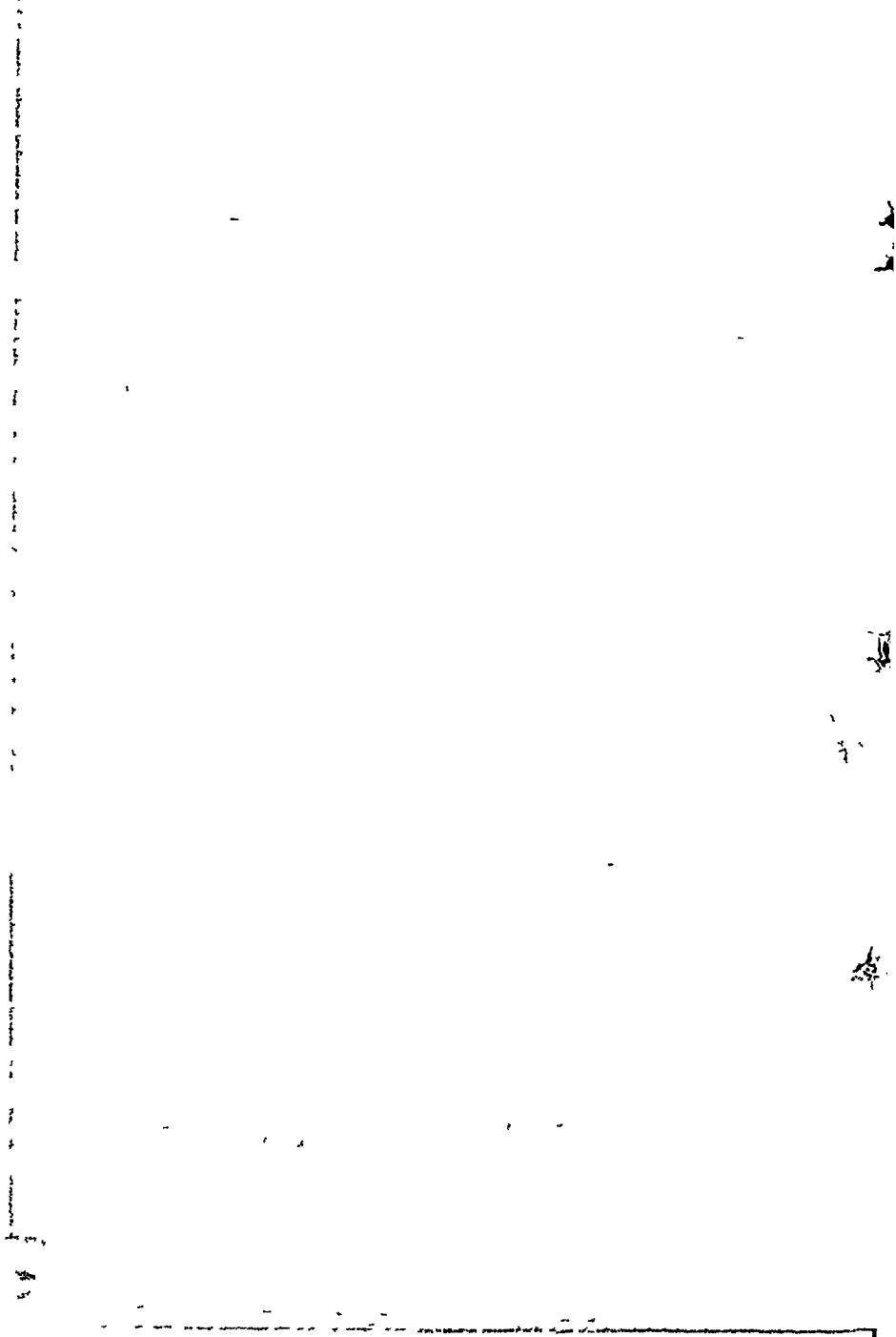
आप सजगता से देखते रहे। पिता की दृढ़ता और धैर्य आपके हृदय में आनन्द, गौरव और तेज भर रहे थे। देशभक्ति की आग से धधकते हुए हृदय कुण्ड में पाशविक-सत्ता के मदान्ध प्राणी अत्याचारों का पेट्रोल उड़ेल रहे थे। माता का निश्वास धमनी का काम दे रहा था। बन्धन में पड़े हुए पिता को प्रताप ने सन्देश भेजा "ताया कुछ विचार न करें, अभी प्रताप जिन्दा है।"

ठाकुर केसरीसिंहजी को आजन्म कारावास की सजा सुना दी गई। एक दिन प्रताप ने मां से कहा "भाभा, धोती फट गई, कहीं से तीन रुपये का प्रबन्ध करदो तो धोती लाऊं, आज ही चाहिये।" "माता के हाथ तो सर्वथा खाली थे, कोशिश करने पर दो रुपये मिले और पुत्र के हाथ में दिये। प्रताप को यही माता का अन्तिम पाथेय था। बिना कुछ कहे सुने, मन ही मन माता को अन्तिम प्रणाम कर शाम को घर से निकल पड़े। शहर में पिता के एक मित्र के घर जाकर भोजन किया। भोजन करते समय मित्र ने कहा "कुंवर साहब! अब क्या इच्छा है।" प्रताप ने कहा "शादी करना है।" "क्या कहते हो, शादी? आज तक स्वीकार न की, अब इस घोर विपत्ति में शादी? यह क्या सूझी?" "हां निश्चय ही शादी, लग्न भी आगई है, उसके लिये जाता हूं।" "कहाँ?" "सब सुन लोगे" यह कहते हुये जोर से 'बन्दे मातरम्" का नारा लगाया और गायब हो गये। उसके बाद प्रताप को किसी ने कोटे में नहीं देखा। दूसरे दिन जब प्रताप घर नहीं लौटा तो वही मित्र आए और शादी की बात कही। चतुर माता सब समझ गई और कहा—'ठीक है, परन्तु उसने मुझ से नाहक ही छिपाया। मैं उसे तिलक करके और चुम्बन लेकर विदा करती।"

आप कोटा से इधर उधर भ्रमण करते हुए सिन्ध हैदराबाद गये। उनके साथ में उनका एक सच्चा बराती वीर गणेशदान था। दुःख है, प्रताप के पकड़े जाने की खबर से इसके प्रेमी हृदय पर ऐसी चोट लगी कि बीमार होकर, इधर उधर छिपते टकराते वीर गति को प्राप्त हुए।

सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल, अपने बन्दी जीवन में 'प्रताप की कहानी' में लिखते हैं—"राजपूताने के बिल्कुल अधः पतित हो जाने पर भी उस अतीत युग के संस्कार (शूरता, वीरता और उदारता) आज तक प्रत्येक राजपूताना वासी के हृदय मे अङ्कित हैं, प्रताप-परिवार की कहानी देख कर यह बात मेरे मन में स्वतः जाग उठती है।

यह परिवार राजपूताना के गण्य-मान्य समृद्ध परिवारों में गिना जाता था, किन्तु स्वदेश-प्रीति और तेजस्विता की खातिर इन्हें अपना घरबार बरबाद करना पड़ा।

इस मामले (कोटा केस) के फल स्वरूप सरदार केशरीसिहजी की और उनके छोटे भाई की समूची सम्पत्ति तो जप्त हुई ही, इसके अलावा उनके जो भाई राजनीति के पास फटकते भी न थे, उनकी भी सारी सम्पत्ति जप्त हो गई। इस तरह से समृद्धि-सम्पन्न जागीरदार की अवस्था से एक दम रास्ते के भिखारी होगये। प्रताप की माता के दुःखों की उस समय कोई सीमा न थी। आज एक सम्बन्धी के पास रहती कल दूसरे सम्बन्धी के घर जाकर अतिथि बनती, अन्त में अपने पिता के घर जाकर किसी तरह दिन काटती रहीं, प्रताप के मामा के घर की हालत भी विशेष अच्छी न थी। विधाता जब किसी के प्रति निर्दयी होते हैं तब उनकी

निष्ठुरता के निकट संसार की सब निष्ठुरता फीकी पड़ जाती है और वे जिनको वीर बना कर उठाते हैं, उनके वीरत्व के निकट भगवान् की निष्ठुरता भी हार मानने को बाध्य होती है। इसी से इतनी विपत्ति में पड़ कर भी प्रतापसिंह बराबर विप्लव दल में काम करते रहे। काम करने के भी जुदा जुदा विभाग हैं, केवल कर्त्तव्य ज्ञान से काम करना एक बात है, और करके आनन्द पाना दूसरी बात। हमारा विचार है कि काम करके आनन्द पाया जाय यही हमारा कर्त्तव्य है, अर्थात् जैसा काम करके मन में किसी तरह का अनुताप परिताप न हो, जैसा काम करने से मन में और प्राण में ग्लानि की कोई सूचना भी न हो और सबसे बढ़ कर जैसा काम करने से मनुष्य साक्षात रूप से आनन्द भी पाये, हमारा विचार है वैसा काम ही मनुष्य का कर्त्तव्य है, और जो करके मनुष्य आनन्द तो पाये नहीं, प्रत्युत उससे क्लेश का आभास हो वह काम करना मनुष्य को उचित नहीं। वैसे स्थान मे मानना होगा कि अनाधिकार चर्चा की जा रही है क्योंकि वैसे स्थान में आनन्द अथवा तृप्ति कुछ भी नहीं होती। अर्थात् लज्जा की खातिर, लोक निन्दा के भय से कर्त्तव्य कार्य में योग देना एक बात है, और कर्त्तव्य कार्य करके सचमुच आनन्द पाना दूसरी बात। प्रताप ने जो अपनी पारिवारिक अवस्था के भीषण संकट काल में भी इस प्रकार विप्लव कार्य में योग दिया था उससे उनके दिल के किसी कोने में किसी तरह की ग्लानि अथवा संकोच तो था ही नहीं, वरन विपति की ऐसी कराल मूर्ति आंखों से देखकर भी वे पिता के अभिप्रेत कार्य में फिर भी अपने को लगा सके इससे उनका दिल आनन्द और गर्व से फूल उठता था। प्रताप वैसे कर्त्तव्य की खातिर ही उस कार्य में योग न देते थे। उन जैसे युवक मैंने बहुत ही कम देखे हैं। प्रताप केवल

स्वयं ही आनन्द में रहते हों सो नहीं उनके संग में जो रहते थे वे भी आनन्द ही पाते थे। तो भी बीच बीच में प्रताप का मन माता-पिता के लिये अधीर न होता हो सो नहीं, हमारा तो विचार है कि जिसका मन ऐसी अवस्था में माता-पिता के लिए अधीर न होता हो उसका विश्वास करना उचित नहीं है। माया का एक दम अभाव होना एक बात है और माया में लिप्त न होना दूसरी बात। मनुष्य की दृष्टि से मैं तो उन्हीं को कहूँगा जिनके स्वभाव में माया की पूरी सत्ता है किन्तु जो माया में लिप्त नहीं होते। इसी से प्रताप को जब दुखी देखता तब मेरे प्राणों में बड़ी ही व्यथा होती। किन्तु कार्य-क्षेत्र में जब देखता प्रताप किसी से भी पीछे नहीं है तब फिर वैसे ही आनन्द भी प्रतीत होता।

भले बुरे का द्वन्द्व भी प्रताप के अन्तःकरण में चरम अवस्था तक जा पहुंचा था। प्रताप के पकड़े जाने पर पुलिस बहुत दिन तक अनेक प्रकार के प्रलोभन दिखा कर उन्हें सब गुप्त बातें प्रकट कर देने के लिये विशेष तंग करती। पुलिस प्रताप से कहती कि सब गुप्त बातें कह देने पर केवल प्रताप को ही नहीं वरन् उनके पिता को भी छोड़ दिया जायगा; यही नहीं उनके चाचा पर से भी मुकदमा उठा लिया जायगा, उनकी सब सम्पत्ति भी फिर लौटा दी जायगी और इस सब के अलावा और भी कुछ पुरस्कार दिया जायगा।

प्रताप की माता ने कितना कष्ट पाया है प्रताप को भी दण्ड हो जाने से माता की अवस्था कैसी शोचनीय हो जायगी और इस आघात को वे कैसे सह सकेंगी यह सब बातें पुलिस अपनी स्वभाव-सिद्ध चतुराई के साथ बार बार समझाती थी। पुलिस की ये सब बातें बिलकुल निर्मूल हों सो भी तो न था।

पहले पहल तो वे पुलिस के साथ ज्यादा देर, ठीक तरह बात ही न करते थे। पीछे उन लोगों के साथ बात करना प्रताप को मानो कुछ कुछ भला लगने लगा। एक दिन पुलिस वालों के साथ प्रताप की करीब तीन चार घण्टे बात चीत हुई। हम सब पास की निर्जन कोठरी में बैठे बैठे दम थाम कर जमीन आसमान की बातें सोचने लगे, सन्देह हुआ अब की बार प्रताप फूट पड़ेगा। पीछे मुकदमा आरम्भ होने पर जब हम सब को प्रायः सारा दिन इकट्ठा रहने का सुयोग मिला तब जान पाया कि सच ही प्रताप का मन बहुत विचलित हो गया था। यहां तक कि अन्त में एक दिन प्रताप ने पुलिस से कह दिया कि वे एक दिन और सब बात सोच देखें। फिर कहना होगा तो कह देगें। किन्तु अगले दिन जब पुलिस प्रताप से मिलने आई, प्रताप बोले, "देखिये बहुत सोचा, देखा, अन्त में तय किया है कि कोई बात नहीं खोलूंगा, अभी तक तो केवल मेरी ही माता कष्ट पा रही हैं किन्तु यदि मैं सब गुप्त बातें प्रकट कर दूं तो और भी कितने लोगों की मातायें ठीक मेरी माता के समान कष्ट पायेंगी, एक मां के बदले में और कितनी माताओं को तब हाहाकार करना होगा।" मन में एक बार नीचे फिसल पड़ने पर उसे फिर अपनी जगह लौटा लाना कितना कठिन कार्य है सो चिन्ताशील व्यक्ति ही समझ सकते हैं।

नहीं मालूम आज भारत में कितने ऐसे पिता हैं, जो सरदार केसरीसिंहजी की तरह सब जान बूझ कर अपने को और अपनी सन्तान को इस प्रकार देश के कार्य में बलि दे सकेंगे। भारत का दुर्भाग्य है कि प्रताप सा युवक आज इस जगह में नहीं है। बरेली जेल में अंग्रेजों का दण्ड भोगते-भोगते उसका नश्वर शरीर उस दिव्य आत्मा का साथ न निबाह सका। इसी प्रताप के साथ मैं

दिल्ली गया था और कई दिन तक इकट्ठे काम करने का अवसर पाया था। उस समय प्रताप की आयु २२ वर्ष की रही होगी।

अमीरचन्द और अवधबिहारी के साथ वैसी घनिष्ठता नहीं हुई थी, कारण कि वे पहले ही पकड़े गये थे। किन्तु इस बार प्रताप के साथ दिल्ली आकर लक्ष्मीनारायण और खान्ताजी के साथ खूब घनिष्ठ रूप से मिलने का अवसर पाया। अनेक प्रकार से विप्लव की चेष्टा विफल होने के बाद मैं और प्रतापसिंह नये सिरे से कार्य चलाने के लिये दिल्ली आये। हमारे दिल्ली आने का यह भी एक कारण था। काडक साहब के दिल्ली में न रहने से हमें अपना एक विशेष कार्य अन्त में स्थगित ही रखना पडा, किन्तु दिल्ली की विप्लव समिति के पुनर्गठन में हम पूर्ण उद्यम से लग गये।

हम लोग दिल्ली में एक मकान भाड़े लेकर प्रायः पन्द्रह दिन रहे। दिल्ली से राजपूताना बहुत दूर नहीं है, मैं दिल्ली मे ही रहा और प्रताप को दो बार जयपुर भेजा। हमारी इच्छा थी राजपूताने के कुछ एक युवकों को दिल्ली में लाकर दिल्ली के विप्लव केन्द्र को सुगठित कर डाले। प्रताप राजपूताने में कार्य करते और मैं दिल्ली के कर्मियों के साथ मिलता जुलता और उनमें से अपने दिल के मुताबिक आदमी छांटता। इस प्रकार दिल्ली में कुछ एक दिन काम करने के फलस्वरूप खास्ताजी के मन मे बुझी हुई आग फिर प्रज्वलित हो उठी। उन्होंने अपना पुराना उद्यम फिर पा लिया। उन्हीं की चेष्टा से इस बार हमारे साथ दिल्ली के मुसलमान विप्लव दल का घनिष्ट परिचय हुआ। मुसलमानो के साथ तय हुआ कि वे हमें पिस्तौल, रिवाल्वर और गोली जुटा देगें और हम उन्हें बम जुटा देगें। इसके सिवाय जिस प्रकार हम दोनों दल शीघ्र ही और भी अधिक सम्मिलित रूप

से कार्य कर सकें उसका भी विस्तृत आयोजन किया जाने लगा। इतने दिन बाद मानों मालूम होने लगा कि दिल्ली में फिरसे कार्य का स्रोत बहने लग गया। हमारे पास से बम लेने के लिये अथवा यथार्थ में सहायता करने के लिए हो, दिल्ली में मुसलमान दल ने हमारी इस बार बड़ी आर्थिक सहायता की।

इस प्रकार जिस समय दिल्ली का कार्य क्रमशः आगे बढ़ने लगा मैं भी ठीक उसी समय खूब बीमार पड़ गया। लाचार प्रताप को संग लेकर मैं बंगाल चला आया। मेरे नाम उस समय वारन्ट निकल आया था इसलिये युक्त-प्रदेश में न रह कर बंगाल आना ही ठीक समझा।

वारी का बुखार लेकर प्रताप के साथ बंगाल में अपने केन्द्र में आ उपस्थित हुआ। बंगाल में हमारी विधान समिति का केन्द्र था कलकत्ता के निकट एक गांव। इसी स्थान में मुझे पन्द्रह दिन तक खाट पर पड़े रहना पड़ा और इसी स्थान के युवकों ने उस समय बड़े यत्न से मेरी सेवा सुश्रुषा की। प्रताप मुझे बंगाल में छोड़ कर राजपूताना चले गये। बात तय थी कि मैं स्वस्थ होने पर राजपूताना जाऊंगा और इस बार बड़े यत्न के साथ राजपूताना में विप्लव के केन्द्र स्थापित करने होंगे परन्तु जब उनके साथ मेरी फिर भेंट हुई, तब हम दोनों ही जेल में थे।

मैं इस प्रकार जब बीमार होकर खाट पर पडा था तब गिरिजा बाबू प्रायः मेरे पास आया करते थे। उनके साथ परामर्श करके हम ने ठीक किया कि रासूदा (रासबिहारी बोस) को अब किसी प्रकार भारत वर्ष मे नहीं रहने देना होगा। बहुत हो चुकी, भगवान अनेक प्रकार से उनको अब तक बचाते आये हैं अब और अधिक उन्हे

भारतवर्ष में वेष्वटके रहना सहज नहीं है। उन्हें पकड़ा देने का पुरस्कार साढ़े बारह हजार रुपये तक जा पहुंचा। रासूदा को विदेश भेज कर नये सिरे से विप्लव का आयोजन करना तय हुआ। रासूदा भी देश छोड़ने से पहले कह गये थे इस बार भारत के प्रत्येक युवक और युवती को सशस्त्र करना होगा उसके बाद देखेंगे अंग्रेज किस तरह भारत पर शासन करते हैं। विदेश जाने के चार एक दिन पहले कलकत्ते की ही एक कलकल पूर्ण बस्ती में आ रहे और एक दिन, दोपहर में और गिरजा बाबू जाकर उन्हें जहाज पर चढ़ा आये। यह अप्रेल सन् १६१५ की बात है। रासूदा का मुझ से बड़ा ही प्यार था। रास्ते में मेरे कन्धे पर हाथ रखके बड़े स्नेह के साथ कहने लगे, 'भाई देश छोड़ते मुझे कितना कष्ट होता है सो तुम्हें नहीं कह सकता, देखो खूब सावधान होकर सुनो भाई, देश के काम को ठीक डौल पर लाकर तुम भी मेरे पास चले आना। उनके साथ मेरी यही अन्तिम बात थी।"

श्रद्धेय रामनारायणजी चौधरी अपनी पुस्तक—"वर्तमान राजस्थान" में प्रताप के विषय में लिखते हैं:—

"१६१५ का साल शुरु हुआ ही था कि एक दिन अन्धेरे अन्धेरे छोटेलालजी कम्पनी में एक ऐनकधारी युवक को लेकर आये। छोटी २ आंखे, सांवला रंग और ठिगना कद था ये प्रतापसिंह थे। उन दिनों हिन्दुस्तानी फौज मे गदर की तैयारी की जा रही थी। इसके संयोजक बा० रासबिहारी बोस थे। उनका केन्द्र बनारस था। एक खास काम के लिए उन्होंने श्री० शचीन्द्र सान्याल को दिल्ली भेजा था। प्रतापसिंह उनके साथ थे। इसी खास काम में एक सन्देश ले जाने वाले की जरूरत थी। छोटेलालजी की सलाह से प्रतापजी ने मुझे पसन्द किया। दूसरे ही दिन प्रतापजी

और मैं दिल्ली के लिये रवाना होगये। शहर के पुराने हिस्से में एक मकान की पहली मंजिल पर पहुँचे तो एक गठीले जवान ने हमारा स्वागत किया। यह शचीन्द्र थे। एक कोठरी में अखबार बिछे थे यही उनका बिस्तर था। शाम तक मुझे योजना का पता लग गया। वह यह थी कि भारत सरकार के होम मेम्बर सर रेजीनाल्ड क्रॉडक को गोली का निशाना बनाया जाय, यह काम करें जयचन्द्र और मैं उन्हें हरद्वार से बुला लाऊँ। सकेत यह था कि—जैसे ही क्रॉडक साहब वाली घटना के समाचार प्रकाशित हों, मेरठ वगैरह की भारतीय सेना विद्रोह करदे। जहां तक मुझे याद है इसके लिये २५ फरवरी १९१५ की तारीख मुकर्रर हुई थी। अस्तु मैं रात की गाड़ी से हरद्वार के लिये चल पड़ा। भारत रक्षा कानून का शिकंजा इतना कड़ा था कि हर जगह पुलिस किसी नौजवान को देखते ही सन्देह करती और उसे पूछताछ किये बिना आगे न बढ़ने देती। लेकिन मुझे मारवाड़ी भेष भाषा ने अच्छा काम दिया। हरद्वार में उन दिनों कुम्भ का मेला था, परन्तु काली कमले वाले बाबा का स्थान ढूँढने में विशेष अड़चन नहीं हुई। हमारे जयचन्द्र बाबा के दाहिने हाथ बन बैठे थे। देखते ही लिपट गये। लेकिन मेरे साथ दिल्ली चलने में असमर्थता प्रकट करते हुए बोले—"मैंने यहाँ एक अच्छा दल तैयार कर लिया है। अभी कल परसों ही एक सफल डाका डाला है। हाथ में लिया हुआ काम छोड़ कर जाना ठीक नहीं। हां, चाहो तो पांच दस हजार रुपया ले जाओ। डाके का माल भी है और बाबा का भण्डार भी भर पूर है।" धन लाने की मुझे आज्ञा न थी। मैं खाली हाथ वापस आगया। शचीन्द्र और प्रतापसिंह को निराशा हुई। जो काम जयचन्द्र के सुपुर्द होने वाला था वह प्रतापजी को सौंपा गया। मगर संयोग से क्रॉडक साहब

मुकर्रर तारीख को बीमार हो जाने से बाहर नहीं निकले और बच गये। मैं उसी रात जयपुर लौट आया।

इधर हमारी कम्पनी कुछ चली चलाई नहीं, हम उसे उठा देने की सोच ही रहे थे कि प्रतापजी पर बनारस षड्यंत्र के सिलसिले में वारण्ट निकल गये और वे भाग कर हैदराबाद (सिन्ध) में जा छिपे। खुफिया पुलिस तलाश करती हुई जयपुर पहुँची और एक ओसवाल गृहस्थ के पीछे पड़ी। कमजोरी में आकर उन्होंने हैदराबाद बता तो दिया, मगर फिर सम्भल कर सिन्ध के बजाय निजाम की राजधानी का पता दे दिया। इधर हमारी मण्डली को प्रतापजी को बचाने की फिक्र हुई। इस बार भी मुझको चुना गया। मारवाड़ी पोशाक में चल पड़ा। मुझे हिदायत थी कि मारवाड़ के भीनमालिया स्टेशन पर उतर कर चारणों के गांव पाचेटिया में पहले तलाश करलूं। शायद प्रतापजी वहां हो, गांव के निकट पहुँचते पहुंचते मालुम हो गया कि जिस घर पर प्रतापजी ठहरा करते थे उसे पुलिस ने घेर रखा है। मैं समझ गया कि पंछी अभी पकड़ में नहीं आया है, मैं व्यर्थ में क्यों फसूं? मैंने सिन्ध की राह ली। हैदराबाद पहुंच कर दिन भर की खोज के बाद प्रतापजी से भेंट हुई। उन्होंने एक खानगी दवाखाने में कम्पौण्डर की जगह काम शुरू कर दिया था और फुरसत के समय वाचनालयों में जाने वाले नौजवानों में क्रान्तिकारी प्रचार करने लग गये थे। दूसरे ही दिन हम दोनों बीकानेर के लिये चल पड़े। सोचा यह था कि मैं तो राजधानी में कोई नौकरी कर लूंगा। प्रतापजी वहीं देहात में जा बसेंगे और दोनों मिल कर विप्लववादी दल खड़ा करेंगे। थोड़ी सहूलियत भी थी। मेरे एक चचा बीकानेर कौंसिल में रेवेन्यू सेक्रेटरी थे और गांवों में प्रतापजी के कुछ सम्बन्धी रहते थे। लेकिन एक गलती ने योजना पर

पानी फेर दिया। जोधपुर स्टेशन पास आया तो प्रतापजी की इच्छा आशानाडा स्टेशन पर उतर कर वहीं के स्टेशन मास्टर से मिल लेने की हुई। वह दल का सदस्य था मगर कुछ दिन पहले उसके यहां बम का पार्सल पकड़ा जा चुका था और वह अपनी खाल बचाने को पुलिस का मुखबिर बन गया था। इसकी हमें किसी को खबर न थी। तय यह हुआ कि मैं जोधपुर उतर कर शहर देखलूं और दूसरे दिन शाम की गाड़ी से बीकानेर के लिये चल पड़ूं। रास्ते में आशानाडा के प्लेट फार्म से प्रतापजी को 'माधो' के नाम से पुकारूं। अगर कोई जवाब न मिले तो समझ लूं कि प्रतापजी फिलहाल देहात में घुस गये हैं और मैं बीकानेर पहुँच कर उनका इन्तजार करूं। लेकिन प्रतापजी तो आशानाडा उतरते ही गिरफ्तार कर लिये गये थे मेरी आवाज का कोई असर न देख कर मैं बीकानेर पहुंच गया।

प्रतापजी के वियोग की पीड़ा भी कम न थी वह आदमी ही ऐसा प्यारा था। जितने विप्लववादी देशभक्तों से मेरा परिचय हुआ उनमें प्रताप की छाप मुझ पर सबसे अच्छी पड़ी थी। वे बड़े कोमल स्वभाव के, निहायत शिष्ट और सदा खुश रहने वाले जीव थे गीता को उन्होंने जिस रूप में समझा था उसी के अनुसार उनकी सारी चेष्टायें होती थी धन और स्त्री की इच्छा को उन्होंने खूब जीता था। शरीर इतना सधा हुआ था कि जयपुर में जब वे मेरे साथ रहे थे तो एक बार लगातार ७२ घण्टे जागते रहे और बिना खाये पीये बराबर काम करते रहे, और फिर सोये तो तीन दिन तक उठने का नाम नहीं लिया। गल्ता के कुण्ड में घण्टों तैरते भी उन्हें देखा।"

प्रताप ने कहाँ क्या किया, उसका पूरा आभास तो "बन्दी जीवन", "पंजाबी में प्रचण्ड कावत्र" आदि पुस्तको में एवं रास-बिहारी बोस के संस्मरणों में मिलता है। हैदराबाद के कार्य को

दूसरों के हाथ सौंप, गरमी, भूख और २-३ दिन का जागरण सहता हुआ, वीर प्रतापसिंह रेल से जोधपुर होकर निकला। जोधपुर से अगले छोटे से रेल्वे स्टेशन "आसानाडा" पर स्टेशन मास्टर परिचित था, प्रताप वहां उतर पड़ा। उसे क्या मालूम था कि वह विश्वासघाती के चंगुल में जा रहा है। स्टेशन मास्टर ने प्रताप को देखते ही कहा—"पुलिस तुम्हारे लिए चक्कर लगा रही है, कोई देख लेगा, मेरी कोठरी में जा बैठो कुछ खाओ पियो।" वह प्रताप को कोठरी में लेगया। प्रताप ने कहा—"निद्रा सता रही है, सोऊँगा।" विश्वासघाती ने कहा—"निःशङ्क सो जाओ। ताला मार देता हूँ, ताकि किसी को भ्रम न हो।" गाढ़ निद्रा होने पर स्टेशन मास्टर ने कोठरी में से प्रताप का शस्त्र व दूसरी सब चीज़ें बाहर निकाल ली थी, ताकि मुकाबले के लिये प्रताप के हाथ कुछ न रहे। फिर उसने जोधपुर पुलिस को टेलीफोन कर दिया। बस फिर क्या था। पुलिस फोजी रिसाला और दल बल के साथ जा पहुँची। आशानाडा घेर लिया गया, कोठरी के द्वार और खिड़कियों पर बर्छे और सङ्गीनें अड़ा दी गईं। चुपके से ताला खोल कर, सोते हुए प्रतापसिंह पर पुलिस टूट पड़ी और गिरफ्तार कर लिया गया।

उस समय प्रताप की उग्र मुख-मुद्रा, जोश भरी लाल आंखें फड़कते हुए होंठ और उलसते हुए बाहुओं को जिनकी आंखों ने देखा है, वे आज भी कहते हैं कि वह सच्चा वीर था, सम्भल जाता तो अवश्य वीर खेल बतलाता।

बनारस में केस चला और प्रताप को पांच वर्ष की सख्त सजा हुई। बनारस जेल से बरेली जेल में भेजा गया और वहीं विक्रम सम्वत १९७५ (सन् १९१९) की बैशाखी पूर्णिमा को

पच्चीसवें वर्ष की समाप्ति पर सदा के लिये गुलामी के बन्धन तोड़ कर चला गया।

प्रताप के बलिदान के बरसों बाद भी ब्रिटिश शाही के जुल्मी अधिकारियों ने आँखों में पानी भर कर मुक्त कण्ठ से कहा:—

"हमने आज तक प्रताप जैसे वीर और विलक्षण बुद्धि का बालक नहीं देखा। उसे तरह-तरह से सताये जाने में कसर नहीं रक्खी गई, परन्तु वाह रे धीर! टस से मस न हुआ। गजब का सहने वाला था। सर चार्लर्स क्लीवलैण्ड जैसे (भारत के डायरेक्टर ऑफ सी० आई० डी०) घाघ का दिमाग भी चकरा गया, हम सब हार बैठे, उसी की दृढ़ता अचल रही।"

* जय-हिन्द *

[४]

— सन् १८५७ के स्वातन्त्र्य युद्ध के —

प्रथम शहीद श्री मंगल पाण्डे

"चाहे मंगल पाण्डे अब नहीं है किन्तु उनका जोहर सारे हिन्दुस्थान में फैल गया, और जिस सिद्धान्त के लिये वे लड़े वह अमर हो गया है। उन्होंने न केवल अपना खून अपितु अपना पवित्र नाम भी सन् १८५७ की क्रान्ति को दिया। जिन्होंने धर्म एवं देश के लिए १८५७ का युद्ध किया उन सभी का यही नाम होगया। मित्र तथा शत्रु सभी समान रूप से उनको "पाण्डे" के ही नाम से पुकारने लगे। प्रत्येक मां को अपने बच्चे को अभिमान के साथ इस वीर की कहानी बतानी चाहिये।"

"War of Independance 1857" by Savaraller Page 46.

जुल्मी ब्रिटिशशाही के अत्याचारों के विरुद्ध सन् १८५७ ई० में जो सब से पहिले सीना खोल कर बदला लेने को आया तथा जिसे साम्राज्यशाह लाख कोशिश करके भी अपना न बना सका।

आखिर जिस अनूठे रण बाँके वीर को गौराशाही ने फांसी के तख्ते चढा दिया । वह क्रान्ति का महान् पुजारी व भारत मां का लाडला श्री मंगल पाण्डे था । जो सन् ५७ की आजादी की लड़ाई में सर्व प्रथम शहीद हुआ ।

वैसे तो सन् ५७ की लडाई का श्रेय झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब, तात्या टोपे, बहादुरशाह, अजीमुल्लाखां प्रभृति वीरो को है । किन्तु सर्व प्रथम स्वतन्त्रता के हवन कुण्ड में श्री मगल पाण्डे ने अपनी आलौकिक आहुति देकर राष्ट्र को प्रेरणा दी । जिसकी स्मृति राष्ट्र के युवकों की धमनियों में स्फूर्ति, बल, साहस और मर मिटने की लालशा का संचार करेगी ।

सन् १८५७ के गदर के कारणों में से एक यह भी था कि भारतीय सिपाहियों को जो कारतूस दिये गये थे उन में गाय व सूअर की चरबी लगती थी । प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहास लेखक श्री विलियम लैकी लिखते हैं—यह एक लज्जाजनक और भंयकर सत्य है कि जिस बात का सिपाहियों को विश्वास था, वह बिलकुल सच थी । इस घटना पर फिर से दृष्टि डालते हुए अंग्रेज लेखकों को लज्जा के साथ स्वीकार करना चाहिये कि भारतीय सिपाहियों ने जिन बातों के कारण विद्रोह किया था, उनसे ज्यादा जबरदस्त बातें कभी किसी विद्रोह को उचित साबित करने के लिये और हो ही नहीं सकती ।"

फरवरी सन् १८५७ में बैरकपुर की उन्नीसवीं पलटन को नये कारतूस काम मे लाने को दिये गये, मगर हिन्दुस्थानी सिपाहियों ने उपयोग करने से इन्कार कर दिया । इस पर अंग्रेज अफसरों ने बरमा से गोरी पल्टन बुला कर उस भारतीय पलटन से हथियार

उलवा कर नौकरी से हटाने का निश्चय किया । हिन्दुस्थानी सिपाहियों को जब इस इरादे का पता चला तो उन्होंने शस्त्र लौटाने के बजाय तुरन्त विप्लव करने की ठानी, इस पर उनके भारतीय अफसरों ने ३१ मई तक रुके रहने को समझाया क्योंकि ३१ मई को सम्पूर्ण भारत में एक साथ विद्रोह करने का निश्चय पूर्ण रूपेण तय हो चुका था । मगर स्वाभिमानी मंगल पाण्डे, जो कि इसी उन्नीसवीं पलटन का एक नौजवान सिपाही था, लाख समझाने पर भी न रुका और घोर अपमान को सहना उसके लिये अति दुष्कर हो गया ।

२९ मार्च सन् १८५७ ई० को परेड के मैदान में पलटन बुलाई गई । पलटन के आते ही मंगल पाण्डे अपनी भरी बन्दूक लेकर सामने कूद पड़ा और चिल्ला कर बाकी सिपाहियों को अंग्रेजों के खिलाफ धर्म-युद्ध शुरु करने को कहा । इस पर मेजर ह्यूसन ने पाण्डे को पकड़ लेने का हुक्म दिया, मगर कोई सिपाही पकड़ने को आगे न बढा । इतने में मंगल पाण्डे ने गोली से वहीं मेजर ह्यूसन का काम तमाम किया । इस पर लेफ्टिनेन्ट बाघ घोड़े पर आगे बढ़ा, घोड़े के पहुँचने के पहले ही मगल पाण्डे ने दूसरी गोली से लेफ्टिनेन्ट साहब को मय घोड़े के जमीन पर धराशाही कर दिया व तीसरी गोली का निशान लगाने का विचार किया कि लेफ्टिनेन्ट बाघ ने लपक कर पाण्डे पर पिस्तोल चलाई, किन्तु पाण्डे बाल २ बच गया व फौरन से तलवार निकाल कर लेफ्टिनेन्ट बाघ को वहीं ढेर कर दिया । थोडी देर बाद कर्नल व्हीलर ने पाण्डे को पकड़ने के लिये सिपाहियों को आदेश दिया, मगर सब ने इन्कार कर दिया । इस पर कर्नल साहब जनरल को बुला लाये, ज्यों ही जनरल गोरे सिपाहियों के साथ पाण्डे की और बढा त्यों ही मंगल पाण्डे ने खुद अपनी छाती पर गोली चलाई व घायल होकर गिर पड़ा तथा

गिरफ्तार कर लिया गया मंगल पाण्डे को कोर्ट मार्शल द्वारा फांसी की सजा सुनाई गई। फांसी देने को ८ अप्रेल का दिन तय किया गया, परन्तु बैरकपुर भर में किसी जल्लाद ने पाण्डे को फांसी लगाने को स्वीकार नहीं किया। आखिर कलकत्ते से चार आदमी बुलाये गये मंगल पाण्डे को ८ अप्रेल सन् १८५७ के प्रातःकाल में फांसी दे दी गई।

फांसी मंगल पाण्डे के गले में पड़ चुकी थी, नीचे से किसी ने पूछा, "घर कुछ सन्देश भेजना है ?"

"हां !" मंगल ने हंसते हुए कहा।

"क्या ?" "घर को नहीं, देश को भेजना है।"

मंगल पाण्डे की आंखें लाल हो गई, आवेश में बोला, "देश को मेरा खून देना और कहना तुम्हें इसकी सौगन्ध है कि जब तक इन विदेशियों से इस अपमान का बदला न ले लेना, तुम चैन से न बैठना। मरना है तो इन्सानों की मौत मरो, कुत्तों की तरह जंजीरें घसीट घसीट कर नहीं।"

रूमाल हिला और तख्ता हट गया।

हर साल समस्त भारत में राष्ट्रीय सप्ताह ६ से १३ अप्रेल तक मनाया जाता है। देशवासियों से प्रार्थना है कि वे ८ अप्रेल के दिन प्रति वर्ष मंगल पाण्डे की याद को तरो ताजा करके अपने में नवीन स्फूर्ति पैदा करें।

राष्ट्र के प्रथम जनतन्त्र दिवस के शुभ अवसर पर जिसकी नींव में सर्व प्रथम मंगल पांडे ने अपने खून को गिराया, उस पाण्डे की महान आत्मा को मैं अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करता हूँ।

॥ जय-हिन्द ॥

[५]

— अनूठा रणबांका —

—श्री ठाकुर जोरावरसिंह—

अभी तक आम जनता ज्यादातर यही समझती रही है कि दिल्ली में वाइसराय लार्ड हार्डिञ्ज पर बम श्री रामबिहारी बोस ने फेंका था किन्तु वास्तव में लार्ड हार्डिञ्ज पर बम फेंकने वाले राजस्थान केसरी स्वर्गीय ठाकुर केसरीसिहजी बारहट के छोटे भाई व अमर शहीद वीर कुँवर प्रतापसिंह के चाचा श्री ठाकुर जोरावरसिंह थे।

जब दिल्ली के चांदनी चौक में वाइसराय महोदय का जलूस बड़ी शान शौकत से निकल रहा था, गोराशाही के गुरगों का जबरदस्त पहरा लगा हुआ था, उस वक्त इस अनूठे रणबांके वीर ने किस कमाल के साथ बुरके में से लाट साहब पर बम का निशाना मारा, वह संसार के इतिहास में सर्वदा के लिये एक स्मरणीय

घटना रहेगी। बम फेंक कर किस बहादुरी, हिम्मत के साथ ठाकुर जोरावरसिंह ब्रिटिश शाही की आंखों में धूल झोंक कर लापता हुए कि अपने पूरे साधनों का उपयोग करके भी ब्रिटिश सरकार आजन्म उस वीर का पता न लगा सकी। ठाकुर साहब दिल्ली से फरार होकर, अज्ञातवास में चले गये व अज्ञातवास काल में अपने आपको भारत माँ को स्वतन्त्र कराने के प्रयत्नों में झोंक कर, अपने जीवन को उत्सर्ग कर, भारतीय क्रान्ति के इतिहास में एक अनमोल पृष्ठ जोड़ दिया।

हम देशवासी उस महान आत्मा को आज अपनी श्रद्धाञ्जलि अर्पित करते हैं।

❀ जय-हिन्द ❀

[६]

स्वर्गीय राव गोपालसिंहजी खरवा नरेश

स्वर्गीय राव गोपालसिंहजी, उन इने-गिने महापुरुषों में से थे, जिन्होंने देश व धर्म के लिये सर्वस्व त्याग देने में ही इस जीवन की सार्थकता मानी। जब कि विदेशी शासकों की कूटनीति द्वारा भारत के प्रतापी राजा महाराजा भी अपने गत गौरव को भूल चुके थे, तथा मद और ऐश्वर्य में इतने खो चुके थे कि उन्हें अपने देश के प्राचीन गौरव का तनिक भी विचार न रहा, ऐसे काल में स्वर्गीय राव साहब ने अपने अपूर्व त्याग तथा आत्म बलिदान द्वारा देश के सम्मुख एक अपूर्व आदर्श उपस्थित किया। यह उन्हीं का साहस था कि अपनी वंशागत जागीर की चिन्ता न करते हुए स्वयं को देशोद्धारक कार्यों में लगा दिया तथा भारत के क्रान्तिकारी इतिहास में एक अनुपम पृष्ठ जोड़ दिया।

स्वर्गीय राव साहब का जन्म खरवा राज्य परिवार में सन् १८७२ में ने हुआ था। बाल्यकाल से ही आपको देश के प्राचीन गौरवमय इतिहास ने अत्यन्त प्रभावित किया। प्रताप, शिवाजी

आदि की वीरता पूर्ण गाथायें सुन कर वे पुलकित हो उठते थे। आयु के साथ ही साथ उनकी तीव्र बुद्धि भी अधिक प्रखर होती गई। देश की तत्कालीन परिस्थितियों ने आपका ध्यान आकर्षित किया। उन्हें अनुभव हुआ कि विदेशी शासन में बँधा हुआ भारत अपने गौरव को विस्मृत करता जा रहा है। देश की गुलामी के साथ ही साथ देशवासी मानसिक पराधीनता भी स्वीकार करते जा रहे हैं। वास्तव में उस समय देश के धनिक व्यक्ति तथा राजा महाराजा अपने अपने स्वार्थों में लीन हो राष्ट्रीय हितों पर कुठाराघात करने में लगे हुए थे। ऐसे काल में इस ओर ध्यान केन्द्रित करने की प्रेरणा राव साहब के साहसी हृदय में उत्पन्न हुई।

देश के अन्य स्थानों की भांति ही राजस्थान में भी क्रान्तिकारी भावनाओं का उदय हो रहा था। मातृभूमि की रक्षा के लिये देश के सपूतों द्वारा विभिन्न आन्दोलनों का सूत्रपात हो रहा था। इन आन्दोलनों ने राव साहब का ध्यान भी आकर्षित किया तथा उन्होंने भी देश को स्वाधीन करवाने के प्रयत्नों में योग देने का निश्चय किया। तत्कालीन नेताओं तथा प्रमुख कार्यकर्ताओं से मिल कर आप सक्रिय रूप से राजनैतिक हलचलों में भाग लेने लगे। उनके ये कार्य अधिकारियों को बेतरह खटके और वे इनकी ओर से सतर्क रहने लगे। किन्तु देश हित की कामना करने वाले कब किसी शक्ति से डरे हैं ! यदि वे या उन्हीं की भांति अन्य व्यक्ति भय से देशोपयोगी कार्यों को त्याग देते तो कौन कह सकता है कि इस देश को स्वतन्त्रता प्राप्त हो जाती ?

उनकी गति विधि पर सरकार ने सख्त निगरानी रखना प्रारम्भ कर दिया किन्तु इतने पर भी जब सम्राट के शासन के

अस्तित्व में ही सन्देह होने लगा तो उन्हें १६१४ में श्री विजयसिंहजी पथिक, जयपुर के सवाईसिंहजी तथा आपके भाई श्री मोड़सिंहजी के साथ टाटगढ़ में बन्दी बना लिया गया। ६ वर्ष तक आपको नजरबन्द रखा गया।

रिहाई के पश्चात १६२० में राव साहब को अजमेर में होने वाली प्रथम दिल्ली व अजमेर मेरवाडा प्रान्तीय राजनैतिक परिषद् का सभापति चुना गया। भाषण कुछ अंशों में आगे प्रकाशित है। पं० मोतीलालजी नेहरू की अध्यक्षता में होने वाली द्वितीय दिल्ली व अजमेर मेरवाड़ा प्रान्तीय श्री आसफअली वर्तमान उडीसा गवंनर भी 'इस में सम्मिलित थे राजनैतिक परिषद् के आप स्वागताध्यक्ष रहे।

स्वर्गीय राव साहब लोक मान्य तिलक के अनन्य उपासक थे। क्रांतिकारी विचारों से पूर्ण आप प्रबल समाज सुधारक भी थे। जेल से आने के बाद आप मालवीयजी तथा लाला लाजपत राय आदि के साथ हिन्दू महासभा के कार्य क्षेत्र में आये, एवं आपका आर्यसमाज के साथ भी निकट सम्पर्क रहा। लाहौर में २५, २६, २७, दिसम्बर १६३१ को होने वाले प्रथम रियासती हिन्दू हितैषी सम्मेलन के आप सभापति चुने गये।

कुशल लेखक होने के साथ ही साथ वे उच्च कोटि के वक्ता भी थे। उनकी भाषण शैली प्रतिद्वन्दियों पर सीधा प्रहार करती थी। जो कुछ वे चाहते थे उसे सीधे सादे शब्दों में जनता के सम्मुख रख देते थे। १६३५ में कानपुर की हिन्दू सभा में व्याख्यान देते हुए स्वर्गीय मौलाना शौकतअली, व मुहम्मद अली को लक्ष करते हुए आपने कहा—

"भाई साहब, मैं राजपूतों की वीरता की बातें कर रहा हूँ जो कि आपको भी बहुत पसंद है। ध्यान पूर्वक सुनिये। उन्होंने जो कुछ भी उत्तर दिया मैं दूर होने के कारण न सुन सका परन्तु अन्य लोगों के कहने से मालूम हुआ था कि उन्होंने "आपके लिए मेरा सिर हाजिर है" यह कहा था। इससे प्रतीत होता है मेरे कहने को वे समझे नहीं थे। मेरे जानने में यह आया कि इस उपरोक्त घटना के कई दिनो पश्चात मौलाना शौकतअली साहब ने बम्बई में व्याख्यान देते समय मेरे लिए कहा था कि "राव साहब गोपालसिंह राठोर महाराणा प्रताप की जंग भरी तलवार अब भी दिखलाते हैं "इस पर मेरा यह कहना है कि मेरा यह शरीर उमी खून का बना हुआ है जिससे पूजनीय महाराणा प्रताप का था तो मैं वह तलवार दिखाऊ तो नई बात क्या? किन्तु भाई साहब! आपके लिए तो सुना है कि जैरुसलम की तलवार और लंकाशायर के जुलाहों के कल कारखानों का प्रभाव हिन्दुस्थान में दिखलाना चाहते हैं। मैंने आज तक हिन्दु मुसलमानों में विरोध फैलाने की कार्यवाही नहीं की परन्तु यह कहते खेद होता है कि आप हिन्दुओं के लिए बहुतसी ऐसी कार्यवाही कर रहे हैं जिन से विरोध बढे और गोलमेज सभा में जाकर कुछ ऐसा ही रंग दिखलाया है। अपने कर्त्तव्य के कारण मेरे और भाई शौकतअली में कितना ही मत भेद हो परन्तु मेरी व्यक्तिगत मित्रता उसके साथ वैसी ही है जैसी होनी चाहिये। महाराणा प्रताप की तलवार, शिवाजी या दुर्गादास राठोर की तलवार किसी की भी मान ली जाय एक ही बात है, इसकी तीखी धार कभी मन्द नहीं होती। वह वैसी ही कठोर और वैसी ही तेज धार युक्त बनी रही है और बनी रहेगी जैसी कि उन प्रातः स्मरणीय धर्म रक्षक वीरो के हाथ में बनी हुई थी। अधिक समय तक काम में न लाने से यदि कुछ जंग लग भी जाता है तो कर्त्तव्य-धर्म-बल से उठे हुए हाथ से चलती रहने पर

रुधिर से घुलने पर अधिक तेज होकर अधिक चमकने लगती है। मेरा तो यह कहना है कि हिन्दु मुसलमान दोनों की तलवारें एक होकर रहें।"

उनके उपरोक्त भाषण द्वारा ज्ञात होता है कि देश की प्राचीन संस्कृति के प्रति वे कितना मोह रखते थे और उनके कार्यों में कितनी दृढता तथा साहस की भावनाओं का समावेश रहता था।

जीवन के अन्तिम दिनों में राव साहब अधिकतर अस्वस्थ रहने लगे। उस समय उनकी प्रवृत्ति कृष्ण उपासना की ओर पूर्ण रूप से झुक चुकी थी। अपना समस्त समय वे कृष्ण भक्ति व उपासना में ही बिताते थे स्वर्गीय राव साहब का ६६ वर्ष की आयु में १३ मार्च १६३६ को अजमेर में देहान्त होते समय उनके मुख पर पूर्ण शान्ति थी तथा जीवन के अन्तिम क्षणों तक वे कृष्ण की उपासना में लगे रहे। उस समय वे आंतों के केन्सर के भीषण रोग से पीडित थे किन्तु कष्ट में भी उनकी भक्ति के प्रवाह में कमी न हो सकी। स्वयं श्री कृष्ण भगवान ने उन्हें उठाया। यह कपोल कल्पित बात नहीं। सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी श्री प० झावरमलजी शर्मा (खेतड़ी, जयपुर) ने कल्याण के गीता-तत्वांक खण्ड तीन, वर्ष १४, अक्टूबर ३६, पेज १२३०, ३१, ३२ पर (एक भक्त के महाप्रस्थान का चमत्कारिक दृश्य) नाम से एक लेख जो कि अजमेर के सुप्रसिद्ध डा० श्री अम्बालालजी शर्मा ने लिखा, प्रकाशित करवाया। श्री अम्बालालजी ने राव-साहब के अन्तिम समय का वर्णन करते हुए लिखा है —

"राव गोपालसिंहजी श्री कृष्ण के अनन्य भक्त बन गये। पिछले आठ वर्ष उन्होंने वीतराग साधू की भाँति कभी पुष्कर एवं कभी खरवा के बाहर एकान्त स्थान में रह कर भगवत् स्मरण में बिताये।

—तिलक युग के राणा प्रताप,—
—() राष्ट्रवर श्री राव गोपालसिंहजी खरवा ()—
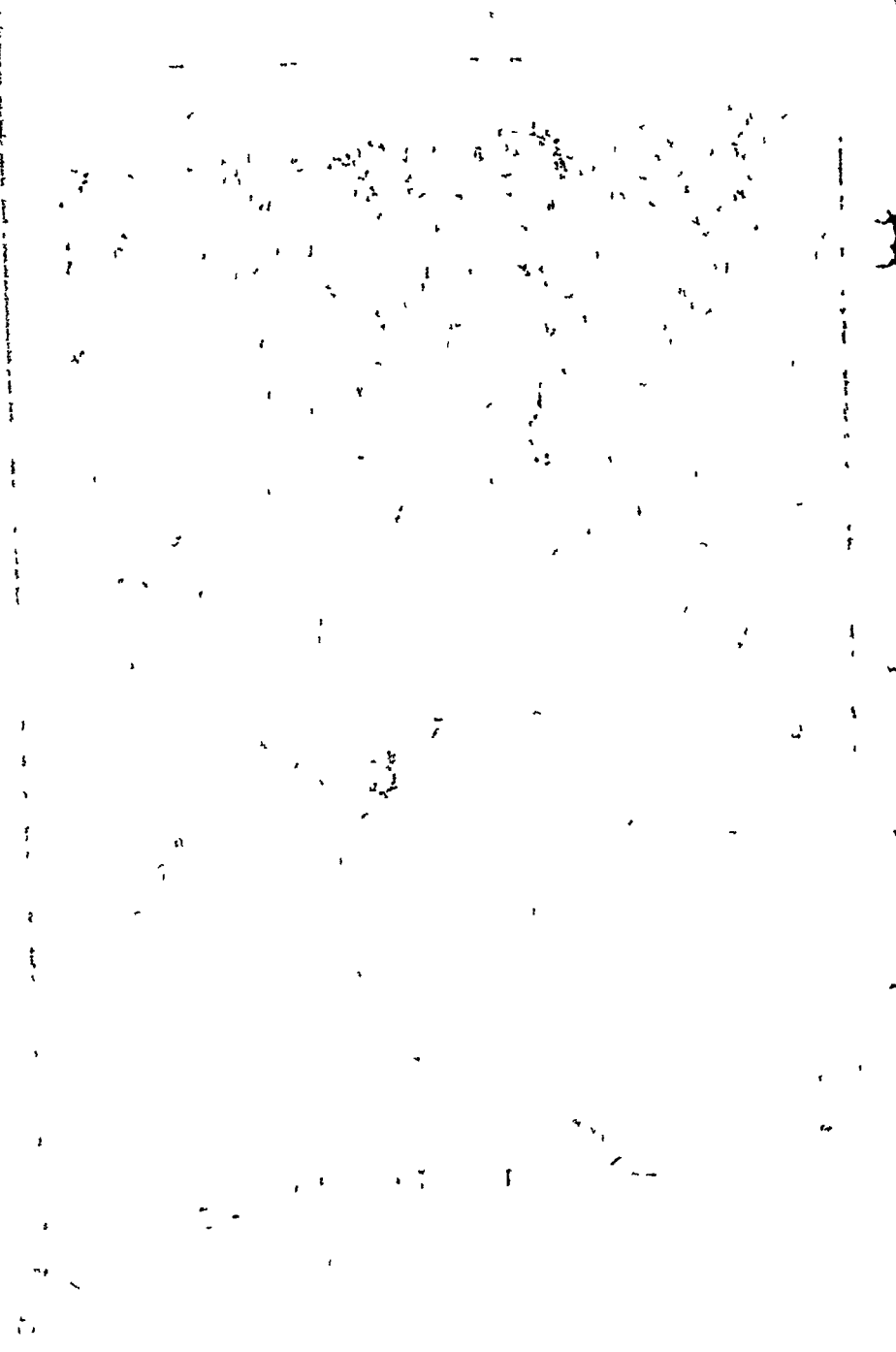
वे अपने दिनों में उग्रराजनीति के माननें वाले थे। देश की स्वतन्त्रता के लिए महान बलशाली ब्रिटिश गवर्नमैन्ट से भिड गये. बहुत कुछ कष्ठ उठाये एवं खरवा के राज्य का भी त्याग करना पडा।

अब उनकी मृत्यु की पुण्यमयी कथा सुनाता हूं :—

मृत्यु के लगभग दो मास पूर्व उनके शरीर में उदर विकार के लक्षण प्रकट हुए, मैंने एक्सरेज द्वारा परीक्षा कराई एवं निश्चय हुआ कि उनके आंतों का कैन्सर रोग है। वेदना इतनी भयंकर थी कि मार्फिया के इन्जैक्सन से भी कोई आराम नही मिलता था, किन्तु इस भीषण वेदना मे भी मन को आश्चर्यजनक रूप से एकाग्र करके श्री कृष्ण ध्यान में वे नियम पूर्वक बैठते थे एवं जितने समय वे ध्यान में रहते थे, वेदना की रेखा उनके ललाट पर जरा भी न रहती थी। इस बुढ़ापे में, ६६ वर्ष की उम्र में, २ महिने कुछ न खाकर भी उनमें तेज और साहस की कमी नहीं हुई थी।

मृत्यु के चार दिन पूर्व रोग के विषके कारण उन्हें हिचकी और वमन शुरु हो गई थी। पिछले चार दिनों में तो एक चम्मच पानी भी उनके पेट मे न जासका किन्तु भगवान् का ध्यान तब भी नहीं छूटा।

मृत्यु के पहले दिन सायंकाल के समय मैंने उनसे निवेदन किया कि यदि कोई आपको वसियत आदि करना हो तो शीघ्र करलें। विष के कारण (toxemia) आप रात्री में मूर्छा की अवस्था में अवश्य हो जायेंगे। वे कहने लगे यह असम्भव है कि गोपालसिंह चोदू (हिजड़े) की मौत मर जाय, मौत से भी चार हाथ होंगे'। आप देखते जाइये, भगवान श्रीकृष्ण क्या करते हैं ?

मेरे आश्चर्य की सीमा नहीं रही। जब प्रातःकाल ५ बजे मैं उठा

मैंने उन्हें ध्यान में बैठे देखा। ध्यान पूरा होने पर वे कहने लगे कि 'डाक्टर साहब, आज हिचकी बन्द है, वमन भी बन्द है, दस्त भी स्वत: एक महिने बाद आज ही हुई है। मैं बहुत अच्छा हूँ, हल्का हूँ।" मैंने एक डाक्टर की तरह कहा कि ईश्वर करे आप अच्छे हो जायें वे कहने लगे कि नहीं, शरीर नहीं रहेगा किन्तु भगवान के भजन में विघ्न न हो इसलिए श्रीकृष्ण ने ये बाधाएँ दूर कर दी हैं।

करीब १० बजे मैं आया तो देखा कि उनकी नाड़ी जा रही है। मैंने कहा "रावसाहब, अब करीब आधा घण्टा शेष है।" रावसाहब कहने लगे-नहीं अभी पांच घण्टे शेष है, घबरायें नहीं। सवा दो बजे मैं पहुँचा। नमस्कार किया। फिर मुझे गीता सुनाने को कहा। जब वे गीता सुन रहे थे तो उनका मस्तिष्क कितना स्वच्छ था। इस समय भी वे कहीं २ किसी पद का अर्थ पूछते थे। ठीक मृत्यु से ५ मिनिट पूर्व वे आसन पर बैठ गये। गंगाजल पान किया, तुलसी ली, गंगाजी की माटी का ललाट पर लेप किया, एवं वृन्दावन की रज सिर पर रक्खी। हाथ जोड़ कर ध्यान करने लगे।

कहने लगे डाक्टर साहब अब आपका चेहरा नहीं दिख रहा है, किन्तु भगवान श्रीकृष्ण के दर्शन हो रहे हैं।

महात्मन्, अब कूच हो रहा है। ये श्रीकृष्ण खड़े हैं इनके चरणों में लीन हो रहा हूँ।

हरि ओम् तत्सत, हरि ओम्

बस एक सैकंड, महाप्रस्थान हो गया।

हम सब विस्फारित नेत्रों से देखते रह गये।

धन्य आधुनिक भीष्म, धन्य मृत्युञ्जय, धन्य, तुम्हारी जैसी मौत पर दुनियां की बादशाहत कुर्बान है।"

स्वर्गीय राव साहब राजनीतिज्ञ होने के साथ ही साथ कितने धार्मिक थे यह उपरोक्त घटना से प्रकट हो जाता है।

स्वर्गीय राव साहब के राजनैतिक विचारों का कुछ पता, उनके निम्नलिखित भाषण से और लगता है, जो कि उन्होंने दिल्ली अजमेर-मेरवाडा प्रान्तीय राजनैतिक परिषद् के प्रधान की हैसियत से २८ मार्च १६२०ई० को अजमेर में दिया था। पूरा भाषण तो बहुत बड़ा है, कुछ अंश उधृत किये जाते हैं :—

"मैं पौने पांच वर्ष तक नजर बन्दी भोगते हुए जन्म स्थान और निज प्रान्त से बाहर रहकर कल ही यहां पहुँचा हूँ और आज आपने मुझको इस राजनैतिक सभा का सभापति बनाया जो कुछ दृश्य आज इस समय देख रहा हूँ, उससे मुझको भारी परिवर्तन प्रतीत हो रहा है। हिन्दुस्तान के सब प्रान्तों से राजपूताना पीछे पडा हुआ माना जाता है, परन्तु इस समय यहां के लोगों में जैसी राजनैतिक जागृति हुई है, उसको देखते हुये पीछे पड़ा हुआ नहीं कहा जा सकता इस सभा में जैसा उत्साह हम लोग दिखा रहे हैं, उस से भविष्य के लिये आशा बड़ी प्रबल हो चली है। ईश्वर वह दिन शीघ्र दिखलाने वाला है, जब राजपूताना किसी से पीछे नहीं, किन्तु अपने पूर्वजों के समान कर्तव्य पालन में सबसे आगे होकर रहेगा। (करतल ध्वनि)

मिस्टर आसफअली‡ ने अभी सभा की ओर से मुझ को धन्यवाद देते हुए जो कुछ कृपा पूर्ण शब्द कहे हैं, उनके योग्य मैं

---

‡वर्त्तमान उड़ीसा गवर्नर —लेखक

अपने आपको नहीं समझता ('आप योग्य हैं' आप योग्य हैं—की ध्वनि)। मिस्टर आसफअली ने हमारे पूर्वजों के महत्व और कर्तव्य-परायणता का उल्लेख करते हुए कहा कि मुसलमानों के लोहे को राजपूतों ने माना है और राजपूतों के लोहे को मुसलमानों ने। महाशयो ! परस्पर की सच्ची पहिचान वही है जो एक दूसरे के साथ बर्ताव करके परीक्षा करली जाती है। जिस दिन से मुसलमानो ने हिन्दुस्तान में आने के लिये खैबर की घाटी के मुहाने पर पैर रक्खा, एक हाथ मूंछ पर एक हाथ में तलवार और जबान पर ललकार थी कि, हिन्द के वीरों, जग के मैदान में सामने आओ और हाथ दिखलाओ। जिसको दे खुदा, उसी की फतह है, ऐसा ही हुआ। क्षत्रियों ने अपने कर्तव्य के लिये बड़े बड़े युद्ध किये। हार जीत ईश्वराधीन बात है, और कर्म का फल है। आपस की फूट के कारण हमारी हार हुई। हिन्दुस्तान में मुसलमानो का राज स्थापित हो जाने पर भी स्वतत्रता के लिये समय समय पर उनके साथ हमारे घोर युद्ध होते रहे। कभी कभी तीस तीस चालीस २ वर्ष तक अपनी तलवार की झलक और तोप की गरज को जारी रख कर हम राजपूतो ने निज कर्तव्य-धर्म-पालन के लिये युद्ध किये और अन्त समय तक कर्तव्य को नहीं त्यागा। (करतल ध्वनि)। वास्तव में देखा जाय तो केवल एक वर्ष ही नहीं, दो वर्ष नहीं, दस वर्ष नहीं, बीस वर्ष नहीं, किन्तु निज देश की स्वतन्त्रता, मान, गौरव और मर्यादा की रक्षा के लिये एक हजार वर्ष तक तलवार चलाने वाले धर्म परायण महानुभावों का खून जिन लोगों की रगो में चल रहा है, उनमें का एक आदमी आपके सामने सेवा में खड़ा हूं (करतल ध्वनि) कई लोग कहते हैं कि आजकल राजपूत जाति मरे हुए के समान हो गई है तो भी ईश्वर की कृपा से यह गौरव राजपूत जाति और राजपूताना को अब भी प्राप्त है कि

हिन्दू सूर्य उदयपुर के महाराणा ने किसी तख्त के सामने अपना सिर नहीं झुकाया (करतल ध्वनि)। ताबे होने वाले राजपूत, बादशाही दरबार मे रह कर भी निज की मान-मर्यादा की रक्षा के लिये अपनी तलवार पर लाल रंग चढ़ाये बिना नहीं रहे। हिन्दू मुसलमानों ने आपस में लड कर दोनों ही ने अपना पतन किया।

इस समय सारे देश में हल चल मची हुई है और राष्ट्रीय भाव दिन पर दिन बढ़ता चला जाता है जिसका कि हमारी सभा ही एक पूरा प्रमाण है। इस सारी हल चल का कारण राजनीतिक स्वत्व का भेद भाव है। पेट की रोटी के लिये पीठ पर असबाब की पोटरी, हाथ में गज लिये योरुप से हिन्दुस्थान में आकर घर घर फिरने वाले बनियों ने युक्ति और धूर्तता के आश्रय से यहां राज्य जमाने का प्रपंच रचा। उसमें इङ्गलेण्ड के व्यौपारी सफल हुए। गदर के पहिले तक उन व्यौपारियों का राज्य रहा। उन के हाथ से हमारा भला होना सम्भव ही कब था? उनको हटा कर ब्रिटिश राज्य सत्ता ने इस देश का शासन अपने हाथ में लिया, किन्तु देश को दिये हुए वचन और विश्वास सभी निष्फल हुए। (शेम शेम की ध्वनि) देश के लोगों ने साधारण राजनैतिक स्वत्व अधिकारियों से मांगे, तो उनकी सुनाई नहीं की गई। इस से शासकों और शासितों में परस्पर विरोध भाव बढ़ता गया। अधिकारियो की दमन नीति से दुःखी होकर देश के कई स्थानों में आत्मत्यागी उग्र प्रकृति के लोगों ने इस दमन नीति के प्रतिकार में तमचे, बम वगैरा से काम लेने का रास्ता पकड़ा। यह दुःख की बात है कि, हमारे ही सारे देश में शासकों और शासितों का परस्पर का विश्वास उठता जाता है और खींचतान दिन दिन बढ़ती जाती है। देश सेवा जैसे पवित्र काम को कलङ्कित साबित करने की विधि रची और सैंकड़ों आदमियों को

दण्ड दिया और उनको बुरा साबित करने का निष्फल प्रपंच रच कर भी उनको बुरा साबित नहीं कर सके (करतल ध्वनि) मैं भी एक ऐसा व्यक्ति हूं, जिसके साथ यही घटना हुई है, मुझको अनेक प्रकार के कष्ट तो दिये ही गये, परन्तु उस पर कलश चढाया गया कि, जब मैं जेल मे था, तब श्रीमान् लार्ड चैम्सफोर्ड ने सन् १६१७ के नवम्बर मास में यहां अजमेर के इस्तमुरारदारों के दरबार मे भाषण करते हुए, कोई कारण प्रकट किये बिना ही, यह फरमाया कि—मैंने अपने कामों के साथी इस्तमरारदारों और अपने निज वंश के सुनाम पर धब्बा लगाया। (जनता ने जय जय घोष उचारा और कहा—'नहीं नहीं कदापि नहीं) यह बात विदित होने पर मैंने उक्त लाट साहब से मेरे लिये ऐसे शब्द उपयोग करने के लिए कारण बतलाने के लिये निवेदन किया और प्रार्थना की कि, मुझको अवसर दिया जावे, तो मैं अपने को निर्दोष साबित कर दूंगा। परन्तु उसका यह उत्तर आया कि दरख्वास्त खारिज कर दी गई। (लाट साहब के लिये लज्जा की बात है) मैं श्रीमान् लार्ड चैम्सफार्ड को चैलेंज करता हूँ, कि कोई मुझको कलङ्कित काम करने वाला साबित करे। श्रीमान् लाट साहब को यह भूल नहीं जाना चाहिये था कि किसी के दोष प्रकट किये बिना ही किसी को दोषी कह देना भी एक प्रकार का दोष है। (जरूर है जरूर है)। देश भक्ति और राज भक्ति दोनों को ही सच्ची न्याय दृष्टि से देखना चाहिये। क्या गवर्नमेन्ट को और क्या हम को, दोनों ही को इस बात का पूरा ध्यान रखना चाहिए कि देश भक्ति करने वाले राज द्रोही नहीं हो सकते, और राजभक्ति करने वाले देश द्रोही नहीं हो सकते। यहां पर अंग्रेजी राज्य शुरु होने से आज तक अजमेर प्रान्त में मैं ही एक प्रथम आदमी हूं जिसने आज से तेईस वर्ष पहिले सरकार की सेवा करने के लिये युद्ध में जाने की दरख्वास्त

दी। परन्तु इस कार्य के लिये किसी भी वायसराय ने आज तक कृपा पूर्ण एक भी शब्द नहीं फरमाया और स्वदेश सेवा जैसे परम पवित्र कर्त्तव्य पूर्ण मेरे कार्य पर अधिकारियों ने उलटा सुलटा रंग चढ़ाया और मुझको नजर बन्द कर दिया। रियासत कुर्क करली गई और श्रीमान् लार्डचेम्सफोर्ड ने मुझको वंश के सुनाम पर धब्बा लगाने वाला कह कर दुर्व्यवहार की हद कर दी। क्या यह न्याय की बात है? क्या यही बर्ताव है? जिसको देख कर सरकार की सेवा करने के लिये हमारा मन बढ़े?

अधिकारियों को शर्म आनी चाहिए, ब्युरोक्रेट अफसरों के मन में किसी सुकाम को सुदृष्टि से देखने का भाव तो एक पाव भर है, और सुगुणों में भी दोष निकाल देने का भाव दस सेर का वजन रखता है।

जो लोग सिद्धान्त हीन राजभक्ति दिखाते हैं वे असली राज भक्त नहीं है। वे स्वार्थी या चापलूस है। वे केवल प्रयोजन साधन के लिये प्रपच करते हैं (करतल ध्वनि)। ऐक्य ही देशोद्धार का मूल मन्त्र है। सुकार्य-सम्पादन में बड़े से बड़े हजार कष्ट आ पड़ें, तब भी न घबराइये और साहस, धैर्य, सहनशीलता और वीरता से अपने कर्त्तव्य धर्म का पालन करना ही हमारा सर्वोपरि बल है और ईश्वर हमारा सहायक है। (करतल ध्वनि)

अपने आदर्शों, कर्तव्य निष्ठा तथा ध्येय के प्रति विश्वास आदि गुणों के द्वारा ही वे स्वतंत्र भारत की निर्माताओं में गिने जायेंगे।

❀ जय-हिन्द ❀

[७]

— तिलक युग का भामाशाह —

देशभक्त दामोदर

"नर रत्न राठीजी महामना थे और जहां तक मैं जानता हूँ, वे राष्ट्रीयता के जनक स्व० दादाभाई नौरोजी, लोक मान्य तिलक, बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी और बाबू मोतीलाल घोष आदि के घनिष्ट सम्पर्क में रह कर राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस के मञ्च पर स्थान पाने वाले पहले मारवाड़ी सज्जन थे।"

—श्री पं० झाबरमलजी शर्मा, खेतड़ी

बिड़ला, बजाज, डालमिया और सेकसरिया के नाम को जब कोई जानता भी न था, वन्दे मातरम् बोलना भी जब जुर्म था, आज के ४५-५० बर्ष पूर्व बंग भंग, व स्वदेशी आन्दोलन के उस जमाने में जिस ने भामाशाह की तरह लाखों रुपये अपनी मातृभूमि को स्वतंत्र कराने के हेतु व राष्ट्रभाषा हिन्दी की आराधना में दिये, वह महान व्यक्ति अन्य कोई नहीं ब्यावर के देशभक्त दामोदर ही थे ।

तिलक युग के भामाशाह

देशभक्त दामोदरदासजी राठी

स्वर्गीय देशभक्त सेठ दामोदरदासजी राठी, भारत के चमकते हुये सितारों में से एक थे। आप स्वतन्त्रता के उपासकों के सबसे बलवान आसरा, निष्काम दानी, हिन्दी साहित्य सेवियों के अनोखे आश्रय, विशाल भारत के उज्वल पुरुष रत्न, भारतमाता के सच्चे सपूत मारवाड़ मुकुट, माहेश्वरी जाति के राजा व महासभा के प्रमुख संस्थापक, मारवाड़ी-शिक्षा मंडल, वर्धा के परम सहायक व मारवाड़ी समाज के प्रमुख नेता थे। सर्वमान्य राठीजी सहृदय, सरल स्वभावी, निरभिमानी न्याय प्रिय व सत्यनिष्ठ, प्रखर बुद्धि के व्यक्ति थे। आपके धार्मिक व सामाजिक विचार उदार थे।

आपका जन्म ८ फरवरी सन् १८८४ ई० को पोकरण (मारवाड़) में सेठ खींवराजजी राठी के घर हुआ। आप प्रारम्भ से ही होनहार व मेधावी थे। मास्टर श्री प्रभुदयालजो अग्रवाल की संरक्षता में व मिशन हाई स्कूल ब्यावर में आपने मेट्रिक तक विद्याध्ययन किया। १५-१६ वर्ष की आयु से ही आप लोक हित कार्यों में योग देने लगे व साथ हीं में अपने व्यवसाय कार्य की देख रेख करते रहे। आप अत्यन्त कुशल व्यवसायी थे। आपका कृष्णा मील सन् १८६३ ई० में भारतवर्ष भर के मारवाड़ियों में सर्व प्रथम चला। भारत के प्रमुख प्रमुख नगरों में आपकी दूकानें,जीनींग फेक्टरीज व प्रेसेज् थे। इसके आलावा आपका विचार कृष्णा मील की एजेन्सी खोलने का लन्दन में भी था।

आप सिर्फ १६ वर्ष की आयु मे सन् १६०२ में ब्यावर म्यूनीसीपल्टी के सदस्य चुने गये। कमेटी में जाकर आपने खाली कुर्सी ही नहीं तोड़ी बल्कि एक सच्चे सेवक की भांति जनता की सेवा की, जिससे आम जनता में आप बहुत ही लोक प्रिय हो गये।

आप राष्ट्रीय व क्रान्तिकारी दल के थे। आपके राजनैतिक विचार महात्मा तिलक व अरविन्द घोष के से थे। आपने क्रान्तिकारियों की तन, मन, धन से सेवा की। देश के बड़े २ नेताओं से आपका सम्पर्क था। लोकमान्य तिलक व योगीराज अरविन्द घोष को आप ब्यावर लाने में सफल हुए। राष्ट्र के महापिता श्री दादाभाई नौरोजी, भारत भूषण मालवीयजी बंगाल के बूढ़े शेर बाबू सुरेन्द्रनाथ बनर्जी, अमृत बाजार पत्रिका के बाबू मोतीलाल घोष व पंजाब-केसरी श्री लाला लाजपतराय आप पर बहुत स्नेह रखते थे। राष्ट्रवर खरवा के राव गोपालसिंहजी आपके अन्यतम मित्र थे।

आप स्वदेशी के अनन्य भक्त थे। आप बहुधा सोचा करते थे कि देशवासियों के दैनिक व्यवहार की समस्त चीजें स्वदेश में ही तैयार कराने की व्यवस्था हो जिससे भारत की गरीब जनता को भर पेट भोजन मिल सके तथा जिससे जन साधारण में स्वदेश प्रेम का प्रगाढ़ भाव जागृत हो। बंग-भंग आन्दोलन में आपने भारी आर्थिक नुकसान उठा कर बारीक सूत की महीन धोतियां बंगाली भाइयों के लिये भेजी व दूसरे उपायों से भी आन्दोलन में भारी सहयोग दिया। आप राजनैतिक सभाओं, सम्मेलनों में अक्सर सम्मिलित हुआ करते थे व कभी २ भाषण भी दिया करते थे। आप उच्च कोटि के व्याख्यानदाता थे, आपके भाषण को सुन कर जनता मुग्ध हो जाती थी। एक दफा की बात है बंगाल में एक भारी सभा हो रही थी, जिसमें बड़े २ नेताओं के भाषण हो रहे थे, आपने भी सभापति से एक मिनिट बोलने को मांगा, जब आप अपने मारवाड़ी लिबास में मंच पर खड़े हुये, तब बंगालियों ने शोर मचा दिया। मगर जब आप बोलने लगे, अपनी मधुर वाणी

का रसास्वादन कराने लगे तो चारों तरफ से वन्स मोर वन्स मोर (Once more, Once more) की ध्वनि से पंडाल गूंज उठा व आपको १ मिनट के बजाय १० मिनट सभापति को देने पड़े ।

आप उच्च कोटि के शिक्षा-प्रसारक व साहित्य सेवी थे । इस हेतु आपने कई वाचनालय, पुस्तकालय, पाठशालायें, विद्यार्थीगृह व शिक्षा मंडल खोले तथा अनेकों अनाथालय व गुरुकुलों को आर्थिक सहायता दी व हिन्दू विश्व विद्यालय के स्थापनार्थ महामना मालवीयजी को ब्यावर आने पर ११०००) रुपये भेंट किये । सनातन धर्म स्कूल (आज कल कोलेज) ब्यावर व मारवाड़ी-शिक्षा मंडल (नवभारत-विद्यालय) वर्धा आज भी आपकी स्मृति के रूप में विद्यमान है। आप राष्ट्र भाषा हिन्दी के तो अन्यतम पुजारी थे। सन् १६१४ ई० से आपने श्री बाबू गिरिजा कुमार घोष के अनुरोध से कृष्णा मिल्स के बहीखातों में मारवाड़ी के स्थान पर नागरी अक्षर चला दिये, कारण स्पष्ट व्यवहार में आप मारवाड़ी लिपि की हीनता से भली भांति परिचित हो गये थे। आपने स्व० श्री पं० अमृतलालजी चक्रवर्ती के आदेश पर ब्यावर में नागरी प्रचारिणी सभा स्थापित की। जिसके उद्योग और प्रेरणा से अजमेर मेरवाड़ा की अदालतों में श्री० चीफ कमिश्नर साहब ने नागरी लिपि के व्यवहार की अनुमति दी। आप काशी नागरी प्रचारिणी-सभा के प्रबन्ध कारणी के उत्साही सदस्य थे। आपने काशी में मालवीयजी की अध्यक्षता में होने वाले प्रथम हिन्दी साहित्य सम्मेलन को सफल कराने में भी काफी योग दिया व स्वयं भी सम्मिलित होकर आपने ५००) के पुरस्कार की एक व्योपारिक पुस्तक लिखने के लिये घोषणा की। यों तो आपने अनेक राष्ट्रीय पत्रों, संस्थाओं व साहित्य सेवियों को आर्थिक सहायता दो, किन्तु उनका वर्णन दुर्लभ है,

क्योंकि वे लाखों का गुप्तदान करते थे। हां, श्री भगवानदासजी केला की भारतीय ग्रन्थमाला, प्रयाग आज भी राठीजी के हिन्दी प्रेम की याद दिलाती है।

आपके दिल में साहित्य सेवियों के प्रति कितना आदर था। इसकी झलक सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी श्री पं० झावरमलजी शर्मा के शब्दों मे पढ़िये:—

"अन्तिम बार भारत-मित्र छोड़ने के पीछे चक्रवर्तीजी (स्व० पण्डित अमृतलालजी चक्रवर्ती भूत-पूर्व अध्यक्ष हिन्दी साहित्य सम्मेलन) को अपने बड़े कुटुम्ब के भरण पोषण के लिये कष्टानुभव करना पड़ा था। इस कष्टकर स्थिति का इन पंक्तियों के लेखक को पता चला। हृदय व्यथित होगया। सयोगवश उसी समय कृष्ण मिल्स ब्यावर के सहृदय देश भक्त सेठ दामोदरदासजी राठी कलकत्ते आये हुए थे। सेठजी अपनी मिल की शाखा—कलकत्ता स्थित २०१ हरिसनरोड में ठहरे हुए थे। लेखक का उनसे गहरा मिलना जुलना और प्रेम था। मुझे खूब स्मरण है, हिन्दी के अनन्य सेवक पं० चक्रवर्तीजी की कष्ट-कथा मेरे द्वारा सुन कर उनकी आखे गीली हो गयी थी। उन्होंने तत्क्षण कहा "आप चक्रवर्तीजी को यहां बुलाइये।" चौथे पांचवे दिन ही चक्रवर्तीजी पहुंच गये। सेठजी उनसे बड़े प्रेम से मिले और उसी समय कह दिया—"आप बिना काम घर में क्यों पड़े हैं —मेरे साथ ब्यावर चलिये।" चक्रवर्तीजी को कृष्ण मिल्स के कार्य से ३००) रु० मासिक तक की आमदनी होने लग गयी थी।"

जब कहीं दुर्भिक्ष होता, बाढ आजाती तो आपके हृदय को भारी दुःख होता व फौरन से उनके सहायता कार्य में जुट जाते।

आपने दुर्भिक्ष काल में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय को अनाथों व पीड़ितों की सहायतार्थ चन्दे की भारी भारी रकमें भेजी।

आपका पहिनावा मारवाड़ी ढंग का मगर, बहुत साधारण व स्वदेशी वस्त्र का ही होता था। आप मारवाड़ी समाज की आन बान बनाये रखने को सदा आतुर रहते थे। सुप्रसिद्ध लेखक व भारतीय ग्रन्थ माला के संस्थापक श्रद्धेय श्रीभगवानदासजी केला ने आज के ३०-३१ वर्ष पूर्व राठीजी के जीवन चरित्र 'देश-भक्त दामोदर' में लिखा—"श्रीराठीजी मारवाड़ी समाज की प्रतिष्ठा बनाये रखने के लिए सदैव बहुत चिन्तित रहते थे। उन्हें इस बात का बहुत दुःख होता था कि मारवाड़ी शब्द जन साधारण में अपढ मूर्ख अशिक्षित शब्दों का साथी बन रहा है। बम्बई में विक्टोरिया गाड़ी वाले कोचवानों की "रो मारवाड़ी" पुकार से बहुधा उनका खून उबलने लग जाता था। इसके प्रतिकारार्थ वे चाहा करते थे कि मारवाड़ी लोग खूब शिक्षित हों। वे बड़े बड़े देश कार्यों में भाग लेकर व्यक्ति गत प्रसिद्धि तथा जाति गत मान मर्यादा के बढाने वाले हों। नगर २ में मारवाड़ी शिक्षा संस्थायें, मारवाड़ी औषधालय, मारवाड़ी कार्य्यालय खोल कर उन्हें योग्यता पूर्वक संचालित करें। ये लोग बड़े बन कर भी मारवाड़ी पहिनावे को बनाये रखें इस प्रकार अपने आचरण से मारवाड़ी पगड़ी की धाक जमादें। कुछ युवक इस बात के लिये कमर कसलें कि मारवाड़ी जाति का अपमान और मारवाड़ी शब्द का हीनता सूचक प्रयोग न होंने देगें चाहे जो कष्ट या बाधा उपस्थित हों।"

सन् १९०८ ई० में अमरावती में माहेश्वरी महासभा, सुप्रसिद्ध हिन्दी नाटकार व राष्ट्रसेवी श्री सेठ गोविन्ददासजी के पिता श्री

राजा गोकुलदासजी मालपाणी की अध्यक्षता में बड़ी धूम धाम से हुई। इस महासभा के प्रमुख आयोजक श्री रामनारायणजी राठी, श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू व श्री राठीजी ही थे। दिसम्बर १६०६ ई० में नीमच में माहेश्वरी मंडल की स्थापना सेठ रामचन्द्रजी भूतड़ा की अध्यक्षता में की गई। जिसके मंत्री गण श्री जाजूजी व श्री राठीजी ही थे। श्री राठीजी ने शिक्षा प्रचारार्थ मंडल को २१००१) रु० दिये, आप ही इस मंडल के प्रधान आश्रयदाता थे।

आपने श्री जमनालालजी बजाज व जाजूजी के साथ मारवाड़ी शिक्षा मंडल वर्धा की स्थापना की, जिसकी ४-६-१४ को रजिष्टरी हुई। ता०२३ अप्रेल १६१६ को आप मंडल के उप-सभापति चुने गये।

जयपुर के श्री गणेशनारायणजी सोमाणी, श्री गिरिजा कुमार घोष, प्रसिद्ध देशभक्त बाबू संचेतन गंगोली भी आपके मित्र में रहे।

श्री राठीजी सनातन धर्म के अनुयायी थे, फिर भी आपके धार्मिक विचार बड़े उदार थे, आपके धार्मिक विचारों के बारे में सुप्रसिद्ध व पुराने पत्र "श्री वैंक्टेश्वर समाचार" ने लिखा है:—

"राठीजी की भांति विशुद्ध वैष्णव तथा नित्य घन्टों विधि पूर्वक पुरुषोत्तम की पुण्यमयी मूर्ति की सेवा, पूजा और आराधना करने वाले परम-भक्त साधक अन्यान्य धर्म्म समाजों को कभी अश्रद्धा की दृष्टि से नहीं देखते थे। प्रत्युत उनकी भी धनादि से सहायता कर अपने सार्वभौम महत्व की पराकाष्टा सूचित करते थे। भारतवासी मात्र पर उनके आन्तरिक प्रेम का पता पाने से प्रतीत होता था कि कोई महापुरुष राठीजी की मूर्ति में अवतीर्ण हुए हैं।"

राठीजी सब समाजों में आदर की दृष्टि से देखे जाते थे। भारत-धर्म महा मण्डल काशी ने आपको "दानवीर" की उपाधि से अलंकृत करना चाहा, मगर आपने उसे अस्वीकार कर दिया। आर्य समाज और जैन समाज वाले भी आपको पूजते थे। ब्यावर आर्य समाज-भवन की नींव आपने सन् १९१२ ई० में रखी, जब आपको एक मानपत्र भेंट किया गया। उग्र क्रान्तिकारी विचारधारा के बावजूद सरकारी क्षेत्रों में भी आपका भारी मान था। सन् १९११ के दिल्ली दरबार पर सिर्फ २७ साल की आयु में आपको उस समय की सरकार की ओर से मानपत्र दिया गया।

श्री भगवानदासजी केला, राठीजी के राष्ट्रीय कार्यों व क्रान्तिकारी प्रवृत्तियों के विषय में अपनी पुस्तक "देशी राज्यों की जन जागृति" में पृष्ट २६-२७ पर लिखते हैं:—

"श्री राठीजी धनवान थे; क्रान्तिकारी आन्दोलन में इनका खास काम रुपये पैसे से मदद करना था। इन्हें विशेष प्रेरणा सुप्रसिद्ध हिन्दी पत्रकार श्री अमृतलालजी चक्रवर्ती आदि से मिली, जो कुछ समय इनकी कृष्णा मिल में भी काम करते रहे। श्री गिरिजाकुमारजी घोष भी कुछ समय इनके पास ब्यावर में रहे। श्री राठीजी अक्सर देश-भक्त विद्वानों और क्रान्तिकारी विचार वालों को अपने यहां किसी काम पर रख लेते थे, और बहुधा राजनैतिक कैदियों के परिवारों तथा राष्ट्रीय पत्रकारों को गुप्त रूप से सहायता पहुंचाते रहते थे। ये कभी कभी सरकारी कामों में भी कुछ रुपया दे देते थे, तथापि सरकारी अधिकारियों की निगाह में ये खटकते रहते थे; एक दो बार इनकी तलाशी का भी प्रसंग आया।"

देश हित भामाशाह की भांति लाखों रुपये खर्च कर, स्वदेश चिन्ता की अग्नि में राठीजी की आत्मा सिर्फ ३४ चौतीस साल की अल्प आयु में महा प्रयाण कर गई। भारत के इतिहास में इतनी अल्प आयु मे इतना आदर पाने वाले व काम करने वाले विरले ही पुरुष होंगे। मरने के (२ जनवरी १८) कुछ दिवस पूर्व, दिसम्बर सन् १९१७ ई० के अन्तिम सप्ताह में श्रद्धेय श्री भगवानदासजी केला को आपने बारम्बार दोहराया—"केलाजी! Wanted mortyers for the country and the community. Be firm to your convictions. (देश और जाति पर प्राण न्यौछावर करने वालों की आवश्यकता है, काम करने का समय आगया है। अपने विश्वासों पर दृढ रहो। मनुष्य बड़े बड़े पद पालेते हैं, बड़े बड़े काम नहीं करते प्रशंसा के अभिलाषी बने रहते हैं)।"

आपकी मृत्यु का दुखद समाचार पाकर सारा भारत शोक मग्न होगया। आपके निधन पर अनेकों स्थानों पर शोक सभायें हुईं, भारत के सभी प्रमुख २ पत्रों ने आपकी अकाल मृत्यु पर अनेकों आंसू बहायें।

सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्य सेवी श्री चन्द्रधर शर्मा, गुलेरी ने ६-१-१८ को लिखा—"राजपूताने के तथा भारतवर्ष के दुर्भाग्य! ऐसा मनुष्य लाखों में क्या करोड़ों में नहीं होता।"

महा महोपाध्याय पं० बुलाकीराम, विद्यासागर ने ५-२-१८ को लिखा—"उनकी श्रद्धाभक्ति, प्रेम भाव और उदारता को स्मरण करते हुए हृदय विदीर्ण हो रहा है।"

श्रद्धेय जाजूजी ने लिखा—"जिस कार्य में लगते उसे विशेष

उत्साह से किया करते थे। झेली हुई बात एकाएकी छोड़ते न थे। नुकसान हुआ तो भी सहन कर लेते थे पर बात पर डटे रहते थे।"

"भारत-मित्र" कलकत्ता ने लिखा:—

"सेठजी सच्चे देश भक्त थे। होम रूल लीग के आप आजीवन सदस्य थे। राष्ट्र-भाषा हिन्दी के परम भक्त थे। उसकी उन्नति के लिये आर्थिक सहायता दिया करते थे। बड़े सहृदय थे। ऐसे देश भक्त की अकाल मृत्यु पर किसे दुःख न होगा।" मालवीयजी के 'अभ्युदय' प्रयाग ने १२-१-१८ के अक मे लिखा—"परम देश भक्त राठीजी ने सैकड़ों संस्थाओ को आर्थिक सहायता देकर जीवन दान दिया। साहित्य सेवियों से आप विशेष प्रेम रखते थे। आपकी मृत्यु से राजपूताने का एक नर रत्न खो गया।" 'हिन्दो केसरी' बनारस ने १०-१-१८ के अंक में लिखा—"राठीजी अपने देश और राष्ट्र-भाषा हिन्दी के परम भक्त थे। उदारता भी आप में बहुत थी। देश के सर्वोपयोगी कार्यों के लिये आपने लाखों रुपये दिये हैं। आपको अकाल मृत्यु का समाचार सुन कर हमारे हृदय को बड़ा आघात पहुंचा है।"

श्री गणेशशंकरजी विद्यार्थी ने 'प्रताप' में ७-१-१८ को लिखा "वे अत्यन्त उदार और भक्त थे। देश भर में ऐसे भक्त व्यापारी थोड़े ही होंगे। अपनी जिन्दगी में उन्होंने लाखो रुपया देश के कामों के लिये दिया। उनके दान में सब से बड़ी सराहनीय बात यह थी, कि वह निष्काम होता था। ऐसे देश भक्त की अकाल मृत्यु से किस सहृदय को मर्म भेदी-व्यथा न होगी ?"

आधुनिक हिन्दी युग के निर्माता श्रद्धेय श्री महावीरप्रसादजी द्विवेदी ने 'सरस्वती' में लिखा—"खेद है कि ऐसा पुरुष रत्न अकाल

में ही काल कवलित हो गया। देश भक्ति आपकी बहुत ऊँचे दर्जे की थी। आपका अंग्रेजी उच्चारण और विशुद्ध भाषण सुन कर कितने ही सुनने वालों को आश्चर्य होता था। शिक्षा इतनी थोड़ी, योग्यता इतनी अधिक। हिन्दी के तो आप बड़े प्रेमी ही क्या, उपासक थे।

सेठजी व्यवसायी तो थे ही, देश के भी अनन्य भक्त थे। सभी प्रान्तों के नामी नामी देश भक्तों से आप का सख्य था। किस किस काम के लिये कहां किस तरह से मदद करते थे, यह तो वही जानते थे। आपने थोडी उमर में गुप्त दान कितना किया, इसका हिसाब कौन बता सकता है ?"

श्रद्धेय श्री कृष्णकान्तजी मालवीय ने 'मर्यादा' में लिखा :—

"आप की अभी कुछ अवस्था नहीं थी, इतने ही दिनों में आपने अपनी दान शीलता और देश भक्ति के कारण प्रसिद्धि और भारत-वासियों का प्रेम प्राप्त कर लिया था। आप राष्ट्रीय दल के थे। राष्ट्रीय पत्रों और सस्थाओं को सहायता करना आप अपना परम कर्तव्य समझते थे। आप शिक्षा के प्रेमी थे और उसके प्रचार में योग देने को सदा तत्पर रहते थे।"

'श्री वैंकटेश्वर समाचार' बम्बई ने ११-१-१८ को लिखा:—

"हा ! मारवाड़ी वैश्य समाज का ऊँचे से ऊँचा शिखर मृत्यु के वज्र से टूट गया। हिन्दी साहित्य सवियों का अनोखा आश्रय मौत की आंधी से उड़ गया। स्वातन्त्र्य के उपासकों का सबसे बलवान आसरा काल के कराल कवल में अकाल में विलीन हो गया। अपनी रग २ में देश भक्ति का तेजस्वी बीज धारण करने का

अनोखा परिचय देकर अपने जानने वाले प्रेमी मात्र को रुला कर अपनी असामान्य भक्ति की भूमि से उसकी दुर्गतियों को दूर होने के पहिले ही अलग हो गये। भारत माता का महा प्राण प्रयाण कर चुका है।"

ता० २८-१२-३५ को कांग्रेस स्वर्ण जयन्ती पर उद्घाटित होने वाले दामोदर वाचनालय ब्यावर के समारोह पर खरवा के राव साहब गोपालसिंहजी राष्ट्रवर ने संदेश भेजते हुए लिखा :—

"दामोदरदासजी धार्मिक सिद्धान्त मे दृढ़ वैष्णव थे और वल्लभकुल सम्प्रदाय के अनुयायी थे; परन्तु उस सम्प्रदाय में भक्ति की ओट में विलासिता पूर्ण सांसारिक भोग (ऐश आराम) और आडम्बर का जो दौर दौरा है वह उनमें लेश मात्र भी नहीं था, उनमें तो सर्व शक्तिमान पूर्ण अवतार भगवान श्री कृष्णचन्द्र की उपासना और भक्ति ही थी। उन में उस सम्प्रदाय के अधिकांश मनुष्यो की तरह धार्मिक व सामाजिक विचारों में संकीर्णता भी नहीं थी किन्तु सामाजिक व धार्मिक विषयों में उनके विचार उदार थे।

अछूतों के साथ भी उनकी सहानुभूति थी और वे उनके उन्नति के कार्यों में साथ देते थे। वे इस बात से सहमत थे कि हिन्दुओं में अछूत जातियां अधिक संख्या मे हैं, यदि उनके साथ उच्च जातियों का यथोचित व्यवहार न होगा तो हिन्दू जाति को बड़ी कठिन समस्या का सामना करना पड़ेगा।

वास्तविक हितकारक परिणाम से रहित जोर से बहने वाले देश के राजनैतिक वायु के झौकों में उड़ जाने वाले व्यक्ति वे नहीं थे। उन दिनों में राजनैतिक कांग्रेस के नर्म गर्म दोनों दलों के सम्बन्ध में जब हम चर्चा करते थे तो मेरे समान दामोदरदासजी का भी यही मत था कि यदि अंग्रेजी राज के साथ मिल जाने से देश-हित व

लाभ की कोई आशा नहीं है तो उनके साथ राजनैतिक व्यवहार में अति कटुता उत्पन्न करके अनुचित विरोध भाव करने से भी लाभ की आशा नहीं हो सकती। इसके लिए तो कोई तीसरा मार्ग ही सोच निकालने की आवश्यकता है।

वे मन के उदार थे। परोपकार, देश-हित व धार्मिक कार्यों में हजारों रुपये खर्च करते थे। मेरे अस्वस्थता के कारण मैं स्वयं इस समय नहीं आ सका इसका मुझे खेद है आशा है आप लोग क्षमा करेंगे। भगवान श्रीकृष्णचन्द्र दामोदरदासजी के नाम को चिरस्मरणीय करे और इस वाचनालय और पुस्तकालय की उन्नति करे।"

सन् १९३८ ई० जनवरी में श्री भूला भाई देसाई की अध्यक्षता में होने वाली पञ्चम प्रान्तीय राजनैतिक परिषद् ब्यावर के मुख्य प्रवेश द्वार का नाम 'दामोदर गेट" रखा गया था।

२६ जनवरी सन् १९५० के प्रथम शुभ गणतन्त्र दिवस पर आपकी स्मृति को ताजा करने के लिए आपके सुपुत्र सेठ श्री विट्ठलदासजी राठी ने दामोदरदास राठी उद्यान-भवन ब्यावर में एक बृहद्-भोज का आयोजन किया था। जिसमें स्वर्गीय राठीजी को श्रद्धाञ्जली अर्पित करते हुए, ब्यावर म्यूनीसिपल कमेटी के चेयरमैन श्री महेशदत्तजी भार्गव ने कहा—"अगर स्वर्गीय सेठजी आज जीवित होते तो जो स्थान आज वर्धा को प्राप्त है वह ब्यावर को प्राप्त होता।"

इस महान् राष्ट्रसेवी, परम जागरूक व्यक्ति की, जिसने देश हित के लिये क्या नहीं किया, स्मृति को चिर स्थायी बनाये रखने की परम आवश्यकता है। क्योंकि भावी पीढियां ऐसे प्रभावशाली एव साहसी देशभक्तों के जीवन से प्रेरणा पायेंगी!

❀ जय-हिन्द ❀

[८]

श्री अर्जुनलालजी सेठी

"आज महाराष्ट्र वासी सेठीजी को अपने बीच देख कर फूले नहीं समाते, ऐसे महान् त्यागी देशभक्त व कठोर तपस्वी का स्वागत करते हुए महाराष्ट्र आज अपने को धन्य मानता है।"

—लोकमान्य तिलक

राष्ट्रपिता गाँधीजी ५ जुलाई सन १९३४ को अजमेर में जिनके घर मिलने गये तथा प्रधान मन्त्री पं० नेहरू ने २३ अक्टूबर १९४५ई० को अजमेर में जिनकी स्मृति में अपनी श्रद्धांजली अर्पित की, वह महान व्यक्ति कोई अन्य न होकर सेठीजी ही थे,जो कि राजस्थान में राष्ट्रीयता के जन्मदाता माने जाते थे।

आपका जन्म ९ सितम्बर १८८० ई० को जयपुर के खण्डेलवाल दिगम्बर जैनी श्री जवाहरलालजी सेठी के यहां हुआ।

आपकी बुद्धि पढ़ने में बड़ी तेज थी। सन् १९०२ में २२ वर्ष की आयु में आपने इलाहबाद युनिवर्सिटी से बी० ए० की परीक्षा

पास की। महाराजा कालेज, जयपुर में आपके सहपाठियों में हिन्दी के सुप्रसिद्ध लेखक स्वर्गीय श्री चन्द्रधर शर्मा गुलेरीजी भी थे। बी० ए० करने के पश्चात् सेठीजी चौमू (जयपुर) के स्वर्गीय ठाकुर श्री देवीसिंहजी के प्राईवेट शिक्षक रहे। सन् १६०४ में आप दिगम्बर जैन महासभा द्वारा संचालित विद्यालय मथुरा में अध्यापक रहे। १६०५ में आप सहारनपुर आगये तत्पश्चात १६०६ में आपके सद्प्रयत्नों द्वारा जैन एजूकेशनल सोसाइटी की स्थापना हुई।

शिक्षक का कार्य करते हुए भी १६०५ में बंगाल के स्वदेशी आन्दोलन मे सेठीजी ने भाग लिया तथा सन् १६०७ की सूरत की तूफानी कांग्रेस मे भी आप शामिल हुए।

१६०७ में आपने श्री जैन वर्धमान विद्यालय की स्थापना जयपुर में की। आपका विद्यालय उस समय राष्ट्र के स्वतन्त्रता उपासकों का अनुपम अखाड़ा था। जिस समय न तो गुजरात, बिहार, काशी विद्यापीठ की स्थापना हुई थी, न रवीन्द्र की विश्व भारती व मालवीयजी की हिन्दू युनिवर्सिटी की ही स्थापना हुई थी। लाला लाजपतराय के "तिलक स्कूल आफ पोलिटिक्स व देशबन्धु के ढाका के राष्ट्रीय कालेज का भी उस समय कोई अस्तित्व नहीं था।

भारत की प्रथम राष्ट्रीय विद्यापीठ होने का गौरव सेठी जी के "श्री जैन वर्धमान विद्यालय" जयपुर को ही है। यद्यपि उस समय बंगाल मे श्री अरविंद घोष नेशनल यूनिवर्सिटी की, स्वामी श्रद्धानंदजी गुरुकुल काँगडी की तथा श्री गोखले भारत सेवक समिति की स्थापना कर चुके थे किन्तु क्रांति व आजादी का खुला पाठ केवल आपके ही विद्यालय में पढ़ाया जाता था। सुप्रसिद्ध क्रांतिकारी लेखक श्री मन्मथनाथ जी गुप्त "भारत में सशस्त्र क्रांति चेष्टा का

रोमांचकारी इतिहास" (प्रथम संस्करण पृष्ठ १३६, १३७, १३८, १३९) में नीमेज हत्याकाण्ड का वर्णन करते हुए लिखते हैं:—

शोलापुर के दो जैनी युवक मानिकचन्द और मोतीचन्द पूना में पढ़ने थे फिर बाद को ये जयपुर के एक जैनी शिक्षक श्रीअर्जुनलालजी सेठी के विद्यालय में पढ़ने लगे। पढने तो ये धर्मशास्त्र गये थे, किन्तु राजनीति की ओर इनकी जबर्दस्त अभिरुचि थी। इस विद्यालय में मिर्जापुर के विशनदत्त नामक सज्जन आया करते थे. विशनदत्त राजनैतिक विषयो पर बोला करते थे। कहा जाता है कि वे देशभक्ति का उपदेश देते थे। पुलिस का यहां तक कहना है कि वे "डकैतियों से ही स्वराज्य मिलेगा" ऐसा कहते थे। कहा जाता है कि वे लडको में ही दो २ तीन २ को एक साथ उपदेश देते थे। और उसमें यह कहते थे कि डकैतियो की इस लिये आवश्यकता है कि धन मिले और धन की इसलिये कि उससे हथियार मोल लिये जावें, और हथियारो की इसलिये जरूरत है कि डकैतियां की जाय। वे देश की दुर्दशा पर भी लोगों की दृष्टि आकर्षित करते थे। वे कन्हाईलाल दत्त की (जिसने अलीपुर षडयन्त्र के मुखबिर को जेल मे मारा था) तारीफ करते थे। एक दिन विशनदत्त इसी प्रकार बोल रहे थे एक एक शब्द लडको के दिल चुभता जाता था। एकाएक बोलते बोलने वे रुक गये फिर वे अपने श्रोताओं की ओर देख कर बोले "अब तक तो बातें ही रही, क्या आप कुछ करने को तैयार हो !"

मुखबिर (१९१३ के २० मार्च को ये हत्याऐं की गई थीं किन्तु पुलिस को करीब १ वर्ष बाद इसका सुराग मिला। अर्जुनलाल जब फिर जयपुर लौटे तो वे अपने साथ एक आदमी को लेते आये जिसका नाम शिवनारायण था वह मुखबिर हो गया) के बयान के

अनुसार इस पर सब लोगों ने कहा "हां" बस यहीं से डकैती का सूत्रपात होता है।

शिक्षा आदि के साथ साथ सेठीजी जैन समाज के उत्थान में भी अपना काफी समय देते थे। सन् १९१४ के बनारस के स्याद्वाद महोत्सव पर श्रद्धेय श्री अजित प्रसाद जी, एम० ए०, एल एल० बी० वकील, लखनऊ ने सेठी जी पर भाषण देते हुए कहा था—"मुझको इस बात से बहुत दुख हुआ है कि हमारे एक मात्र ग्रेजुएट पण्डित महाशय अर्जुनलाल बी० ए० जिनकी इस हाल में दी हुई धार्मिक वक्तृताओं से जैनियों और अजैनियों दोनो को बहुत कुछ शिक्षा मिली थी। और जो कि सबको आनन्द देने वाली और सबके लिये अमूल्य थी आज जयपुर राज्य को जेल में बिना किसी मुकद्मे के, बिना किसी चार्ज के सड़ाये जा रहे हैं हम जैनी लोग इस बात को अच्छी तरह कह सकते हैं कि उनका कुल समय तो पीछे पड़ी हुई जैन समाज के कार्य के स्कीमों में ही लग जाता था। वह कभी भी किसी बड़े जैन उत्सव को नहीं छोड़ते थे, चाहे वह दक्षिणी मैसूर अथवा उत्तरीय इटावा, अथवा पूर्वीय हजारी-बाग या पश्चिमीय लाहोर में कहीं क्यों न हो।"

श्री कृष्ण लाल जी वर्मा प्रेमी अभिनन्दन ग्रथ, पेज ६०-६१ पर लिखते हैं—सन् १९११ में जब दिल्ली में पंचम जार्ज का राज्या रोहण उत्सव हुआ था, लाखों की भीड़ इकट्ठी हुई थी जैनियों के भी अनेक विद्वान आये थे। प्रेमीजी भी पधारे और उस वर्ष स्व० अर्जुन लालजी सेठी के साथ मैं भी गया था। इसी अवसर पर जैन विद्वानों के स्वागतार्थ पहाडी धीरज पर लाला जग्गीमल जी के मकान पर एक सभा हुई थी जिसमें प्रेमीजी भी उपस्थित थे।

राजस्थान में राष्ट्रीयता के जन्मदाता एवं पुराने क्रान्तिगुरु

स्वर्गीय पं० श्री अर्जुनलालजी सेठी
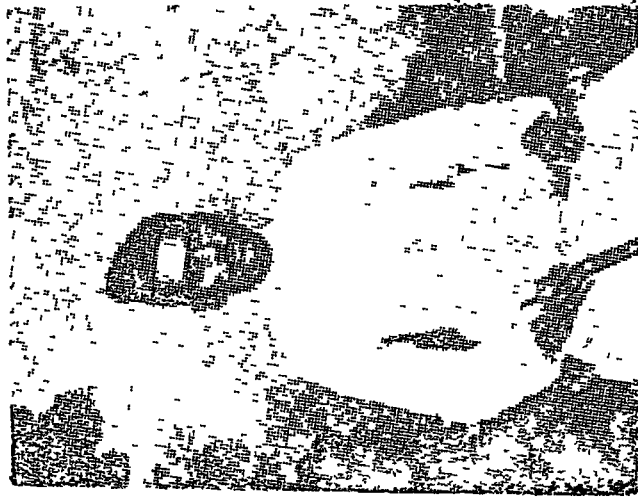
स्व० अर्जुनलालजी सेठी

करीब ३० साल की आयु में

स्व० अर्जुनलालजी सेठी

करीब ४० साल की आयु में

स्व० अर्जुनलालजी सेठी

सेठीजी का तेजस्वी द्वितीय पुत्र श्री जगतप्रकाश
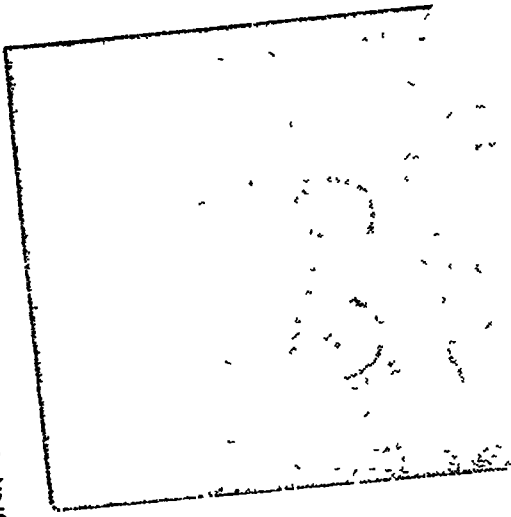
एम० बी० बी० एस० के फाइनल के छात्र,
... हमेशा राजपूताना विश्वविद्यालय में सर्व

सेठीजी के १६१४ में पकड़े जाने पर सारे भारत में तहलका मच गया। उस जमाने में जब कि प्रथम महा युद्ध हो रहा था, हमारी राष्ट्रीय महा सभा कांग्रेस पर नरम दल वालों का आधिपत्य था। गांधीजी का भारतीय राजनीति में पदार्पण नहीं हुआ था। भारतवर्ष की सब भाषाओं के प्रमुख पत्रों में सेठीजी के लिये खूब आन्दोलन हुआ। भारत में यह प्रथम अवसर था जब कि देश के समस्त पत्रों ने इस प्रकार का आन्दोलन किया। जिस तरह आज गांधी, जवाहर, सुभाष आदि का नाम प्रत्येक की जबान पर है उसी प्रकार अर्जुनलालजी सेठी का नाम देश व्यापी हो गया। आज के व उस समय के जमाने में बड़ा अन्तर है। सेठीजी राष्ट्र की कितनी बड़ी विभूति थे यह तो उस समय के आन्दोलन से साफ झलकता है। अधिक जानकारी के लिये पाठक उस समय के छपे ग्रन्थ देख सकते हैं—

(१) श्रीमान् पं० अर्जुनलालजी सेठी बी० ए० के मामले में लोकमत—हिन्दी प्रेस प्रयाग में मुद्रित।

(2) What India thinks of the case of Pandit Arjunlal Sethi B. A. of Jaipur Volume I, II & III. Published under the authority of the All India Jain Assosiation (Volume II Published in Sept, 1915).

जिन सैंकड़ो पत्रों ने आन्दोलन किया उनमें से कुछ के नाम ये है—

(१) मालवीयजी का 'अभ्युदय' (२) गणेशजी का 'प्रताप' (३) श्रीमती ऐनी बीसन्ट का 'न्यू इण्डिया' (४) माडर्नरिव्यू कलकत्ता

(५) लीडर (६) सुरेन्द्र बनर्जी का 'बंगाली' (७) भारत मित्र (८) श्री बैंकटेश्वर समाचार (६) हिन्दू मद्रास (१०) इण्डियन सोशल-रिफोर्मर (११) भारतोदय (१२) कलकत्ता समाचार (१३) हिन्दी समाचार (१४) अमृत बाजार पत्रिका (१५) एडवोकेट (१६) हिन्दी जैन गजट (१७) जैन हितेन्द्र (१८) दिगम्बर जैन (१६) जैन तथ्य प्रकाशक (२०) सत्यवादी (२१) जैन मित्र (२२) पंजाबी (२३) गुजराती (२४) कलकत्ता गजट आदि आदि।

आखिर विराट जन आन्दोलन से घबरा कर सरकार ने सेठीजी को सुदूर दक्षिण के वैलूर जेल में भेज दिया। सेठीजी ने वहाँ पर आमरण अनशन किया, जिससे सारे भारत में हाहाकार मच गया।

राष्ट्रपति डा० पट्टाभि अपने कांग्रेस इतिहास (प्रथम हिन्दी संस्करण पेज १२६, १६३५ ई०) में लिखते हैं—

"सन् १६१७ में कांग्रेस के कलकत्ते वाले अधिवेशन में एक प्रस्ताव द्वारा कांग्रेस ने अर्जुनलालजी सेठी के प्राण बचाने के लिये, जो कि धार्मिक कारणों से वैलूर जेल में आमरण अनशन कर रहे थे सरकार से बीच में पड़ कर हस्तक्षेप करने की प्रार्थना की।"

स्वामी कुमारानन्दजी का मत है कि यह प्रस्ताव सम्भवतः लोकमान्य तिलक ने रखा था।

सेठीजी की कठोर तपस्या के फलस्वरुप भारत भर में यह कहावत प्रचलित हुई—"अंग्रेजों में लार्ड कर्जन, जैनियों में लार्ड अर्जुन।"

माता एनी बीसेन्ट स्वयं लार्ड चेम्सफोर्ड से सेठीजी को रिहा कराने के लिये मिली मगर सरकार अपनी जिद पर अडी रही। आखिर सजा समाप्त होने पर लगभग ६ वर्ष तक नारकीय कष्टों को भोगने के पश्चात सन् १९२० के प्रारम्भ में वे रिहा किये गये। उनकी रिहाई पर देश व्यापी हर्ष मनाया गया। लोकमान्य तिलक असख्य जन समूह के साथ पूना स्टेशन पर पहुँचे तथा प्रेम में उन्मत्त हो अपने गले का रेशमी दुपट्टा सेठीजी के गले में डाल दिया।

जहां भी सेठीजी गये वहीं उनका शानदार स्वागत किया गया। सुप्रसिद्ध गांधी-भक्त व साहित्य-सेवी श्री हरिभाऊजी उपाध्याय ने लिखा कि सन १९२० में इन्दौर में सेठीजी का विराट स्वागत जुलूस निकला, प्रथम बार सेठी के दर्शन किये।

सेठीजी के लम्बे कारावास की कहानी एक बात लिख समाप्त करते हैं कि आरा केस के वकीलों में से गणतंत्र के प्रथम राष्ट्रपति डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद भी थे।

सेठीजी, लोकमान्य व गांधीजी के बीच की कड़ी थे। सन् २० की नागपुर कांग्रेस में डा० मुंजे आदि महा राष्ट्रीय नेताओं के भारी विरोध के बावजूद भी यह सेठीजी की ही सामर्थ थी, जिन्होंने गान्धीजी का विराट स्वागत जलूस निकलवाया। १९२१ में गांधीजी के आन्दोलन में भी सेठीजी ने भाग लिया व जेल गये। १९२२ में जेल से छूटने पर आपकी टोपी १५००) में बिकी थी। सन् १९२२-२३ में आपके हाथों में राजस्थान - अजमेर मेरवाड़ा प्रांतीय कांग्रेस की बागडोर आई।

सेठीजी निस्वार्थ भाव से देश की सेवा करते थे तथा उन्होंने व्यक्तिगत कार्यों की अपेक्षा सदैव राष्ट्रीय कार्यों को प्राथमिकता दी। कठिन से कठिन परिस्थिति उत्पन्न होने पर भी उन्होंने अपने सिद्धान्तों की उपेक्षा नहीं की। ऐसी परिस्थिति आई कि उनके कर्त्तव्य पथ पर पुत्र प्रेम का प्रश्न आ खड़ा हुआ किन्तु सेठीजी अपने प्रिय पुत्र के मृत शरीर पर पैर रख कर अपने पथ पर बढ चले। यह घटना १९२३ की है जब वे अजमेर दंगे में मुस्लिम गुण्डों द्वारा घायल कर दिये गये थे, उसी वर्ष महात्मा गांधी के आदेशानुसार पं० सुंदरलालजी व महात्मा भगवान दीनजी ने सेठीजी को तार द्वारा बम्बई बुलाया। सेठीजी मृत्युशय्या पर पड़े अपने पुत्र को देखने जोधपुर जा रहे थे किन्तु तार प्राप्त होने पर वहां न जा, वे सीधे बम्बई जा पहुंचे वहीं उन्हे पुत्र (प्रकाश) की मृत्यु का समाचार प्राप्त हुआ। उन्हीं दिनों दंगे के अवसर पर दिये गये उनके राष्ट्रीय दृष्टिकोण युक्त वक्तव्य की उनके विरोधियों द्वारा तीव्र आलोचनाएं हुई व उनको काफी बदनाम किया गया। पुत्र की मृत्यु के उपरान्त तत्कालीन वातावरण ने उनके तन तथा मन दोनों पर घातक प्रभाव डाला तथा उनका मानसिक संतुलन बिगड़ गया। कानपुर कांग्रेस पर भी वर्किंग कमेटी ने यहां के चुनाव को रद्द कर दिया था जिस पर काफी झगड़ा मचा इस सिलसिले में श्री राजेन्द्रप्रसादजी ने अपनी आत्मकथा में इस प्रकार लिखा है कि:—

"वहां* एक और घटना हुई थी। अजमेर कांग्रेस का एक सूबा समझा जाता था विधान में उसे भी और सूबों की तरह प्रतिनिधी चुनने का अधिकार था। वहां के चुनाव के सम्बन्ध मे कुछ शिकायत थी। वहां के चुनाव को वर्किंग कमेटी ने

---

* कानपुर कॉंग्रेस

रद्द कर दिया था जिस पर कुछ लोग रुष्ट होकर श्री अर्जुनलाल सेठी के नेतृत्व में कांग्रेस में या तो जबरदस्ती घुसना चाहते थे अथवा दूसरों को वहां जाने से रोकना चाहते थे। इस नाजुक परिस्थिति में भी सेवा दल को* काम करना पड़ा था।"

डा० राजेन्द्रप्रसाद
(आत्म कथा पेज २५६)

सन् १६२३ से १६३३ तक का इतिहास बड़ा दुखदायी है। अपनी चालों एवं षडयन्त्रों द्वारा विपक्षियों ने उन्हें जनता की दृष्टि से गिराने का प्रयत्न किया। इस भारी विरोध के विद्यमान होते हुए भी सेठी जी १६३० में प्रांतीय डिक्टेटर की हैसियत से जेल गये। अन्य प्रांतीय नेताओं के साथ १६३१ में आपका जेल से रिहाई के बाद ब्यावर में विराट स्वागत किया गया तथा एक विशाल सभा का आयोजन किया गया। सितम्बर १६३१ मे तेजा मेले के अवसर पर ब्यावर में प्रथम राजपूताना किसान मजदूर कान्फ्रेंस भी सेठी जी की अध्यक्षता में हुई।

५ जुलाई १६३४ को स्वयं गांधी जी अजमेर में सेठी जी के घर मिलने गये तथा उनसे प्रांतीय राजनीति में फिर से भाग लेने का आग्रह किया। गांधी जी की आज्ञा शिरोधार्य कर सेठी जी ने प्रांत की राजनीति में फिर से भाग लेना स्वीकार किया। ता० ६-६-३४ को वे राजपूताना व मध्य भारत प्रांतीय कॉंग्रेस कमेटी के प्रांतपति चुने गये। दस वर्ष बाद यह प्रथम अवसर था जब कि समस्त प्रांतीय कार्यकर्त्ता एक ही मंच पर देखे गये—सर्व श्री सेठी जी, पथिक जी, बाबाजी, गौरीशंकरजी, हरिभाऊजी, स्वामी कुमारानन्दजी व जयनारायणजी व्यास, देशपांडेजी, नथमल जी चोरडिया आदि २।

* डाक्टर हर्डीकर के नेतृत्व में

किन्तु खेद है कि ता० ६-६-३४ का चुनाव रद्द कर दिया गया। बाबा नरसिंहदास जी ने अपनी मंडली सहित १६३४ में होने वाली बम्बई कांग्रेस के फाटक पर धरना दिया।

यह कहा जा चुका है कि अनेकों प्रयत्नों द्वारा सेठी जी को लाँछित किया जा रहा था इन्हीं प्रांतीय झगड़ों में निरन्तर रत रहने पर उन्होंने यहां से हट जाना ही श्रेयष्कर समझा तथा सन् १६३५ में उन्होंने अफ्रीका जाने का विचार किया। पासपोर्ट लेने के पश्चात भी कुछ कारणों द्वारा वे जा न सके, शायद यही भावी का विधान था अन्यथा सेठी जी यहां न रह कर यदि अफ्रीका चले जाते तो उनके जीवन का अन्तिम भाग इतना करुणा जनक न होता और न उनके विपक्षियों को उनके विरुद्ध अनेकों निर्मूल आक्षेप लगाने का अवसर ही प्राप्त होता।

ब्यावर मिल मजदूरों की हड़ताल के अवसर पर सेठीजी पुनः सन् १६३६ मे कार्य क्षेत्र में आये किन्तु अपनी असंतुष्ट वृति एव मानसिक असतुलन क वशीभूत हो मजदूरों का अधिक हित न कर सके। १६३७ मे खण्डवा में होने वाली जैन परिषद में वे सम्मिलित हुये। यहां यह लिख देना अप्रासगिक न होगा कि सेठीजी निर्भीक प्रकृति के व्यक्ति थे वे प्रत्येक कार्य अपने ही निश्चय द्वारा किया करते थे तथा अपने विरोधियों की उन्होंने कभी लेशमात्र भी चिन्ता न की। १६३६ में रतरे नैरीमन के साथ कांग्रेस कमांड के विरुद्ध मोर्चा बनाने का साहस सेठीजी ने ही किया यद्यपि वे सफल न हो सके। अधिक लोगों की यह भी राय है कि पं० गोपीलाल शर्मा ने सेठीजी की इच्छानुसार ही गांधीजी पर (कांग्रेस के चवन्नी सदस्यों के प्रति कुछ अपशब्द कहने पर) केस चलाया। इसी केस

के सिलसिले में सेठीजी सन् १६३५ में अन्तिम बार ब्यावर के मंच पर आये। अनेकों क्षेत्रों से आपकी आलोचना की गई, विरोधियों ने उन्हें बदनाम करने को कोई साधन बाकी न छोड़े।

फलस्वरूप सेठीजी राजनैतिक जगत से दूर हट गये, यहां तक कि उन्होंने अपने परिवार से भी सम्बन्ध विच्छेद कर लिया तथा ३०) माहवार पर अजमेर की दरगाह में खादिमों के लड़कों के अंग्रेजी के अध्यापक बने। यह कहना अत्युक्ति नहीं कि उनकी भाषण शैली स्वर्गीय श्यामजी कृष्ण वर्मा, मालवीयजी, लालाजी श्री देशबन्धु, श्री अरविन्द घोष, श्री सत्यमूर्ति, श्री भूलाभाई देसाई व श्रीमती सरोजनी नायडू आदि के समान ही प्रभावशाली थी। उनके भाषण को जनता मन्त्रमुग्ध हो सुनती थी। उनका अन्तिम भाषण १३ अगस्त १६३६ में "जैनिज्म तथा सोशलिज्म" पर ब्यावर में हुआ जो कि अधिक महत्व पूर्ण था।

सेठीजी प्रबल समाज सुधारक भी थे। वास्तव में उनका सार्वजनिक जीवन ही समाज सुधारक के रूप में प्रारम्भ हुआ समाज में शिक्षा आदि गुणों के प्रचार के साथ ही साथ सामाजिक कुरीतियों एवं प्राचीन रूढ़ियों को निमूल करने का उन्होंने सदैव प्रयत्न किया। पिछले कुछ वर्षों से अनेकों नेताओं ने अपने पुत्र पुत्रियों की शादी जाति आदि की चिन्ता न करते हुए अवश्य की है किन्तु उस युग में जब कि अन्तर्जातीय विवाह का विचार करना ही समाज की प्रतिक्रियावादि शक्तियों को निमन्त्रण देना समझा जाता था, सेठीजी ने इनकी तनिक भी चिन्ता न करते हुए अपनी कन्या सौभाग्यवती का विवाह शोलापुर के हूमड जातीय सज्जन श्री गुलाबचन्दजी के साथ किया। इस विवाह के फल स्वरूप सेठीजी

को बम्बई की खंडेलवाल जैन पंचायत ने जाति-च्युत भी कर दिया।

साहित्यिक क्षेत्र में भी सेठीजी किसी प्रकार कम न थे। अनेकों भाषाओं पर समान रूपसे अधिकार होने के साथ ही साथ उच्च कटि के लेखक एवं कवि भी थे। उनकी यह विशेषता थी कि राजनैतिक नेता होने पर भी दर्शन-शास्त्र, धर्मशास्त्र तथा अन्य विषयों पर उनका अधिकार था। व्यस्त जीवन होने पर भी उन्होंने कुछ ग्रन्थों की रचना की। श्री नाथूराम 'प्रेमी' के कथनानुसार उनके नाम ये हैं—

'शुद्र मुक्ति', 'स्त्री मुक्ति', यह दोनो पुस्तकें चन्द्रसेनजी जैन वैद्य, इटावा ने छपवाई थी। इसके अलावा उन्होंने 'महेन्द्र कुमार' नामक एक नाटक भी लिखा जिसे श्री कृष्णलालजी वर्मा, बम्बई ने छपवाया। समय समय पर अनेकों विषयों पर उनके लेख विविध पत्र, पत्रिकाओं में भी प्रकाशित होते रहते थे। उनकी कविताओं के कुछ अंश नीचे दिये जा रहे हैं:—

कब आयगा वह दिन कि बनूँ साधू बिहारी॥
दुनियां में कोई चीज मुझे थिर नहीं पाती।
और आयु मेरी यों ही तो बीती है जाती।
मस्तक पर खड़ी मौत वह सब ही को है आती।
राजा हो चाहे राणा हो, हो चाहे रंक भिखारी।

एक स्थल पर देश के प्रति अपनी लगन प्रकट करते हुए वे लिखते हैं:—

सर्वस्व लगा के मैं करूँ देश की सेवा।
घर घर पर मैं जाके रखूं ज्ञान का मेवा।
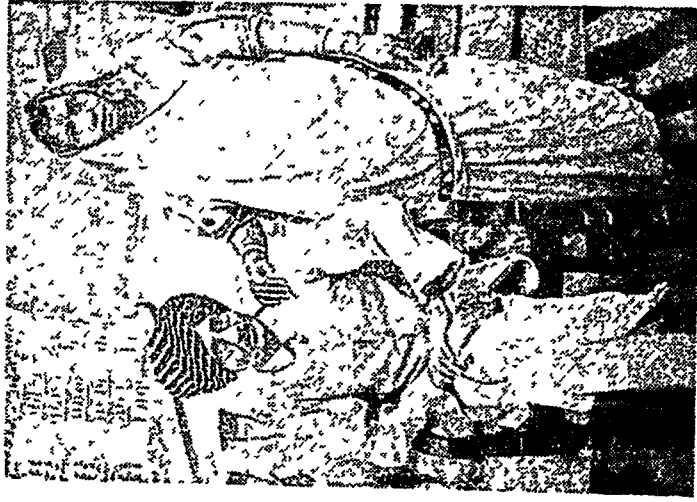
सेठीजी की बड़ी लडकी अपने
पतिदेव के साथ।

सेठीजी के सुपुत्र स्वर्गीय
श्री प्रकाशचन्द्र जी सेठी
अपने बहनोई व दोनो बहनो के साथ
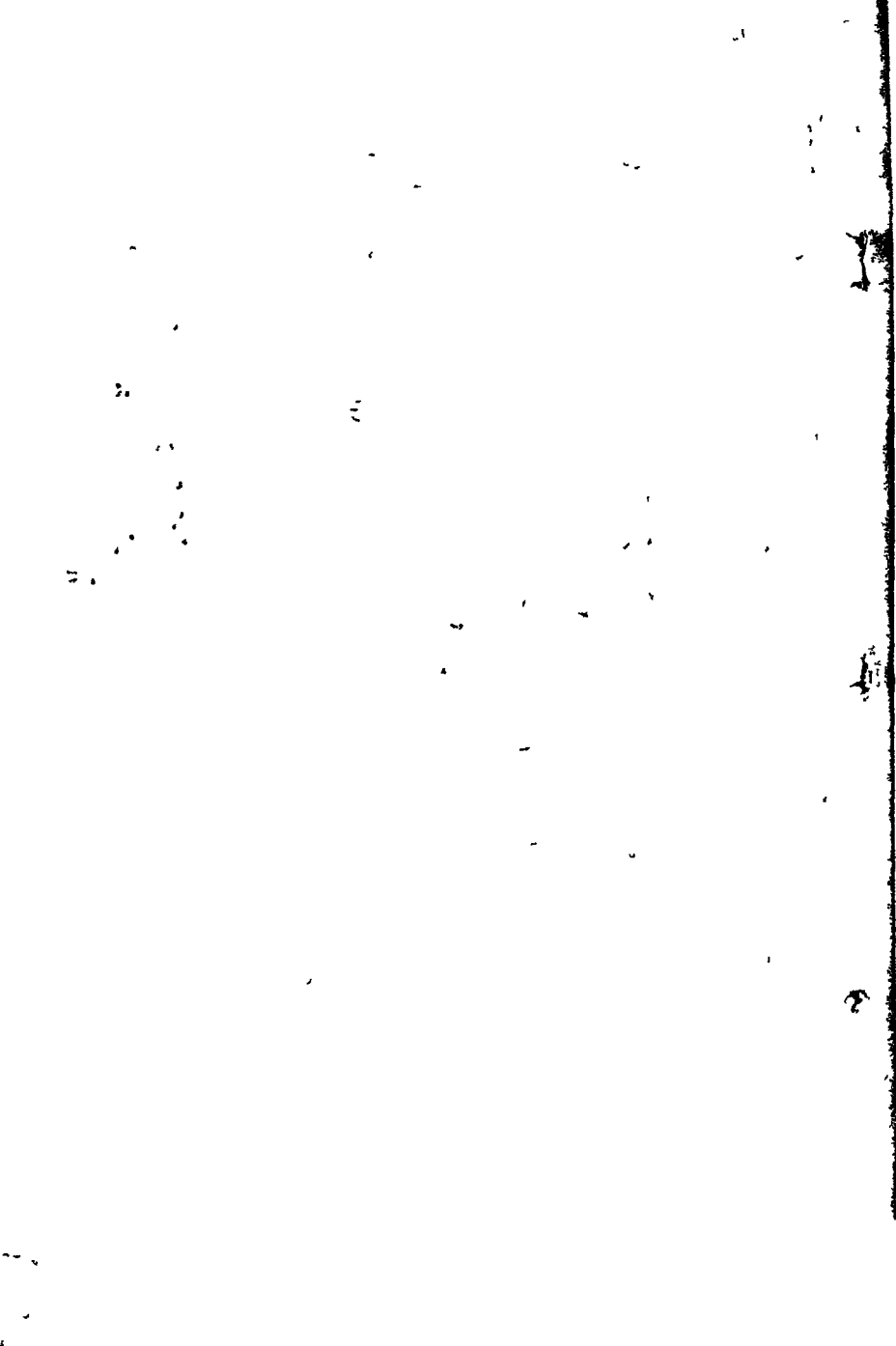
दुखों का सभी जीवों के हो जायगा छेवा ।
भारत में देखूँगा न कोई मूर्ख अनारी ।

अपने गुरु तिलक वियोग में सेठीजी अपने हृदय के उद्गार प्रकट करते हैं:—

न पूछो हमें हम सताये हुए हैं, सितमगर के फंदे में आये हुए हैं ।
हमारे ही घर में हमें हाथ में कर, हमारे हकों को दबाये हुए हैं ।
दिये टुकड़े जिनको रहम खाके हमने, वही हमसे अब सिर उठाये हुए हैं ।
दिया साथ जिनको हमेशा से हमने, वो खुदगर्ज एहसां भुलाये हुए हैं ।
न खौफे खुदा न है इंसानियत कुछ, तबाही ये शाही में लाये हुए हैं ।
तिलक भी नहीं आज हममें रहा है, नया दाग हम दिल में खाये हुए हैं ।
न हमदर्द कोई न रहबर हमारा, सिया अब भारत में छाये हुए हैं ।
खुदा या मदद हिंद की कीजियो तू, विपक्षी हमें सब मिटाये हुए हैं ।
भरोसा है तेरा हमें कृष्ण प्यारे, दिलों को तुझी पर लगाये हुए हैं ।
तिलक रूप में तू सगुण होके आया, तुझे हम हरे सर झुकाये हुए हैं ।

इस प्रकार राजनैतिक, सामाजिक एवं साहित्यिक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परिचय देने के पश्चात, जीवन के अन्तिम क्षणों तक राष्ट्र की हित साधना करते हुए सेठीजी २२ दिसम्बर सन् १९४१ को अजमेर के एक क्षुद्र से मकान में अहिंसात्मक प्रति हिंसा के शिकार हुए । यह देश का दुर्भाग्य ही है कि उनके जैसे तपस्वी की मृत्यु अत्यन्त रहस्यमय रही, यहां तक कि मृत्यु के तीन दिन उपरान्त यह हृदय विदारक समाचार समस्त जनता को प्राप्त हो सका । विपक्षियों के प्रचार के कारण उनकी मृत्यु के पश्चात उनका उतना सम्मान भी न हो सका; जो उन जैसे व्यक्ति के लिये आवश्यक था किन्तु फिर भी उनके व्यक्तित्व से

प्रभावित अनेकों व्यक्तियों ने अपना शोक प्रकट करते हुए उन्हें श्रद्धाञ्जली अर्पित की। देश के अनेकों पत्रों एव संस्थाओं ने उनकी मृत्यु पर अत्यन्त दुःख प्रकाशित किया। अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा के सन् १९४२ के जनवरी मास के वर्धा अधिवेशन द्वारा एक शोक प्रस्ताव पास किया गया। जिसमें सेठीजी की मृत्यु पर दुःख प्रदर्शित किया गया था।

आगे सेठीजी के प्रति लोक दृष्टि से अवगत होईये:—

सुप्रसिद्ध मासिक 'विश्ववाणी' के मार्च १९४२ के अङ्क में एक मासिक टिप्पणी सम्पादकीय स्तम्भ में प्रकाशित हुई उसका कुछ अंश निम्नलिखित है—

"सेठी जी की मृत्यु के इतने दिनों बाद आज हम उनकी स्मृति में कलम उठा रहे हैं। वे हमारे इतने निकट थे और हमारे इतने अपने कि उनका निधन हमारा व्यक्तिगत दुःख है, और हमने उसे हर्ष और शोक के साथ सहन किया। हर्ष इसलिये कि उनका सारा जीवन त्याग, बलिदान कष्ट और तपस्या का जीवन रहा। बडी से बड़ी विरोधी शक्तियां भी उन्हें कर्मपथ से विचलित न कर सकी वे अपनी आन के लिये जीये और अपनी आन के लिये मरे। दधीचि का सा त्याग और दृढ़ता लेकर वे जन्मे थे और उसी दृढ़ता में उन्होंने मृत्यु को गले लगाया। यदि जरा भी उनमें बनावट होती, यदि अपने सिद्धान्तों से जरा भी वे समझौता कर सकते, यदि जरा भी अपनी आत्मा के निर्देशों के विरुद्ध चल सकते, तो वे जयपुर के प्राइम मिनिस्टर या कांग्रेस वर्किंग कमेटी के मेम्बर और जैन समाज के सर्वमान्य नेता हो सकते थे। उनके निधन पर हडतालें मनाई जातीं, शोक के गीत गाये जाते। लाखों का जलूस निकलता और

स्मारक फण्ड कायम होता। किन्तु धिक्कार है ऐसी कीर्ति पर जो अपनी आत्मा को बेच कर प्राप्त की जाए! इसीलिए हमें उनके असफल जीवन में महान सफलता के लक्षण दिखाई देते हैं और इसीलिये हमें उनकी इस महान मृत्यु पर हर्ष है। शोक इसलिये है कि हम उनके देशवासी उनके जीवन की उचित कीमत नहीं आंक पाये। हमारे राष्ट्रीय पत्रों ने उनके निधन का समाचार तक छापने की आवश्यकता नहीं समझी।

जो बात स्वर्गीय स्वामी विवेकानन्द जी ने वैदिक संस्कृति के सम्बन्ध में सोची थी वही बात जैन दर्शन और आध्यात्म के धुरन्धर ज्ञाता की हैसियत से स्व० अर्जुनलाल जी ने सोची; किन्तु परिणाम कितने विपरीत हुए। जब कि हिन्दू समाज ने विवेकानन्द को अपना उद्धारक समझा, जैन समाज ने सेठी जी को अपना शत्रु और विघातक समझा। किन्तु क्या यह सच नहीं है कि यहुदियों ने ही अपने पैगम्बर ईसा को सूली पर चढाया था? क्या यह सच नहीं है कि सुकरात को एथंस वालों ने ही जहर का प्याला दिया था? क्या यह सच नहीं है कि नूरानियों ने ही महात्मा जथुस्त्र की हत्या की थी? और क्या यह सच नहीं है कि जैन समाज ने ही सेठी जी के जीवन के महान लक्ष्य को नष्ट भ्रष्ट किया?"

ता० २६-१०-४८ को एक संयुक्त वक्तव्य सुप्रसिद्ध दैनिक 'विश्वमित्र' में प्रकाशित हुआ जिसमें सम्पादकीय विचारधारा के साथ ही साथ 'भारत में अंग्रेजी राज्य' के रचयिता प० सुन्दरलाल जी तथा महात्मा भगवानदीन जी ने सेठी जी के स्मारक के सम्बन्ध में अपनी सम्मति प्रकट करते हुए लिखा

"हमने सुना है कि कुछ देशभक्त भाई अजमेर में और जयपुर में स्वर्गीय भाई अर्जुनलालजी सेठी की कोई यादगीर कायम करना

चाहते हैं सुनकर खुशी हुई और साथ ही यह सुन कर दुख हुआ कि कुछ दूसरे भाई सेठी जी की यादगार बनाने का विरोध कर रहे हैं हमारी राय में ऐसा करना किसी भाई को शोभा नहीं देता। हम दोनों सेठी जी को उनके पब्लिक जीवन के करीब करीब शुरु होने से जानते थे। हममें उनमें घनिष्ट सम्बन्ध था। हम उन्हें देश की महान से महान आत्माओं में से एक गिनते हैं, जिनकी लगन जिनका त्याग, जिनकी तपस्या और जिनके बलिदान की बदौलत ही देश को आज यह दिन देखना नसीब हुआ। उनकी विद्वत्ता और चरित्र दोनों चोटी के थे। हमे मालूम है कि बीच के दिनों में सेठी जी और पूज्य महात्मा गांधी में कुछ मत भेद हो गया था पर इससे क्या हुआ,मतभेद तो बड़े से बड़ो और छोटे से छोटों सब में होते ही हैं। मतभेद तो गांधीजी और राजाजी में भी किसी समय जोर का रहा है।

इसमें न किसी का आदर कम होता है न किसी की जिन्दगी भर की सेवायें निकम्मी हो सकती हैं। खुद महात्मा गांधी इस मत-भेद के होते हुए भी सेठी जी से इतना प्रेम रखते थे कि अजमेर जाने पर समय निकाल कर सेठी जी के घर उनसे मिलने गये। सुना है एक एतराज यह भी किया जाता है कि सेठी जी अन्त के समय मुसलमान हो गये थे। यहां तक कि मरने पर गाढ़े गये थे। यह बात और भी ना समझी की है। कम से कम ऐसा एतराज करने वाले सेठी जी को नहीं समझते। हममे से बहुत ऐसे हैं जो अपने को न हिन्दू कहना पसन्द करते हैं न मुसलमान। पूज्य बापू के हिन्दू धर्म में इस्लाम शामिल था। उनका साफ कहना था कि "मैं चूंकि हिन्दू हूं, इसलिए मुसलमान भी हूँ।

यह कहना कि मैं हिन्दू भी हूँ और मुसलमान भी, दोनों एक ही बात है। यही सबक पूज्य बापू के जीवन और हजारों साथियों,

महात्माओं और फकीरों के जीवन से मिलता है। कबीर और नानक दोनों इसी मत के थे। दोनों ने फुंकने और गाड़ने के भेद का मजाक उड़ाया है। अर्जुनलाल जी सेठी अगर कहीं फूंके जाते तो भी अच्छा था और अगर अजमेर के सूफी फकीरों के बीच कहीं उनकी मट्टा गड़ी हुई है तो यह और भी अच्छा है। बनारस के सूफी विद्वान डाक्टर भगवान दास अक्सर अपने दो नाम बताते रहे हैं—एक भगवानदास और दूसरा अब्दुल कादिर। दोनों का एक अर्थ है। यही मजहब सेठी जी का था। इसलिये जो देशभक्त हिन्दुस्तानी उस देश से साम्प्रदायिता को मिटा कर एक सच्चे मानव धर्म को, प्रेम धर्म को, लहलहाता देखना चाहते हैं उनके लिए सेठी जी तो एक महान आदर्श थे।

किसी भी बारे में मतभेद एक अलग चीज है परन्तु हमें पता नहीं कि पिछली तीन पीढ़ियों के अन्दर जयपुर ने कोई अर्जुनलाल सेठी से अधिक महान देशभक्त पैदा किया हो। जयपुर राजपूताने के किसी भी निवासी के लिये उनकी यादगार पर एतराज करना अच्छा नहीं लगता। हमारी नम्र प्रार्थना है कि इस नेक काम में हिन्दू मुसलमान कांग्रेसी गैर-कांग्रेसी सब प्रेम और अहसानमन्दी से भर कर और मिलकर अपना कर्त्तव्य पालन करें।"

× × × ×

"सेठीजी के जीवन के हाल चालने मुझ पर काफी असर किया। वे जयपुर कालेज के ग्रेजुएट थे। अंग्रेजी के अलावा हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, फारसी और पाली भाषा के पण्डित थे। जैन धर्म के गहरे विद्वान, तेज सुधारक और जैन समाज की नई पीढ़ी के नेता थे। उसी हैसियत से उनकी धाक भारत भर में थी। वे प्रभावशाली वक्ता भी थे।

१९१४ का महायुद्ध छिड़ गया, उससे पहले क्रांतिकारी दल की राजपूताना शाखा संगठित हो चुकी थी। सेठीजी उसके नेता थे। कोटा के ठा० केसरीसिंहजी बारहट, खरवा के राव साहब गोपालसिंहजी और ब्यावर के सेठ दामोदरदासजी राठी इस संगठन के स्तम्भ थे। सेठीजी के जिम्मे युवकों को तैयार करना और शिक्षितों मे प्रचार करने का विशेष काम था। जैन-समाज उनका मुख्य कार्य क्षेत्र था। उसके साधनों से वे राष्ट्रीयता की साधना करते थे। उन्होंने महाराष्ट्र और काश्मीर जैसे दूर दूर के प्रान्तों से चुन चुन कर नौजवान इकट्ठे किये थे। श्री मोतीचन्दजी उस युवक दल के अगुआ थे। आरा (नीमेज) के महन्त की हत्या के अभियोग मे जब उन्हें फांसी लगी, कहते हैं बलिदान की खुशी में उनका वजन कई पौंड बढ़ा हुआ पाया गया। लेकिन असली अपराधी तो थे जयचन्द, जो आखिर तक पुलिस के हाथ न आये।

महायुद्ध छिड़ने पर सेठीजी नजर बन्द करके पहले जयपुर जेल में रखे गये और बाद में मद्रास प्रांत के वैलोर जेल मे भेज दिये गये।

सेठीजी के त्याग की शोहरत देश भर में फैली हुई थी। वे वर्धा आये और आते ही हम युवकों के दिलों में समा गये। उनके एक एक शब्द से आजादी की भावना और अंग्रेजी राज के प्रति घृणा फूटी पड़ती थी। वे साम्राज्यशाही के अत्याचारों की पीड़ा से पागल दिखाई पड़ते थे। उनके भाषण सुन कर जनता जोश में बावली हो जाती थी। वे सर्व साधारण को मन्त्र-मुग्ध करना जानते थे और हृदय से बोलते थे।

जिस समय सेवा संघ के तरह तरह के आन्दोलन चल रहे थे, सेठीजी मध्यप्रान्त और भारत के दूसरे प्रान्तों में यश प्राप्त करके अजमेर लौट आये थे। उस वक्त वे ही प्रान्त के प्रमुख राष्ट्रीय नेता थे। उनका प्रभाव इतना था कि एक समय उनकी खादी की टोपी ११००) रु० में नीलाम हुई और जब उन्हें मध्यप्रान्त की सरकार के वारंट पर गिरफ्तार करके सिवनी में ले जाया जा रहा था तो जनता रेल पर उलट पड़ी और बड़ी देर तक गाड़ी को न चलने दिया। आखिर सेठीजी और भार्गवजी के समझाने पर भीड़ हटी।

अजमेर में सन् १९२३ में भीषण हिन्दु मुस्लिम दंगा हुआ। पं० अर्जुनलालजी सेठी ने अपनी राष्ट्रीयता की मंहगी कीमत चुकाई। मेल और एकता का प्रचार करते हुए वे मुसलमान दंगाईयों के हाथों घायल हुए दुर्दैववश हिन्दू जनता उसी समय से उनसे नाराज होगई।

इस समय १९२७-२८ राजस्थान में काम करने वाले मुख्य तीन दल थे। देशी राज्यों की राजनीति, सेवा संघ के हाथों संचालित होती थी। पथिकजी उसके मुखिया थे। कांग्रेस के नेता सेठीजी थे। उसकी अजमेर और ब्यावर शाखायें सजीव, केकड़ी और पुष्कर में नाम मात्र की और कोटा, करौली, जोधपुर और इन्दौर की विद्यमान थीं। तीसरा दल गांधीवादियों का था। इसके असली नायक सेठ जमनालालजी थे, मगर उनके स्थानीय प्रतिनिधि के रूप में हरिभाऊजी काम करते थे। तीनों में सहयोग का अभाव था। भीतर ही भीतर विरोध की भावना भी काम कर रही थी। सेवा संघ की इच्छा थी कि कम से कम गांधीदल के साथ तो सहयोग रहे। पिछले लम्बे कारावास में गांधीजी के प्रति पथिकजी की श्रद्धा भक्ति

मे आगे बढ कर विचारों के क्षेत्र तक पहुंचती नजर आ रही थी। वे साबरमती गये, बापू से मिले और सेठीजी से चर्चा की। परन्तु सहयोग का रास्ता सुगम न हुआ। आधुनिक राजस्थान के इतिहास में यह एक दुर्भाग्य पूर्ण घटना हुई।

हम लोग ब्यावर (१९२९ में) जाकर बसे ही थे कि सेठीजी और उनके दोस्तों के साथ हरिभाऊजी के दल का चुनाव युद्ध छिड़ गया। यह प्रान्त के राजनैतिक नेतृत्व में आमूल परिवर्तन का प्रयत्न था। बाबाजी उपाध्यायजी के दाहिने हाथ थे। उनके कारण कई परस्पर विरोधी व्यक्तियों का भी सहयोग मिल गया। चुनाव लडा गया। झूठे मेम्बर बनाये गये उनके लिये खादी के कपड़े बनवाकर 'ग्रीनरूम' पद्धति का उपयोग किया गया और बनावटी गवाहियां और सबूत पेश किये गये। संस्थाओं का दुरुपयोग भी हुआ। ग़रज यह कि दोनों तरफ से अवांछनीय कार्रवाईयां हुई। पं० जियालालजी से उपाध्यायजी को बडी मदद मिली। रुपये का बल तो अधिक था ही, जन बल भी मिल गया, लोग परिवर्तन भी चाहते थे। सेठीजी परास्त हुए। उन्हे ऐसी चोट लगी कि फिर नही पनपे। अधिकांश मुसलमान कार्य कर्ताओं के दिल उसी समय से कांग्रेस से फिर गये और उनमें से कुछ लोग धीरे धीरे साम्प्रदायिकता के गर्त में गिरते चले गये। प्रान्तीय कांग्रेस में गांधीवादी दल की प्रधानता हो गई और राष्ट्रीय जीवन में सात्विकता और प्रतिष्ठा की झलकमी आगई। परन्तु पारस्परिक मतभेद फिर भी न मिटे और जैसी आशा की गई थी उसके अनुसार कांग्रेस संगठन में बल नहीं आ पाया।

सार्वजनिक जीवन के कटु अनुभवों के कारण उनके उग्र स्वभाव पर ऐसा आघात हुआ था कि वे पहिचाने भी नहीं जा

राजस्थान की निर्भीक हुँकार—

* श्री नरसिंहदासजी (बाबाजी) *

सेठीजी के सहयोगी ओजस्वी वक्ता श्री स्वामी नरसिंहदेवजी सरस्वती, नेताजी सुभाष बोस के साथ।
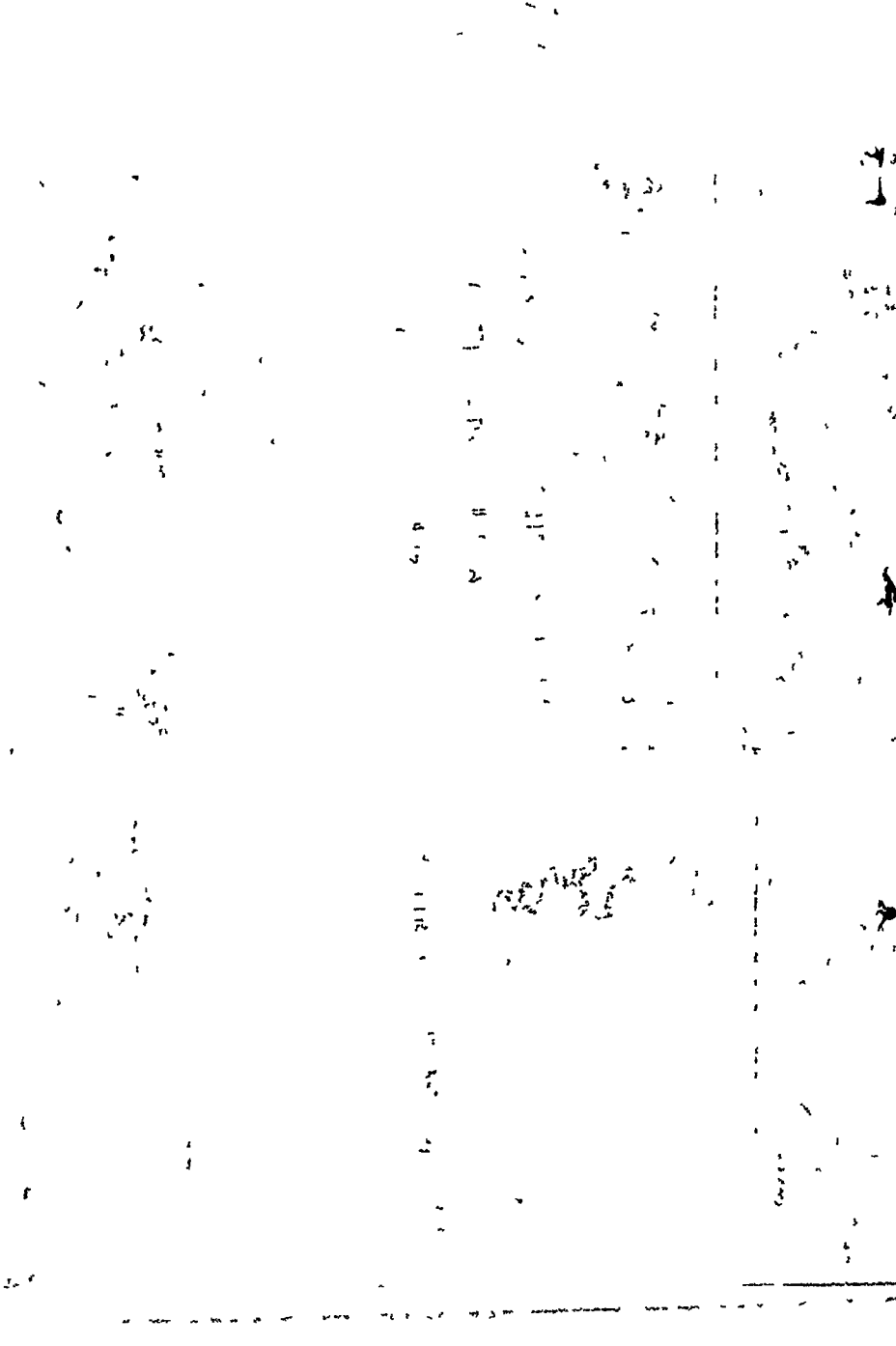
सकते थे कि वे राजस्थान की राष्ट्रीयता के जनक थे। जिन्दगी के आखरी दिनों में तो धर्म कर्म और विचार से वे सूफी बन गये थे।"

—श्री रामनारायण चौधरी के वर्तमान राजस्थान से

"श्री सेठीजी ने पूर्वकाल में जो देश की सेवायें की हैं मैं उनकी कद्र करता हूँ।"

—श्री जमनालाल बजाज (मई १६२६ ई०)

"मेरे जीवन में अधिकांश समय तक जिस तपस्वी और उग्र क्रान्तिकारी महानुभाव का साथ रहा, वह व्यक्ति श्री अर्जुनलाल सेठी, उन महज्जनों के समान था; जिन्होंने मानव समाज की प्रतिष्ठा में ही अपनी प्रतिष्ठा समझी।"

—स्वामी नृसिंहदेव सरस्वती

"श्री राहतजी और श्री सेठीजी जैसे कार्यकर्त्ताओं के बारे में यह कौन सोच सकता था कि उन्हें वर्तमान दुःखद स्थिति में पहुँचाने के लिये सरकार की अपेक्षा कुछ देशभक्ति ही अधिक जिम्मेवार है।"

—श्री विजयसिंह पथिक (१६३२ ई०)

"स्व० श्री अर्जुनलालजी सेठी भारत के उन इने गिने सपूतों में से थे जिन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के अर्पण कर दिया। उन्होंने एक ही नहीं बल्कि हजारों युवकों को क्रान्ति की दीक्षा दी थी। इस प्रकार वे ब्रिटेन के शत्रु पैदा करने वाले थे। सेठीजी हमारे प्रेरक थे। मेरे जीवन पर आज तक उनकी राजनीति का प्रभाव है।"

—श्री नृसिंहदास (बाबाजी)

"जिन्होंने भारतीय स्वाधीनता के संघर्ष में अपने जीवन को उत्सर्ग कर दिया है उनको भूल जाना भारी कृतघ्नता होगी।"

—श्री स्वामी भवानीदयाल सन्यासी

"नवज्योति के सम्पादकीय शब्दों में यही प्रायश्चित्त है उनके जीवन में किये हुए अपने 'पापों' का! मेरा अनुमान है शब्द 'अपने' सेठीजी के पापों का नहीं बल्कि प्रान्त के कार्यकर्ताओं के पापों का विशेषण होगा जो उन्होंने सेठीजी के जीवन काल में किये।"

—श्री जयनारायण व्यास

"हमें भगवान् महावीर की तरह श्री अर्जुनलालजी सेठी का जन्म दिन भी मनाना चाहिये।"

—श्री हीरालाल शास्त्री

"१९०६-७ के क्रान्ति युग में सेठीजी ने 'श्री जैन विद्या प्रचारक समिति' और 'श्री जैन वर्धमान विद्यालय' की स्थापना करके जो काम किया था उसी से राजस्थान में राजनैतिक चेतना का जन्म हुआ था।"

—श्री सत्यदेव विद्यालंकार

"उन्होंने ऐसे समय इस पथ पर पांव रखा जब वन्दे मातरम् बोलना भी अपराध समझा जाता था।"

—श्री शोभालाल गुप्त (भ०सम्पादक "हिन्दुस्तान")

सन १९३५ ई० में श्री सेठीजी के मन में कितनी आग जल रही थी और देश सेवा की भावना उस समय भी कितनी उग्र थी यह ता० ३ मार्च सन् १९३५ के "राजपूताना मेल" में पढ़िये:—

"राष्ट्रीयता, देश सेवा, कृषकोत्थान, मुस्लिम पक्ष, नेशनलिस्ट मुसलिम, हिन्दू संगठन, खद्दर प्रचार, इत्यादि अनेक भेषों में नेतृत्व चोथ वसूल करने की एषणा रखने वाले प्रान्तेतर नेता स्वामियों की नौकरशाही का संगठन। इस प्रान्त में गैर राजपूतानी नगण्य लोगों ने ऐसी दयाशून्य स्वार्थान्धता से जमाया है कि राजपूताना की मिट्टी से पैदा हुई प्रान्तीय शक्ति और विभूति का विकास सर्वथा कुचला हुआ पडा है। नेतृत्व शाही के चाकरों के कारण राजपूताना में साधारण-सी समाज सेवा के कार्य भी यथेष्ट नहीं होते। जिधर देखिये उधर मक्कारी, झूठ, पैसा ठगी का ही बोल बाला है। जनता सेवा, सत्य ध्रुव व्यवस्था का नाम निशान नहीं है।"

भविष्य कुछ और था। होनहार को कौन टालता। सर्व साधारण जनता को ऊपर के विवरण से संक्षिप्त में कुछ प्रकाश मिल गया है। जिससे विचार विमर्श के मार्ग पर आगे बढ सकें। बस।

सेठीजी की स्मृति में जयपुर कांग्रेस पर "अर्जुनलाल सेठी द्वार" निर्माण किया गया था एवं "अर्जुनलाल सेठी स्पेशल रेलें" भी चलाई गई थी। ये स्मृति चिन्ह यद्यपि अस्थायी व सामयिक ही थे किन्तु सेठीजी की सेवाओं और उनके जीवन दान की ओर जनता का ध्यान खेंचने के लिए उस समय पर काफी थे।

ता० ६-११-४८ ई० को अनेक सेठी प्रेमी गणों के सद्प्रयत्नों से नई दिल्ली के ४० ए. हनुमान रोड स्थित श्री सत्यदेवजी

विद्यालंकार के निवास स्थान पर सायंकाल ७ बजे पूजनीय महात्मा भगवानदीनजी की अध्यक्षता में "त्यागमूर्ति स्व० पं० अर्जुनलालजी सेठी स्मारक समिति" की स्थापना हो चुकी है। प्रधानमंत्रीत्व श्री नरसिंहदासजी (बाबाजी) के हाथों में है। सदस्य सर्व—श्री कर्मवीर पं० सुन्दरलालजी, श्री विजयसिंहजी पथिक और कोषाध्यक्ष श्री सत्यदेवजी विद्यालंकार हैं।

इस स्मारक समिति ने श्री वृजलालजी बियाणी जैसे अनेक गण मान्य महानुभावों का सहयोग और कुछ आर्थिक सहायतायें भी प्राप्त करली हैं। मुझे पूरा २ विश्वास है कि समिति सेठीजी के स्मारक में शीघ्र ही ठोस कदम उठावेगी।

॥ जय-हिन्द ॥

[६]

स्वर्गीय सेठ श्री जमनालालजी बजाज

"सेठ जी की दानशीलता और उदारता को सारा देश जानता है पर उनके दूसरे गुणों को वही जान सकते हैं जिनका उनके साथ अधिक व्यवहार रहा है। मेरा विचार है कि महात्मा गांधी जी के सिद्धान्तों को उन्होंने केवल समझा ही नहीं है, पर अपने जीवन में—प्रतिदिन की दिनचर्या में इस प्रकार से स्वीकार कर लिया है और वर्तना आरम्भ कर दिया है जैसा वर्तने वाले देश में आश्रम के बहार शायद ही दो चार मिलें। यद्यपि आधुनिक रीति की शिक्षा उनकी उच्चकोटि की नहीं है, पर बुद्धि तीव्र होने के कारण उन सिद्धान्तों के तत्त्व को वह खूब ही समझ गये हैं, और कहीं कहीं तो जब कोई प्रश्न छिड़ जाता है तो बहुत ही सूक्ष्म रीति से उनकी विवेचना करते हैं। इसका विशेष यह कारण है उन सिद्धान्तों के अनुसार अपने जीवन को बनाने की चेष्टा। मैं समझता हूँ कि जब वह किसी बात को कहना चाहते हैं अथवा किसी काम को करना चाहते हैं तो उस विषय को उन सिद्धान्तों की कसौटी पर पहले जांच लेने का प्रयत्न करते हैं। उन सिद्धान्तों के मूल तत्त्व सत्य और अहिंसा है।

इस लिये सेठजी जो समझते हैं। उसे कह देने में कभी भी नहीं हिचकते।"

डा० राजेन्द्रप्रसाद

(सन् १९२६ ई० मे श्री रामनरेशजी त्रिपाठी को एक पत्र के दौरान में)

भामाशाह की सी उदारता व दधिची की सी त्यागभावना लेकर जिस नर-रत्न ने अवतीर्ण होकर राष्ट्र सेवा में अपने जीवन को उत्सर्ग करके भारत मां के गले मे जयमाल पहनाने का अथक प्रयत्न किया वह महान व्यक्ति सेठ जमनालाल बजाज के अलावा दूसरा कौन हो सकता है ? इसमे कोई सन्देह नहीं अगर गांधी जी को अपने पञ्चम पुत्र श्री जमनालाल बजाज की सहायता प्राप्त न होती तो भारत को इतना शीघ्र गणतन्त्र दिवस मनाने का सौभाग्य प्राप्त न होता। ब्रिटिश काल में सेठ जमनालालजी का वर्धा ही भारत की राष्ट्रीय राजधानी रहा, पाकिस्तान के निर्माता श्री जिन्ना साहब को यही दुःख होता था कि प्रान्तीय कॉंग्रेसी सरकारें दिल्ली के बजाय वर्धा से सचालित होती थीं।

भारत का राष्ट्रीय-तीर्थ व राष्ट्र-पिता बापू का निवास स्थान सेठजी का वर्धा ही रहा। इसी स्थान पर राष्ट्र की महान विभूतियां आकर बापू से गुप्त मंत्रणायें करती थी तथा गांधी जी यहां से ही देश को निर्देश करते रहते थे व अपना दिव्य सन्देश सुनाते थे ।

सेठ जमनालालजी बजाज का जन्म ता० ४-११-१९८९ ई० को जयपुर राज्य के सीकर जिले के मरुस्थल में 'काशी का बास' नामक गांव में श्री कनीरामजी बजाज के घर हुआ। श्री कनीरामजी साधारण स्थिति के गृहस्थी थे, साधारण खेती-बाडी का काम व लेन देन करके अपना गुजर कर ही लेते थे ।

'काशी का बास' जैसे गांवड़े गांव में जन्म लेने वाले ग्रामीण बालक के लिये कौन कह सकता था कि यह शिशु बड़ा होकर राष्ट्र का भावी निर्माता बनेगा प्रभु की लीला बडी विचित्र है, उमने काच में कचन को छिपा रखा। सेठजी ६ साल की आयु में वर्धा में स्व० रामधन जी के गोद बैठे। आपने चार क्लास मराठी और मामूली अंग्रेजी पढ़ कर सिर्फ ग्यारवे साल में ही स्कूल छोड़ दिया। इतनी थोडी शिक्षा पाने पर भी आप कुशाग्र बुद्धि के थे तथा शब्दों की पकड इस खूबी से करते थे कि बड़े बड़े दिग्गज विद्वान भी आपकी तीक्ष्ण बुद्धि की सराहना करते थे। कांग्रेस कार्य-कारिणी समिति में विवादग्रस्त प्रश्नों पर आपकी यह प्रतिभा बहुत सहायक साबित हुई। बचपन में आप संकोची स्वभाव के थे मगर ज्यों २ बड़े होते गये आप में निर्भयता समाती गई। आप सरल स्वभावी निरभिमानी व कुशल व्यवसायी थे। जहां आप कुबेर की तरह धन कमाते थे, वहां कर्ण की तरह दान भी करते थे। धीरे २ आपने तृष्णा को छोड़ दिया व लोक हित और देश सेवा के कार्यों में जुट गये। आप उच्च कोटि के समाज सुधारक व शिक्षा प्रसारक होने के साथ २ राज-नीतिज्ञ भी थे। ऐस मेधावी धनी पुरुष को सरकार ने फुसलाना चाहा व आपको सिर्फ १६ साल की आयु मे सन् १६०८ में ओनरेरी मजिस्ट्रेट व २६ साल की आयु सन् १६१८ में रायबहादुर बनाया। मगर सेठजी ने इन सब को बाद में ठुकरा दिया, और राष्ट्रहित के पवित्र कार्य में जुट गये। आपने लाखों रुपये देश के कामों में दिये व गांधी जी की आज्ञानुसार खर्च कर के बीसियों सस्थाओं का निर्माण किया। सेठजी इतने विभिन्न कामों में योग देते थे कि उनका विवरण करना ही कठिन है।

आप मारवाड़ी अग्रवाल महासभा के संस्थापक व सभापति

हिन्दी साहित्य सम्मेलन मद्रास अधिवेशन के सभापति, कांग्रेस कार्य कारिणी के सदस्य व खजाँची रहे। अनेकों बार आपने जेल यात्रायें की, नागपुर झण्डा सत्याग्रह का नेतृत्व करके तो आपने अपना नाम अमर कर लिया। देश में जितने चर्खा संघों का जाल बिछा हुआ है वह सब आप ही की बदौलत है। गांधीजी की विभिन्न प्रवृत्तियों, हरिजन आन्दोलन, खादी आन्दोलन, ग्रामउद्योग आदि सब में आपने हाथ बटाया। वर्धा के मारवाडी शिक्षा मंडल की स्थापना देशभक्त दामोदर दासजी राठी व जाजूजी की सहायता से आपने की। राजस्थान मे गांधीवाद को फैलाने का श्रेय भी आपको है, एक समय ऐसा था जब कि राजस्थान की सब शक्तियां वर्धा में ही एकत्रित थी। सेठीजी, पथिकजी, केसरी सिंहजी, बाबाजी, चौधरी जी, स्वामी नरसिंह देवजी, छोटेलालजी आदि सब वर्धा में ही थे। राजपूताना मध्य भारत सभा की स्थापना सन् १९१८ ई० में दिल्ली में हुई, आप ही को प्रथमवार उसका अस्थाई सभापति व श्री गणेशशंकरजी विद्यार्थी को मंत्री चुना गया था। जयपुर प्रजा मण्डल का आन्दोलन भी आपके नेतृत्व में चला। उसका देश व्यापी प्रभाव हुआ। जब आप इस आन्दोलन के सिलसिले में कलकत्ता गये थे, तो नेताजी सुभाष आपको स्टेशन पर पहुँचाने आये थे।

देश का सर्वोच्च मान राष्ट्रपति का पद भी आपको मई १९३४ में दिया गया, तथा ६ माह तक आप राष्ट्रपति रहे, बाद में आपके स्थान पर राजेन्द्र बाबू १९३४ के अक्टूबर में बम्बई कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये। जीवन के आखरी दिनों में आपने गो सेवा संघ की स्थापना की। राष्ट्र सेवा में जीवन भर रत रह कर सिर्फ ५२ साल की आयु में आपने ११ फरवरी (फागुन बदी ११) सन् १९४२ के दिन अपनी जीवनलीला समाप्त की। आपके असमय में उठ जाने से

राष्ट्र को भारी हानि हुई है। पूज्य गांधीजी ने सन् १९२६-२७ में जमनालालजी के लिए लिखा:—

"मनुष्य के जीते हुए उसकी जीवनी का प्रगट होना सामान्यतया अयोग्य है। परन्तु इसमें अपवाद भी है। जमनालालजी को मैं मुमुक्षु या आत्मार्थी समझता हूँ। ऐसे पुरुषों की जीवनी में से दूसरों को कुछ न कुछ नैतिक लाभ मिलता है। मैं आशा करता हूं कि जिन्होंने सेवा-धर्म को स्वीकार किया है उनको जमनालालजी के जीवन में से बहुत बातें अनुकरणीय प्रतीत होंगी।"

॥ जय-हिन्द ॥

[१०]

श्री गणेशशंकरजी विद्यार्थी

"गणेशजी जैसे जिए, वैसे ही मरे और अगर हममें से कोई आरजू करे और अपने दिल की सब से प्यारी इच्छा पूरी करना चाहे तो वह इससे अधिक क्या मांग सकता है कि उसमें इतनी हिम्मत हो कि मौत का सामना अपने भाइयों की और देश की सेवा में कर सके, और इतना खुश—किस्मत हो कि गणेशजी की तरह मरे। शान से वह जिए और शान से वह मरे और मर कर जो उन्होंने सबक सिखाया वह हम बरसों जिन्दा रह कर क्या सिखावेंगे।

हमारे देश का एक चमकता हुआ सितारा चला गया। लेकिन उसकी चमक तो बाकी है और मुल्क को रोशन करती है और उसकी गरमी मुरझाए हुए दिलों को जिन्दा करती है। उन्होंने जिन्दगी का असली लुफ्त उठाया। जैसे जार्ज बर्नाडशा ने लिखा है:—

This is the true joy in life, the being used for a purpose recongnised by yourself as a

mighty one, the being thoroughly worn out before you are thrown on the scrap heap, the being a force of nature, instead of a feverish, selfish little clod of ailments and grievances, complaining that the world will not devote itself to making you happy."*

—श्री जवाहरलाल नेहरू (विजयादशमी १६८८)

पाठक पूछेंगे कि श्री गणेशशंकरजी विद्यार्थी को राजस्थानी देश भक्तों में कैसे शुमार किया। मेरा ज़वाब है, गणेशजी वैसे तो सारे भारत की महान् विभूति थे, किन्तु उनका राजस्थान की जन जागृति में बड़ा भारी हाथ रहा है, तन मन धन से जितनी सेवा राजस्थान की गणेशजी ने की उतनी शायद ही किसी बाहरी नेता ने की हो। सब से महान् कार्य तो आपने राजस्थान के लिये यह किया है कि अपने पत्र 'प्रताप' द्वारा राजस्थान के जन आन्दोलन, रियासतो में होने वाले अमानुषिक अत्याचारों को संसार की दृष्टि में आप उस समय लाये जब कि कोई पत्र इसके लिये तैयार नहीं था। इसके अलावा आपने चन्दे की भारी रकमे जन आन्दोलन

---

*मानव जीवन का सच्चा सुख इसी में है कि जीवन का एक ऐसे उद्देश्य के लिये उपयोग किया जाय जिसको आप महान् और उत्कृष्ट समझते हों आप अच्छी तरह जीर्ण और जर्जरित हो जावे पूर्व इसके कूड़े के ढेर में फेंक दिए जावें और आप प्रकृति की एक शक्ति हों न कि क्लेश, शोक और उपालम्भों के ज्वर ग्रस्त और क्षुद्र मृत्पिण्ड हो जो सदा यही शिकायत करता रहता है कि संसार मुझको सुखी बनाने की ओर ध्यान नहीं देता।

के सहायतार्थ भिजवाई, आपने अनेकों बार राजस्थान की यात्रायें की एवं अपना अमूल्य समय परमार्थ देकर राजस्थान को मार्ग बताने मे भारी सहायक बने। ब्यावर के देश भक्त-दामोदर, बिजौलिया में श्री विजयसिंहजी पथिक के भी सम्पर्क मे आप आये।

रियासती संसार की पहली संगठित संस्था 'राजपूताना मध्यभारत सभा" के संस्थापकों में से आप भी थे। २८ सितम्बर १९१८ को दिल्ली के चान्दनी चौक के मारवाड़ी पुस्तकालय में जोधपुर, जयपुर, उदयपुर, भरतपुर, अलवर, रींवा, इन्दौर, नरसिंहगढ़, ग्वालियर, झालरापाटन आदि देशी राज्यों के और ब्रिटिश भारत के लगभग ८० सज्जन एकत्र हुए। कविवर श्री गिरिधर शर्मा सभापति चुने गये फिर गणेशजी ने अपने भाषण में देशी राज्यों की प्रजा को उन्नति के लिये एक संस्था की आवश्यकता बताते हुए राजपूताना और मध्यभारत की रियासतों के लिये एक संस्था स्थापित करने की आवश्यकता बतलाई। गणेशजी के प्रस्ताव और श्री चान्दकरणजी. शारदा के अनुमोदन पर राजपूताना मध्यभारत सभा बनाई गई, जिसका उद्देश्य देशी नरेशों के प्रति श्रद्धा रखते हुए राजपूताना और मध्यभारत के देशी राज्यों की प्रजा का कल्याण साधन करना' निश्चित हुआ। अस्थाई रूप से श्री सेठ जमनालालजी बजाज सभापति और श्री गणेशजी मंत्री निर्वाचित हुए तथा सभा का कार्यालय गणेशजी के पास कानपुर में रखा गया।

५ नवम्बर सन् १९२१ को रात्री के ८॥ बजे, मारवाड़ी पुस्तकालय दिल्ली में राजपूताना मध्यभारत सभा की कार्य-कारिणी की बैठक सेठ जमनालालजी की अध्यक्षता में हुई। जिसमें प्रथम

प्रस्ताव पास हुआ जो ऐसे है—"यह सभा देश हितार्थ जेल में गये हुए निम्न लिखित सभासदों को हार्दिक बधाई देती है—पं० सत्यदेवजी विद्यालंकार-सम्पादक राजस्थान केसरी वर्धा, पं० माखनलालजी चतुर्वेदी सम्पादक कर्मवीर जबलपुर, गणेश शंकरजी विद्यार्थी सम्पादक प्रताप कानपुर, बाबू रामनारायणजी चौधरी मेनेजर राजस्थान केसरी वर्धा, श्रीमान् बाबू भगवानदासजी अग्रवाल मऊ छावनी, राधामोहन गोकुलजी कलकत्ता।"

मंत्री-पद पर काफी समय तक रह कर, गणेशजी ने सभा के अध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया। अब हम अपने असली विषय पर आते हैं।

अमर शहीद श्री गणेशजी का जन्म आसोज सुद १४ रविवार सम्वत १९४७ को कायस्थ कुल में प्रयाग में उनके ननिहाल में श्रीमती गोमतीदेवी के उदर से हुआ। आपके पिता श्री जय-नारायणजी हथगांव जिला फतेहपुर के निवासी थे। जब गणेशजी तीन साल के थे, तब अपने नाना मुंशी सूरजप्रसाद के साथ सहारनपुर में कुछ दिनों के लिये रहे। आपके नाना असिस्टेण्ट जेलर थे। गणेशजी के नाना, रोज एक डबल रोटी जेल की बनी हुई गणेशजी को देते तो ये बड़े प्रेम से उसे उड़ा जाते। लिखने का मतलब यह है कि गणेशजी को जेल की रोटी खाने का चस्का बचपन में ही पड़ गया जो कि सारी उम्र रहा और उसके लिये पांच-पांच बार उनको जेल जाना पड़ा।

गणेशजी पढ़ने में बड़े तेज थे। १७ वें साल में सन् १९०७ ई० में आपने द्वितीय श्रेणी मे एण्ट्रेंस पास किया। एण्ट्रेंस पास करने के बाद गणेशजी कायस्थ पाठशाला कालेज प्रयाग में भर्ती होगये,

मगर आर्थिक कठिनाइयों और गृहस्थी के झंझटों के कारण आपने कालेज सात आठ महिने बाद ही छोड़ दिया। प्रयाग में पढते समय आप 'भारत में अंगरेजी' राज्य के लेखक कर्मवीर पं० सुन्दरलालजी के सम्पर्क में आये। पं० सुन्दरलालजी :को उनके 'कर्म योगी' पत्र के संचालन में आपने काफी सहयोग दिया। सुन्दरलालजी का गणेशजी का जो स्नेह सम्बन्ध कायम हुआ वह जन्म भर रहा। गणेशजी सुन्दरलालजी को 'मास्टरजी' कहा करते थे और सुन्दर-लालजी आपको 'गणेशजी' के प्रिय नाम से पुकारते थे।

१९ वर्ष की आयु में ४ जून १९०९ को आपका विवाह हरवं-शपुर (प्रयाग) के मुंशी विश्वेश्वर दयालजी की पौत्री श्रीमती चन्द्रप्रकाश देवी से हुआ।

गणेशजी कालेज छोड़ कर कानपुर में अपने बड़े भाई के पास आगये। ६ फरवरी १९०८ ई० में ३०) रु० माहवारी पर आप करेंसी आफिस कानपुर में नौकरी करने लगे। एक दफा करेंसी का अंग्रेज आफिसर आया और गणेशजी को कहा–"मैं अपने मातहतों का निरंकुश शासक हूँ।" गणेशजी से ऐसा सुनना सहा नहीं गया व २६ नवम्बर १९०९ ई० को इस्तीफा दे दिया व १ दिसम्बर १९०९ ई० से २०) मासिक पर पृथ्वीनाथ हाई स्कूल में अध्यापक हो गये। उन दिनों श्री सुन्दरलालजी के 'कर्मयोगी' की धूम थी, जो कि खतर-नाक चीज समझी जाती थी। पर गणेशजी उसे बिना नागा पढ़ते थे, तथा कभी-कभी स्कूल में साथ ले जाते थे, एक दफा हेडमास्टर ने देखा तो पढ़ने पर आपत्ति की तो गणेशजी ने ५ सितम्बर १९१० ई० को यहां से भी छुट्टी ली।

इस समय तक यानी बीसवें वर्ष के पहले ही आपने लेख

लिखना आरम्भ कर दिया था। गणेशजी ने एक लेख आचार्य द्विवेदीजी को भेजा, जो कि पसन्द आया व 'सरस्वती' में छाप दिया। बाद में आपको २ नवम्बर १९११ ई० से द्विवेदीजी ने २५) मासिक पर अपने सहायक के रूप में सरस्वती में रख लिया। फिर क्या था, गणेशजी बढ़े और ऐसे बढ़े कि हिन्दी पत्रकार कला में उन्होंने क्रान्ति उत्पन्न कर दी। गणेशजी की, योग्यता ने मालवीयजी को प्रभावित किया तथा मालवीयजी ने गणेशजी को 'अभ्युदय' में खेंच लिया 'अभ्युदय' में अपने ४०) मासिक पर २९ दिसम्बर १९१२ से २३ सितम्बर १९१३ तक काम किया। आपकी लेखनी ने 'अभ्युदय' के पाठकों मे जीवन पैदा किया, तथा ग्राहकों की संख्या बढ़ने लगी।

इन्हीं दिनो गणेशजी बीमार होकर प्रयाग से कानपुर आये। अच्छे होने पर आपने पं० शिवनारायणजी मिश्र की सहायता से ९ नवम्बर १९१३ ई० को 'प्रताप' को जन्म दिया। गणेशजी के पास उस वक्त पूरे साधन न थे, न पैसा ही था, न छापाखाना ही था, न कोई बड़ा सहायक ही मिला। फिर भी आप अपनी अनोखी लगन अपूर्व आत्म विश्वास व अविचल दृढ़ता तथा लोक सेवा की भावना से काम करते करते अग्रसर होते गये। आपने 'प्रताप' द्वारा राष्ट्र में जीवन फूंका, ऐसा फूंका कि हजारों युवक अपने जीवन को हथेली में रख कर आजादी के हवन कुण्ड में अपनी बली देने को तैयार हुये। राष्ट्र को भगतसिंह जैसे कई वीर योद्धा आपने दिये। भगतसिंह जब एफ० ए० पास करके घर से लापता होगये तो गणेशजी के पास कानपुर में ही रहे व 'प्रताप' में काम करने लगे। अज्ञातवास में अपना नाम 'बलवन्तसिंह' रखा, व कानपुर के

राष्ट्रीय विद्यालय का संचालन किया। यह सन् १६२५ के आस पास की बात है।

गणेशजी की लेखनी में कितना ओज था, कितना प्रभाव था और कैसी भावना थी, इसका पता निम्न लिखित पंक्तियों से लगेगा जो कि उन्होंने अपनी १८ साल की आयु में 'हमारी आत्मोत्सर्गता' नामक पुस्तक की भूमिका में लिखी:—

"प्राचीन कथाओं को ही सुन कर हिन्दू पति महाराणा प्रताप स्वतंत्रता देवी के स्वतंत्र आराधक हुए थे। महाभारत और रामायण की कथाओं ही ने परतंत्र पिता के परतंत्र पुत्र शिवाजी को महाराष्ट्र का छत्रपति राजा बनाया था। दूर क्यों जाइये हमारे देश में बरसात के दिनों मे देहाती आल्हा गाते हैं, गाते समय उनके जोश उनके कहने का ढंग, उनके अंग अंग से वीरता का प्रदर्शन इत्यादि देखने के योग्य होते हैं! सारांश यह कि इतिहास सोते हुए मनुष्य को जगा सकता है, जागे हुए को पैरों पर खड़ा कर सकता है और खड़े हुए की नसों में खून दौड़ा सकता है। मुरदे को जिन्दा करना, सूखे को हरा करना, या तो अमृत (यदि अमृत कोई वस्तु है तो) का काम है या फिर इतिहास का। इतिहास के लाभों को न मानना हठ धर्मी है।"

गणेशजी के राजनैतिक विचार, निम्न पंक्तियों में झलकते हैं—

"देश में जो सुषुप्ति थी, वह मिट गई। जागरण के युग का उदय होगया है, और भलि भांति उदय होगया है और जब देश के ३२ करोड बच्चे जाग चुके हैं वे अपने नैसर्गिक अधिकारों को जान चुके हैं, तब संसार की कोई भी शक्ति उन्हें दबाये और पूर्ण विकास से

संचित नहीं रख सकती। आज वे दबे रहें, किन्तु कल या परसों वे अवश्य उठेंगे, और वह किसी की कृपा से नहीं, किसी के हाथों टुकड़ा पा कर नहीं, किन्तु अपने बल, पौरुष और अधिकार से उठेंगे और अपने स्थान पर अपनी पृथ्वी से लेकर अपने आकाश तक सिर ऊंचा करके उठेंगे।"

'प्रताप' बृटिश शाही की नजरों में इतना खटकता था कि नौकरशाही के एक महाप्रभु ने सन् १९२१ में 'प्रताप' की टीका करते हुए कहा—"जब तक 'प्रताप' का अन्त न कर दिया जावेगा तब तक संयुक्त-प्रान्त का सार्वजनिक जीवन सुरक्षित नहीं हो सकता।" गणेशजी प्रारम्भ से ही 'प्रताप' द्वारा अधिकारियों के अत्याचारों का बड़ा जोरदार विरोध करने लगे और इस कारण उस समय से ही सरकार की कड़ी नजर आप पर रहने लगी।

उन दिनों डा० मुरारीलाल, महाशय काशीनाथ आदि सज्जनों के सम्पर्क में आये व कानपुर के सार्वजनिक जीवन में भाग लेने लगे। गनेशजी शुरू में तिलक को अपना गुरु मानते, बाद में गाँधीजी के भी अनुयायी हो गये। लोकमान्य के तेज व महात्माजी की नम्रता दोनों का सम्मिश्रण आप में था।

गणेशजी कानपुर के राष्ट्रीय जीवन के प्राण व मजदूरों के प्राण थे। आपके सार्वजनिक क्षेत्र में आने के पहले कानपुर में कोई जीवन नहीं था। १९१६ ई० में लखनऊ कांग्रेस से लौटते वक्त लोकमान्य और गांधीजी दोनों महापुरुषों को कानपुर में बुलाने का श्रेय गणेशजी को ही था। उस समय कानपुर वाले स्वराज्य-सम्बन्धी बातों से इतना डरते थे कि महात्माजी को स्टेशन से लाने के लिये न तो किसी ने अपनी सवारी दी और न ठहरने के लिए जगह।

गणेशजी ने गांधीजी को अपने 'प्रताप प्रेस' के टूटे फूटे खण्डहर में लाकर ठहराया था। आपने गांधीजी से शिकायत की कि हम नौज-वानों को जरा प्रोत्साहन देने वाला यहां कोई नहीं हैं, तब गांधीजी ने पास में बैठे हुए डा० मुरारीलाल से कहा—"आप क्यों नहीं इन नौजवानो से काम लेते। अगर इन्हे आप उत्साहित करेंगे तो ऐसे बहुत कुछ कर दिखायेंगे।" गांधीजी के आदेश पर डाक्टर मुरारीलाल राजनीति मे अधिक दिलचस्पी लेने लगे।

गणेशजी व्यक्तियों के चतुर पारखी थे, जहां कहीं भी प्रतिभा-शाली नवयुवक दिखता, फौरन उसे आगे बढ़ने के लिये तैयार करते। युक्त प्रान्त भर के विशेपतया कानपुर के सैकड़ों युवको से आपने राष्ट्रीय भावना का संचार किया। जो भी उनके सम्पर्क में आये, उनको अपना बना लिया। गणेशजी बड़े मिलन सार, सहृदय व व्यवहार कुशल थे। इस तरह कानपुर वालों के दिलो मे गणेशजी समा गये तथा वहां के गांधी बन गये। आपकी लोक-प्रियता का पता इससे मालुम पड़ता है कि १९२६ ई० के चुनाव में आपने श्री चुन्नीलाल गर्ग जैसे करोड़पति को बुरी तरह हराया।

कानपुर युक्तप्रान्त का व्यौपारिक केन्द्र तो था ही, मगर गणेशजी ने उसे अपनी प्रतिभा से राजनीति का केन्द्र बना दिया।

सन १९२१ व ३० के आन्दोलन में कानपुर सबसे आगे रहा तथा १९२५ में राष्ट्रीय महासभा का अधिवेशन सरोजनी देवी की अध्यक्षता मे बड़ी शान से सम्पन्न हुआ। गणेशजी ही स्वागत समिति के प्रधान मन्त्री थे, तथा प० नेहरु उस अधिवेशन में C. O. C. थे। एक दुःखद घटना कानपुर कांग्रेस में यह हुई कि

अजमेर वालों के डेलीगेट पास रद्द करने पर सेठी की पार्टी वा
कांग्रेस मे न जा सके तथा श्रीमती हसरत मोहनी ने पं० नेहरु के ए
थप्पड मार दिया। इसी काँग्रेस में स्वामी कुमारानन्द को १२००)र
की थैली भेंट की गई थी।

कानपुर शहर में आजादी की लहर भरने के साथ २, कानपु
के आस पास के गावों मे राजनैतिक चेतना का सचार
गणेशजी ने किया। आपने नरवल गाव मे १९२९ में सेवाश्रम
स्थापना की, पुस्तकालय व पाठशाला भी चलाई तथा आस पा
के २०० गांवों में संगठन का काम जोरों से किया तथा सैंक
ग्रामीणों को तैयार किया, जिन्होंने सत्याग्रह आन्दोलन में जे
यात्रा की। ग्रामीणों के संगठन के साथ २ ही कानपुर के मजद
को भी एक झण्डे के नीचे लाकर, मजदूर सभा कायम की
१९२७ से जीवन के अन्तिम समय तक उसके अध्यक्ष रहे। किस
और मजदूरों के विषय में गणेशजी ने लिखा:—"हम लोगों
कागजी स्वराज्य मसविदा बनाने के झंझट में न पड कर स
गावों की ओर मुडना चाहिये। हिन्दू मुस्लिम वैमनस्य दूर करने
का एक मात्र यही तरीका है कि ग्राम-संगठन के काम को हाथ
लेकर बिना भेद भाव के भारत के दीन किसानों की सेवा
जाय। उसी तरह शहरों की मिलों में काम करने वाले ल
मजदूरों क संगठन की भी आवश्यकता है। किसान और मज
का युग आगया है। थोथी राजनीति से अब काम न चलेगा

भविष्य किसानो और मजदूरो के हाथ में है। जो स
भविष्य में कृषक-मजदूर सेवा से वचित रहेगी, वह शक्ति
और निकम्मी सिद्ध होगी।"

१६२६ में फरुखाबाद में होने वाले संयुक्तप्रान्तीय राजनैतिक सम्मेलन भी बड़ी शान शौकत से आपकी अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

राजनैतिक नेता के साथ २ गणेशजी एक आदर्श पत्रकार व साहित्य सेवी भी थे। वे जन्म-जात पत्रकार थे। गणेशजी अपने ढंग के अकेले हिन्दी लेखक और पत्रकार थे। आपने अपने लेखों व सम्पादकीय टिप्पणीयों द्वारा हिन्दी संसार में एक नवीन स्फूर्ति को जन्म दिया। वे जो कुछ लिखते थे, उसमें अपना हृदय निकाल कर रख देते थे। हिन्दुस्तानी एकेडेमी प्रयाग में एक बार अध्यापक रामरत्नजी ने गणेशजी की भाषा के लिये कहा, "आप लोग हिन्दुस्तानी जबान की सृष्टि कर रहे हैं, पर क्या आपको मालुम है कि जबान की सृष्टि हो चुकी है और उसका सिरजनहार है गणेशशंकर विद्यार्थी।"

लोक सेवा ही सम्पादक का खास धर्म है, गणेशजी ने भारी कष्ट सह कर इसका आजन्म पालन किया। इसके लिये कई बार जेल गये, जमानतें जप्त करवाई, भारी आर्थिक कष्ट उठाये। गणेशजी के मुकाबले के भारत में इने गिने पत्रकार ही होंगे।

गणेशजी कैसे साहित्यकार थे, इसका नमूना नीचे की पक्तियां बतलायेंगी।

"प्रताप! हमारे देश का प्रताप! हमारी जाति का प्रताप! दृढ़ता और उदारता का प्रताप! तू नहीं है, केवल तेरा यश और कीर्ति है। जब तक यह देश है और जब तक संसार में दृढ़ता, उदारता, स्वतन्त्रता और तपस्या का आदर है, तब तक हम क्षुद्र प्राणी ही नहीं, सारा संसार तुझे आदर की दृष्टि से देखेगा।

संसार के किसी भी देश में तू होता, तो तेरी पूजा होती और तेरे नाम पर लोग अपने को न्यौछावर करते।"

गणेशजी ने हिन्दी साहित्य सम्मेलन, गोरखपुर अधिवेशन के सभापति पद से हिन्दी के भविष्य के सम्बन्ध में कहा—"हिन्दी भाषा और हिन्दी साहित्य का भविष्य बहुत बड़ा है। उसके गर्भ में निहित भवितव्यताएं इस देश और उसकी भाषा द्वारा संसार भर के रंग मंच पर एक विशेष अभिनय कराने वाली है। मुझे तो ऐसा भासित होता है कि संसार की कोई भी भाषा मनुष्य जाति को उतना ऊंचा उठाने, मनुष्य को यथार्थ में मनुष्य बनाने और संसार को सुसभ्य और सद्भावनाओं से युक्त बनाने में उतनी सफल नहीं हुई, जितनी कि आगे चल कर हिन्दी भाषा होने वाली है। हिन्दी को अपने पूर्व सचित पुण्य का बल है। संसार के बहुत बड़े विशाल खण्ड मे सर्वथा अन्धकार था, लोग अज्ञान और अधर्म में डूबे हुये थे, विश्व-बन्धुत्व और लोक कल्याण का भाव भी उनके मन में उदय नहीं हुआ था, उस समय जिस प्रकार इस देश से सुदूर देश-देशान्तरों में फैल कर बौद्ध भिक्षुओं ने बड़े बड़े देशों से लेकर अनेकानेक उपत्यकाओं, पठारों और तत्कालीन पहुंच से बाहर गिरि-गुहाओं और समुद्र-तटो तक धर्म अहिंसा का सन्देश पढ़ाया था, उसी प्रकार अदूर भविष्य में उन पुनित सन्देश-वाहकों की सन्तति संस्कृत और पाली की अग्रजा हिन्दी द्वारा भारतवर्ष और उसकी संस्कृति के गौरव का सन्देश एशिया महाखण्ड के प्रत्येक मन्त्रणा-स्थल में, एशियाई महासंघ के प्रत्येक रंग मच पर, सुनावेगी। मुझे तो वह दिन दूर दिखाई नहीं देता, जब हिन्दी साहित्य अपने सौष्ठव के कारण जगत-साहित्य में अपना विशेष स्थान प्राप्त करेगा और हिन्दी, भारतवर्ष ऐसे विशाल देश

की राष्ट्रभाषा की हैसियत से न केवल एशिया महाद्वीप के राष्ट्रों की पंचायत में, किन्तु संसार भर के देशों की पचायत में एक साधारण भाषा के समान न केवल बोली भर जायगी, किन्तु अपने बल से संसार की बड़ी बड़ी समस्याओं पर भरपूर प्रभाव डालेगी और उसके कारण अनेक अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्न बिगड़ा बना करेंगे।

हमारे साहित्य-सूर्य की रश्मियां दूर दूर तक समस्त देशों मे पढ़ कर भारतीय-संस्कृति, ज्ञान और कला का सन्देश पहुँचावेंगी और एक दिन और उदय होगा और वह होगा तब, जब इस देश के प्रतिनिधि भारतीय स्वाधीनता के किसी स्वाधीनता-पत्र पर हिन्दी भाषा में और नागरी अक्षरों में अपने हस्ताक्षर करते हुए दिखाई देगें।"

गणेशजी को युवकों से बड़ा प्रेम था, वे उनके जीवन प्राण थे, 'युवकों का विद्रोह' नामक लेख मे से कुछ पंक्तियां उधृत की जाती हैं, जो गणेशजी ने १ दिसम्बर १९२९ को लिखी—

"हमारे लिये तो अहिंसा ही परम अस्त्र है, उसीसे हम दुनियां मे किसी का मुकाबला कर सकते हैं। आगे बढ़ने वाले युवक सबसे विद्रोह करें, किन्तु वे एक भावना से विद्रोह करने की इच्छा को हृदय में न आने दें। उनके मन में ऊँचे चरित्र के प्रति कभी प्रताड़ना या उपेक्षा का भाव उदय न हो। वे स्वयं चरित्रवान हों, उनका सिर भी जब झुके तब चरित्रवान के लिये। यदि चरित्र के प्रति उन में आदर भाव रहा तो उनका विद्रोह, चाहे कितनी ही कटुता क्यों न धारण करले, देश के लिये अन्त में अमृत फल ही सिद्ध होगा।"

गणेशजी-राष्ट्रसेवी, साहित्यकार व पत्रकार के साथ २ उच्च

कोटि के धर्मपरायण और बड़े ईश्वरभक्त थे। ईश्वर में उनकी अगाध श्रद्धा और प्रेम था।

भारत मां का लाडला प्यारा गणेश पांचवी दफा जेल यात्रा करके ६ मार्च १९३१ ई० को जेल से छूटा था, अभी कुछ आराम भी न कर पाया कि भारत मां की पुकार हुई कि—आओ ! प्यारे गणेश आओ ! तुम अपनी बलि मुझे दो !

कानपुर का भीषण हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ। बीसों मन्दिर और मस्जिदें तोड़ी और जलाई गई, हजारों मकान और दूकानें लुटीं तथा भस्मीभूत हुईं। लगभग ७५ लाख की सम्पत्ति स्वाहा हो गई, करीब ५०० से भी ज्यादा आदमी मरे और हजारों घायल हुए। कितनी माताओं के लाल काल के गाल में जा बसे, कितनी युवतियों की मांग का सिन्दूर धुल गया। चार दिन तक कानपुर में महाकाली अपना प्रचण्ड रूप धारण करके अपनी विकरालता दिखलाती रही। उन दिनों कानपुर में कोई शासन, कोई व्यवस्था, कोई कानून न था। अंग्रेजी राज्य चार दिन के लिये मानो खतम हो गया था। ऐसे गाढ़े समय में बड़े बड़े मर्दाने वीर भी आगे बढ़ने से हिचक रहे थे। पर गणेशजी जैसे वीर से न रहा गया और वह आग में कूद पड़ा और अपने आपको हिन्दू-मुस्लिम एकता की वेदी पर, परोपकारिता के उच्च आदर्श पर निछावर कर दिया। २५ मार्च १९३१ के दिन मुस्लिम गुण्डों द्वारा वे मारे गये। आखरी वक्त एक सज्जन गणेशजी को बचाने की गरज से, गली की ओर खींचने लगे तो गणेशजी ने कहा—

"क्यों घसीटते हो मुझे ? मैं भागकर जान नहीं बचाऊंगा। एक दिन मरना तो है ही। अगर मेरे मरने से ही इन लोगों के हृदय की प्यास बुझती हो तो अच्छा है कि मैं यहीं

अपना कर्त्तव्य-पालन करते हुए आत्म-समर्पण कर दूं।"
गणेशजी यह कह ही रहे थे, कि—उन पर गुण्डे टूट पड़े, लाठियां चलीं, छूरे भी चले। सब ने मिलकर क्रूरता पूर्ण कृत्यों से उस संतात्मा का हनन कर दिया। इस समय गणेशजी सिर्फ ४० साल के थे।

गणेशजी के बलिदान पर गांधीजी ने लिखा-"गणेशशंकर विद्यार्थी को ऐसी मृत्यु मिली, जिस पर हम सब को स्पर्धा हो। उनका खून अन्त में दोनों मजहबों को आपस में जोड़ने के लिये सीमेण्ट का काम करेगा। वह मरे नहीं। "आज वह तब से कहीं अधिक सच्चे रूप में जीवित हैं।"

'गणेश शंकर विद्यार्थी' नामक पुस्तक में लेखक श्री देवव्रतजी ने प्रस्तावना में लिखा हैः—

"शहीद-शिरोमणी श्री गणेश शंकर विद्यार्थी का जीवन, महान था। वे साधारण आदमियों से बहुत ऊपर थे, परन्तु उनके बलिदान ने उन्हें और भी महान बना दिया। देश में सैकड़ों, उनसे कहीं अधिक विद्वान् बीसों, कहीं अच्छे वक्ता और अनेक उनसे बढ़ कर कुशल पत्रकार होंगे। ख्यातनामा नेता भी न मालूम कितने हो गये और कितने ही आगे होंगे; परन्तु आत्मोत्सर्ग की जो महानता उनमें थी, जिस विशालता से उनका जीवन अनुप्राणित था, उनके दर्शन मानव-इतिहास में बहुत कम होते हैं। विद्यार्थीजी का सारा जीवन युद्धमय था। वे सदा शैतानियत के विरुद्ध लड़ते रहे। हमेशा अमानुषिकता के खिलाफ ज़िहाद करते रहे, किन्तु उनकी अन्तिम लड़ाई, अमानुषिकता के खिलाफ, उनका आखरी जिहाद बड़ा अनोखा, बिल्कुल बेजोड़ था। मनुष्यता की पूजा का इससे अधिक सुन्दर नमूना और क्या मिलेगा। २५ मार्च

(१९३१ ई०) उनके जीवन का अन्तिम दिवस था और वही उसके पूर्ण आत्म-समर्पण का शुभ मुहूर्त भी। उसने अपने ईश्वर के चरणों में अपने सिद्धान्त की वेदी पर, अपने को अर्पित कर दिया। अपने को अमर-शहीद बना लिया, मानव का अनन्य पुजारी साबित कर दिखाया।

विद्यार्थीजी बहुतों के श्रद्धाभाजन और अनेकों के माननीय तथा आदरास्पद नेता थे, परन्तु उनके बलिदान ने उन्हें न जाने और कितनों का उपास्यदेव बना लिया।"

पं० जवाहरलालजी नेहरु ने लिखा:—

"लखनऊ का स्टेशन था। मार्च का महीना। देहली के समझौते होने पर सत्याग्रही कैदी जेलों से छूट रहे थे और गणेशजी भी छूट कर आ रहे थे। हम लोग अपने प्रान्त के सेनापति का स्वागत करने स्टेशन पर गये और उनका हस मुख चेहरा एक साल भर बाद देख कर खुश हुए। बहुत कुछ बातें करनी थी, बहुत कुछ मनसूबे गाँठने थे, लेकिन समय कम था। कुछ बातें हुई, फिर कहा कि बाद में होंगी। वह 'बाद' फिर नहीं आया।

करांची कांग्रेस में वर्किंग कमेटी की बैठक हो रही थी। एक तार आया और उसको देखते ही दिल बैठ गया और आंखों में अन्धेरा छा गया। यकीन नहीं आता था कि गणेशजी गुजर गए। कांग्रेस की भीड़ में भी सन्नाटा-सा मालुम होता था। रंज हुआ और दिल को समझाने पर भी दिल समझा नहीं।"

❀ जय-हिन्द ❀

[११]

श्री मणिलालजी कोठारी

आज प्रान्तीयता की भावना हमारे हृदयों में घर करती जा रही है यह हमारी संकुचित मनोवृत्ति का ही परिणाम है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम प्रान्तों के दायरे से निकल कर राष्ट्रीय हितों की ओर अग्रसर हों जैसा कि, श्रीमणिलालजी कोठारी के जीवन से ज्ञात होगा।

जन्म से श्री मणिलालजी कोठारी गुजराती थे, मगर आपने अपना अधिकतर जीवन राजस्थान की सेवा में ही खपाया। उस वक्त सारी रियासती जनता राजस्थान के नाम से ही पुकारी जाती थी। आप रियासती प्रजा के बहुत पुराने सेवक व प्रभावशाली नेता थे। आपने सन् १६१६ ई० में काठियावाड़ की रियासतों का प्रजा मण्डल स्थापित किया व उसके प्रधान मन्त्री बन कर रियासती प्रजा में जीवन का संचार किया।

आप रियासती जनता की राजनैतिक सेवा करने वाली पहली सुसङ्गठित संस्था 'राजपूताना मध्यभारत सभा' के भी अध्यक्ष रहे।

इसके अलावा आप अखिल भारतीय कांग्रेस के भी सदस्य अनेक बार चुने गये तथा हिन्दुस्तानी सेवा दल की कार्य कारिणी के भी सदस्य रहे। श्री बी० साम्बमूर्ति, डा० हार्डीकर, सुभाष बाबू, पं० नेहरू, बाबू राजेन्द्रप्रसाद, डा० अन्सारी, डा० सत्यपाल, डा० गोपीचन्द भार्गव, सरदार मंगलसिंह, श्रीमती कमला देवी चट्टोपाध्याय, बाबू श्रीप्रकाश प्रभृति सज्जन भी आपके साथ कार्य-कारिणी में रहे।

रियासती प्रजा के साथ २ आप गरीब व मजदूर किसानों के मूक सेवक थे। सन् १९२१ ई० में आपने ब्यावर के मिल मजदूरों की हड़ताल का संचालन सेठ घीसूलालजी जाजोदिया व स्व० श्री नाथूलालजी घिया वकील के सहयोग से किया।

आप बहुत ही सेवा-भावी, विनम्र व लोक-प्रिय सेवक थे। आपका इतना प्रभाव था कि आप मिनटों में हजारों रुपये लोक हितार्थ इकट्ठे कर लेते थे।

ब्यावर में 'तरुण राजस्थान' पत्र की सारी व्यवस्था आप ही ने की, इस पत्र से आपने रियासती प्रजा में जीवन जागृति का शंख फूँका। आपकी मनुष्य की पहिचानने की दृष्टि बड़ी पैनी थी, श्री जयनारायणजी व्यास जैसे मेधावी युवक को आपने 'तरुण राजस्थान' का सम्पादक चुना।

जीवन के आखरी दिनों में आपका मानसिक संतुलन बिगड़ गया था। आपकी मृत्यु पर पूज्य महात्माजी ने आपको श्रद्धाञ्जलि देते हुये "भिक्षुकराज" की उपाधि से अलकृत किया था।

॥ जय-हिन्द ॥

[१२]

— कोटा के श्री नयनूरामजी —

देश के बड़े नेताओं को आज हम श्रद्धापूर्वक याद करते हैं उनके जीवन पर लेखकों के ग्रन्थ के ग्रन्थ प्रकाशित होते ही रहते हैं किन्तु जिन अगणित वीरों ने अपने देशवासियों के हितों की रक्षा के लिए अपने प्राणों का उत्सर्ग किया वे शनैः शनैः विस्मृति के गर्त में लीन होते ही जा रहे हैं ऐसे ही एक वीर शहीद की स्मृति में हम अपनी तुच्छ श्रद्धाञ्जली अर्पित करते हैं—वे हैं—पं० नयनूरामजी, जिन्होंने रियासतों के अन्दर क्रान्ति का शखनाद किया वह भी जब कि कई रियासतों में जन-जागृति का श्री गणेश भी नहीं हुआ था, तथा लोग आग काम करने से मुंह छिपाते थे. उस समय में आज के क़रीब तीस साल पहले श्री पं० नयनूरामजी ने सार्वजनिक क्षेत्र में पदार्पण किया। इससे पूर्व आप पुलिस में थानेदार थे। आपने कोटा में राजस्थान सेवा संघ की स्थापना की तथा श्री विजयसिंहजी पथिक द्वारा उठाये गये बेगार विरोधी आन्दोलन में भाग लिया। इस पर कोटा राज्य के चापलूसों ने आपका विरोध किया, डराया एवं आपको प्रलोभन दिये। मगर आप अपने प्रण पर दृढ़ रहे और कोटा राज्य में बेगार प्रथा को हटाने में काफी सफल भी हुये। आपने बूंदी, झालावाड़ आदि के कार्य-कर्ताओं के सहयोग से हाड़ौती प्रजा में जीवन

— भूतपूर्व प्रान्तपति —
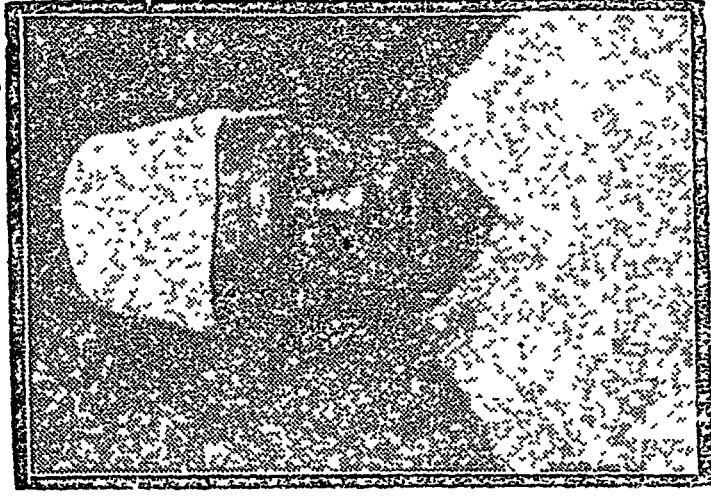
— श्री नथमलजी चोरड़िया, नीमच —

— अमर शहीद —
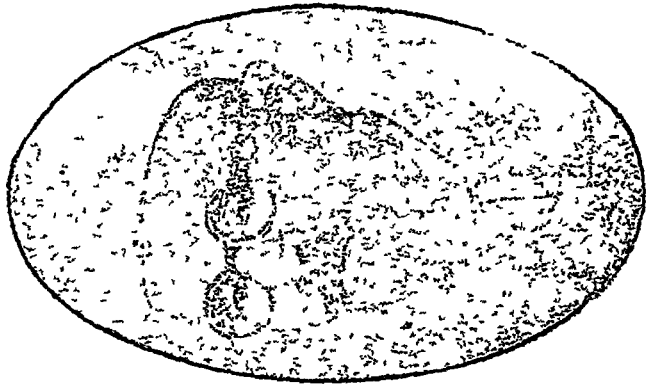
* श्री सागरमलजी गोपा, जैसलमेर *
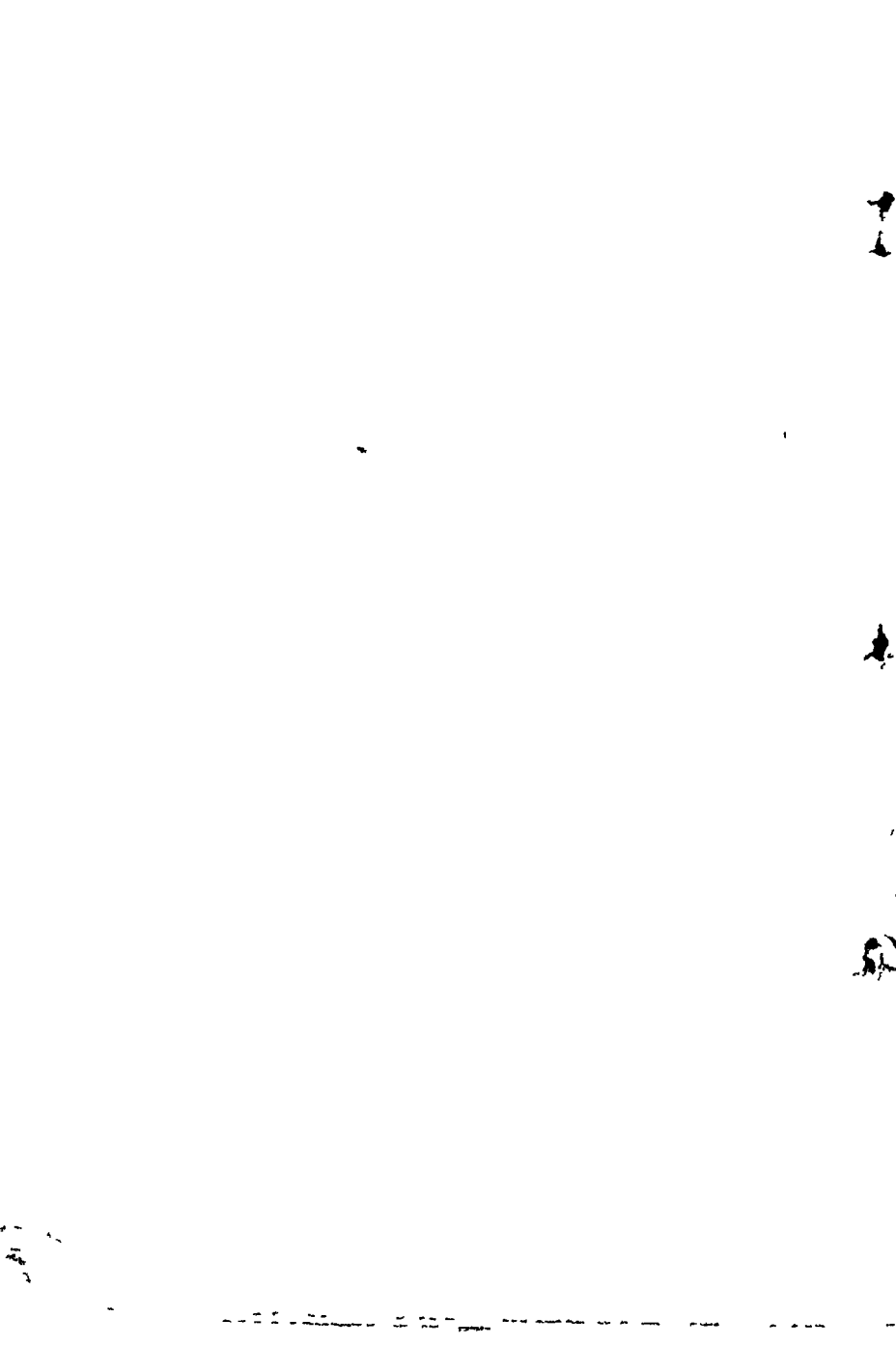
फूंका। आखिर खिलाफ पार्टी वालों ने आप पर हमला किया और आपकी क्रूरता-पूर्वक हत्या कर डाली।

आपकी स्मृति में सन् १९४८ ई० में श्री हरिभाई किंकर की अध्यक्षता में एक भारी मेला कोटा में लगा था, जिसमें हजारों किसानों व नागरिकों ने सम्मिलित होकर आपकी याद को पुनः जीवित किया। क्या हम उन्हें भूल जायेंगे?

॥ जय-हिन्द ॥

[१३]

— श्री सागरमलजी गोपा का बलिदान —

उसके जीवन का मूल्य हमें उस समय तक ज्ञात न था जब तक वह जीवित रहा किन्तु उसके बलिदान ने हमारी अन्तः दृष्टि को जागृत कर दिया तथा पं० जवाहरलाल नेहरू को भी क्षुब्ध कर दिया। आज तक गोपाजी की मृत्यु उस स्थान के लिए कलंक की बात है जहां उनकी निर्मम हत्या की गई।

श्री गोपाजी जैसलमेर रियासत के प्रमुख कार्यकर्ता थे, आप राजपूताना-मध्यभारत-सभा के सदस्य भी रहे। आपका दिल प्रजा पर होते अत्याचारों को देख भर आता। आप प्रजा में क्रान्ति भावना भरने का प्रयत्न करने लगे, जिससे राजाजी ने

भयभीत होकर आपको रियासत से निर्वासित कर दिया। निर्वासित अवस्था में भी आपने रियासत के अत्याचारों का भण्डा-फोड़ किया। तब पोलिटिकल एजेन्ट ने आपको धोखा देकर मई सन् १९४१ में जैसलमेर में बुला कर जेल में बन्दी बना दिया व आपको भीषण यातनायें दी। इन यातनाओं का उल्लेख गोपाजी की डायरी से होता है, जिसके कतिपय रोमांचकारी नीचे दिये जाते हैं—

(१) २४ जून सन् १९४१ को श्री अचलेश्वर शर्मा, जोधपुर को पत्र इनकी इच्छा मुजिब लिखा तब गुदा में मिर्ची डाली गई।

(२) इब्तदाई मिसल में माफी-नामा लिखने से मैंने इन्कार किया, तब नाक में मिर्च दी गई।

(३) बीरबल ने काल कोठरी में बीसों दफा मारपीट की।

१० जून १९४२ को श्री गोपाजी ने लिखा:—

"आज मुझे आठ वर्ष की सजा सुनादी गई है। यह सजा १० जून १९४९ को पूरी होगी। सजा पूरी होने तक मैं जीवित नहीं रहूँगा क्योंकि पुलिस अभी तक मुझे यातनाऐं दे रही है। कब मेरा 'राम-नाम-सत्य' या देहान्त हो जाय यह कह नहीं सकता।"

अफसोस! आखिर जुल्मीशाही ने आपको घोर दुःख दे दे कर ता० ३ अप्रेल ४६ को जिन्दा जला दिया।

इस सम्बन्ध में पं० नेहरू ने एक लम्बा वक्तव्य दिया जिसका कुछ अंश इस प्रकार है—

"हमारी जांच के फलस्वरूप जो तथ्य हमारे सामने आये हैं, वे दुर्भाग्य पूर्ण है। स्पष्ट है कि श्री गोपाजी को ३ अप्रेल को आग लगा कर मार दिया गया। उन्होंने यह काम स्वयं किया, यह एक दम संदिग्ध है। यदि उन्होने आत्महत्या की भी हो तो भी इससे ज्ञात होता है कि उनके साथ इतनी अधिक सख्ती की गई कि उनके पास सिवाय आत्महत्या करने के और कोई चारा न था।

आग लगने के दस घण्टे बाद तक उन्हें अस्पताल नहीं लेजाया गया। उनकी डंडा-बेड़ियां भी नहीं काटी गई। मौत के बाद भी उनकी धर्म-पत्नी को उनके दर्शन नहीं करने दिये गये। परिणाम स्पष्ट है। इस मामले से न केवल जैसलमेर के अधिकारियों को, बल्कि अन्य उन राजाओं को भी शर्म आनी चाहिये, जिन्होंने पिछले दिनों नागरिक स्वाधीनताओं के सम्बन्ध में बड़ी बड़ी डींगे मारी है।"

उस अमर शहीद की अशान्त आत्मा आज भी हमें अपने कर्त्तव्यों का स्मरण करा रही है क्या हम इस ओर ध्यान देंगे ?

॥ जय-हिन्द ॥

[१४]

श्री बालमुकुन्दजी बिस्सा की शहादत

देश के लिए जो प्राणो का मोह त्याग देते हैं उनके लिए जीवन का मोह कुछ भी नहीं, किन्तु केवल साधारण अवस्था में प्राणों का

त्याग करना मात्र ही असाधारण गौरव की बात नहीं किन्तु जिन्होंने तिल तिल करके अपने प्राणों की आहुति अत्याचारों के विरोध में दे दी उनके बलिदान की उपेक्षा करने का साहस कौन कर सकता है?

इनका बलिदान राजस्थान के इतिहास में अभूत पूर्व है ।

सन् १९४२-४४ में रियासती जेलों में दो अभूतपूर्व बलिदान हुए। एक तो श्री देव सुमन का, (जिन्होंने अत्याचारों के विरुद्ध ६६ दिन का आमरण अनशन किया तथा २५ जुलाई १९४४ को सिर्फ २८ वर्ष की आयु मे टेहरी जेल में अपना शरीर छोड़ दिया) दूसरा श्री बिस्साजी का।

सन् १९४२ के मई महीने में जोधपुर लोक-परिषद की तरफ से जोरों का सत्याग्रह शुरू हुआ। सैकड़ों की तादाद में लोग जेल मे ठूंस दिये गये तथा जेल में राजबन्दियों के साथ दुर्व्यवहार किये गये। मारपीट की गई, जिसके फलस्वरूप सत्याग्रहियों ने भूख हड़तालें की।

भीषण यातनाएं सहते सहते श्री बालमुकुन्दजी बिस्सा तो शहीद हो गये। उनकी शहादत पर जोधपुर में भारी हड़ताल मनाई गई, जलूस निकला, जलूस पर पुलिस ने घोड़े दौड़ाये, लाठी चार्ज किया। जोधपुर राज्य ने अत्याचार करने में कुछ कसर न रखी, आन्दोलन को दबाना चाहा, मगर वह तो चलता ही रहा।

पिछले कांग्रेस अधिवेशन पर गांधीनगर में श्रीबिस्साजी की स्मृति को ताजा करने के लिये आपके नाम का एक विशाल द्वार बनाया गया था। उन्हीं बलिदानों का परिणाम आज हम प्रत्यक्ष देख रहे हैं राजस्थान की जनता आज स्वतन्त्र है नरेशों का एकाधिपत्य समाप्त हुआ। किन्तु साथ ही क्या उन वीरों की स्मृति भी हमारे हृदयों से समाप्त हो जायेगी?

॥ जय हिन्द ॥

[१५]

—महान क्रान्तिकारी–मोतीचन्द—

इतिहासकार उसे चाहे भूल जायें और भारत के भावी इतिहास के पृष्ठों पर शायद उसका नाम देखने को भी न मिले किन्तु यह तथ्य है कि उसने अपने जीवन की आहुति देश की बलिवेदी पर देकर भारतीय सशस्त्र क्रान्ति के इतिहास में एक अध्याय अधिक जोड़ दिया है।

शोलापुर के एक जैन परिवार में उसने जन्म लिया था। शिक्षा ग्रहण करने के लिए जयपुर आया। जयपुर में उन दिनों स्वर्गीय पं० अर्जुनलाल सेठी का जैन वर्धमान विद्यालय स्थापित हो चुका था। इसी विद्यालय में उसने भी शिक्षा ग्रहण की; कहने को तो विद्यालय धार्मिक शिक्षा का केन्द्र था किन्तु वहां अधिकतर राजनैतिक विषयों पर ही भाषण हुआ करते थे। उसी वातावरण में मोतीचन्द के हृदय में भी क्रान्ति की भावनाओं ने जन्म लिया।

उसके हृदय में साहस की कमी न थी केवल एक ही घटना से उसके साहस का पता चल जाता है। जब वह क्रान्तिकारी दल का नेतृत्व कर रहा था, उन्हीं दिनों उसका आपरेशन हुआ डाक्टर की राय थी कि आपरेशन क्लोरोफार्म सुंघा कर किया जाये ताकि पीड़ा न हो, किन्तु वह तो पीड़ा का प्रत्यक्ष अनुभव करने को

प्रस्तुत रहता था। उसकी जिद्द के कारण आपरेशन बिना बेहोश किये ही हुआ और उसने उफ तक न की। डाक्टर भी दांतों तले अंगुली दबा कर रह गया।

मिरेज षडयन्त्र में उसने क्रान्तिकारियों की परम्परा को पूर्ण रूप से निभाया। उसी षडयन्त्र मे हत्या के अपराध में उस पर मुकद्दमा चला और फांसी की सजा दी गई।

फांसी की रस्सी का उसने प्रसन्नता पूर्व आलिंगन किया और मृत्यु के समय तक बलिदान की खुशी में उसका वजन कई पौण्ड बढ चुका था।

उसने अपने कर्त्तव्य की पूर्ति के लिए प्राणों का उत्सर्ग किया। क्या हम अपना कर्त्तव्य भूल जायेंगे ?

॥ जय हिन्द ॥

[१६]

—पं० रमेश-स्वामी—

---

१५ अगस्त १९४७ का दिन भारत के इतिहास में सदैव गौरव के साथ स्मरण किया जायेगा। उसी दिन तो परतन्त्रता के अन्धकार को चीर कर स्वतन्त्रता का सूर्य इस देश के भाग्याकाश पर उदित हुआ था। वर्षों से पड़ी दासत्व की श्रंखलाएें चूर चूर हो गई और राष्ट्र ने नवजन्म ग्रहण किया। किन्तु इस दिवस को प्राप्त करने की प्रबल आकांक्षा से जिन वीरों ने अपने जीवन की आहुति स्वतन्त्रता

के महान एवं पुनीत यज्ञ में दे दी, उन्हें भी सदैव इस दिवस पर श्रद्धा के साथ स्मरण किया ही जाता रहेगा।

१५ अगस्त से कुछ ही पूर्व ५ फरवरी १९४७ को जिन नररत्न ने दमन और अत्याचारों के विरोध में अपने जीवन को स्वतन्त्रता यज्ञ की शेष आहुति समझ कर बलिदान कर दिया। वह थे पं० रमेश स्वामी।

भरतपुर के एक छोटे से गांव में स्वामी जी ने ब्राह्मण कुल में जन्म लिया था। परिवार के सम्मुख आर्थिक कठिनाइयां उग्र रूप धारण किये हुए थी। बचपन से ही उन्होंने निर्धनता और अभाव के साथ निरन्तर संघर्ष करना सीखा था और वे महान सन्तोषी थे। उनके मुख पर आर्थिक चिन्ताओं तथा पारिवारिक अभावों के स्पष्ट भाव कभी दृष्टिगोचर न हो सके। एक साधारण अध्यापक के रूप में आपने जीवन प्रारम्भ किया, किन्तु इतना होते हुए भी आप सदैव जन सेवा की ओर झुके रहे तथा साथ ही भारत से बाहर बर्मा, श्याम, बैंकाक, मलाया, चीन आदि देशों में जाकर भारतीय संस्कृति तथा वैदिक धर्म का जितना प्रचार किया वह सदैव आदर के साथ स्मरण किया जावेगा विदेशों में जाकर आपने इस देश के गौरव की ध्वजा को समुन्नत किया। विदेशों से लौटकर आपने प्रजा परिषद् के कार्य में हाथ बटाया, तथा सदैव सात्विक वृति को अपनाये रह कर सार्वजनिक क्षेत्र में अमूल्य सेवायें प्रदान की।

पं० रमेशस्वामी, आर्थिक दृष्टि से निर्धन अवश्य थे, किन्तु उनका हृदय विशाल था। भारतीय सस्कृति की अमूल्य परम्परा, आतिथ्य सत्कार को उन्होंने जीवन भर निभाया। उनकी सीमित

आवश्यकताएँ कृषि एवं पशुपालन से ही पूरी हो जाती थी साथ ही अपने यहां आये हुए अतिथि का वे सदैव उचित सत्कार करते थे।

फरवरी १६४७ में भरतपुर रियासत में दमन का चक्र जिस तेजी से चला वह सर्व विदित है। अपने अधिकारों की रक्षा के लिए अनेकों सत्याग्रहियों ने शान्ति पूर्वक नृशंस अत्याचार सहे। उन्हें लाठियों द्वारा पीटा गया और भाले वर्षाये गये। उस गुजरे हुए इतिहास को यहां दोहराने की कोई आवश्यकता नहीं। केवल इतना ही लिखना पर्याप्त है कि उसी अत्याचार को चुनौती देकर प० रमेश स्वामी ने अपने गौरव के उच्च आसन को और भी उच्चतम बना दिया।

उन अत्याचारों के प्रति अपना विरोध प्रदर्शन करने का उन्हें वही पुरस्कार मिला जो आज तक हमारे परतन्त्रता के इतिहास में सुरक्षित है। उनका वध करके अत्याचारियों ने उस भूमि को सदैव के लिए कलंकित कर दिया जहां उनका खून गिरा था।

उनके बलिदान पर भारतीय विधान परिषद ने शोक प्रदर्शित किया था। स्वयं कांग्रेस के सभापति डा० पट्टाभि उस स्थान पर सुमावर में अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करने गये जहां स्वामीजी का बलिदान हुआ था।

जयपुर कांग्रेस के अधिवेशन मे "रमेश-द्वार" का निर्माण कर वास्तव में हमने अपने कर्त्तव्य का ही पालन किया है।

॥ जय-हिन्द ॥

[१७]

— छोटेलाल जैन —

महान क्रान्तिकारियों को महान बनाने का गौरव जिन पुरुषों को है उनके बारे में हम कितना जानते हैं तथा उन्हें जिन परिस्थितियों में जीवन यापन करना पड़ा है उसके बारे में हम कितने उदासीन रहे हैं यह छोटेलाल के जीवन से भली भांति पता चल जाता है। हार्डिंग्ज बम केस के नेता श्री रासबिहारी बोस को हम नहीं भूल पाये हैं और न वे भुलाये जा सकते हैं, किन्तु उसी षडयन्त्र में घोर यातनाऐं सहने वाले छोटेलालजी के बारे में कितने लोग आज जानते हैं ?

श्री छोटेलालजी जैन का जन्म सन् १८९४ ई० मे जयपुर के एक जैन परिवार में हुआ। देश के नवयुवक उस समय विदेशी सत्ता को आतङ्क एवं सशस्त्र क्रांति द्वारा उलटने के स्वप्न देखा करते थे। ऐसे युवकों में से वे भी थे। उन्होंने जेल की यातनायें सही, अनेकों युवकों को क्रान्ति की दीक्षा दी तथा क्रान्तिकारी दलों का सफलता पूर्वक नेतृत्व किया। राजस्थान के तपस्वी जन सेवक श्री रामनारायण चौधरी स्वयं उनके अनुशासन एवं कार्य की लगन के प्रशंसक रहे हैं। छोटेलालजी के साहस तथा उनके उत्साह को देख कर उस समय उनके दल के लोग दंग रह जाते थे।

आप सेठीजी के अत्यन्त निकटवर्ती साथियों में से थे। साबरमती आश्रम में कुछ काल रह कर वे महात्मा गांधी के साथ

ही वर्धा चले गये और पूज्य बापूजी के वे बहुत निकट सम्पर्क में रहे। कुछ दिनों तक इन्हें श्री महादेव भाई के साथ २ महात्माजी के निजू मंत्री का कार्य करने का अवसर प्राप्त हुआ।

सन् १९४२ मे वर्धा मे वे बीमार होगये। उन्होंने आजन्म देश की सेवा की और अपनी सेवा किसी से नहीं कराने के विचार से कुए में गिर कर आत्महत्या करली।

उस महान क्रान्तिकारी की आज स्मृति भी शेष नहीं। क्या यह हमारी उपेक्षा पूर्ण मनोवृत्ति का एक दृष्टान्त नहीं है ?

॥ जय हिन्द ॥

[१८]

— शहीद रामचन्द्र —

→⊙←

ब्रिटिश शासन के अन्तर्गत भारतीय जेलों में होने वाले नृशंस अत्याचारों से सब परिचित हैं। उन जेलों की चहार दीवारी के पीछे न जाने कितने देश भक्तों ने अपने प्राणों की आहुति देदी। वीर रामचन्द्र भी ऐसे ही शहीदों में से हैं जिन्होंने जेल काल में अपना जीवन माता के चरणों में समर्पित कर दिया।

शहीद रामचन्द्र १९३२ में ब्यावर से गिरफ्तार किये गये और उन्होंने अपने कठोर कारावास काल में ही लम्बी भूख हड़ताल की। कहते हैं सरकार ने रुष्ट हो कर शीत विष का प्रयोग

किया। इस प्रकार आपने स्वतन्त्रता के महान् यज्ञ में अपने जीवन की आहुति देदी। वे ही इस प्रान्त के प्रथम व्यक्ति थे जिन्होंने सेन्ट्रल जेल अजमेर के अन्दर प्राणों का बलिदान कर प्रान्त की शहादत के इतिहास का प्रारम्भ किया।

सन् १९३८ में होने वाली पंचम प्रान्तीय राजनैतिक परिषद् ब्यावर के स्वागताध्यक्ष के पद से श्री मुकुटबिहारीलालजी भार्गव ने जिन शब्दों में वीर रामचन्द्र को श्रद्धाञ्जलि भेंट की उसमें उन्होंने इस शहीद को "प्रान्त के आजमाये हुए कार्य्यकर्ता" के रूप में स्मरण किया और कहा कि—"इस नान-रेगूलेटेड प्रान्त में राजनैतिक कैदियों के साथ कैसा निर्दयता पूर्ण और कठोर वर्ताव होता है यह घटना सदैव उसके स्मारक के तौर पर रहेगी।"

शहीद रामचन्द्र का बलिदान ब्रिटिश काल में राजनैतिक कैदियों के साथ किये गये अमानुषिक अत्याचारों का सदैव स्मरण दिलाता रहेगा।

॥ जय-हिन्द ॥

[१९]

— श्री शम्भूनारायण —

सन् १९३४ में अजमेर रेलवे स्टेशन पर एक दिन पुरानी मंडी अजमेर का कायस्थ जाति में उत्पन्न एक चौदहवर्षीय बालक रिवाल्वर सहित गिरफ्तार किया गया। उसके पास क्रान्तिकारी साहित्य तथा क्रान्तिकारी दल से सम्बन्धित कुछ अन्य पत्र भी प्राप्त हुए। उस बालक को पुलिस ने जेल में रख दिया। १४ वर्ष की आयु

में कितने ऐसे व्यक्ति मिलेंगे जिनके हृदय में भ्रातृप्रेम की भावना इतनी उग्र हो उठे कि वह अपने प्राणों का मोह भी त्याग दे; किन्तु शम्भूनारायण बचपन से ही क्रान्ति की भावना को लेकर बढ़ा। जब अन्य बालकों के "खेलने, खाने" के दिन आते हैं उस उम्र में उसने मां के चरणों में अपने प्राणों का उत्सर्ग कर दिया।

o

इन दिनों डोंगरा शूटिंग केस की चर्चा चारों ओर थी। शम्भुनारायण को गिरफ्तार करके पुलिस ने शायद उस केस में सफलता प्राप्त करने का अनुमान लगा लिया। पुलिस ने शम्भुनारायण को बालक समझ कर हर प्रकार के प्रलोभन दिये। अनेकों बातों के बारे में उससे जानकारी प्राप्त करने का प्रयत्न किया; किन्तु प्राप्त क्या हुआ? शम्भूनारायण शायद मानव हृदय की दुर्बलता से परिचित था। उसे पुलिस की कठोरता का अनुभव हो चुका था। कहीं अत्याचारों के सम्मुख उसका बालक हृदय झुक न जाये और देश के साथ विश्वासघात न हो जाये, यही सोच कर उसने अपना कर्तव्य निश्चित कर लिया। वह कर्त्तव्य भी कैसा था? न यह जीवन ही रहेगा और न कुछ कह सकने योग्य ही यह रहेगा। यही सोच उसने अपनी धोती को अपने गले मे बांध कर उसी जेल में (अजमेर) फांसी खाली। क्या यह उसका अद्वितीय बलिदान न था? देश-प्रेम का कितना उज्ज्वल उदाहरण था। इतनी अल्प आयु में अपने पवित्रतम कर्त्तव्य की पूर्ति के लिए उसका बलिदान व्यर्थ नहीं गया। उसकी अशान्त आत्मा उसकी मृत्यु के पश्चात भी हमारे नवयुवकों को एक प्रेरणा देती रही। फलस्वरूप हम आज स्वतन्त्र होगये हैं। क्या इस अमर शहीद की स्मृति को स्थायी रखने को हमने कुछ प्रयत्न किया है? कितने ऐसे व्यक्ति मिलेंगे जो उसके नाम से भी परिचित हों?

——

॥ जय-हिन्द ॥

[२०]

रायसाहिब श्री पं० चन्द्रिकाप्रसादजी तिवाड़ी

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रयत्नों से आज भारत सम्पूर्ण प्रभुत्व सम्पन्न गणराज्य बन सका है, किन्तु क्या यह केवल एक ही व्यक्ति के प्रयत्नों का परिणाम है ? वास्तव में देश के अगणित करों द्वारा सम्मिलित आहुति स्वतंत्रता-यज्ञ में देने के फलस्वरूप ही यह सौभाग्य हमें प्राप्त हुआ है, किन्तु यह हमारा दुर्भाग्य है कि हम अपने उन वीरों के बारे में कुछ भी नहीं जानते। ऐसे ही अगणित विस्मृत देशभक्तों में से रायसाहिब चन्द्रिकाप्रसादजी तिवाड़ी भी एक हैं।

सारे भारत की भांति अजमेर में भी कांग्रेस का संगठन बराबर रहा, उसके शुरू के संचालकों में से सर्व श्री प्रभुदयालजी भार्गव* पं० चन्द्रिकाप्रसादजी, गौरीशंकरजी भार्गव, चाँदकरणजी शारदा आदि प्रमुख थे। वैसे तो अजमेर के दीवान बहादुर श्रीहरविलासजी

---

*आप सन् १९१९ में दिल्ली में मालवीयजी की अध्यक्षता में होने वाली ३३वीं कांग्रेस के स्वागत समिति की कार्य-कारिणी के सदस्य थे आपके साथ रायसाहिब विश्वम्भरनाथजी टंडन, रायसाहिब मिट्ठनलालजी भार्गव, प्रो० घीसूलालजी एडवोकेट भी कार्य-कारिणी के सदस्य थे।

सारदा‡ कांग्रेस के प्रयाग में होने वाले सन् १८८८ ई० के चतुर्थ अधिवेशन में सम्मिलित हुये थे। मेरे खयाल में सारे भारत के जीवित व्यक्तियों में श्री हरविलासजी ही ऐसे व्यक्ति वर्तमान हैं, जिनको कि आज के ६१ साल पहले कांग्रेस देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

रायसाहिब श्री पं० चन्द्रिकाप्रसादजी तिवाड़ी अखिल भारतीय कांग्रेस के बहुत पुराने सदस्य थे। आप दिल्ली में मालवीयजी की अध्यक्षता मे होने वाली सन् १९१८ की तेतीसवीं कांग्रेस के उपस्वागताध्यक्ष थे। उन दिनों में कांग्रेस में दिल्ली व अजमेर-मेरवाड़ा ब्रिटिश राजपूताना का एक सूबा माना जाता था तथा इस सम्मिलित प्रान्त को अखिल भारतीय कांग्रेस में पांच सदस्य भेजने का अधिकार था। रायसाहिब भी सन् १९१८ ई० में चुने गये पांच सदस्यों (हकीम अजमलखां, डा० अन्सारी, रायबहादुर लाला सुलतानसिंह, रायसाहिब श्री प्यारेलाल लीडर, रायसाहिब पं० चन्द्रिकाप्रसादजी) में से एक थे।

रायसाहब माडरेट विचारों के होने कारण, मेरे खयाल में जेल तो नहीं गये, मगर फिर भी उस जमाने में आपने अजमेर प्रान्त की काफी सेवा की। दिसम्बर सन् २९ की लाहौर कांग्रेस पर भी आप राजपूताना मध्यभारत प्रान्तीय कांग्रेस अजमेर की ओर से ए० आई० सी० सी० के सदस्य चुने गये थे। उस वक्त अजमेर प्रान्त (राजपूताना मध्यभारत भी उस वक्त अजमेर प्रान्त में ही गिने जाते थे) को ए.आई.सी.सी. मे सात सदस्य भेजने का अधिकार था।

---

‡इसी कांग्रेस में आपके साथ रायसाहब गोपीनाथजी और मास्टर किशनदासजी भी शामिल हुए थे।

सर्व श्री पं० चन्द्रिकाप्रसादजी, गौरीशंकरजी भार्गव, बाबा नृसिंह-दासजी, हरिभाऊजी उपाध्याय, बलवन्त सांवलराम देशपाण्डेजी, त्र्यम्बक दामोदरजी पुस्तके उज्जैन तथा विट्ठलदासजी बजाज भोपाल प्रान्त की ओर से ए०आई०सी०सी० में लाहौर भेजे गये थे।

सन् १९३० के महात्माजी के सत्याग्रह आन्दोलन में नर्म विचारों के कारण कुछ भाग नहीं लिया, फिर भी आपने कांग्रेस को छोड़ा नहीं था। सन् १९३४ के अक्टूबर मास में बम्बई में राजेन्द्र बाबू की अध्यक्षता में होने वाली कांग्रेस में भी आप शामिल हुये। उसके बाद आप कांग्रेस मंच पर नहीं देखे गये, कारण एक तो आप काफी वृद्ध होने से अस्वस्थ रहने लगे, दूसरे आपकी विचार धारा ने मेल नहीं खाया।

प्रान्त का यह माडरेट सेनानी करीब १२-१३ साल हुये चल बसा। आपने मरते समय काफी रुपया व अपना बृहत पुस्तकालय हिन्दू विश्वविद्यालय काशी को भेंट कर दिया।

लेखक प्रान्त के इस माडरेट सेनानी को अपनी श्रद्धाञ्जलि भेंट करता है।

—

॥ जय हिन्द ॥

[२१]

श्री गौरीशंकरजी भार्गव

उस समय जब कि देश के धनिक व रईस ब्रिटिश सरकार की हर प्रकार से सहायता कर रहे थे तथा देश के करोड़ों व्यक्तियों

को भूखों मार कर स्वयं अपने विलास के साधन जुटाने में लीन थे भार्गव परिवार ने एक आदर्श उपस्थित किया। प० गौरीशंकरजी भार्गव अजमेर के पहिले ही रईस थे जिन्होंने विदेशी कपड़े का व्यापार त्याग कर तत्कालीन राजनीति में सक्रिय भाग लिया यही नहीं, आपके साथ ही साथ आपके परिवार ने भी आपके साथ पूर्ण रूप से सहयोग किया। श्री भार्गवजी ने राजपूताना प्रांतीय कांग्रेस कमेटी के विभिन्न पदों को वर्षों तक सुशोभित किया तथा परम्परागत सुखों को त्याग कर अनेकों बार जेल की यात्रा की अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा के आप अनेकों बार सदस्य चुने गये तथा आपने ब्यावर में आयोजित कांग्रेस स्वर्ण जयन्ती महोत्सव की अध्यक्षता की तथा २८ दिसम्बर सन् १९३५ को दामोदर वाचनालय ब्यावर का उद्घाटन किया। यही नहीं आपकी पत्नी भी अपने पति के चरण चिन्हों पर चल सकने में पूर्ण रूप से सफल हुई। श्रीमती गोमतीदेवी भार्गव (श्री भार्गवजी की धर्म-पत्नी) स्वयं कांग्रेस के कार्य-क्रमों में सक्रिय भाग लेती रही हैं। फलस्वरूप जेल यात्रा भी कर चुकी हैं तथा आज तक अपने पति द्वारा प्रज्वलित दीप-शिखा को उसी प्रकार स्थिर रखती आ रही हैं।

अजमेर की प्रसिद्ध घासीराम धर्मशाला भी आपकी ही है। यह धर्मशाला गत अनेकों वर्षों से राजनैतिक प्रवृत्तियों का केन्द्र रही है। इसके अलावा श्री गौरीशंकरजी भार्गव ने सदैव आर्थिक योजनाओं में पूर्ण सहयोग दिया। तिलक स्वराज्य फन्ड के लिए आपने तीस हजार रुपया इन्दौर आदि स्थानों से एकत्रित किया था।

भारत को स्वतन्त्र देखने से पूर्व ही आपने जीवन त्याग दिया

सन्तोष का विषय है कि श्रीमती गोमतीदेवी भार्गव अपने परिवार की परम्परा को बनाये हुए हैं तथा आप प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी की अध्यक्षा भी रह चुकी हैं।

॥ जय-हिन्द ॥

[२२]

श्री नथमलजी चोरड़िया

लगभग १२५ वर्ष पूर्व मारवाड़ के डीडवाना ग्राम से श्री नथमलजी के पूर्वज नीमच छावनी में आकर बस गये थे वहीं सम्वत् १९३२ में इनका जन्म हुआ। जन्म के कुछ वर्षों बाद ही इनके पिताजी ने प्राण त्याग दिये। पिता की मृत्यु के समय घर की आर्थिक दशा सामान्य थी। उन दिनों मारवाड़ी समाज में शिक्षा का विकाश नहीं हो पाया था तथा शिक्षा के उचित साधन भी इस ओर प्राप्त न थे, किन्तु अपनी कुशाग्र बुद्धि एवं अथक परिश्रम के फलस्वरूप श्री चोरड़ियाजी ने अंग्रेजी का भी पर्याप्त ज्ञान प्राप्त किया।

श्री नथमलजी एक परिश्रमी तथा अध्यवसायी व्यक्ति थे तथा आपने प्रारम्भ मे व्यापारिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में अपना प्रमुख स्थान बना लिया। बम्बई में सर्व प्रथम आपने माधोसिंह मिश्रीलाल के नाम से व्यापार प्रारम्भ किया तथा आपकी व्यापार कुशलता को देखकर मेवाड़ के करोड़पति मेघजी गिरधरलाल ने इन्हें अपना हिस्सेदार बना लिया।

एक कुशल व्यापारी होने के साथ ही साथ वे एक सफल सामाजिक तथा राजनैतिक कार्य कर्त्ता भी थे। बम्बई में ब्यावर के श्री मिश्रीलालजी पाकलीवाल, बम्बई के श्री रामनारायणजी रुईया, लक्ष्मणदासजी डागा, वेणीप्रसादजी डालमिया व अन्य व्यक्तियों के सहयोग से आपने 'मारवाड़ी चैम्बर आफ कामर्स' की स्थापना (सन् १९१५ में) की तथा उसके अवैतनिक मन्त्री भी रहे। शिक्षा प्रचार के लिये आप सदैव प्रयत्नशील रहते थे तथा विशेषतया स्त्री शिक्षा के लिये वे सदैव आर्थिक सहायता देते रहे। एक जैन कन्या गुरुकुल की स्थापना के लिए आपने ७००००) का दान कर दिया था, किन्तु उसकी उद्घाटन तिथि से पूर्व ही आपने इस शरीर का त्याग कर दिया।

सामाजिक सुधारों में भी आपका पर्याप्त हाथ रहा है। अपने पर सदैव दृढ़ रहते हुए उन्होंने कुरीतियों का डट कर मुकाबला किया तथा पर्दा-प्रथा, मृत्यु-भोज, जाति भेद आदि का सदैव विरोध कर विधवा-विवाह आदि को प्रोत्साहन दिया। इन्हीं कारणों से आपको समाज-भूषण के पद से सम्मानित किया गया था।

किन्तु आश्चर्य है कि व्यवसाय तथा समाज के प्रमुख नेता होने के साथ ही साथ राजनैतिक-क्षेत्र में भी चोरड़ियाजी की सेवायें अमूल्य हैं। वृद्धावस्था तक वे कांग्रेस के पूर्ण भक्त रहे तथा राजपूताना मालवा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के सभापति की हैसियत से सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेकर उन्होंने जेल की यात्रा की। जेल की अवधि में ही उनके ज्येष्ठ पुत्र श्री माधवसिंहजी का स्वर्गवास हो गया किन्तु विचलित होना तो दूर आपने स्वयं अन्य लोगों को सान्त्वना दी जो उनके पास समवेदना प्रकट करने आते थे। सरकार

की इच्छा इस दुःख पूर्ण अवसर पर इन्हें रिहा करने की थी किन्तु आप अपनी अवधि समाप्त होने पर ही जेल से लौटे। आप अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा के अनेकों बार सदस्य चुने गये।

इस प्रकार स्व० चोरडियाजी ने देश के सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्रों को अमूल्य सेवायें प्रदान की। हरिजनो की उन्नति के लिये उन्होंने समाज के रूढ़िवादी नेताओं का विरोध किया तथा हरिजन पाठशाला की स्थापना की।

स्व० चोरडियाजी की सेवाओं का मूल्य हम आँक सकें तभी हम अपने कर्त्तव्य को पूर्ण करने में सफल हो सकेंगे।

आपकी मृत्यु २६ मार्च सन १६३६ को टाइफाइड से हुई। आपकी मृत्यु पर अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा के लखनऊ अधिवेशन में सभापति-पद से पं० जवाहरलाल नेहरू ने एक शोक प्रस्ताव रखा।

क्या मालवा निवासी अपने इस वीर-योद्धा की स्मृति को चिर स्थायी रखने की ओर ध्यान देंगे?

॥ जय हिन्द ॥

[२३]

श्री नाथूलालजी घीया

इस कथन में वास्तविकता है कि भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में देश के वकीलों ने प्रमुख भाग लिया है, क्योंकि आज उच्च कोटि के

नेता वे ही हैं जिन्होंने वकालत से अपना जीवन प्रारम्भ किया था।

अजमेर प्रान्त में जिन वकीलों ने कांग्रेस को अपनाया उनमें श्री घीयाजी का प्रमुख स्थान है। ब्यावर में सन् १८६४ में आप उत्पन्न हुए तथा २४ वर्ष की आयु में एम० ए० तथा एल० एल० बी० की परीक्षाएं पास कीं। बचपन से ही आप कुशाग्र बुद्धि तथा परिश्रमी थे।

ब्यावर के राजनैतिक जीवन में आपका महत्व पूर्ण भाग रहा है। ब्यावर म्यूनिसिपल कमेटी के आप अनेक वर्षों तक सदस्य रहे तथा १६३० में उसके चेयरमैन बनाये गये। उन दिनों म्यूनिसिपल भवन पर राष्ट्रीय ध्वज फहराने के प्रस्ताव का समर्थन करने का साहस आपका ही था। फलस्वरूप आपको चेयरमैन के पद से पृथक कर दिया गया। सन् १६१८ में आप दिल्ली कांग्रेस में प्रतिनिधि रूप में सम्मिलित हुए तथा १६२१ ई० के शराब बन्दी आन्दोलन में आपने स्थानीय शराब की कोठियों पर पिकेटिंग किया एवं ब्यावर में मिल मजदूरों की हड़ताल का सफलता पूर्वक संचालन करने में आपने श्री सेठ घीसूलालजी जाजोदिया तथा श्रीमणि-लालजी कोठारी को पूर्ण सहयोग प्रदान किया। सन् १६३६ की सामूहिक हड़ताल में जो लगभग ३॥ माह चली थी, घीयाजी ने पर्याप्त परिश्रम किया। १६३८ में प्रान्तीय राजनैतिक परिषद् में आपने प्रमुख भाग लिया।

स्वर्गीय घीयाजी नगर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भी रहे। अनेकों बार जेल यात्रा भी की। १६४२ में भी जेल गये थे। अनेकों अवसरों पर आर्थिक रूप में भी जनता की सेवा की।

जिला कांग्रेस कमेटी ब्यावर के
भूतपूर्व प्रधान

— श्री नाथूलालजी घीया —

— अगस्त क्रान्ति की भेंट —

—०— चान्दकरण भवन —०—
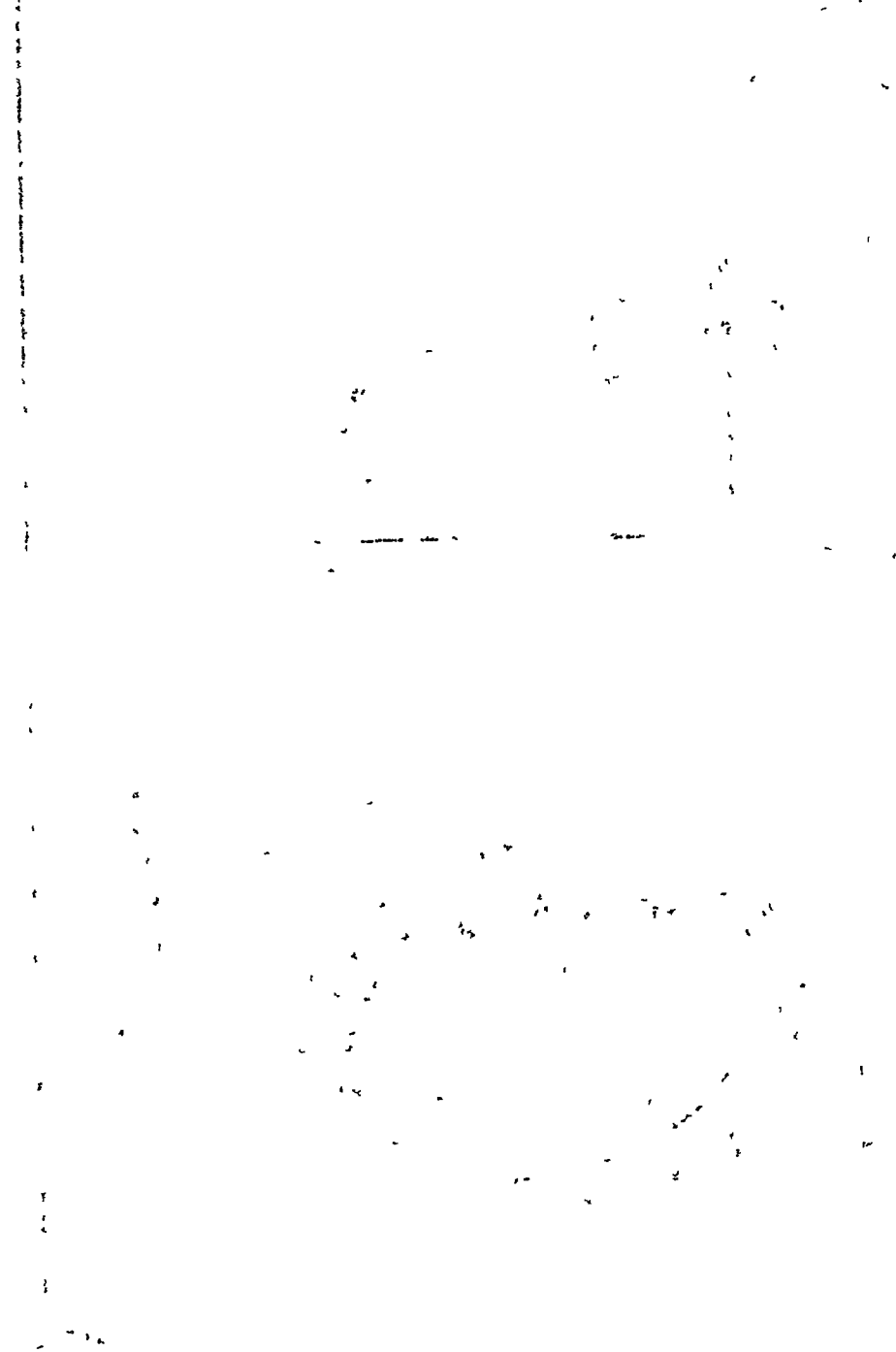
मार्च १६४६ में जनता द्वारा आपको म्यूनिसिपल कमेटी के चरमैन पद ग्रहण करने का आग्रह भी किया गया, किन्तु आपने अपनी असमर्थता प्रकट कर उसे अस्वीकार कर दिया।

स्वर्गीय घीयाजी हँस मुख, मिलनसार तथा अभिमान रहित व्यक्ति थे जिन्हें पद की कभी आकांक्षा नहीं रही। अनेको महत्व पूर्ण पदों को सुशोभित करने पर भी आपमें अहङ्कार नहीं था। आपका व्यक्तित्व आकर्षक तथा आपका शरीर पर्याप्त स्वस्थ था। आपके गोरे मुख, चमकते हुए मस्तिष्क और लम्बे क़द को देख कर जनता के हृदय में श्रद्धा उमड़ पड़ती थी। नगर की समस्त जनता आपका मान करती थी। आपके प्रभावशाली व्यक्तित्व की छाप उसके हृदय में सदैव रहेगी। ब्यावर मे राजनैतिक सभाओ, सम्मेलनों आदि में घीयाजी प्रमुख भाग लेते थे। ११ मार्च १६३१ में गान्धी इरविन पैक्ट के पश्चात जब प्रान्त के नेता जेलों से लौटे तो उनके स्वागत में ब्यावर मे एक विराट सभा आपके सभापतित्व में ही हुई जिसमें राजपूताने के सभी प्रमुख नेता उपस्थित थे। ऐसी विराट सभा ब्यावर में पहिले कभी नहीं हुई थी तथा बाद मे भी ऐसे कम ही अवसर आ सके हैं। डा० अन्सारी जैसे देश के प्रख्यात नेताओं के ब्यावर में आगमन के अवसर पर होने वाली सभाओं के आप सभापति होते थे।

मार्च १६४६ में होली के दिन आपका स्वर्गवास हुआ। आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री भगवानदास घीया भी एक होनहार नवयुवक वकील हैं तथा लेखक को उनके निकट सम्पर्क का सौभाग्य प्राप्त है। आशा है वे भी अपने पिता के पदचिन्हों का अनुसरण करते हुए नगर की सेवा करेंगे।

॥ जय हिन्द ॥

[२४]

— मौलाना मुइनुद्दीन —

राष्ट्रीय विचारों के मुसलमानों मे अजमेर के मौलाना मुइनुद्दीन का स्थान अद्वितीय है। खिलाफत आन्दोलन के समय में ही मौलाना ने कांग्रेस के प्रति अपने प्रेम को प्रारम्भ किया तथा मृत्यु पर्यन्त इस संस्था के सच्चे हितैषी रहे। आप सदैव राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देते थे तथा साम्प्रदायिकता का सदैव विरोध करते थे।

मौलाना एक उच्च-कोटि के भाषणकर्ता थे तथा वृद्धावस्था में भी कांग्रेस द्वारा अयोजित सभाओं में ओजस्वी भाषण देते रहे थे। साथ ही वे विश्व के इस्लामी साहित्यकारों में से एक थे तथा प्रकाण्ड विद्वान् थे।

ऐसे भी अवसर आये जब आपके सहयोगी राष्ट्रीय-मुसलमान कांग्रेस को त्याग मुस्लिम लीग में सम्मिलित हो गये। स्वयं इनके भाई प्यारे मियां तथा मिर्जा अब्दुलकादिर बेग जो राष्ट्रीय मुसलमानों में अपना महत्व पूर्ण स्थान रखते थे लीग के साथ हो गये, किन्तु मौलाना अपने व्रत से विचलित न हो सके। यह उनकी दृढता थी जो उनके कांग्रेस के प्रति विश्वास की ओर संकेत करने को पर्याप्त है।

प० जवाहरलाल नेहरू ने अक्टूबर १९४५ में अजमेर आने पर

आपकी मजार पर फूल चढाये तथा श्रद्धाञ्जली अर्पित की। जयपुर कांग्रेस अधिवेशन के अवसर पर भी आपकी स्मृति में एक वृहत् द्वार का निर्माण किया गया था।

---

* जय हिन्द *

[२५]

—श्री कपूरचन्द पाटनी—

कपूरचन्द पाटनी का जन्म ता० ३० जनवरी सन् १९०१ ई० को दिगम्बर जैन समाज के श्री पं० चन्द्रलालजी पाटनी जयपुर के यहां हुआ। आप प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त करके श्री अर्जुनलालजी सेठी के श्री वर्धमान जैन विद्यालय में शिक्षा प्राप्त करने लगे। जब सेठी जी का विद्यालय इन्दौर चला गया तो आपने महाराजा कालेज जयपुर में शिक्षा प्राप्त की।

केवल २० वर्ष की अवस्था में आपने व्यापार कार्य का संचालन बड़े सुचारु रूप से किया जिसका परिणाम यह हुआ कि आप शीघ्र ही एक कुशल व्यवसायी गिने जाने लगे।

जब देश सेवा की भावना ने जोर पकड़ा तो आप सन १९२७ ई० मे चर्खा संघ में सम्मिलित हो गये। आपकी व्यवसाय कुशलता के कारण आप जयपुर खादी भण्डार के मैनेजर नियुक्त कर दियें गये। उस समय आपने खादी प्रचार में पूर्ण रूप से सहयोग दिया। अनेकबार आपको चर्खा संघ की राजपूताना शाखा के कार्यवाहक

मंत्री पद पर कार्य करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। सन् १९३३ ई० में आपने अनेक कारणों से चर्खा संघ से त्याग पत्र दे दिया।

राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के आप वर्षों तक सदस्य रहे हैं। आल इंडिया जैन एसोसियेशन और आल इंडिया जैन पोलीटिकल कांफ्रेंस के आपने प्रान्तीय सेक्रेटरी के पद पर कार्य किया है। अन्य अनेक संस्थाओं का कार्य करते हुए आपने हरिजन सेवक समिति जयपुर का सभापतित्व भी किया। जयपुर राज्य प्रजामण्डल के प्रमुख संस्थापकों में आपका प्रधान हाथ था और इसी मण्डल द्वारा किये सत्याग्रह आन्दोलनों में आपने अनेक बार जैल यात्रा की। दुःख भोगे। किन्तु उनका फल-सुख भोगने से पूर्व ही आप संसार से चल बसे।

आपकी लेखन शैली प्रभाव पूर्ण रही है। और अच्छे पत्रों का संपादन वर्षों तक किया है जिन में से प्रधान जैन-जगत्-अजमेर और सुधारक-जयपुर हैं। 'जैन जगत्' का सफल सम्पादन ५ वर्ष तक और 'सुधारक' का दो वर्ष तक किया है!

राजस्थान की राजनीति में आपने प्रधानता से हाथ बटाया। कहते हैं कि आपने यदि सेठी विरोधी पार्टी का साथ न दिया होता तो यहां के वर्तमान राजनीतिक वातावरण की अवस्था कुछ अन्य दिशा में होती। इसे प्रान्त का दुर्भाग्य ही कहा जायगा।

आपके राजनैतिक क्षेत्र में पदार्पण करने के पश्चात् जब तक आप जीये अपने लिये प्रधान पात्र का स्थान सुरक्षित रखा।

सन् १९४८ ई० में जयपुर में आपके चित्र का उद्घाटन करते हुए आपको श्रद्धांजली समर्पित की गई एवं गत जयपुर कांग्रेस

अधिवेशन के अवसर पर आपके नाम का "कपूरचन्द पाटनी द्वार" निर्माण किया जाकर आपके कार्यों का स्मरण दिलाया गया था।

॥ जय हिन्द ॥

[२६]

— आदर्श-महिला महिमा देवी किंकर —

महात्मा गांधी के जीवन पर कुछ भी लिखते समय कस्तूरबा को पृथक नहीं किया जा सकता ठीक उसी प्रकार राजस्थान के कर्मठ कार्य्यकर्ता श्री हरिभाई किंकर तथा श्रीमती महिमा देवी किंकर के विषय में भी कहा जा सकता है। श्रीमती महिमा देवी पं० सूर्य्यनारायणजी मन्त्री आर्य्य समाज जयपुर के परिवार में से थीं तथा बचपन में शादी हो जाने के पश्चात् ही आप विधवा हो चुकी थीं। पं० नयनूरामजी के प्रयत्न से आपका विवाह श्री हरिभाई किंकर से हुआ। विवाह के पश्चात् श्री हरिभाई किंकर ने इन्हें गांवों में प्रचार करने के लिए अपने साथ ले लिया। देवीजी ने श्री हरिभाई के साथ सब प्रकार के दुःख उठाते हुए तथा शिर पर बोझा रख कर जंगलों में पैदल चलने में भी आनन्द का अनुभव किया। एक बार जंगलों में घूमते २ इनके बांयें पैर में ऐसा जोरदार कांटा लग गया कि वह आर पार हो गया जो पन्द्रह दिन इलाज कराने पर कहीं जाकर ठीक हुआ, किन्तु इस प्रचार कार्य्य का देवी जी के जीवन पर बड़ा ही अच्छा प्रभाव पड़ा और इनका ज्ञान भी बहुत बढ़ गया। वे

स्वयं एक प्रचारिका बन गई और अपने पति के सार्वजनिक कार्यों मे सहयोग देने लगी। विवाह के समय श्री हरिभाई का स्वास्थ्य बिगड़ हुआ था, किन्तु आपने तन मन से पति की सेवा कर उन्हे स्वास्थ्य प्रदान किया।

हाडौती शिक्षा मण्डल में किंकर परिवार ने अथक परिश्रम किया। शिक्षा मण्डल के पास फण्ड की कमी होने के कारण उन्हे जीविका के लिए भी उद्योग करना पडता था, किन्तु इनके परिश्रम के फल स्वरूप मण्डल के ३२ स्कूल खुले गये। श्रीमती महिमा देवी स्वयं पर्याप्त परिश्रम करके पति देव को पूर्ण सहायता देती रहीं। सन १९३२ में गोलमेज परिषद् के समाप्त होने के पश्चात जो सत्याग्रह प्रारम्भ हुआ तो श्रीमती महिमा देवी भी अपने पति के साथ ही जेल गई तथा आपने दो महिने जेल में काटे। उन दिनों जेलों मे राजनैतिक कैदियो को विशेष सुविधाऐं नहीं दी जाती थी। देवीजी को वहां कठिन परिश्रम करना पडा। इससे जेल में ही इन्हें गर्भपात हो गया किन्तु इन्होंने शर्म के मारे दवा नहीं ली और वही जेल की काली दाल रोटी खाती रहीं और परिश्रम करती रहीं। इनसे इनके स्वास्थ्य पर जो भयङ्कर प्रभाव पड़ा वह अन्त में इनके जीवन को ही ले बैठा। इतना सब कुछ होते हुए भी आप देश भक्ति और निर्भीकता में किसी से कम नहीं थी। जेल से छूटते समय तत्कालीन जेलर ने जब इन्हें फिर जेल न आने की सलाह दी तो इन्होंने दृढ़ता के साथ उत्तर दिया कि लोक सेवकों को आवश्यकता पड़ने पर जेल ही क्या फांसी के लिए भी तैय्यार रहना पड़ता है। आपके ये उद्गार चिर स्मरणीय रहेंगे।

श्रीमती महिमा देवी ने कुछ समय तक अजमेर तथा कोटा में शिक्षा अभ्यास किया। श्री हरिभाई किंकर ने इन्हें संगीत तथा वाद्य

की समुचित शिक्षा प्रदान की। अपने पति के साथ देवीजी ने अजमेर अर्धशताब्दि, जयपुर आर्य समाज के वार्षिकोत्सव तथा मारवाडी महिला सम्मेलन कलकत्ता में खूब प्रचार कार्य्य किया। इसी प्रकार सन् १९३४ मे आपने मालवा प्रान्त के भिन्न २ स्थानों मे भ्रमण करके सामाजिक क्रांति का सूत्रपात किया सन १९३५ में स्वर्गीय महात्मा गाधी के सभापतित्व मे होने वाले इन्दौर के हिन्दी साहित्य सम्मेलन मे आप झालावड से प्रतिनिधि के रूप में सम्मिलित हुई तथा श्री हरिभाई किंकर के साथ महिनों हैदराबाद (दक्षिण) और बरार में प्रचार करती रहीं।

श्रीमती महिमा देवी का ब्यावर नगर से भी विशेष सम्पर्क रहा। आप वर्षों तक नगर काग्रेस कमेटी की कार्य्य कारिणी की सदस्या रहीं। सन १९३७ में जब हटूंडी आश्रम मे श्री हरिभाई के पैर की हड्डी टूट गई तो आपने जिस संलग्नता के साथ अनेक कष्ठ सहते हुए परिश्रम पूर्वक अपने पति देव की अजमेर अस्पताल में चार महिने तक सेवा सुश्रूषा की वह आजकल की महिलाओं के लिए आदर्श तुल्य है।

सन १९३९-४० में किंकर दम्पति ने जोधपुर तथा कोटा में शिक्षा प्रचार किया और श्रीमती महिमा देवी ने स्त्री आन्दोलनों में प्रमुख भाग लेना आरम्भ किया। आपने जोधपुर में एक कन्या पाठ-शाला का संचालन योग्यता पूर्वक किया। फलौदी के पास खीचन में बालमन्दिर की स्थापना की। सन १९४२ में मारवाड़ महिला

संघ की संयोजिका के रूप से स्थान २ पर प्रचार करते हुए आपने जोधपुर में सत्याग्रह किया और कुशलता पूर्वक वहां की स्त्रियों का नेतृत्व किया। राजविद्रोह में आपको एक वर्ष का कठिन कारावास हुआ। जेल में आपको पुरानी बीमारी फिर हो गई। हालत बिगड जाने पर आपको अस्पताल भेज दिया गया। वहां भी आपको हथकड़ियां पहिनाई गई जिसका देवी ने विरोध किया और राजसत्ता को इस मामले में झुकना पडा। जेल की अवधि समाप्त होने पर अधिकारियों ने इन्हें माफी नामे पर दस्तखत करने के लिए बहुत फुसलाया परन्तु आप उनके चङ्गुल में नहीं फंसी। इन्हें ता० २१ सितम्बर सन १६४३ को छोड़ दिया गया।

उधर अगस्त १६४२ के आन्दोलन के सिलसिले में श्री हरिभाई किंकर के स्वयं नजर बन्द होने तथा पीछे से लोगों के धोखा देने के कारण इन्हें भारी आर्थिक हानि उठानी पडी। सन् १६४४ में देवी जी का पति देव से पुनः मिलन हुआ। आपने उनके साथ दिनाजपुर मारवाडी सम्मेलन में भाग लिया और राजस्थान गश्ती पुस्तकालय को पीछा सुचारु रूप से चलाने लगे, किन्तु हरिभाई को आपका सुख अधिक नहीं बदा था। आप पुनः बीमार हो गई और २ अगस्त सन् १६४४ के दिन पति को वियोग का दुःख देकर चल बसीं।

आज भी हमारे देश तथा प्रान्त को श्रीमती महिमा देवी जैसी नारी रत्नों की आवश्यकता है।

राजस्थान सेवा संघ के शान्त,
प्रभावशाली कार्यकर्ता

※※ हरिभाई किंकर ※※

पति | पत्नी

— नारी-रत्न —

— श्रीमती महिमादेवी —

— राजस्थान के भूतपूर्व प्रान्तपति —

* गोरीशङ्करजी भार्गव *

— रा ष्ट्री य का र्य क र्ता —

— मा० काशीरामजी, केकड़ी —

॥ जय-हिन्द ॥

[२७]

— मास्टर काशीरामजी —

अगस्त सन् १९४२ के उस ऐतिहासिक आन्दोलन की स्मृति मस्तिष्क में उसी प्रकार जीवित है और वह कोई भुला देने योग्य घटना भी नहीं। उस समय जेल जीवन मे जिन कार्यकर्त्ताओं से लेखक का परिचय हुआ उनमें से ही मास्टर काशीराम भी थे।

आप केकड़ी से सत्याग्रह करके आये आपके साथ अन्य तीन साथी भी थे (रामनिवासजी, सोहनलालजी व रामदयालजी)। मास्टर काशीरामजी ने एफ० ए० तक विद्याध्ययन किया था तथा वे एक कर्मठ कार्यकर्त्ता होने के साथ ही साथ अच्छे कवि एवं निपुण शिक्षक भी थे।

१९४२ में पेचिस की बीमारी होने पर भी वे शान्त न रह सके तथा उन्होंने सत्याग्रह किया। जेल से रिहा होने के पश्चात् भी वे राष्ट्रीय कार्यों में सहयोग देते रहे व म्यूनिसिपल कमेटी केकड़ी के सदस्य के रूप में जनता की सेवा करते रहे।

खेद है कि आपकी मृत्यु कुछ वर्ष पूर्व ही हो गई।

॥ जय-हिन्द ॥

[२८]

— श्री चांदकरणजी भवन —

उसकी वाणी में एक ओज था तथा हृदय में उत्साह। स्वतन्त्रता के अग्नि गान उसकी जिह्वा पर थे। ठिंगना कद, घुंघराले बाल, सुगठित शरीर उसकी कुछ ऐसी विशेषतायें थीं जो बर-बस किसी को आकर्षित कर लेती थी।

वह एक कलाकार था, तूलिका द्वारा विभिन्न रंगों में उसने अनेकों कला पूर्ण चित्र भी बनाये थे। कविताओं द्वारा हृदय के असन्तोष को भी वह व्यक्त किया करता था।

अगस्त सन् १९४२ में वह बीमार था, किन्तु उसे जेल जाने का शौक था। सत्याग्रह कर वह जेल गया तथा उसका चिर विद्रोही हृदय जेल के अंकुशों की भी उपेक्षा कर बैठा तथा परिणाम स्वरूप यातनायें सहीं निरन्तर अपराध (?) करने के फलस्वरूप कालकोठरी में बन्द कर दिया गया जहां सामने की कोठरी में ही ठा० रघुराज-सिंहजी (जो ज्वालाप्रसाद के साथ ही जेल से भाग गये थे) बन्द थे। दोनों की जबान हृदय के अशान्त भावों को कविताओं के रूप में उगलती रही थी।

फिर वह जेल से भी छूटा किन्तु स्वास्थ्य खो चुका था। कुछ काल शिक्षक भी रहा, किन्तु अपने गये स्वास्थ्य को पुनः न पा सका और दिसम्बर १९४४ में २२ साल की अल्पायु में वह इस संसार को त्याग कर चल ही दिया। लेखक को उसके साथ जेल में रह सकने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। वह उसके प्रति अपनी हार्दिक श्रद्धाञ्जली अर्पित करता है।

❀ जय-हिन्द ❀

स्व० श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा

"वे तो पुराने जमाने की एक यादगार थे, लेकिन फिर भी उनकी आंखों में पुराना तेज था और यद्यपि उनमें और मुझ में एक सी कोई चीज नहीं फिर भी उनके प्रति मैं अपनी हमदर्दी और इज्जत को नहीं रोक सकता।"

पं० जवाहरलाल नेहरु—

(मेरी कहानी, पेज १८३-८४-८५, प्रथम हिन्दी संस्करण)

अभी तक अनेक लेखक गण यही लिखते आये हैं कि काठियावाड़ ने भारत को दो महान् विभूतियां, दयानन्द तथा महात्मा गांधी, प्रदान की, किन्तु मेरा अनुमान है कि काठियावाड़ ने देश को तीन महापुरुष भेंट किये तथा यह तीसरा व्यक्ति अन्य कोई नहीं अपितु, श्यामजी कृष्ण वर्मा ही हैं।

सन् १८५७ की महान् क्रान्ति के युग में भारतवर्ष में जिन महान् आत्माओं ने जन्म ग्रहण किया उन में दो प्रमुख हैं एक तो लोकमान्य तिलक तथा दूसरे श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा।

श्यामजी का जन्म ४ अक्टूबर सन् १८५७ में मांडवी (कच्छ) के एक गरीब हिन्दू (भंसाली) परिवार में हुआ था। उनके पिता उनके जन्म के समय बम्बई में येन केन प्रकारेण जीविकोपार्जन करते थे। साधनों के अभाव में उनके पिता ने उनकी गर्भवती माता को नानी के घर भेज दिया। सन्५७ के राष्ट्रीय विप्लव के वातावरण में उनका जन्म हुआ। प्रारम्भ से ही ये बड़े मेधावी बालक थे। गरीब होने पर भी उनके माता पिता ने उन्हें 'भुज' की अंग्रेजी पाठशाला में पढ़ने को भेज दिया। उनकी स्नेहमयी माता उन्हें १० वर्ष की आयु में छोड़कर चल बसी। उनके पिता इतने गरीब हो चुके थे कि वे उन्हे जीवन पथ पर अग्रसर करने में किसी भी प्रकार की सहायता देने में असमर्थ थे। श्यामजी के पास अब, अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के अतिरिक्त, आगे बढ़ने का कोई साधन न था।

बम्बई जाकर अपनी तीक्ष्ण बुद्धि के बल से श्यामजी ने मथुरादास लवजी जैसे धनिक व्यक्ति के हृदय मे घर कर लिया और शीघ्र ही उनमें एक उच्चकोटि के व्यवसायी की प्रतिभा जागृत हो गई, जिसके बल पर ही वे आगे जाकर कई एक औद्योगिक संस्थाओं के सूत्र-धार बने और सफलता पूर्वक उनका संचालन किया।

श्यामजी की नानी ने उन्हें बम्बई के विल्सन हाई स्कूल मे भर्ती करवा दिया। अंग्रेजी के साथ २ उन्होंने शास्त्री विश्वनाथ की कृपा से संस्कृत का भी अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया।

केवल १८ वर्ष की आयु में, सन् १८७५ में जबकि ऋषि दयानन्द ने सर्व प्रथम बम्बई में आर्य समाज की स्थापना की, वे ऋषि दयानन्द के सम्पर्क मे आये। ऋषि दयानन्द उनके प्रगाढ़ पाण्डित्य

से अत्यन्त प्रभावित हुए, और उन्हें विदेश भेजकर आगे शिक्षा प्राप्त करने का आदेश दिया।

मार्च १८७६ में ऋषि दयानन्द के आदेशानुसार, श्यामजी लीवरपुल गये। सन् १८८१ में अपने विशाल संस्कृत के ज्ञान के बल पर आपने भारत की ओर से ओरियन्टल कान्फरेन्स का प्रतिनिधित्व किया और वहां यह सिद्ध किया कि भारत में संस्कृत ही एक जीवित भाषा है।

२६ वर्ष की आयु में श्यामजी ने आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय से बी० ए० की परीक्षा प्रथम श्रेणी में पास की। विदेश में प्रथम भारतीय ग्रेजुयेट होने का श्रेय आपही को है। आपके सम्बन्ध में प्रो० मैक्समूलर ने लिखा है कि—"मैं श्यामजी कृष्ण वर्मा की प्रतिभा से बहुत प्रभावित हुआ हूं"।

बैरिस्ट्री पास करके श्यामजी १८८३ मे स्वदेश लौटे और ८ जनवरी १८८४ को आपने उदयपुर में एक बड़ा प्रभावशाली भाषण दिया। इसके पश्चात् १८८४ के मार्च में अपनी धर्मपत्नी के साथ पुनः विलायत चले गये। वहां से जनवरी १८८५ में फिर भारत लौट आये। लौटते समय भारत के भू० पू० वायसराय लार्ड नार्थब्रुक ने एक उच्च पद के लिए आपकी शिफारिस की, किन्तु आपने किसी भी ऊंचे से ऊंचे सरकारी पद को लेना अस्वीकार कर दिया।

भारत में ये केवल १२ वर्ष (सन १८८५ से १८९७) तक रहे। आप आते ही बम्बई हाईकोर्ट के एडवोकेट बन गये; किन्तु आपका प्रेम अधिकतर राजस्थान की ओर था। अतः आप अजमेर चल आए। अजमेर तथा ब्यावर में आपने बहुत समय

तक बैरिस्ट्री की। श्यामजी की प्रतिभा सर्वतोमुखी थी। आपने १८९२ में एक विशाल औद्योगिक संघ की स्थापना की जिसके फल स्वरूप ही ब्यावर में राजपूताना कॉटन प्रेस की स्थापना हुई। ब्यावर का सम्बन्ध आपसे सन १९१३ तक रहा। आप २१ वर्ष तक उपरोक्त प्रेस के मैनेजिङ्ग डाईरेक्टर रहे। इसी वर्ष आपने अजमेर में राजपूताना प्रिन्टिङ्ग प्रेस की एवं केकड़ी में हाड़ोती कॉटन प्रेस की तथा नसीराबाद में आर्यन कॉटन प्रेस की स्थापना की। श्यामजी अपनी लोकप्रियता के फलस्वरूप अजमेर म्यूनिसिपेलिटी के सदस्य भी चुने गए।

राजस्थान के कई नरेशों का ध्यान इस महान् प्रतिभाशाली व्यक्ति की ओर आकर्षित हुआ। सन् १८८८ में रतलाम नरेश की इच्छा से आप वहां के प्रधान-मंत्री बने। पश्चात् उदयपुर महाराणा ने इनको २१ दिसम्बर सन् १८९२ में अपने यहां एक हजार रुपये मासिक वेतन पर मन्त्री बनाया, किन्तु आपको ही प्रधान-मन्त्री का सारा कार्य करना पड़ता था। सन् १८९५ में आप पन्द्रहसौ रुपये मासिक पर जूनागढ के दीवान बनाए गए।

आप इन सब भारी जिम्मेवारियों को निभाते हुए गुप्त रूप से क्रान्तिकारी प्रवृतियों में भी सहयोग देते रहे।

एक दरिद्र भंसाली बालक के लिए यह कौन सोच सकता था कि आगे चल कर यह बालक न केवल अंग्रेजी तथा संस्कृत का महान् विद्वान्, आक्सफोर्ड का प्रथम भारतीय स्नातक, उच्च कोटिका कानून वेत्ता, प्रथम श्रेणी की भारतीय रियासतों का प्रधान मन्त्री तथा महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित परोपकारिणी सभा का सदस्य ही बनेगा अपितु नवीन राष्ट्रीय आन्दोलन की

महान् जागृति का सर्व श्रेष्ठ नेता भी बनेगा और भारतीय स्वतन्त्रता तथा संस्कृति का झंडा लन्दन, पेरिस, जिनेवा आदि में फहरा कर संसार में भारत के नाम को उज्वल करेगा।

शरत बोस ने आपके अगाध पाण्डित्य से प्रभावित होकर लिखा है कि "श्यामजी कृष्ण वर्मा एक पूर्ण, प्रगाढ़, सर्वतोन्मुखी विद्वान् थे। इनकी साहित्यिक प्रवृत्तियों के द्वारा हमें आनन्द तथा शिक्षा मिलती है, किन्तु मैं इनके सम्बन्ध में क्या कहूं स्वयं प्रो० मेक्स मूलर एवं प्रो० मोनियर विलियम्स ने अपने विचार इनके जीवन के विषय में प्रकट किए हैं"।

इन बातों के अतिरिक्त जिस कार्य ने श्यामजी को महान् गौरव प्रदान किया है वह है सन् १८५७ की सशस्त्र क्रान्ति। भारत में क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रमुख सूत्रधारों में से श्यामजी कृष्ण वर्मा भी एक थे। उन्होंने गुलामी के प्रति धधकने वाली ज्वाला की चिनगारियां भारतीय युवकों के हृदय में डाल दी। भारत तथा विदेश मे रह कर उन्होंने क्रान्ति का शंखनाद भारतीय जनता में फूंका तथा अनेको महान् क्रान्तिकारियों का निर्माण उनके हाथों हुआ। सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी लेखक श्री मन्मथनाथ गुप्त लिखते हैं—

"श्यामजी कृष्ण वर्मा काठियावाड़ रियासत के युवक थे। जिस सभा में, पूना मे मिस्टर रैण्ड पर गोली चलाई गई थी तब वे बम्बई में थे। पीछे उनके कथन से मालूम हुआ कि उसी हत्या काण्ड की जांच पड़ताल मे पुलिस जब उनको भी फंसाने का कुछ ढंग करने लगी तो वे बम्बई से लन्दन चले गये। लन्दन मे जाकर श्यामजी बहुत दिनों तक चुपचाप बैठे रहे। किसी राजनैतिक हलचल मे भाग नहीं लिया, किन्तु १६०५ में उन्होंने "इण्डिया होम रूल

सोसायटी" नाम की एक सभा स्थापित की और उस सभा के सभापति हुए। उस सभा ने एक मासिक मुख पत्रिका निकाली जिसका नाम "इण्डियन सोशियोलौजिस्ट" पड़ा। इस सभा का उद्देश्य भारतवर्ष के लिए स्वराज्य प्राप्त करना तथा हर प्रकार से इङ्गलैण्ड में उसके लिये जनमत जागृत करना था। इङ्गलैण्ड के जनमत को जागृत करके जो स्वराज्य लेने की चेष्टा करता है उसको हम और कुछ भी कहें क्रान्तिकारी कदापि नहीं कह सकते; किन्तु यह तो संस्था का खुला उद्देश्य था। उनका असली उद्देश्य और ही कुछ था। वे चाहते थे कि भारतवर्ष के अच्छे २ छात्र इङ्गलैण्ड में पढने के लिए आते हैं, उन में वहां के स्वतन्त्र वातावरण में स्वाधीनता की भावनायें भरी जायें। यही उनका असली उद्देश्य था। तदनुसार दिसम्बर १९०५ में श्यामजी ने यह ऐलान किया कि वे हजार हजार रुपये की ६ छात्र वृतियां दे रहे हैं, जिससे कि लेखक, पत्रकार तथा दूसरे योग्य भारतीय यूरोप, अमेरिका तथा अन्य देशो में आ सकें और स्वदेश लौट कर स्वाधीनता तथा राष्ट्रीय एकता का ज्ञान फैला सकें।"

श्यामजी कृष्णवर्मा ने कई एक ऐसे व्यक्तियों को एकत्रित किया जो विद्वान् होने के अतिरिक्त देश-भक्ति में जरूर चमक सकते थे। श्यामजी का भारतीय भवन विदेश में देश भक्तों का एक अच्छा केन्द्र हो गया। थोड़े दिनो में पुलिस की उस पर दृष्टि पड़ गई। सन् १९०७ ई० की जुलाई में किसी मन चले सदस्य ने पार्लियामेन्ट में यह प्रश्न पूछ लिया कि क्या सरकार कृष्णवर्मा के विरुद्ध कुछ करने का इरादा कर रही है ? इस प्रश्न के फलस्वरूप परिस्थिति ऐसी हो गई कि श्यामजी ने इङ्गलैन्ड से अपना डेरा उठा लिया और पेरिस चले गये। पेरिस में उनको लन्दन से कहीं

अधिक स्वतन्त्रता पूर्वक काम करने का मौका मिला किन्तु उनका अखबार 'Indian Sociologist' पहले की भांति लन्दन से ही निकलने लगा। ब्रिटेन की सरकार इस बात को भला कहां सह सकती थी ? सन् १९०९ की जुलाई में इसके मुद्रक पर मुकदमा चला और उसे सजा दी गई । छपाई का भार दूसरे व्यक्ति ने अपने ऊपर ले लिया, किन्तु उसे भी सितम्बर १९०९ ई० में १ वर्ष की कड़ी सजा हुई। इसके बाद मजबूरी में क्या होता ? अखबार पेरिस से निकलने लगा और श्यामजी एस. आर. राना के द्वारा अपना सम्बन्ध भारतीय भवन से बनाए रहे।" (भारत मे सशस्त्र क्रान्ति के रोमाञ्चकारी इतिहास में से उद्धृत)

श्यामजी एक बड़े भारी क्रान्तिकारी लेखक थे । सरकार के करेन्सी नोटो पर आपने एक लम्बी लेख माला लिख कर संसार को बतलाया कि ब्रिटिश साम्राज्यवाद आर्थिक रूप से किस प्रकार भारत का शोषण कर रहा है।

रलिट साहब ने आपकी क्रान्तिकारी बातों का उल्लेख करते हुए दिसम्बर १९०७ के 'इन्डियन सोशियोलोजिस्ट' से निम्न लिखित उद्धरण दिया है:—

"ऐसा मालूम होता है कि भारतवर्ष के किसी भी आन्दोलन के लिए गुप्त होना अनिवार्य है। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश सरकार को होश में लाने का एक मात्र उपाय रूसी तरीकों का प्रयोग जोर-शोर से और लगातार करना ही है। यह प्रयोग भी तब तक किया जाय, जब तक कि अंग्रेज यहां अत्याचार करना न छोड़दें और देश से न भाग जांय। मैं नही बता सकता कि किन परिस्थितियों मे हम अपनी नीति में क्या परिवर्तन करेंगे ? यह तो शायद बहुत कुछ

स्थानीय परिस्थितियों पर निर्भर है। साधारण सिद्धान्त के तौर पर फिर भी हम कह सकते है कि रूसी तरीकों का प्रयोग पहले भारतीय अफसरों पर लागू होगा, न कि गोरे अफसरों पर।"

सावरकर ने १९०५ में बी० ए० पास करने पर बम्बई में कानून की शिक्षा लेने का विचार किया, परन्तु इसी समय श्यामजी कृष्ण वर्मा ने कुछ छात्र वृत्तियां उन छात्रों को देना घोषित किया जो कि विदेश में जाकर शिक्षा प्राप्त करें। सावरकर ने भी लोकमान्य तिलक एवं डा० परांजपे की शिफारिस के साथ एक प्रार्थना पत्र भेजा और श्यामजी द्वारा वे विलायत बुला लिए गये। सावरकर की योग्यता को देख कर "भारतीय भवन" का प्रबन्ध श्यामजी ने इनके हाथों में दे दिया और 'अभिन्न भारत' के इस नवयुवक सेना-पति के प्रति वे केवल विश्वास ही नहीं अपितु पिता का सा स्नेहमय भाव भी रखते थे। लन्दन के पत्रों ने भी सावरकर को श्यामजी का दाहिना हाथ घोषित किया। सावरकर के कुछ मित्रों ने इस बात पर आपत्ति की कि श्यामजी को इतना महत्व क्यों दिया जा रहा है तो सावरकर ने कहा कि इस प्रकार क्रान्ति की प्रकट एवं वीर घोषणा करने वाले श्यामजी किसी भी क्रान्तिकारी से कम नहीं हैं।

लाला लाजपतराय ने अपनी आत्म-कथा मे श्यामजी कृष्ण वर्मा के सम्बन्ध मे लिखा है—"मुझे कई बार श्यामजी से मिलने का अवसर प्राप्त हुआ। उनके राजनैतिक विचार बहुत कुछ मुझ से मिलते थे। इनके द्वारा मेरा परिचय साम्यवादी नेता हाइन्डमैन से हुआ और एक दो आयरलैण्ड के नेताओं से भी परिचय हुआ। उन्हीं दिनों में मजदूर दल या साम्यवादी दल की एक कांग्रेस होवर्न हाल में हुई। दादाभाई नौरोजी इस संस्था के उप-प्रधान थे। उनके

कहने से मैं इस कांग्रेस में सम्मिलित हुआ और मैंने वहां व्याख्यान दिया। श्यामजी कृष्ण वर्मा ने भी वहां व्याख्यान दिया। अगस्त में मैं लन्दन लौट आया और फिर 'भारतीय ग्रह'(India House) में रहने लगा। मुझे उनकी देश भक्ति मे कभी सन्देह नहीं हुआ। उनके राजनैतिक सिद्धान्त बहुत कुछ ठीक हैं और ये सच्चे हृदय से अपने देश का भला चाहते हैं। ... इनकी कोई योजना सफलता की सीमा तक नहीं पहुंची तथापि यह अस्वीकार नही किया जा सकता कि उनके प्रचार और उनके उद्योगो ने राष्ट्रीय दल को जन्म देने में और उसको सबल बनाने में बड़ा भाग लिया। हरदयाल और सावरकर (पर) इनके विचारों का प्रभाव ... अवश्य पड़ा।"

लाला लाजपतराय ने भाई परमानन्द के नाम दो पत्र लाहौर से लिखे थे। पहला पत्र २८ फरवरी १६०७ को लिखा था जिसमें आपने लिखा कि वे (भाई परमानन्द) श्यामजी कृष्ण वर्मा से कहे कि अपने अगाध धन के थोड़े से हिस्से को लगा कर यहां के छात्रों के लिये नये ढंग की राजनैतिक पुस्तकें भेजे। आगे यह भी लिखा कि वे दस हजार रुपये राजनैतिक मिशनरियों के लिए दें।

पं० जवाहरलाल नेहरु ने "मेरी कहानी" में श्यामजी के बारे में लिखा है "योरोप मे जो एक और तीन चौथाई साल बिताया उसमे बहुत से ऐसे पुराने क्रान्तिकारी और हिन्दुस्थान से निकाले हुए भाई मिले जिनके नामो से मैं वाकिफ था।

उनमे से श्यामजी कृष्णवर्मा जिनेवा में एक मकान की सब से ऊंची मञ्जिल पर अपनी बीमार पत्नी के साथ रहते थे। ये दोनो वुड्ढे मियां बीबी अकेले ही रहते थे। ......श्यामजी के पास काफी रुपया था, लेकिन वे रुपया खर्च करने में विश्वास नहीं करते थे।

...उनकी जेबें उनके "इण्डियन सोशियोलोजिस्ट" नामके अखबार
की पुरानी कापियों से भरी रहती थीं। वह उन्हें खींच कर निका-
लते और वह कुछ जोश के साथ उन लेखों को दिखाते जो उन्होंने
कोई १२ साल पहले लिखे थे। वे ज्यादातर पुराने वक्तों की बातें
किया करते थे। हैम्सटीड में 'इण्डिया हाउस' में क्या हुआ ?
ब्रिटिश सरकार ने उनके भेद लेने के लिए कौन शख्स भेजे और
उन्होंने किस तरह उन्हें पहिचान कर उनको चकमा दिया, आदि।
उनके कमरों की दीवारें पुरानी किताबों से भरी अलमारियों से
सटी हुई थी।

श्यामजी अपनी दौलत के बाबत कुछ इन्तिजाम, पब्लिक
के कामों के लिए कोई ट्रस्ट, कर देना चाहते थे। शायद वह विदेशों
में शिक्षा पाने वाले हिन्दुस्थानियों के लिए कुछ इन्तिजाम करना
पसन्द करते थे उन्होंने मुझ से कहा कि मैं भी उनके उस ट्रस्ट का
एक ट्रस्टी हो जाऊं लेकिन मैंने उस जिम्मेवारी को अपने ऊपर लेने
की कोई ख्वाहिश नहीं जाहिर की। यह तो किसी को नहीं
मालूम था कि उनके पास कितनी दौलत है। यह अफवाह भी
उड़ी थी कि जर्मनी में सिक्के की कीमत गिरने पर उनको बहुत
नुकसान हुआ था।

श्यामजी और उनकी पत्नी को एकांकी जिन्दगी बितानी
पड़ती थी। उनके न तो बाल बच्चे ही थे, न कोई रिश्तेदार या दोस्त
ही, उनका कोई साथी भी नहीं था। वह तो पुराने जमाने
की एक यादगार थे। सचमुच उनका जमाना गुजर चुका था।
मौजूदा जमाना उनके लिए मौजूं नहीं था। इसलिए दुनियां उनकी तरफ
से मुंह फेर कर मजे से चली जा रही थी। लेकिन फिर भी उनकी

आंखों में पुराना तेज था और यद्यपि उनमें और मुझ में एक सी चीज नहीं फिर भी उनके प्रति मैं अपनी हमदर्दी व इज्जत को नहीं रोक सकता।"

नेताजी सुभाष के बड़े भाई शरत् बाबू ने मरने के कुछ दिवस पूर्व १७ जनवरी १६५० को श्यामजी* के बारे में लिखा,' यह श्यामजी कृष्ण वर्मा का राजनैतिक कार्य ही था जिसने मुझे मेरी युवावस्था के दिनों में अपनी ओर आकर्षित किया। उनका राजनैतिक जीवन सन् १६०५ में आरम्भ हो गया था और शुरु से ही उन्होने कांग्रेस की पहली पीढी के ह्यूम और वैडरवर्न जैसे नेताओ के प्रति अपना विरोध प्रदर्शित किया उन्होने हर्बर्ट-स्पेन्सर से प्रेरणा ली थी। हर्बर्ट स्पेन्सर को उद्धृत करते हुए उन्होंने कहा था कि जनता के अधिकारो के दमन का प्रतिकार केवल न्यायोचित ही नही अपितु उसके करने के लिए प्रत्येक बाध्य है। अप्रतिकार स्वार्थ और परमार्थ दोनो को ठेस पहुँचाता है। उन्होने अपने राजनैतिक विचार जनवरी १६५० में अपने अंग्रेजी मासिक पत्र, 'इण्डियन सोशियोलोजिस्ट' के प्रथम अंक में प्रकट किए थे।

श्यामजी ने १८ फरवरी १६०५ को लन्दन में इण्डियन हाउस पब्लिक सोसायटी की स्थापना की।

उन्हें दादा भाई नौराजी तथा बाल गंगाधर तिलक के मध्य किसी एक को चुनना था और उन्होंने निःसंकोच भाव

---

* स्वर्गीय श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा पर श्री इन्दुलालजी याज्ञिक की 'Life times of an Indian Revolutionary" शीर्षक पुस्तक की भूमिका से उद्धृत।

से तिलक के मार्ग को अपनाया। जो गौरवपूर्ण परम्परायें श्यामजी कृष्ण वर्मा और उनके साथियों ने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में स्थापित की उन्हें स्मरण करते हुए मुझे अभिमान होता है। उन्होंने उस समय भारतीय स्वतन्त्रता के स्वप्न देखे और उसके हेतु युद्ध किया जबकि कांग्रेस के अधिकांश नेतागण जिन्होंने सन् १९४७ में ब्रिटिश साम्राज्य शाही से हुए समझौते के परिणाम स्वरूप शासन भार ग्रहण किया, या तो ब्रिटिश साम्राज्यवादियो के साथ सहयोग कर रहे थे या ब्रिटिश साम्राज्य के शासन केप्रति मौन रह कर उसे मान्यता दे रहे थे या अपने अप्रस्फुटित विचारों के साथ राजनैतिक शिशुशाला में पनप रहे थे। उन्होंने (श्यामजी ने) इस शताब्दि के आरम्भ से ही उस स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिये धर्म युद्ध का श्री गणेश कर दिया था कि जिसका ध्यान भी इनको (कांग्रेसी नेताओ को) सन् १९२९ से पूर्व नहीं हुआ था।

श्यामजी कृष्ण वर्मा तथा उनके साथियों का उदाहरण भारत वासियों को सदैव प्रेरणा देता रहे और भारतवासी उनके अपूर्ण कार्य को पूर्ण करने के लिए अपने जीवन का बलिदान देते रहें।"

आप एक ओर उग्र क्रान्तिकारी तथा समाज सुधारक थे तथा दूसरी ओर एक सफल शासन कर्त्ता भी थे। अपनी प्रखर बुद्धि तथा कौशल द्वारा आपने पर्याप्त धन ही संग्रह नहीं किया, किन्तु राष्ट्रीय हितो की दृष्टि से उसे भामाशाह की भांति ही उदारता पूर्वक खर्च भी किया। कुशल व्यापारी, धर्म चिन्तक तथा उच्चकोटि के राज-नीतिज्ञ का अभूतपूर्व सामंजस्य आपके महान् व्यक्तित्व में ही दृष्टिगोचर होता है।

संसार के इतिहास में श्यामजी कृष्ण वर्मा की भांति ऐसा कोई व्यक्ति शायद ही उत्पन्न हुआ हो जिसमें उनकी ही भांति समस्त गुणों का समावेश रहा हो। जन्म लेते ही इस महान् व्यक्ति ने १८५७ की महान क्रान्ति के दिनों मे तलवारो की झङ्कार सुनी, यौवन में पदार्पण करते ही ऋषि दयानन्द का दिव्य सन्देश सुना, विदेशी शासकों से देश को मुक्त कराने के प्रयास में राष्ट्रीय महासभा कांग्रेस की स्थापना इसके जीवन में ही हुई; धूल मे पड़े हुए अनेको पत्थरों को चुन कर उसने उन्हे अमूल्य रत्न बनाया, जिन रत्नो के दैदीप्यमान प्रकाश से भारतीय इतिहास उज्वल हो उठा है। अनेको राजनीतिज्ञों तथा विद्वानो से उसने संसर्ग प्राप्त किया तथा प्राचीन और अर्वाचीन राजनीति के विकाश में भी सहयोग दिया। अपने तेजयुक्त व्यक्तित्व से भारत के वर्तमान प्रधान मंत्री पं० नेहरू को भी वह प्रभावित कर सका। वास्तव में श्यामजी कृष्ण वर्मा अपने युग के महान् पुरुष थे। साथ ही उनके आकर्षक व्यक्तित्व ने भी उन सब को प्रभावित किया जो भी उनके सम्पर्क मे आये। उनका चौड़ा ललाट, गोरा मुंह तथा रौबीली मूछे देख कर अनेको विदेशी अधिकारी भी भय मानते थे।

३१ मार्च सन् १६३० मे देश के इस महान् व्यक्ति की मृत्यु होगई। जीवन भर जो व्यक्ति, देश, धर्म तथा संस्कृति की रक्षा में रत रहा ऐसी विभूति की स्मृति रक्षा में उसी के देशवासी कितने

प्रयत्नशील हैं इस बात का अनुमान तो इसी बात से लगाया जा सकता है कि अधिकांश जनता उनके नाम को भी भूल गई है तथापि स्वतन्त्र भारत में सच्चे इतिहास का जब निर्माण होगा तब हमें विश्वास है कि श्यामजी जैसे महान् नेताओं के कार्यकलाप स्वर्णाक्षरों में लिखे जावेंगे।

इंगलेंड के अमर नाट्यकार शेक्सपीअर के शब्दों में श्यामजी कृष्ण वर्मा एक पूर्ण व्यक्ति थे और उनकी शान का मनुष्य मुझे ढूंढने पर भी नहीं मिलेगा ।*
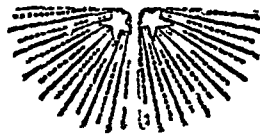
*"He was a man, all in all and I shall not look upon his like again."

अनूठा रण बांकुरा ठाकुर जोरावरसिंह

"जिस आदमी ने १६१२ ई० के दिल्ली दरबार के मौके पर लार्ड हार्डिंज पर बम फेंका उसने एक स्मरणीय याद रखने लायक कार्य किया। इस आदमी की दिलेरी व बहादुरी अपना सानी नहीं रखती। इससे भी अधिक हौसला दिलाने वाली बात यह है कि एक शक्तिशाली शानदार साम्राज्य के सब साधन व शक्ति उस वीर का पता लगाने मे आज तक असमर्थ साबित हुई है।"

—लाला लाजपतराय (आत्मकथा पृष्ठ ६)

अभी तक आम जनता ज्यादातर यही समझती रही है कि दिल्ली मे वाइसराय लार्ड हार्डिञ्ज पर बम श्री रासबिहारी बोस ने फेंका था, किन्तु वास्तव मे लार्ड हार्डिञ्ज पर बम फेंकने वाले राजस्थान केसरी स्वर्गीय ठाकुर केसरीसिंह बारहट के छोटे भाई व अमर शहीद वीर कुंवर प्रतापसिह के चाचा श्री ठाकुर जोरावरसिंह थे।

आपका बाल्यकाल शाहपुरा, उदयपुर और जोधपुर में राजसी ठाटबाट के साथ अपने पिता श्रीकृष्णसिंह जी बारहट के साथ बीता, जहां पर जीवन के प्रारम्भिक दिनों में अनुशासन सुव्यवस्था, निर्भीकता, सत्य-कथन और वीरत्व के संस्कार इस भावी शहीद के मानस पटल पर दृढ़तापूर्वक अंकित हो गये।

पिता के स्वर्गवास के बाद जोधपुर महाराज ने इनको महारानी का कामदार नियुक्त किया। वहां रहते हुए जोरावरसिह एक

अत्यन्त प्रतिष्ठित और गौरव युक्त व्यक्ति होकर सम्मान प्राप्त कर सकते थे, किन्तु उनके हृदय में तो देश भक्ति की प्रचण्ड अग्नि प्रज्वलित हो रही थी जिसने उन्हे एक महान शहीद बना दिया।

जब दिल्ली के चांदनी चौक में वाइसराय महोदय का जलूस बड़ी शान शौकत से निकल रहा था, गोराशाही के गुरगों का जबरदस्त पहरा लगा हुआ था, उस वक्त इस अनूठे रणबांके वीर ने जिस कमाल के साथ बुरके में से लाट साहब पर बम का निशाना मारा वह संसार के इतिहास में सर्वदा के लिए एक स्मरणीय घटना रहेगी। बम फेंक कर जिस बहादुरी, व हिम्मत के साथ ठाकुर जोरावरसिंह ब्रिटिश शाही की आंखो में धूल झोंक कर ऐसे लापता हुए कि अपने पूरे साधनों का उपयोग करके भी ब्रिटिश सरकार आजन्म उस वीर का पता न लगा सकी। ठाकुर साहब दिल्ली से फरार होकर अज्ञातवास में चले गये व अज्ञातवास काल में अपने आपको भारत मां को स्वतन्त्र कराने के प्रयत्नों में झोक कर, अपने जीवन को उत्सर्ग कर, भारतीय क्रान्ति के इतिहास में उन्होंने एक अनमोल पृष्ठ जोड़ दिया।

ठाकुर जोरावरसिंह के कार्य्यकलापों की महत्ता का वर्णन करते हुए श्री फतहसिंह 'मानव' बी० ए० ने 'मीरां' के शहीद अङ्क में इस प्रकार लिखा है:—

"बंग-भंग से लेकर सन् १६४२ की अन्तिम क्रान्ति तक जितने भी बलिदान पराधीन भारत मे हुए उनमें यदि अतुलित त्याग, अद्वितीय धैर्य और अपरिमित कष्टसहिष्णुता की तुला मे उन पुरुष-पुंगवों को रखा जाय तो ठाकुर जोरावरसिंह का स्थान सर्वोत्तम शहीदों मे होगा।

सरस्वती जैसी सरितायें किसी काल में रेगिस्तान के गर्भ में लुप्त हो सकेंगी और पर्वत मालाओं का भूकम्प में अदृश्य होना सम्भव है लेकिन देश और समाज की बलिवेदी पर सर्वस्व स्वाहा करने वाले स्व० ठा० जोरावरसिंह जैसे उद्भट क्रान्तिकारी सदा अमर रहेंगे।

. जोरावरसिंह को पकड़ने के लिये कोटा सरकार ने ६००) का व बिहार सरकार ने ६००) के इनाम की घोषणा की, किन्तु वे देशभक्ति के अपराध में वे दर-दर घोर कष्टों का सामना करते हुए सी० आई० डी० के चंगुल से अपने शरीर को बन्दी बनाने से बचाते रहे। उस श्रेष्ठ क्रांतिकारी ने अपनी वेश-भूषा और बोल-चाल को बदल कर गुप्त वेष धारण कर लिया और युग पर्यन्त अज्ञात वास की कठिनतम यंत्रणाओं के सन्मुख क्षणार्ध के लिये भी विचलित न हुए।

फरारी के कई वर्षों बाद वह जोरावरसिंह अपरिचित वेश में महमान के रूप में कभी राजस्थान-केसरी के परिवार में और कभी खरकड़ा गांव में गृहलक्ष्मी अनोपकुंवर से मिलने आते है। सब लोग उन्हे महाराज-कहते हैं।

जब बम डालने निकले तो कुछ साथी पहिले साथ २ जब यमुना से नाव में पार हो रहे थे तो उनसे पूछा गया कि तुम्हारे पास इतना सामान कैसे है ? कहा कि 'माहेरा' लेकर जा रहे हैं। और इधर इन्हें यह शक हुआ कि कही पुलिस सन्देह न करले, वहीं से इन्होंने इनके अन्य साथियो को लौटा दिया और प्रताप ने जोगिया कपड़े पहने। हाथ इनका इतना सधा हुआ था कि ऊपर ओढ़ी हुई चद्दर का पल्ला ऊपर उठा तेजी के साथ हाथ से बम निकाल देते थे।

जब सवारी निकलने लगी तब बम फेंका और भीड़ में उसी क्षण
गायब हो गये। आगे जाकर नदी में बाढ़ मिली। प्रताप जंजीर
पकड़कर सात घन्टे नदी में लटकता रहा, फिर कुछ बहा, कुछ
तैरा। किनारे पर दो पुलिस वालों को सन्देह हुआ तो जोरावरसिंह
ने उनको तलवार के घाट उतार कर प्रताप को कन्धे पर डाल
ले गये।

स्वयं जोरावरसिंहजी के मुंह से सुनाई एक घटना कुमारी
नगेन्द्रबाला ने इस प्रकार लिख भेजी है:— एक बार उनके पैर में
नेहरू निकल रहा था। बहुत सख्त दर्द था वह देवली की छावनी
आये। कुछ लोगो ने उन पर सन्देह किया और पुलिस को इत्तला
दी। पुलिस ने करीब रात को १० बजे उन्हें गिरफ्तार किया। उस
समय उन्होंने करणी माता के प्रति डिंगल में छप्पय बनाया और
उसमें उनकी अत्यन्त श्रद्धा थी उन्होने प्रार्थना की। आपके परिवार
मे भी उनकी पूजा होती थी। और उन्होंने वीरता में आकर छप्पय
बोला। वह कहते थे—"मुझे मालूम नहीं एक तलवार हाथ में आई
मैंने चार सिपाही और एक अंग्रेज जो उनका अफसर था, मार कर
६ मील पैदल चला गया और एक पेड़ के नीचे जाकर पड़ा। मुझे
ऐसा ज्ञात हुआ मानो स्वप्न आया है।

इधर उनकी धर्मपत्नी श्री० अनोप कुमारी को भी उसी समय
स्वप्न आया कि जोरावर बीमार है। इस तरह पकडा गया
और वह कुछ घटना घटित करके वहां आ पड़ा है। परिवार ऐसी
बातों को मानता भी खूब। मानता कैसे नहीं जब कि पूर्ण सहायक
यह घटनायें गुजरती थी। उसी समय घर से दो व्यक्ति गये और
उन्हें ले आये। दूसरे रोज पत्रों में खबर पढ़ी कि इस तरह पांच
व्यक्ति मारे गये खूनी फरार है।

इस घटना की हिन्दी तिथि आज भी लिखी हुई पड़ी है और वह सम्वत १६८० आसोज सुदी १४ चौदस को रात के १० बजे। यह 'करणीजी' कुलदेवी मानी जाती है। बीकानेर के देशनोक में इनका बड़ा भारी मन्दिर है।"

बिहार प्रान्त के प्रसिद्ध आरा षडयन्त्र में भी ठाकुर जोरावरसिंह को प्राण दण्ड की सजा दी गयी थी, परन्तु मुलजिम तो पहिले से ही फरार था। आप लगभग २६ वर्ष पर्य्यन्त अज्ञातवास में रहे। आपके इस कार्य के परिणाम स्वरूप आपकी समस्त जायदाद जब्त हो गई। आपके परिवार वालो को महान् कष्टो का सामना करना पड़ा और सबसे अधिक साहस और कष्ट सहिष्णुता का परिचय दिया आपकी धर्मपत्नी अनोप कुंवर बाई ने, जो सदा अपने ओजस्वी तथा उत्साह वर्धक वचनो द्वारा अपने पतिदेव को भारत माता की बेड़ियां काटने के हेतु अग्रसर करती रही। अज्ञातवास के दिनो में कई बार जोरावरसिंह जान हथेली पर रखते हुए अपने परिवार वालो से मिलने आते थे दो चार अवसर तो ऐसे हुए कि वे पुलिस के चंगुल से फंस जाने पर भी बच निकलते थे।

सर्व प्रथम प्रान्तो मे कांग्रेस मिनिस्ट्री बनने पर यह प्रयत्न किया गया था कि इनके खिलाफ आरा-षडयंत्र वाला वारन्ट रद्द कर दिया जाय किन्तु देश का यह दुर्भाग्य ही था कि हमारे देश के इस अमर शहीद को हम कानूनी प्रतिबन्ध से मुक्त कर सार्वजनिक जीवन मे नहीं ला सके।

फिर भी उस रण बांकुरे ठाकुर जोरावरसिंह ने तो अपने आपको स्वतन्त्र रखने की प्रतिज्ञा को अन्त तक निभाया। सन्

१६३६ में निमोनिया से ग्रस्त होकर इस अनोखे वीर ने इस- नश्वर देह को त्याग दिया।

राजस्थान का यह सौभाग्य है कि महान् बारहट परिवार मे उसे एक साथ तीन नररत्न प्राप्त हुए और तीनो ने देश के लिए महानतम बलिदान का आदर्श उपस्थित किया, किन्तु इनमें भी जोरावर का साहस और निर्भीकता अनोखी है और सदा स्मरणीय रहेगी हम देशवासी उस महान आत्मा को आज भारतीय स्वतन्त्रता के तृतीय वर्षगांठ पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं।

—— ——
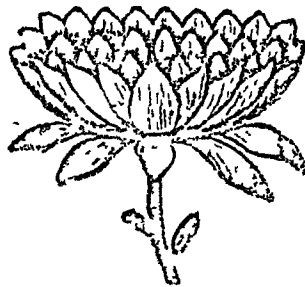
* जय-हिन्द *

— तिलक-युग के राणा प्रताप —

स्व. राव गोपालसिंह राष्ट्रवर खरवा नरेश

परम उदार त्याग मूर्ति पुञ्ज साहस को,
क्रान्ति को पुजारी दुःख देश को सह्यो नहीं।
भारती स्वतन्त्र बलि वेदी पै विहंस बढ्यो,
दासता विलासता की धार में बह्यो नहीं।
धीरज धुरीण सही संकट अटल रह्यो,
ईश भक्ति भिन्न अन्य आश्रम गह्यो नहीं।
राष्ट्रवर राव श्री 'गोपाल' के सिधाते स्वर्ग,
आज राजपूती को नमूनो भी रह्यो नहीं॥

स्वर्गीय ठा० केसरीसिंहजी बारहठ (कोटा)*

---

* ये अमर शहीद वीर कुंवर प्रतापसिंह के यशस्वी पिता थे। आपकी अद्भुत कविता 'चेतावनी का चूंगट्या' को पढ़ कर ही, महाराणा फतहसिंह सन् १९०३ में दिल्ली के कर्ज़नी दरबार से गायब रहे तथा धूर्त कर्जन को ऐसा छकाया कि वो भी मृत समान हो गया।

राव गोपालसिंहजी उन इने गिने महापुरुषो में से थे, जिन्होंने देश व धर्म के लिए सर्वस्व त्याग देने में ही इस जीवन की सार्थकता मानी। जब कि विदेशी शासको की कूट नीति के कारण भारत के प्रतापी राजा महाराजा भी अपने गत गौरव को भूल चुके थे, ऐसे समय मे स्वर्गीय राव साहब ने अपने अपूर्व त्याग तथा बलिदान द्वारा देश के सन्मुख एक अपूर्व आदर्श उपस्थित किया। यह उन्ही का साहस था कि अपनी वंश परम्परागत जागीर की चिन्ता न करते हुए उन्होंने अपने आप को देशोद्धारक कार्यों में लगा दिया तथा भारत के क्रांतिकारी इतिहास में एक अनुपम पृष्ठ जोड़ दिया।

राव साहब का जन्म खरवा राज्य§ परिवार में कार्तिक कृष्ण ११ सम्वत् १९३० के दिन माधोसिंहजी की पटरानी

---

§ जोधपुर के मोटा राजा उदयसिंहजी (१५८६–९५) के जेष्ठ पुत्र राव सक्तसिंहजी ने खरवा में अपना अलग राज्य किन्हीं कारणों से स्थापित किया। राव सक्तसिंह बड़े बहादुर थे। बंगाल की चढ़ाई में इन्होंने अकबर को भारी मदद की। बादशाह अकबर के आपने एक बार प्राण बचाये थे। जब कि अकबर नाव दुर्घटना से पानी में डूब गये थे, तब आपने अपनी जान पर खेल कर पानी मे से अकबर को बाहर निकाला था। बादशाह अकबर ने आप पर प्रसन्न होकर सनद दी थी।

१४ पीढ़ी से उन्हीं की सन्तान खरवा पर शासन कर रही है। राव सक्तसिंहजी बादशाही पंचहजारी मंसबदारों में से थे। उस वक्त खरवा नौ लाख की रियासत थी उसका विस्तार इस भाँति था:—

भैरूंदा मारवाड से बदनौर, पुर, मांडल।
मेवाड़ और केकड़ी से रायपुर।

रानी चुंडावतीजी (राव साहब करेड़ा की सुपुत्री) के गर्भ से हुआ। बाल्यकाल से ही आपको देश के प्राचीन गौरव पूर्ण इतिहास ने अत्यन्त प्रभावित किया। प्रताप, शिवाजी आदि की वीरता पूर्ण गाथायें सुनकर के पुलकित हो उठते थे। राव साहब ईश्वर प्रदत्त गुणानुसार बचपन से ही बड़े गम्भीर, निर्भय और शिकार के बड़े इच्छुक थे। दौड़ते हुए सुअर को घोड़ा दौड़ा कर कटारी फेंककर मारना, भाले से मारना तथा रात दिन जंगलो मे शिकार के पीछे लगे रहने में आपको अत्यधिक रुचि थी।

आपकी शिक्षा मेयो कालेज अजमेर में हुई; किन्तु वहां की गन्दी प्रणाली से आपको घृणा होगई तथा १८ साल की आयु में ही आपने मेयो कालेज को तिलांजली दे दी। उसी समय एक दुखद घटना घटित हुई और देखा जाय तो उसी घटना ने राव साहब को

जब मरहठों ने अजमेर पर धावा किया तब तारागढ़ के रक्षक राव सूरजमल खरवा के ही थे। राव सूरजमल बड़े बहादुर थे, इन्होंने मरहठों का मुकाबला बड़ी वीरता पूर्वक किया। तब तक लड़ते रहे जब तक कि जोधपुर से संधि का आज्ञापत्र इनके पास न आ गया। सन्धि पत्र के अनुसार अजमेर का इलाका मरहठो के हिस्से में आया। पहले खरवा राज्य ३०००) वार्षिक खिराज देता था, मगर अब २३१८॥= वार्षिक देता है। ३० मार्च १८७५ को राव जसवन्तसिंहजी गद्दी पर बैठे। उनके स्वर्गवास पर राव माधोसिंहजी बैठे। माधोसिंहजी के उत्तराधिकारी राव गोपालसिंहजी थे। गोपालसिंहजी के सुपुत्र राव गणपतसिंहजी वर्तमान खरवा के ठाकुर हैं, आज कल खरवा करीब ८० हजार की रियासत है, खरवा का इलाका ज्यादातर पहाडी है इसलिये कम उपजाऊ भूमि होने से आमदनी कम है। कुल ५५३६१ एकड़ जमीन खरवा में है।

अपना भावी इतिहास बनाने का अवसर दिया। आप अजमेर में ही थे कि आपकी माता का स्वर्गवास होगया। मृत्यु शैय्या पर पड़ी हुई माता आपका मुंह देखना चाहती थी मगर राज्य कर्मचारियों की लापरवाही से आप माता के अन्तिम दर्शन नहीं कर सके। इस बात का आप पर बड़ा भारी प्रभाव पड़ा। उसी समय पिता का आशीर्वाद लेकर आपने जन्मभूमि को त्याग दिया तथा यहीं से आपके जीवन का नया अध्याय आरम्भ हुआ।

आयु के साथ साथ ही आपकी तीव्र बुद्धि भी अधिक प्रखर होती गई। देश की तत्कालीने परिस्थितियो ने आपका ध्यान आकर्षित किया। आपको अनुभव हुआ कि देशवासी विदेशी शासन की गुलामी के साथ ही साथ मानसिक पराधीनता भी स्वीकार करते जा रहे हैं तथा धनिक वर्ग एवं राजा महाराजा अपने २ स्वार्थों मे लीन होकर राष्ट्रीय हितों पर कुठाराघात करने पर तुले हुए हैं। ऐसे समय में इस ओर ध्यान केन्द्रित करने की प्रेरणा राव साहब के सात्विक हृदय मे उत्पन्न हुई।

गौतम बुद्ध की भांति आप भी भर जवानी में घर से निकल पड़े व चारभुजाजी के दर्शन कर, सब साथियों को विदा कर अकेले ही घोड़े पर जोधपुर पधार गये। वहां महाराजा जसवंतसिहजी के सम्पर्क मे आये। सर प्रतापसिंहजी इनकी वीरता, शस्त्रविद्या तथा सादगी से अत्यन्त प्रभावित हुए। संवत् १६५१ मे जोधपुर नरेश के स्वर्गवास होजाने पर आप अजमेर आगये। अजमेर आने पर आपकी रुचि सामाजिक, धार्मिक एवं राजनैतिक कार्यों की ओर बढ़ने लगी और आप उनमें प्रमुख भाग लेने लगे। इन दिनों आपको घुड़सवारी का अभ्यास अच्छा हो गया था तथा अस्सी २ मील तक

जंगलों में आपका भ्रमण एक २ दिन मे हो जाता था । ऐ
अवसरों पर कई एक साधु महात्माओ से भेट होने लगी
आपकी रुचि योग की ओर बढ़ने लगी । पूज्य पिताजी की नार
के कारण ही आपने घर छोड़ दिया था तथा आर्थिक सहाय
अभाव में आपको कष्टप्रद व सादा जीवन व्यतीत कर
अभ्यास हो गया ।

आपके पूज्य पिता श्री माधोसिहजी का स्वर्गवास व
कृष्णा ६ संवत् १६४४ को हो जाने पर आप खरवा की राजग
विराजे । सिंहासनारूढ़ होने से सात वर्ष पूर्व आपका शुभ वि
१८ साल की आयु में ही, शिवगढ़ (यू० पी०) के राजा साह
सुपुत्री गोड़जी के साथ हुआ । रावसाहब को गद्दी पर बैठ
संवत् १६५६ के भीषण अकाल का सामना करना पड़ा । वह अ
इतना भयानक था कि जिसके स्मरण मात्र से आज भी रोंग
हो जाते हैं । हजारो बच्चे, नर कंकाल और पशु स्थान २ प
के मारे तडप २ कर अपनी जीवन लीला को समाप्त कर रहे
सारी मानवता, प्रतिष्ठा और सतीत्व रोटी के एक टुकड़े
बिकने पर भी खरीदने वाले का अभाव था । रावसाहब ने
प्रजा पालक की भांति न केवल अपना खजाना ही खोल दिया,
अपनी व आस पास के स्थानों की अकाल पीड़ित जनता की
यतार्थ आपने लाखों रुपये का ऋण लिया । आपकी विशाल
रता का यश चहूँ ओर फैल गया । इसे ध्यान में रखते हुए एक
ने आपकी प्रजा पालकता को इस प्रकार स्मरण किया ।

भय खायो भूपति केता, दुर्भख छपनो देख ।
पाली प्रजा गोपालसी, परम धरम चहुँ पेख ॥

ऐसे अनूठे प्रजा पालक तथा साहसी राष्ट्रसेवी को गोरांगशाही ने अपने जाल में फंसाने के लिये एक षडयन्त्र तैयार किया। उस समय के जिला कमिश्नर मिस्टर मिचर्ड ने आपसे गहरी मित्रता का ढोंग रचकर ऋण देने के बहाने आपके शासनाधिकार छीनने का कुटिल आयोजन किया, किन्तु रावसाहब उस चक्कर मे नहीं फंसे। इस पर आपको कमिश्नर द्वारा बन्दर घुडकी दिखाई गई तो आपने उत्तर दिया, "आपकी घुड़कियां और ये लाल आंखें तो क्या यदि बड़ी २ तोपें भी मेरे सन्मुख रख कर मुझ से हस्ताक्षर करवाना चाहे तो यह असंभव सिद्ध होगा।" कुछ समय पश्चात मसूदा ठिकाने के उत्तराधिकार के प्रश्न को लेकर भी आपका संघर्ष तत्कालीन जिला कमिश्नर मिस्टर मेलविन से हो गया। गद्दी के लिये दो दावेदार होने पर सरकारी चाल मसूदा ठिकाने को जब्त करने की देख कर राव-साहब ने इन शब्दों में मुंह तोड़ उत्तर दिया, "यदि सरकार ने नष्ट करने का प्रयास किया तो राठोड़ों का बच्चा २ मसूदा का हक़दार बनकर विद्रोही बन जायगा और उन सब मे अग्रसर होने वाला पहला व्यक्ति मैं होऊँगा"।

अल्प समय में ही आपकी ख्याति सारे भारत में फैल गई तथा आप कई संस्थाओ के उच्च पदाधिकारी बना लिये गये तथा देश विख्यात संस्थाओं द्वारा आपको 'भारत भूषण', धर्म भूषण' व 'राजस्थान केसरी' की उपाधियों से विभूषित किया गया।

आप शिक्षा प्रेमी थे अपने खर्चे से सैंकड़ो विद्यार्थियों को पढ़ाया और कुछ को यूरोप भी शिक्षार्थ भेजा। आपके पढाये छात्रों में से कुछ तो उग्र क्रांतिकारी बन गये जिनमें से सोमदत्त, नारायणसिंह, गाढसिंह आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। इन्होंने सन् १९१४ की अस-

फल क्रान्ति मे पूर्ण सहयोग दिया था और कुछ आज भी सरकारी उच्च पदो पर योग्यता पूर्वक कार्य-सम्पादन कर रहे है।

आपने शिक्षा प्रचार के बहाने अनेकों उपदेशको के द्वारा वंग-भंग के समय से भी पूर्व काल मे क्रान्ति का प्रचार कराया। इसके लिये आपने विष्णुदत्त शर्मा जैसे क्रान्तिकारी को उपदेशक बना कर सन् १९०२ मे भारत के अनेको स्थानो में भ्रमणार्थ भेजा था।

विद्यानुराग, समाज सेवा तथा धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत पुरुष होने के साथ ही साथ आप एक उच्चकोटि के क्रान्तिकारी नेता भी थे। कलकत्ते में जब आप भारत धर्म महामण्डल के शिष्ट मण्डल क मंत्री की हैसियत से सर्व प्रथम वाइसराय महोदय से मिले, उस समय आपको श्री रास बिहारी बोस व श्री अरविन्द घोष जैसे क्रान्तिकारियो के सम्पर्क में आने का अवसर मिला। अक्टूबर १९०९ में योगीराज अरविन्द घोष, स्वामी कुमारानन्द के साथ आपके खरवे में भी पधारे व आपके पास ठहरे।

भारतव्यापी सन् १९१४ की क्रान्ति के प्रमुख आयोजको में से आप एक थे। यह आपकी ही बुद्धिमता थी कि आपने बड़े २ नरेशों का इसमें सहयोग प्राप्त किया। इस क्रान्ति के आयोजकों में आपके साथ श्री रासबिहारी बोस, सरदार अजीतसिंह, राजा महेन्द्रप्रताप, बड़ौदा नरेश, इन्दौर नरेश, ईडर नरेश, सर प्रताप, बीकानेर नरेश सर गंगासिंह, महाराणा फतहसिंह, सेठ दामोदरदास राठी, श्री अर्जुनलाल सेठी, ठाकुर श्री केसरीसिंह बारहट, लार्ड हार्डिञ्ज पर असली वम फेंकने वाले ठाकुर श्री जोरावरसिंह, श्री खुदीराम बोस, श्री राजेन्द्र लाहिड़ी, श्री विजयसिह

पथिक, ठाकुर मोडसिंह, पं० जगदीशजी (किशनगढ़), श्री बालकृष्ण शर्मा, श्री विष्णुदत्त, श्री सोमदत्त, श्री रुद्रदत्त आदि थे। इस क्रान्तिकारी संगठन की विशालता काश्मीर से लेकर सिंगापुर तक चली थी। हजारों युवक केसरिया बाना पहन कर अपने आपको मातृभूमि की बली वेदी पर होम देने को तैयार थे। धूर्त गौरांगो की चालों से सावधान होकर वे बृटिश साम्राज्य को दफनाने की योजना कर रहे थे; किन्तु दुर्भाग्य से सशस्त्र क्रान्ति की योजना का भंडाफोड़ एक जयचन्द के द्वारा होगया। सारे भारत मे जुल्मी नौकरशाही ने सितम ढाना शुरु कर दिया व जोरो से धरपकड़ व गुण्डागिरी का राज्य कायम हो गया। अंगरेजी सरकार ने जिस पैशाचिकता से अत्याचार किये, उसके सुनते ही खून उबलने लग जाता है। बर्मा एवं सिंगापुर मे हजारो युवकों को जहाज ही में डुबो दिया गया। जोधपुर स्टेट फोर्सेज और गंगा रिसाला के सैनिकों को बड़ी चाल से महायुद्ध में भिजवा कर उनका खातमा करा दिया तथा सैकड़ो युवको को आजन्म कैद, फाँसियां और लम्बी सजाओ द्वारा देशभक्ति का घृणित पुरष्कार दिया गया।

रावसाहब तो पहले ही देशभक्ति के पूर्व प्रयासों द्वारा सरकार की नजरो में कॉटे बन चुके थे। २८ जून १९०४ को शाम के ४॥ बजे कमिश्नर मि० ए० टी० होम ने मेडिकल आफिसर मेकपाट, सी० आई० डी० इन्सपेक्टर किशनसिंह, ब्यावर के तहसीलदार लालादुर्गाप्रसाद के साथ खरवा के दुर्ग मे राव साहब को चीफ कमीश्नर की आज्ञा पढ़कर सुनाई जिसके अनुसार २४ घण्टे मे आपको राजधानी छोड़ने का आदेश व ३६ घण्टो मे टाडगढ़ पहुँचने का हुक्म था। रावसाहब ता० २९ जून १९१४ को १५ व्यक्तियो के साथ टाड़गढ नजरबन्द होने को चल दिये। आपके साथ आपके काका

ठा० मोड़सिंह भवानीपुरा, जोधपुर के श्री सवाईसिंह, राजपुरोहित श्री मोड़सिंह, आपके मन्त्री श्री भूपसिंह * आदि थे। आपके सुपुत्र श्री गणपतसिंहजी आपको ब्यावर तक पहुँचाने के लिये आये, तो विदा होते समय अपने उत्तराधिकारी को सावधान करते हुये यह सन्देश दिया "Be faithful to your country"।

रावसाहब के टाडगढ पहुंचने के दूसरे ही दिन ता० ३० जून १६१४ को अर्धरात्रि को करीब ४०० सैनिको और पुलिस कर्मचारियो ने खरवा दुर्ग को चारो ओर से घेर लिया और तीन दिन तक लगातार तलासी ली परन्तु कोई भी आपत्ति जनक वस्तु नहीं मिल सकी। अधिकारियो ने शस्त्रागार का पूरा सामान ब्यावर भेज दिया यहां तक कि कुंवर साहब गणपतसिंह की हाथ की तलवार भी मांगली गई, किन्तु एक सच्चे राठोड़ की भांति कुंवर साहब ने निर्भयता पूर्वक इन्कार कर दिया। आभूषण, जवाहरात, सोना, चांदी सब सरकारी कोष मे भेज दिया गया। घोड़े बग्घियां नीलाम करदी गई। कुंवर साहब के व्यक्तिगत चालीस घोड़ों में से केवल एक घोड़ा रखा और ठिकाने के कर्मचारियो को हटा कर, अपने आदमी रख दिये।

---

* इन्ही भूपसिंह ने अपना नाम बदल कर विजयसिंह पथिक रख लिया। आप बिजौलिया सत्याग्रह के अमर सेना नायक हैं। सारे भारत में गाँधीजी के पहले आपने बिजौलिया क सामूहिक किसानों के सत्याग्रह का सफल संचालन किया। सन् १६२१ में कलकत्ते में सी० आर० दास के घर पर दीन बन्धु सी० एफ० एन्ड्रयूस को पथिकजी का परिचय देते समय गांधीजी ने कहा, 'Pathik is a worker while other are talkers. Pathik is a soldier, brave, impetuous; but obstinate.'

खरवा की जनता ने सारे हाल राव साहब तक पहुँचाने की एक योजना बनाई। दो आदमियों को टाडगढ भेजा गया। गौरांगशाही का यहां जबरदस्त पहरा था। एक आदमी तो रास्ते में ठहर गया, दूसरे ने साधु का वेष धारण किया। साधु ने भिक्षा मांगी व रावसाहब के हाथों से ही भिक्षा लेने का आग्रह किया। येन केन प्रकारेण वह रावसाहब तक पहुंच गया और ब्रिटिश शाही के अत्याचारों का सारा कच्चा चिट्ठा रावसाहब तक पहुँचा दिया। यह गुप्तचर सन्यासी खरवे का नारायण नाम का माली था। रावसाहब दिल ही दिल में अंगरेजों के इस भारी विश्वासघात पर अत्यधिक नाराज हुये। नजरबन्दी की आज्ञा सुनाते समय कमिश्नर महोदय ने आश्वासन दिलाया था कि आपकी रियासत ज्यों की त्यों रहेगी और कोई हस्तक्षेप न होगा। परन्तु यह आश्वासन मिथ्या सिद्ध हुआ।

नजरबन्दी की हालत में १२ जुलाई सन् १६१४ को एक थानेदार और तहसीलदार ने अंग्रेज सरकार का तार दिखाकर राव साहब से शस्त्र छीनने का प्रयत्न किया। यह सुनते ही राव साहब आग बबूला हो गये और झपटकर खूंटी पर लटकती हुई तलवार को म्यान से निकाल कर, कड़क कर उत्तर दिया, "आओ किस मां ने दूध दिया सो जीतेजी राजपूतों से शस्त्र छीन सकता है। यदि साहस नहीं है तो जाकर सरकार से कह दो गोपालसिंह प्राण रहते किसी को अपने शस्त्र नहीं दे सकता।"

थानेदार और तहसीलदार रावसाहब की बिगड़ी हुई मुद्रा देखकर भाग गये। राव साहब दिनदहाड़े टाडगढ छोड़ कर ठाकुर मोडसिंह जी के साथ अज्ञातवास में चल दिये। आपने वाइसराय व चीफ कमीश्नर को तार द्वारा अपने निश्चय की सूचना देते हुये लिखा,

'अवसर प्राप्त होने पर शीघ्रातिशीघ्र आपकी सेवा में उपस्थित होकर निर्दोषिता सिद्ध करुंगा।"

जंगलों में भीषण कष्ट उठाते हुए जब आपको वाइसराय के राजपूताने में आगमन की सूचना मिली तो आप उनसे मिलने की इच्छा से सलेमाबाद (जो कि किशनगढ़ राज्य में राठोड़ों का एक मात्र प्रसिद्ध ठाकुर द्वारा है) आगये। तब एक देशद्रोही ने आपके आने की खबर किशनगढ़ भेजदी। समाचार पाते ही राज्य के दीवान श्री के० एल० पोनास्कर ५०० सशस्त्र सैनिकों तथा उच्च अधिकारियो के साथ आये और मन्दिर के चारों ओर घेरा डाल दिया। राव साहब ने नित्यकर्म से निवृत होकर मन्दिर के द्वार अन्दर से बन्द करवा लिये तथा कई दिनों की खाद्य सामग्री साथ लेकर आप मन्दिर की ऊंची बुर्ज पर मोर्चाबन्दी करके बैठ गये।

दीवान पोनास्कर ने राव साहब से प्रश्न किया—"क्या इच्छा है?"

राव साहब ने निर्भयता पूर्वक उत्तर दिया—"जिस मान और प्रतिष्ठा के लिये हमने टाडगढ़ तोड़ा है और लगातार जंगलो में घूम कर कष्ट उठाये हैं उनकी रक्षा प्राण प्रण से करना।"

दीवान पोनास्कर ने घबरा कर वाइसराय तथा चीफ़ कमिश्नर को तार द्वारा इस घटना की सूचना दी। रात भर ज्यों का त्यो घेरा बना रहा। दूसरे दिन प्रातःकाल चीफ कमिश्नर के सेक्रेटरी, इन्सपेक्टर जनरल पुलिस, कमिश्नर मिस्टर केई, सहकारी कमिश्नर आदि ५०० सशस्त्र अंग्रेज सैनिको के साथ आ पहुंचे। मिस्टर केई के प्रयत्नो से सम्मानपूर्ण समझोता हो गया और घेरा उठा लिया

गया। कुछ दिन बाद राव साहब स्वयं अजमेर आ गये। सलेमाबाद से रवाना होते समय राव साहब ने चार हजार रुपये मूल्य के शस्त्र तथा दो हजार नगद भगवान के श्री चरणों में भेंट किये। अजमेर में आपको मेगज़ीन (अकबर बादशाह का बनाया हुआ महल) में रखा गया। बनारस षडयंत्र केस मे आपको फंसाने की चाल चली गई, मगर असफल होने पर आप बरी किये गये। फिर भी सरकार ने आपको बाहर रखना खतरनाक समझ कर भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत आपको नजरबन्द कर दिया। इसके विरोध स्वरूप अजमेर मेरवाड़े की जनता ने सरकार को मेमोरियल भेजा मगर वह रद्दी की टोकरी मे फेंक दिया गया।

आपके कारावास काल मे आपसे सुप्रसिद्ध विद्वान साहित्यसेवी राहुल सांकृत्यायन १७ अप्रेल १६१६ को मिले जिसका कि उल्लेख उन्होने 'मेरी जीवन यात्रा' के पेज ३१५ पर निम्न भांति किया है:—

खरवा के राव साहब (गोपालसिंहजी) उस समय तिलहट के डाक बंगले में नजरबन्द थे। अभिलाष उनसे एक आध बार मिले थे मुझे मालूम होने पर मैं भी मुलाकात करने का इच्छुक हो गया। हम दोनों राव साहब के बंगले पर गये। अभिलाष ने अपना साथी नौजवान कह कर मेरा परिचय दिया। राव साहब ने हिम्मत की परीक्षा लेने के लिये—"आपको कोई उज्र तो नहीं होगा, यदि मैं पुलिस को बतलाने के लिये आपका नाम नोट करलूँ। नजरबन्दी में मेरे लिये जरूरी है" मैंने साफ तौर से कहा—"नही कोई उज्र नहीं आप जरूर नोट करलें।" राव साहब की बातों मे अंगरेजो के प्रति-भयंकर विद्वेष भरा था। उन्होंने कुछ स्वरचित कवितायें सुनाई। जिनमें एक का अंश अब भी याद है:—

"गोरांग गण के रक्त से निज पितृ गण तर्पण करूं।"

दो वर्ष की नजरबन्दी से रिहा होने पर आपका विराट स्वागत किया गया तथा आपको दूसरे ही दिन, २८ मार्च १९२० को दिल्ली व अजमेर मेरवाड़ा प्रान्तीय राजनैतिक परिषद् अजमेर का अध्यक्ष बनाया गया। अजमेर से खरवा आने पर आपका इतना शानदार स्वागत किया गया कि खरवे स्टेशन से गढ़ तक (करीब २ मील) आपकी सवारी के घोड़ों का स्थान मनुष्यो ने लिया। आप अपनी प्रजा में कितने लोकप्रिय थे, इस घटना से साफ झलकता है। पुनः आप १५ अप्रेल १९२२ को संयुक्त प्रान्तीय क्षत्रिय उपकारिणी सभा लखनऊ के अध्यक्ष चुने गये।

गांधीजी की अहिंसात्मक नीति से मेल न खा सकने के कारण आपका झुकाव हिन्दू महासभा व आर्य समाज की ओर होगया।

सम्वत् १९८८ में काश्मीर के मुसलमानों ने पाकिस्तान योजना के मूलभूत आधार पर काश्मीर के हिन्दू राज्य के खिलाफ बड़े पैमाने पर आन्दोलन उठाया। सारे भारत से मुसलमानों के जत्थे इस विषमय आन्दोलन को प्रोत्साहन देने के लिये गये। तब हिन्दू राष्ट्रीयता के सच्चे उपासक राव गोपालसिंहजी राजपूतों की मान मर्यादा रखने के लिये काश्मीर गये। आप उस समय करीब ६० वर्ष के थे, मगर आप केसरिया बाना पहन कर कर्त्तव्य पथ पर अग्रसर हुए। आपने खरवा से ३२ सैनिकों को लेकर लाहोर की ओर प्रस्थान किया। आपके साथियो ने प्रतिज्ञा की कि वे धारा-तीर्थ में स्नान करके काश्मीर में अपनी आहुति देकर "हिन्दू पड़े सौ हद' की कहावत को चरितार्थ करेंगे।

आपके लाहौर पहुँचने पर पंजाब सरकार ने काश्मीर में खून खराबी होने के अन्देशे से आप पर काश्मीर जाने की पाबन्दी

लगादी। पंजाब गवर्नर स्वयं आपसे मिलने आये व आपसे लाहौर ठहरने की प्रार्थना की। आप लाहौर रुक गये। वहां के हिन्दू, आर्य समाजी, सिक्ख जनता ने आपका विराट स्वागत किया। आपके सभापतित्व में हिन्दू सिक्ख एकता सम्मेलन हुआ। राजस्थान की इस महान विभूति ने काश्मीर के कार्य को सुचारु रूप से चलाने के लिए पंजाब के तीन सुप्रसिद्ध नेता भाई परमानन्द, डा० गोकुलचन्द नारंग व मास्टर तारासिंह की एक कार्य कारिणी बनाई।

जोधपुर के वर्तमान महाराजा श्री हनुमन्तसिंह ने सेंदड़े के विशाल रावत राजपूत सम्मेलन में आपको सर्व प्रथम श्रद्धांजलि समर्पित की थी।

श्री रावसाहब के लिये अनेक व्यक्तियों के विचार
(जो कि उन्होंने पत्रों में प्रगट किये हैं)

ठाकुर नरेन्द्रपालसिंह, जोबनेर, भूतपूर्व शिक्षामंत्री, जयपुर।
राव गोपालसिंहजी के स्वर्गवास पर:—

गीता-मृत उपदेश, विषम समय अवतार बन।
नाक सिधात नरेश, चित आवे गोपाल धन॥

(राव साहब का सोटो)

तव चरण चित्त, जातिहित, उर साहस असि हाथ,
क्षात्र-धर्म, मत भक्ति पथ, अटल देहु यदु नाथ,

महाराज चतरसिंह करजाली

खंला पर खारो सदा, पुखत धरम री पाल ।
रत्नाकर तू राठवड़, गुण सागर गोपाल ॥

नरेन्द्रसिंह

गढ़ गाहण गोपाल, सक्तावत जोधो सबल ।
धन्व धरारी ढ़ाल, दीठो नहीं दूजो धरा ॥

बारठ शंकरदान

पाट ज़ोधपुर पाटवी, परियां वृद्ध रिछपाल ।
भाग बलि म्हे भेटियो, पृथ्वीनाथ गोपाल ॥

केशरीसिंहजी बारठ

महा-राष्ट्र मे बाल जिमि, पांचाल में लाल ।
राजत राजस्थान में, गौरव मय गोपाल ॥

— श्री अर्जुनलालजी सेठी के लिए पुनः —

१६२० मे ६ वर्षों के बन्दी जीवन के बाद जब श्री सेठीजी मुक्त होकर पूना स्टेशन होते हुए बम्बई जा रहे थे उस समय पूना स्टेशन पर भगवान तिलक द्वारा उनका अभूतपूर्व स्वागत समारोह किया गया और भगवान तिलक इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अपने गले का रेशमी दुपट्टा श्री सेठीजी के गले मे डाल दिया ।

सन् १६२५ मे कानपुर कांग्रेस के अवसर पर अजमेर के डेलीगेटों के प्रवेश पत्र रद्द करने पर जो झगड़ा मचा उसमें सेठीजी स्वयं सेवकों के द्वारा घायल हुए । महात्मा गांधीजी को मालुम होने

पर वे उनकी कुटिया पर नेताओं के साथ गये। उस वक्त का दृश्य कुछ महाभारत काल की याद दिलाता है। भीष्मपितामह की तरह सेठीजी बीच में शर सैय्या पर सोये हुये थे उनके चारों ओर पूज्य गांधीजी, पं० मोतीलाल नेहरू, लाला लाजपतराय, जवाहरलाल नेहरू, सरोजनी नायडू, मौलाना मोहम्मदअली और शौकतअली आदि राष्ट्र के नेता घेरे हुए थे। उस वक्त गांधीजी ने जो शब्द कहे उनका भावार्थ यह है:—

"मुझे आपके चोट लगने का भारी दुःख है उसके प्रायश्चित्त रूप में उपवास करना चाहता हुँ।" सेठीजी ने गांधीजी से प्रार्थना करके उनसे उपवास न करने का आग्रह किया उसी अवसर पर गांधीजी ने यह स्वीकार किया कि—"आप मेरे धर्मशास्त्र में गुरु तुल्य है।"

एक समय मिश्र विश्वविद्यालय के एक प्रोफेसर अजमेर में इस्लामी जगत के सुप्रसिद्ध अलिमफाजिल मौलाना मुइनुद्दीन से मिलने आये तो मौलाना साहब ने उनकी भेंट सेठीजी से कराई तब उन्होंने कहा—एसे दिग्गज विद्वान् (जिनीयस) की मिश्र विद्यालय को आवश्यकता है।

सन् १९२० में देश बंन्धु सी० आर० दास ने सेठीजी से कहा बताते है कि "आपके जन्म का राजस्थान उपयुक्त स्थान नहीं है और आप बंगाल में जन्म लेते तो देखते बंगाल आपका कितना मान करता है"

सन् १९२० में नागपुर में एक नेताओं की सभा हो रही थी सेठीजी के वहां पहुँचने पर डा० मुंजे, श्री अभ्यङ्कर, केलकर आदि

नेता एक दम खड़े हुये और बोले—"अब हमारे गुरु आगये हैं इनके सामने हम भाषण करने में अयोग्य हैं।"

वर्तमान के दिग्गज साहित्यिक और रचनात्मक कार्यकर्ता महात्मा श्री भगवानदीनजी और सुविख्यात "भारत में अंग्रेजी राज्य" के माननीय लेखक श्री पं. सुन्दरलालजी ने उन्हे इन शब्दो मे स्मरण किया है:—

"हम उन्हें देश की महान् से महान् आत्माओ मे से एक गिनते है जिनकी लगन, जिनका त्याग, जिनकी तपस्या और जिनके बलिदान की बदोलत ही देश को आज यह दिन देखना नसीब हुआ। उनकी विद्वत्ता और चरित्र दोनों चोटी के थे।"

श्री अर्जुनलाल जी सेठी के लिये हरिभाऊजी उपाध्याय के विचार

(सन् १९५० ई० अगस्त के "जीवन साहित्य" के पेज नं० ३५१ से)

इसी यात्रा के दिनो मे अजमेर के एक मित्र के द्वारा स्वर्गीय सेठीजी ने बापू से कहलवाया या शायद उन मित्र ने ही अपनी तरफ से प्रस्ताव रखा कि बापू सेठीजी के घर मिलने जावें। सेठीजी अपने ढंग से स्वतन्त्र व्यक्ति थे। बापू के प्रति श्रद्धा भी थी। और उनसे लड़ भी पड़ते थे। कानपुर कांग्रेस मे उन्होंने बापूजी को बहुत खरी खोटी सुनाई थी और बापू शान्त चित्त से सब सुनते रहे। उन दिनो सेठीजी के दिल का सारा मलाल धुल जाय, बापू के प्रति फिर श्रद्धा भक्ति का प्रवाह उनके मन मे कामो मे लगने लगे। बापू ने मुझ से पूछा—"क्यो तुम्हारी क्या राय है?"

"हां, बापू जाने में तो कोई हर्ज नहीं है परन्तु मुझे यह विश्वास नहीं होता कि इससे सेठीजी की वृत्ति में कोई खास फर्क पड़ जाय। आप जाना चाहें तो अवश्य जायें।"

"तो तुम साथ चलोगे न" उन दिनों सेठीजी मुझ से खास तौर पर नाराज थे। इसलिये बापू ने पूछा।

'क्यो नहीं? सेठीजी को मैं अपना बुजुर्ग मानता हूं, हालांकि वे मुझसे नाराज हैं। आपको शायद मालूम नहीं है कि सेठीजी जब वेलोर जेल से छूटकर इन्दौर आये थे, तो मैं उन लोगों में से था, जो उनकी जय के नारे लगाते थे; और एक देवता की तरह भक्ति-भाव से उनके चरणों पर अपना मस्तक रखकर अपने को कृतार्थ मानते थे। आज मुझे दुःख है कि वह स्थिति इतनी बदल गई।"

"तो जाना ही ठीक है, तुम जैसा करते हो वैसा ही नतीजा निकले—तो भी हमें शुभ कार्य करते हुए हिचकना न चाहिए। तात्कालिक परिणाम अच्छा या हमारा मनोवाञ्छित न निकले तो भी शुभ कार्य व शुभ भाव का जो परिणाम निकलेगा वह अच्छा ही होगा। बुरा हरगिज नहीं हो सकता। अतः जाने में अच्छे परिणाम की आशा तो रखनी ही चाहिए।"

सेठीजी तो बापूजी को अपने घर में पाकर गद्गद् हो गये, हम लोग लोग भी आनन्द विभोर हो उठे। वह पुण्य स्मृति आज भी मुझे गद्गद् कर देती है।

—() आजादी के दीवाने ()—

— सेठ घीसूलालजी जाजोदिया —

सेठ घीसूलालजी जाजोदिया

"जिन नये लोगो से ब्यावर मे परिचय हुआ, उन मे सेठ घीसूलालजी जाजोदिया का मुझ पर सब से अधिक प्रभाव पड़ा। वे थके हुए कुछ बूढे से थे, उन्हें ब्यावर की उस मजदूर हड़ताल की एक जीती जागती स्मृति समझनी चाहिये, जिसमें उन्होने एक प्रकार से अपने सर्वस्व की बाजी लगादी थी। जब वे मंच पर बोलने को आये, तब भी हृदय से आग की लपटें सी निकलती प्रतीत होती थी।"

—सत्यदेव विद्यालंकार (हिन्दुस्थान-२७-२-३८ ई०)

घीसूलालजी जाजोदिया के नाम के साथ 'सेठ' जुड़ा देखकर उन के बारे में शंका होना स्वाभाविक है। सेठ शब्द के साथ जो वैभव सम्पन्नता तथा ऐश्वर्य छिपा हुआ है, वह हमें उनके बारे में भ्रमपूर्ण धारणा बनाने के लिए विवश कर सकता है; किन्तु वे क्या थे और वे आज क्या हैं इसे पूर्ण रूप से जानने के लिए उनके समस्त जीवन का सिंहावलोकन करना आवश्यक है। सेठ घीसूलालजी के वर्त्तमान जीवन से परिचित जनता यह पूर्ण रूप से जानती है कि वे कल क्या थे। अपना सर्वस्व शोषित व दुःखी मजदूरों के लिए अर्पण कर आज जब वे आर्थिक कठिनाइयों से गुजर रहे हैं तब भी वे 'सेठ' ही हैं और उनका प्रत्येक शब्द आज भी मज़दूरो के लिए

प्रेरणा बन जाता है। उनके जीवन तथा कार्यों का उल्लेख शायद इतिहासकारों की दृष्टि को आकर्षित न कर सके; किन्तु वे लोग जिनके लिए उन्होंने एक दिन अपने प्राणो तक की बाजी लगादी थी उन्हे कभी नहीं भूल सकेंगे। उनके यश की गाथा, लोक गीतो के रूप में मजदूरों की पैतृक सम्पति बन चुकी है।

सेठजी का जन्म, राजस्थान मे राजनीति के जन्मदाता स्व० श्री अर्जुनलालजी सेठी व स्व० सेठ जमनालालजी बजाज की जन्म भूमि जयपुर राज्यान्तर्गत, लक्ष्मणगढ (सीकर) मे सेठ महालीरामजी के घर मिति आसाढ़ शुक्ला ५ शुक्रवार सम्वत् १९४१ ता० २७-६-१८८४ को हुआ था पिता महालीरामजी थोड़ी ही अवस्था में नैत्र-हीन हो गये जिससे जीविका उपार्जन मे भी अत्यन्त कठिनाई का सामना करना पड़ता था। सेठ घीसूलालजी के भाई रामदत्तजी ब्यावर मे सेठ कनीरामजी के यहां गोद आगये थे तथा करीब ९ वर्ष की आयु में सेठजी भी उन्हीं के पास ब्यावर आगये व महाजनी की शिक्षा प्राप्त की। आपने यहीं साधारण अंग्रेजी का भी ज्ञान प्राप्त कर लिया। १५ वर्ष की आयु में वे ब्यावर से जावरा चले गये और वहां नौकरी करली। जावरा (मध्यभारत में रहते हुए ही आपका विवाह, लक्ष्मणगढ के सेठ रामनारायणजी की सुपुत्री कस्तूर बाई के साथ होगया। विवाह के समय आपकी आयु २१ वर्ष की थी जावरा में भी आपको सन्तोष न हो सका तथा उपयुक्त क्षेत्र खोजने के विचार से आप सम्वत् १९६९ मे बम्बई जा पहुँचे। बम्बई मे आपने सट्टे का व्यापार प्रारम्भ किया। सम्वत् १९७० में आप पुन ब्यावर आगये और यहा भी सट्टा करने लगे। आपने इस व्यापार मे पर्याप्त दक्षता प्राप्त करली थी तथा अपनी योग्यता से सन् १९२० मे आप लाखों की सम्पत्ति के स्वामी हो गये थे।

सेठजी ने अपनी कार्य कुशलता तथा प्रखर व्यापारिक योग्यता से धन उपार्जन किया किन्तु अपने प्रारम्भिक जीवन की वास्तविकताओं को न भुला सके। बचपन से ही निर्धनता की यातनाओं से गुजरते हुए उन्होंने जीवन की यथार्थता का अनुभव किया। फलस्वरूप वे शोषित मजदूरों के प्रति पूंजीपतियों के दुर्व्यवहार को आजन्म न भुला सके तथा यही कारण है कि सेठजी के हृदय में सदैव पीड़ित मानवता के प्रति सद्भावना की ज्योति प्रकाशित होती रही है।

सन् १६१६ मे अजमेर से, देशभक्त कुंवर चांदकरण शारदा व मिर्जा अब्दुल कादिर बेग ब्यावर आये। तभी सेठजी ने बाबू रामकरणजी व श्री बद्रीदत्तजी हेडा और श्री जमालुद्दीन मखमूर के सहयोग से ब्यावर में कांग्रेस की स्थापना कर यहां राष्ट्रीय जीवन का प्रारम्भ किया। गत ३० वर्षों से आप ब्यावर के राजनैतिक जीवन के प्राण रहे हैं। सन् १६२० में स्वामी कुमारानन्द ब्यावर आये और आपने सेठजी को पूर्ण रूप से सहयोग दिया। उन दिनों ब्यावर में राष्ट्रीयता की त्रिमूर्ति, (सेठ दामोदरदास राठी, सेठ घीसूलाल जाजोदिया, व स्वामी कुमारानन्द) जनता के हृदय में घर कर चुकी थी। सेठजी के राजनैतिक जीवन का यह प्रारम्भ था जिसे वे आज तक उसी उत्साह से निभाते रहे हैं।

सन् १६२० में सेठजी प्रथमबार नागपुर कांग्रेस मे सम्मिलित हुए। आपकी प्रवृत्ति सदैव से ही मजदूरों की सेवा की ओर रही है। जब भी मजदूरों पर संकट आया, सदैव वे आगे ही रहे हैं। सन् १६२१ में ब्यावर के मजदूरों की हड़ताल का, आपने श्री मणिलाल जी कोठारी व श्री नाथूलालजी घीया के सहयोग से कुशलता पूर्वक

संचालन किया। इस हड़ताल के लिए आपने लगभग २५ पच्चीस हजार रुपये दिये। उसी वर्ष जावरा के नवाव ने वहां की जनता पर ५७ कलमें (५७ प्रकार के टैक्स) लगाये जिसकी आय लगभग ८ लाख रुपया वार्षिक थी। सेठजी ने इनका विरोध किया तथा आन्दोलन किया। फलस्वरूप नवाव ने आपको जावरा से निर्वासित कर दिया, किन्तु ५७ में से ४६ कलमें नवाव को रद्द करनी पड़ी। जावरा से निर्वासित होकर वे अहमदाबाद कांग्रेस मे जा पहुँचे। सन् १६२१ के कांग्रेस आन्दोलन मे भी सेठजी ने पर्याप्त आर्थिक सहायता दी।

उन दिनों व्यावर राजनैतिक हलचलों मे देश से पीछे नहीं था। जनता में अथाह जोश था। हड़तालों व सभाओं का तांता सा लगा रहता था। उन्हीं दिनों आपने स्व० सेठ अर्जुनलाल सेठी की टोपी ग्यारह सौ रुपये मे खरीदी। मई सन् १६२३ में, आपने नागपुर झंडा सत्याग्रह में, जो सेठ जमनालाल वजाज के नेतृत्व मे चल रहा था, भाग लिया। आपको एक वर्ष का कारावास हुआ। जेल से छूटने पर आपका जनता ने शानदार स्वागत किया और आप म्युनिसिपल कमेटी के सदस्य निर्वाचित हुए। चुनाव मे आप सर्वप्रथम रहे, कमेटी में रहते हुए भी आपने सदैव जनता के हितो का ध्यान रखा। वाटर वर्क्स उपसमिति के संयोजक के रूप में आपने निष्पक्ष रूप से नागरिकों के दुःखों को दूर किया। ता० २८-२-२६ को आपने अपने फूफा सेठ जमनालाल वजाज की सुपुत्री कमलाबाई के विवाह में सम्मलित होने साबरमती आश्रम गये। इस अवसर पर देश के बड़े बड़े नेता आमंत्रित किये गये थे जिनसे आपका सम्पर्क हुआ। विवाह में वर वधू से स्वयं महात्मा गांधी ने प्रतिज्ञा करवाई।

सन् १६३० का वह चिरस्मरणीय दिवस २६ जनवरी जिस दिन सर्व प्रथम पूर्ण राष्ट्रीय स्वतन्त्रता की प्रतिज्ञा की गई थी।

उसकी स्मृति जो अब भी देश-वासियों में प्रेरणा भरने के लिए पर्याप्त है। उसके बाद ही देश में राष्ट्रीयता की लहर दौड़ गई थी। उस समय ब्यावर कांग्रेस के अध्यक्ष सेठ घीसूलालजी जाजोदिया थे और मन्त्री थे जमालुद्दीन मखमूर। आपके नेतृत्व में स्वतन्त्रता दिवस अत्यन्त प्रभावोत्पादक रूप से मनाया गया। समस्त नगर उस दिन राष्ट्रीय वातावरण मे डूबा हुआ था। इसके बाद १६३० के आन्दोलन का संचालन भी आपके नेतृत्व मे हुआ। राजस्थान में सर्व प्रथम ब्यावर मे नमक कानून तोड़ा गया तथा ठाकुर रामदीनसिंह की प्रान्त की सबसे प्रथम गिरफ्तारी भी ब्यावर मे ही हुई। आपके नेतृत्व ने ब्यावर की जनता मे प्राण फूंक दिये थे, उसमें उत्साह की अभूतपूर्व लहर दौड़ रही थी, जनता जोश में पागल हो उठी थी। राष्ट्रीय यज्ञ मे आहुति प्रदान करने के लिये लोगों में परस्पर बाजी लगी हुई थी। आये दिन नवीन कार्यक्रम, नई सभायें, जुलूस व हड़तालें होती थी मानो सेठ घीसूलाल जाजोदिया ने नगर पर कोई जादू कर दिया हो। महादेवजी की छत्री पर आयोजित एक सभा में सेठजी ने नमक कानून को तोड़कर हाथ से बनाये नमक की १ तोले की पुड़िया ५०१) में खरीदी। कानून (?) की यह उपेक्षा तत्कालीन सरकार को कैसे सह्य हो सकती थी। निदान मई १६३० मे आप गिरफ्तार कर लिये गये। वह समय आपकी परीक्षा का था। एक ओर कर्त्तव्य था तथा दूसरी ओर समस्त जीवन का ऐश्वर्य। आपने लाखो मन गुड़ का सौदा कर रक्खा था तथा गिरफ्तारी के कारण आपको २ लाख रुपये की क्षति उठानी पड़ी थी। किन्तु आर्थिक हानि के लिए यदि आप कर्त्तव्य को भुला देते तो आज कंगाल बन जाने पर भी उन्हे 'सेठ' कौन कहता। इसीलिए तो आज भी जनता के लिये वे उतने ही बड़े सेठ हैं जितने वे उस दिन थे। देश के इतिहास मे आज दानवीरों की कमी नहीं; किन्तु

करोड़ों रुपयो का दान देकर भी जो आज तक करोड़ों के स्वामी बने, मानव की आवश्यकताओं पर अपना प्रभुत्व जमाये बैठे हैं उनके लिये जनता के हृदय में कितनी श्रद्धा है इसे कौन नही जानता किन्तु अपना सब कुछ खोकर और कभी पाने की इच्छा न करके ही तो सेठ घीसूलालजी जाजोदिया ने जनता के हृदय को जीत लिया है सेठजी ने सदैव धन को तुच्छ समझा है। उनके मतानुसार धन द्वारा निर्धनों की सेवा करना उसका सदुपयोग है। धन के मोह ने उन्हे कभी आकर्षित नहीं किया अन्यथा वे कभी जावरा के नवाब द्वारा भेजी हुई १ लाख रुपये की भेंट को अस्वीकार नही करते जो उसने सेठजी के पास उन्हे निर्वासित करने से पूर्व आन्दोलन को बन्द करने की कीमत के रूप मे भेजी थी किन्तु सेठजी ने उसे ठुकरा कर अपनी निर्भीकता का परिचय दिया।

अक्टूबर सन् १९३० में आप जेल से रिहा हुए। ब्यावर में आपका भव्य स्वागत किया गया। उतना विराट जुलूस अनेक वर्षों बाद केवल पं० जवाहरलाल नेहरू के स्वागत में ही निकला था। श्री सेठ साहब के आदेशानुसार उस वर्ष की दीवाली पर नगर मे राष्ट्रीय दीवाली का आयोजन किया गया तथा प्रत्येक घर व दुकानें राष्ट्रीय झंडो से सजाई गई। तत्कालीन अंग्रेजी कमिश्नर गिब्सन (जो महात्मा गांधी के राजकोट के अनसन के समय वहां का रेजिडेन्ट था) भी वह दृश्य देख कर दंग रह गया। सितम्बर १९३१ में तेजा मेले के अवसर पर कम्पनीबाग मे प्रथम राजपूताना किसान कान्फ्रेन्स श्री अर्जुनलाल सेठी की अध्यक्षता में हुई। उसके सेठजी स्वागताध्यक्ष थे। नवम्बर १९३१ मे आप माता कस्तूरबा गांधी की अध्यक्षता में होने वाली प्रान्तीय राजनैतिक परिषद् पुष्कर में, ब्यावर के अनेकों डेलीगेटों के साथ सम्मिलित हुए

वहां आपने कस्तुरबा गांधी व स्वामी कुमारानन्द के सहयोग से ब्यावर की तत्कालीन गन्दी पार्टीबन्दी को समाप्त किया। कस्तूरबा के आदेश पर आपने जिला कांग्रेस की अध्यक्षता स्वीकार की व जयनारायण व्यास को अपना मन्त्री चुना। २८ नवम्बर सन् १९३१ को कस्तूरबा ब्यावर पधारीं तथा आपका आतिथ्य स्वीकार किया।

उसी वर्ष म्यूनिसिपल कमेटी मे बाबू रामकरण की मृत्यु से हुए रिक्त स्थान के चुनाव में आपका मेहता चिमनसिंहजी से कड़ा मुकाबला हुआ। मेहताजी की ओर समस्त पूंजीपतियो व सरकार का साथ था तथा सेठजी को जनता का बल। जनता विजयी हुई और सेठजी उस स्थान के लिए चुने गये।

२८ दिसम्बर १९३१ को आप ब्यावर के प्रतिनिधी के रूप में गांधीजी से भेंट करने बम्बई गये। गांधीजी उस समय गोलमेज सभा में भाग लेकर लन्दन से लौटे थे वहां आपने गांधीजी से तत्कालीन परिस्थितियों पर विचार विनिमय किया। बम्बई से लौटने के पश्चात आपको ब्यावर से ४ जनवरी १९३२ को १४४ धारा तोड कर सभा करने के अपराध मे गिरफ्तार कर लिया गया। उस समय स्वामी कुमारानन्द, श्री जयनारायण व्यास व हिन्दुस्थानी सेवादल के प्रधान ठाकुर भीकसिंह भी आपके साथ ही गिरफ्तार कर लिए गये। आपको १ वर्ष के कठोर कारावास का दण्ड दिया गया। आपकी दुकान के ऊपर वाले कमरे में जहां जिला कांग्रेस का दफ्तर था (जहां अब हिन्दी साहित्य समिति, श्यामजी कृष्ण वर्मा पुस्तकालय व अर्जुनलाल सेठी वाचनालय है) पुलिस का पहरा रहता था तथा यह क्रम सन् १९३३ तक रहा।

सन् १६३३ में ब्यावर के मिल मजदूरों की लम्बी हड़ताल का सेठजी ने संचालन किया तथा मजदूरो को आर्थिक सहायता प्रदान कर उनका धैर्य बढ़ाया। इसके १ वर्ष पश्चात ही जावरा के किसानो पर विपत्ति आई। गन्ने की दर कम करदी जाने से किसानों को हानि होने लगी। किसानों के इस ओर किये प्रयत्न विफल हुए किन्तु तभी आपने पुन नवाब व उसकी सत्ता को ललकारा व उनके विरोध मे एक आन्दोलन खड़ा कर दिया। किसानों को बल प्राप्त हुआ और उन्होंने सेठजी के नेतृत्व में उस आन्दोलन को सफल बनाया। गन्ने की दरें बढ़ानी पडी किन्तु आपको पुन वहां से निर्वासित कर दिया गया। उसी वर्ष अक्टूबर माह में आप राजेन्द्र-बाबू की अध्यक्षता मे होने वाली बम्बई कांग्रेस में सम्मिलित हुए।

सेठजी की वास्तविक शक्ति व साहस का पता उन लोगों को ही लग सकता है जिन्हें सन् १६३६ में ब्यावर के मजदूरो द्वारा की गई पूर्ण हडताल के बारे में जानकारी है। उस एतिहासिक हडताल को सफल बनाने के लिए इस महान आत्मा ने अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया, यहां तक कि अपने प्राणों का मोह भी त्याग दिया। सन् १६३६ में मजदूरों की दशा बिगड़ी हुई थी। हर प्रकार से उन पर अत्याचार हो रहे थे। निरन्तर आघातों को सहते सहते मजदूरों के मस्तिष्क में अशान्ति व विद्रोह की चिनगारियां उत्पन्न हो चुकी थीं, और एक दिन पूर्ण हडताल के रूप में इस चिनगारी ने फैल कर ज्वाला का रूप धारण कर लिया। हडताल के पश्चात मजदूरो को सदैव आर्थिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है तथा भूख से विवश होकर ही वे झुकने को विवश होते हैं। मिलों के मालिक यही सोचे हुए थे। उन्हे यह नहीं ज्ञात था कि एक महान आत्मा अपना सर्वस्व लुटा कर भी उन्हें सफलता दिलवाने के लिए

दृढ प्रतिज्ञ है। ३½ माह तक लगातार हडताल चली और इस बीच हर प्रकार की सहायता कर आपने मजदूरों के साहस की ज्योति का प्रज्ज्वलित रखा। लगभग ५००० मजदूर हडताल पर थे इससे अनुमान लगाया जा सकता है कि उस समय उन्हें कितना खर्च उठाना पडा था। एक भी मजदूर किसी दिन भूखा नहीं रहा। श्री गुलजारीलाल नन्दा भी इस अवसर पर आये। समझौता बोर्ड बैठा तथा आपसे दस्तखत करवा लिए गये। यहां भी मालिकों ने चाल चली। आप छल कपट से सदैव दूर रहे हैं तथा अंग्रेजी की अधिक योग्यता न होने के कारण आप अंग्रेजी भाषा भली प्रकार नही समझ सकते। आपको किसी प्रकार की शंका न थी अतएव दस्तखत कर दिये किन्तु शीघ्र ही आपको इस भूल का पता चल गया। मजदूरों के लिए तथा न्याय के लिए मर मिटने वाला यह विद्रोही सैनिक इसे कैसे स्वीकार कर लेता कि उसी के हाथों शोषित मजदूरों को क्षति उठानी पड़े। उन्हें हार्दिक चोट पहुँची किन्तु पराजय स्वीकार करना इन्होंने नहीं सीखा था। आपने आमरण अनशन प्रारम्भ कर दिया। समस्त नगर हाहाकार कर उठा। मजदूर किसी भी मूल्य पर इनके प्राणों की रक्षा करने को प्रस्तुत थे किन्तु सेठजी विचलित न हुए। पांचवें दिन अवस्था नाजुक हो गई और जनता अनिष्ट की आशंका से ही विचलित हो उठी। मृत्यु और जीवन का युद्ध कितना भयानक था हजारों की संख्या में जनता द्वार पर खड़ी उनके प्राणों की रक्षा कर रही थी और वे प्राणों का मोह त्याग कर्त्तव्य अथवा जीवन में से कर्त्तव्य को चुन निश्चेष्ट—, अविचलित पड़े थे। किन्तु जनता की मंगल कामना की उपेक्षा शायद स्वयं ब्रह्मा भी नहीं कर सकते। ठीक उसी अवसर पर जमनालाल बजाज आये तथा आपने दोनों दलों में समझौता करवा दिया। सेठजी के प्राण बच गये अन्यथा उस समय क्या

स्थिति होती इसे कौन कह सकता है। इस अनशन में एक स्मरणीय बात यह भी है कि जिस दिन से सेठजी ने अनशन प्रारम्भ किया ठीक उसी दिन से आपकी गाय ने भी खाना पीना त्याग दिया। व्यावर की यह हड़ताल कभी विस्मृत नहीं की जा सकती। आज तक सेठजी के शब्दों में वही बल है और मजदूरों के लिए उनका कथन सदैव मान्य रहा है।

दिसम्बर सन् १९३७ में ब्यावर में, राजपूताना मध्यभारत विद्यार्थी कान्फ्रेन्स का प्रथम अधिवेशन श्री के० एफ० नैरीमैन की अध्यक्षता में हुआ जिस में सेठजी ने पूर्ण सहयोग दिया। जनवरी १९३८ में प्रान्तीय राजनैतिक परिषद को सफल बनाने में भी आप ने पूर्ण सहयोग दिया। यह परिषद् स्व० श्री भूला भाई देसाई की अध्यक्षता में हुई थी परिषद् में तीन प्रमुख व्यक्तियों के नाम पर तीन प्रमुख द्वार बनाये गये। नूरी, दामोदर व जाजोदिया द्वार, आपकी सेवाओं के सम्मान में ही निर्मित किया गया। नैरीमैन व भूलाभाई देसाई ने आपका आतिथ्य स्वीकार किया। सन् १९३८ में जावरा नवाब ने आपको पुनः तीसरी बार, गन्ने की कीमतों के लिए आन्दोलन करने के कारण जावरा से निर्वासित किया। सन १९३९ में हुई, त्रिपुरी कांग्रेस में आपने ब्यावर के प्रतिनिधी के रूप में भाग लिया तथा उसी वर्ष आप राजपूताना मध्यभारत प्रान्तीय कांग्रेस के उपाध्यक्ष निर्वाचित हुए। जनवरी १९४१ का स्वतन्त्रता दिवस आपके नेतृत्व में मनाया गया। जनवरी १९४२ मे जब श्री ठाकुर बप्पा व श्रीमती रामेश्वरी नेहरू ब्यावर आये तब उनके कार्य-क्रमों को सफल बनाने का श्रेय आपको ही है। उस समय आप नगर कांग्रेस के अध्यक्ष व श्री मुकुटजी कार्यवाहक अध्यक्ष थे। १ अगस्त १९४२ को तिलक जयन्ति आपके सभापतित्व में मनाई गई इसी

सभा में गांधीजी की "करो या मरो" (do or die) की नीति की भूमिका नागरिकों के सम्मुख रखी गई। ८ अगस्त १६४२ को देश में क्रान्ति का सन्देश व्याप्त हुआ। सेठजी भी उस एतिहासिक मीटिंग में, बम्बई जाकर सम्मिलित हुए।

सेठ घीसूलालजी जाजोदिया हिन्दू मुस्लिम एकयता के कट्टर समर्थक हैं तथा आप सदैव दोनों धर्मावलम्बियों को आपसी मत भेद दूर रखने का उपदेश देते रहे हैं। जुलाई १६३८ में ब्यावर में साम्प्रदायिक अशान्ति उत्पन्न हो उठी तथा दोनों सम्प्रदायों में तनाव बढ गया। आपने उस समय अहिन्दुओं की रक्षा के लिये प्राणों को संकट में डाल दिया तथा धार्मिकता में अन्धे बने लोगों द्वारा पत्थर व लकड़ियों के प्रहार सहे। आपके भीषण चोट आई। इस अवसर पर आपके कार्य की सराहना करते हुए प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के मन्त्री, श्री विश्वम्भरनाथ भार्गव ने ७ अगस्त ४८ को लिखा:—

"मैंने बड़े गर्व से सुना है कि आपने अपने मुस्लिम भाई की जान की रक्षा करने के लिए अपनी जान जोखम में डाल दी व धर्मान्ध पागलों के लाठी, घूंसे आदि के शिकार हुए और उससे आपको काफी चोट आई। मेरी ओर स आपको बधाई अभिनन्दन है। आपने हमारे प्रान्त में एक मिसाल रखी है जो अनुकरणीय है।"

१५ अगस्त १६४६ को स्वतन्त्रता दिवस के उपलक्ष मे, नगर कांग्रेस कमेटी के दफ्तर के विशाल जन समूह के समक्ष आपने एक राष्ट्रपताका फहराई। २६ जनवरी १६५० को जावरा में हाथी के हौदे पर आपका विशाल जुलूस निकाला गया व गणतन्त्र के उपलक्ष में जावरा करमानी चौक में विशाल जन समूह के समक्ष आपने राष्ट्रीय ध्वजा लहराई।

सेठजी पूज्य महात्मा गांधी के सत्य, अहिंसा, हिन्दू मुस्लिम एकता, गौ सेवा व हरिजन उद्धार के प्रत्यक्ष प्रतीक हैं। आपने हरिजन उद्धार के लिए सदैव प्रयत्न किये हैं। आपका स्वभाव अत्यन्त सरल है तथा उनकी सरलता जनता को आकृष्ट कर लेती है। किसानों व मजदूरों के आप प्राण ही हैं। सेठजी ने अपने जीवन में सदैव राष्ट्रीय तत्वों को हर प्रकार से प्रोत्साहित किया है। स्वामी कुमारानन्द आपके प्रसंसक रहे हैं इसी कारण स्वामीजी के पास आने वाले अनेक क्रान्तिकारियों ने सेठजी से सदैव सहायता प्राप्त की है यहां तक भी ज्ञात हुआ कि अमर शहीद चन्द्रशेखर आजाद जब अपनी गुप्त अवस्था में सरकार की नजरों से ओझल रहे उस समय सेठजी की बगीची में भी कुछ दिन कृषक के वेश में व्यतीत किये।

आपकी धार्मिक प्रवृत्ति भी अनुकरणीय है। ब्यावर से दो मील की दूरी पर स्थित माता जी की डूंगरी के कठिन मार्ग को सहस्रों रुपये लगा कर पेड़ियें बनाई और सुगम कर दिया।

अब आपका अधिक समय धार्मिक पुस्तकों के अध्ययन में ही व्यतीत होता है।

सेठजी की अवस्था इस समय ६६ वर्ष की है २० जुलाई १९५० को उनके जीवन का ६७ वा वर्ष प्रारम्भ होता है। हम विश्वास करते है कि प्रान्त का वह वयोवृद्ध नेता आने वाले वर्षों तक अपने ज्ञान के प्रकाश से हमारा मार्ग प्रदर्शित करने के लिए दीर्घजीवी होगा लेखक पर आपकी महती कृपा रही है तथा आपके चरणो में श्रद्धा के कुछ कण अर्पित करना भी वह अपना कर्त्तव्य समझता है।

जनता के इस महान प्रतिनिधी की स्मृति स्थायी रखने के

उद्देश्य से, २ अक्टूबर १९४८ ई० को आपका एक विशाल चित्र, सुभाष सदन व्यावर की ओर से, व्यावर म्युनिसिपल कमेटी को भेंट किया गया, जो कि उसी दिन नेहरु भवन में लगा दिया गया।

आपकी सेवाओं के उपलक्ष मे ता० २०-७-५० ई० को नेहरु भवन में रात्री को ८॥ बजे एक सभा करके प्रान्तीय कांग्रेस के प्रधान मंत्री व नगर कांग्रेस के प्रधान श्री बृजमोहनलालजी शर्मा वकील की अध्यक्षता में आपकी ६७ वी वर्ष गांठ मनाई गई। जिसमे निम्न लिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

"श्रीमान् सेठ घीसूलालजी जाजोदिया द्वारा विगत राष्ट्रीय आन्दोलनों से की गई महान् सेवाओं का श्रद्धा के साथ स्मरण करती हुई व्यावर के नागरिकों की यह सभा उनकी 'अड़सठवीं' वर्ष गांठ के अवसर पर उनका हृदय से अभिनन्दन करती है। तथा ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह सेठजी को दीर्घायु करे।"

— शान्ता बहन रानी वाला —

भारत को स्वतन्त्र कराने मे नारी जाति ने भी भारी हाथ बटाया है। श्रीमती एनीबीसेन्ट, सरोजनी देवी, कस्तूरबा गांधी, विजयलक्ष्मी पण्डित, कमला नेहरू, रामेश्वरी नेहरू, राजकुमारी अमृतकौर, कमला देवी चट्टोपाध्याय, श्रीमती सुचेता कृपलानी, अरुणा आसफअली, डा० लक्ष्मी बाई, श्रीमती जानकीदेवी बजाज आदि आदि महिलाओं ने तन, मन, धन से राष्ट्र की सेवा की है किन्तु शान्ता बहन रानी वाला एक ऐसी मौन तपस्विनी है, जिसको कि बहुत कम लोग जानते है।

शान्ता बहन रानी वाला व्यावर के सुप्रसिद्ध व्यवसायी स्व० सेठ चम्पालालजी रानी वाला के सुपुत्र स्वर्गीय सुआलालजी रानी वाला की धर्मपत्नि है। आपको बहुत छोटी आयु मे ही वैधव्य का दुःख उठाना पड़ा। मगर आपने धैर्य, साहस के साथ इस भीषण वज्रपात को सहा।

आपके सम्बन्ध में श्री प्रभुदयाल विद्यार्थी ने लिखा है:—

"आज हम एक ऐसी नारी के सम्बन्ध में कुछ शब्द लिखने जा रहे हैं, जो विलकुल आदर्शवादी है। सुख, वैभव की गोदी मे पली इच्छा करते ही प्रत्येक चीज पाने वाली, शान शौकत के साथ बम्बई की आलीशान कोठियों में रहने वाली, एक सेठ की लड़की शान्ता बहन रानीवाला। उन्हें क्या पता कि हमारी असंख्य बहने अन्धकार पूर्ण अज्ञान का जीवन व्यतीत कर रही हैं। पर उन्हे एक दिन, कहीं से कुछ प्रेरणा हुई कि गरीबो या बहनो की सेवा करनी चाहिए। इसीलिये स्व० सेठ जमनालालजी बजाज की प्रेरणा से उन्होने करीब तीन लाख रुपये बहनों की शिक्षा पर खर्च करने के लिये सौंप दिये। वर्धा के महिलाश्रम में उनके रहने और शिक्षा के लिए एक भव्य विद्या भवन तैयार करा दिया गया। उन्हीं के धन से आज हिन्दुस्थान के अनेको प्रान्तों की बहनें शिक्षा पा रही हैं, जहां से निकल कर वे स्वावलम्बी जीवन व्यतीत कर सकती है या गृह को अच्छे ढंग से चला सकती है।"

स्थानाभाव से हम अभी इतना ही परिचय दे रहे हैं। इनको विस्तृत जीवनी के लिये प्रतीक्षा कीजिए।
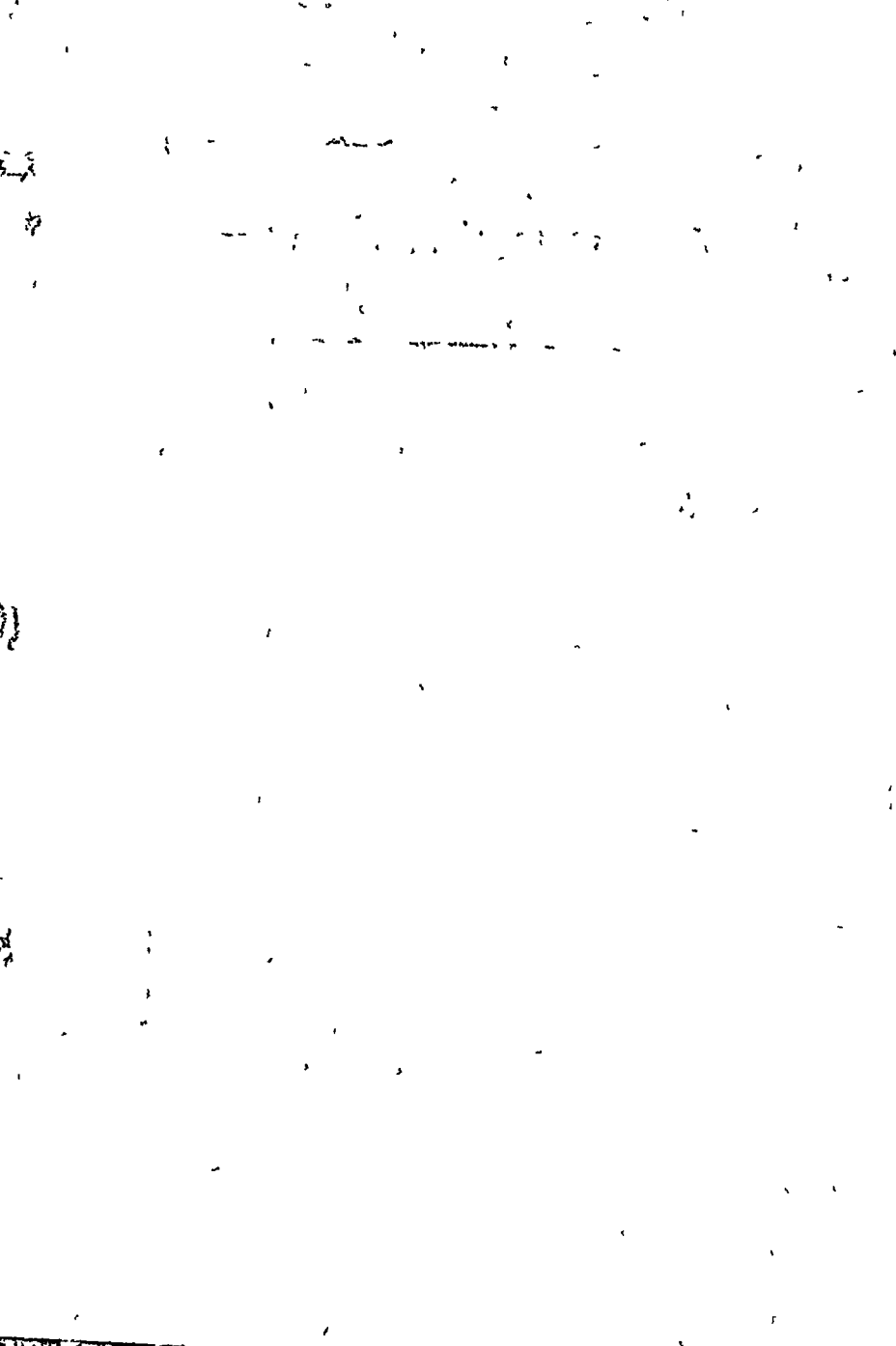
बिजोलिया सत्याग्रह संग्राम के सेनानीः—

श्री विजयसिंहजी पथिक

❀ जय-हिन्द ❀

[१]

— पथिकजी —

"मनुष्य-चरित्र के जितने उत्तम ज्ञाता महात्मा गांधी थे उतना शायद ही कोई दूसरा हो। Pathik is a soldier "पथिक एक सिपाही है" इन चार शब्दों में महात्माजी ने पथिकजी के सम्पूर्ण चरित्र का परिचय दे दिया था।"

—श्री बनारसीदास चतुर्वेदी

बिजौलिया सत्याग्रह के अमर सेनानायक, मरुभूमि राजस्थान की जनता में जीवन व जागृति का शंख फूंकने वाले, भारत में सर्व प्रथम बिजौलिया के किसानों के सामूहिक सत्याग्रह का सफलता-पूर्वक सचालन करने वाले श्री विजयसिंह पथिक श्री भारत माता के सपूतों में से एक प्रमुख है। सिर्फ २५ साल की आयु में आपके क्रान्तिकारी विचारों के कारण सन् १९१४ ई० मे आप सरकार द्वारा टाडगढ़ मे नजरबन्द कर दिये गये। आपके साथ खरवा के राष्ट्रवर स्व० श्री राव गोपालसिंहजी, खरवा के ठाकुर मोडसिंहजी व जयपुर के श्री सवाईसिंहजी भी वहीं नजरबन्द रखे गये थे। ब्रिटिश अधि-कारियों की आँखों में धूल झोंक कर पथिकजी ने जेल से भाग कर नाम बदल कर मेवाड़ के बिजौलिया जिले में किसानों का संगठन

किया। आपका असली नाम भूपसिंह है। गत ४० वर्षों से आप राष्ट्र की सेवा में संलग्न हैं तथा आपने भीषण यातनायें व अत्याचार सहे। आप किस कोटि के नर-रत्न हैं, यह तो आप राष्ट्रपिता गांधीजी के निम्नलिखित शब्दों में पढ़ें:—

'I can tell you something about Pathik. Pathik is a worker while other are talkers. Pathik is a soldier, brave, impetuous, but obstinate. He was Mahadev's infallible guide in Bijaulia and the remarkable thing is that the masses of Bijaulia have implicit confidence in him"

"मैं आपको पथिक के बारे में कुछ बतला सकता हूँ। पथिक काम करने वाला है, दूसरे सब बातूनी हैं। पथिक एक सिपाही आदमी है, बहादुर है, जोशीला और तेज मिजाज है लेकिन जिद्दी है। जब महादेव बिजौलिया गये तब पथिक उनके निर्भ्रान्त साथी थे। महत्वपूर्ण बात तो यह है कि बिजौलिया की जनता का उन पर पूरा पूरा विश्वास है।"

सन् १९२० या २१ में कलकत्ता में देशबन्धु सी० आर० दास के मकान पर महात्मा गांधीजी ने भारत-भक्त श्री सी० एफ० एण्ड्रूज को पथिकजी का परिचय देते हुये मुस्करा कर उपरोक्त शब्द कहे थे।

पथिकजी के बारे में अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं, उनकी विद्रोही आत्मा आज भी देशवासियों की सेवा के लिए सतत् प्रयत्नशील है तथा हम विश्वास करते हैं कि वे राष्ट्र निर्माण काल में सदैव हमारा पथ प्रदर्शन करेंगे।

———

श्री मुकुटबिहारीलाल भार्गव

—⊙⊙⊙—

"Wanted martyrs for the country and the community. Be firm to your convictions"*.

—दामोदरदास राठी (दिसम्बर १९१७)

राजस्थान प्रान्त देश का महत्वपूर्ण भाग है। इसका इतिहास सदैव स्फूर्ति दायक तथा उज्वल रहा है। जहां इस प्रान्त ने प्रातः स्मरणीय महाराणा प्रताप और वीरवर दुर्गादास जैसे स्वतन्त्रता की बलि वेदी पर सर्वस्व न्यौछावर करने वाले नर-रत्नों को जन्म दिया वहां अनेक ऐसी वीर नारियों को भी उत्पन्न किया जिन्होंने अपने सतित्व की रक्षा के हेतु प्राणों तक के मोह का त्याग किया। राजपूत युग के योद्धाओं और क्षत्राणियों के जौहर की गाथाएँ आज तक राजस्थानियों की जिह्वा पर परम्परा से चली आ रही हैं।

देश के राजनैतिक जागरण में भी इस प्रान्त ने प्रमुख भाग लिया है। राजनैतिक जीवन में समय २ समय पर नव चेतना की ज्योति जागृत करने का श्रेय इस प्रान्त के अनेक महान व्यक्तियों को रहा है। जब कि देश के अन्य भागों में शिथिलता का साम्राज्य छाया हुआ था और विदेशी सत्ता के भय से आतंकित इस देश के नवयुवक विमूढ़ से हो रहे थे, उस समय राजस्थान के अनेक महापुरुषों ने अपने जीवन के सुख साधनों को त्याग कर देश में नवजीवन का संचार किया तथा अनेक वीरों ने इस पवित्र भारत भूमि की दासता का अन्त करने के लिए अपने जीवन की महान आकांक्षाओं का भी अन्त कर दिया। और स्वतन्त्रता के पुनीत यज्ञ में

---

*देश और जाति पर प्राण न्यौछावर करने वालों की आवश्यकता है। अपने विश्वासों पर दृढ रहो।

अपने प्राणों तक को उत्सर्ग कर दिया।

राजस्थान के बलिदानों के इस अमर इतिहास में ब्यावर नगर का भी महत्व पूर्ण स्थान रहा है। प्रान्त के गौरव को उन्नत रखने में यह नगर किसी अन्य स्थान से कभी पीछे नहीं रहा। जिस नगर से स्वर्गीय सेठ दामोदर दास राठी, स्वामी कुमारानन्द, सेठ घीसूलालजी जाजोदिया, श्री-मुकुट बिहारीलाल भार्गव, श्री मोहम्मद-यासीन नूरी जैसे त्यागी, तपस्वी और और कर्मठ नेताओं की सेवाएँ देश को अर्पित की उसके गौरव को भुलाया नहीं जा सकता।

श्री मुकुटबिहारीलाल भार्गव का उल्लेख होते ही हमारे सम्मुख उनका वह चित्र उपस्थित हो जाता है, जब वे कांग्रेस के मंच पर खड़े होकर निर्भीक स्वर में ब्रिटिश सत्ता को चुनौती देते थे। "मंजिल मकसूद" तक पहुँचने की उनकी तीव्र आकांक्षा उनकी दृढ इच्छा शक्ति को प्रकट करने में समर्थ थी। उनकी सिंह गर्जना नवयुवकों के लिये एक नवीन सदेश था, एक प्रेरणा थी। जनता उनकी वक्तृत्व-कला पर मुग्ध थी और उनका प्रत्येक संकेत उस समय के कार्य-कर्त्ताओं का कार्यक्रम था।

हमारे चरित्र नायक श्री भार्गव को केवल २७ वर्ष की आयु में ही ब्यावर नगर की म्यूनिसिपल कमेटी के गैर सरकारी चैअर-मेन चुने जाने का सौभाग्य सन् १९३० में प्राप्त हुआ। सम्भवतः देश के स्थानिक स्वराज्य के इतिहास में इतनी अल्प आयु में चुने जाने काप्रथम अवसर था।

अमर शहीद कुं० प्रतापसिंह के चिरस्मरणीय यशस्वी पिता राजस्थान केसरी ठा० केसरीसिहजी बारहट के शाहपुरा में ता०३० जनवरी १९०३ को श्री भार्गव का जन्म हुआ। महाराजा मिडिल स्कूल शाहपुरा में प्रारम्भिक शिक्षा समाप्त कर आपने सन १९२० ई० में

मिशन हाई स्कूल ब्यावर से मेट्रिक पास किया। तत्पश्चात् १९२४ में इलाहबाद के म्योर सैन्ट्रल कोलेज से बी० ए० की डिग्री प्राप्त की और १९२६ में इलाहबाद युनिवरसिटी से एम० ए० तथा एल० एल० बी की परीक्षाएं पास की। इसी बीच आप ब्यावर में श्री विनोदीलालजी भार्गव के यहां गोद (दत्तक पुत्र) आये। आपका विवाह ७ मई सन् १९२४ को श्रीमती राधारानी से हुआ।

देश के राजनैतिक नेताओं के जीवन पर यदि दृष्टिपात किया जाय तो ज्ञात होगा कि उनमें से अधिकांश ने अपना जीवन वकालत से ही प्रारंभ किया। श्री भार्गव भी इससे वंचित नहीं रहे। १९२७ में आपने प्रेक्टिस प्रारंभ की और उसी वर्ष स्थानीय म्यनिसिपल कमेटी के सदस्य चुने गये तथा शिक्षा उपसमिति के संयोजक बनाये गये। नवम्बर १९२८ में अमर शहीद लाला लाजपतराय की मृत्यु पर आपने एक शोक प्रस्ताव कमेटी में उपस्थित किया। उस दमन के युग में शायद यही कार्य उनके राजनैतिक जीवन का प्रारंभिक काल कहा जासकता है। १९२९ में आपने "यंग राजस्थान" नामक पत्र का उद्घाटन किया तथा "सरस्वती सदन पुस्तकालय" की अध्यक्षता की।

१९३० में श्री भार्गव कुछ काल के लिये म्यूनिसिपल कमेटी के चेयरमैन चुने गये। इसी वर्ष ब्यावर नगर में कुछ नेताओं की गिरफ्तारी के फलस्वरूप जनता के असन्तोष ने एक झगड़े का रूप ले लिया। पुलिस न केवल लाठियां बरसा कर ही शान्त हुई वरन नगर के ८४ व्यक्तिओं पर मुकदमा चलाया गया। पं० मुकुटबिहारीलाल भार्गव ने इस अवसर पर उस मुकदमे की निःशुल्क पैरवी की और इस प्रकार अन्य वकीलों के सम्मुख एक आदर्श उपस्थित

किया। यही नहीं वरन् आपने पं० अर्जुनलाल सेठी, मौलाना अतर मौहम्मद, पं० गोपीलाल शर्मा आदि पर चलाये मुकदमे की भी निःशुल्क पैरवी की तथा अपनी कानूनी कुशलता का अद्भुत परिचय देकर उन्हें मुक्त भी करवाया। इसके बाद जब भी ऐसे अवसर उपस्थित हुए आपने अपनी सेवायें सर्वदा जनता के हित के लिए अर्पित की। कानूनी क्षेत्र मे आपकी बुद्धि विलक्षण है तथा आपकी प्रतिभा इस क्षेत्र में सर्व विदित है आपके कानून सम्बन्धी ज्ञान को दृष्टिगत रखते हुए यदि इन्हें राजस्थान का सी० आर० दास कहा जाये तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी।

राजस्थान के राजनैतिक क्षेत्र में श्री मुकुटजी का सदैव सक्रिय सहयोग रहा है। सार्वजनिक कार्यों का नेतृत्व करने में आप कभी पीछे नहीं रहे। आपके प्रयत्नों से सन् १९३२ में ब्यावर में हरिजन-सेवक संघ की स्थापना हुई तथा आप उसके प्रथम अध्यक्ष बनाये गये। उसी वर्ष आप पुनः म्युनिसिपल कमेटी के सदस्य चुने गये। १९३४ में आप कमेटी के सीनियर वाइस चेयरमैन बने। इस बीच आपने सदैव जनता की हर क्षेत्र में सेवा की। १९३४ में आप केन्द्रीय धारासभा की सदस्यता के लिये उम्मीदवार हुए। ब्यावर में श्री जयनारायणजी व्यास द्वारा संचालित सेन गुप्त वाचनालय के उद्घाटन का श्रेय भी आपको ही है।

सन् १९३३ के दिसम्बर माह में बम्बई के अमृतलाल डी० शेठ के सभापतित्व में हुए राजपूताना देशी राज्य लोक परिषद कार्यकर्त्ता सम्मेलन ब्यावर के स्वागताध्यक्ष आप ही थे १९३६ में श्रीनाथूलालजी घिया, श्री वी० के० सरकार, श्री सेहसमलजी बोहरा. श्री महेशजी, श्री चाँदमलजी मोदी के साथ आप भी कमेटी के लिए चुने गये।

इसी साल ब्यावर के मजदूरों की हड़ताल को निबटाने में सहयोग दिया। आपने ही जनवरी १९३८ में ब्यावर में होने वाली पंचम राजपूताना तथा मध्यभारत राजनैतिक कान्फ्रेंस को पूर्ण रूप से अपनी सेवाएँ देकर सफल बनाया व उसकी स्वागत समिति का निर्माण किया।

श्री भार्गव द्वारा की गई सेवाओं के उपलक्ष में ब्यावर का विद्यार्थी समाज भी सदैव ऋणी रहेगा। विद्यार्थियों में राजनैतिक चेतना जागृत कर आपने उनके अन्दर दासता के प्रति विद्रोह की भावनाओं को जन्म दिया! विद्यार्थी आपके आचरण तथा विचारों से अत्यन्त प्रभावित हुए। जनवरी १९३८ में राजपूताना तथा मध्यभारत विद्यार्थी कान्फ्रेंस को सफल बनाने के लिए जो प्रयत्न आपने किये उनसे विद्यार्थी समाज परिचित है। कांग्रेस के हरिपुरा अधिवेशन में ब्यावर से आप तथा श्री स्वामी कुमारानन्द व श्री जयनारायण व्यास प्रतिनिधि चुन कर भेजे गये। १९४२ में आप अखिल भारतीय राष्ट्रीय महासभा के सदस्य निर्वाचित हुए!

सन् १९४१ के व्यक्तिगत सत्याग्रह की याद आज भी देशवासियों के मस्तिष्क में ताजा ही है। महात्माजी के आदेश पर देश के नवयुवक युद्ध विरोधी नारे लगा कर ब्रिटिश शासन को चुनौती दे रहे थे। उस समय श्री भार्गव ने प्रान्त के गौरव को उन्नत बनाये रखा। इतने वर्षों पश्चात,आज भी हम १७मार्च१९४१के दृश्य को नहीं भूल सकते जब नगर निवासियों ने अपने नगर के मुकट को विदा किया था। १५००० के विशाल जनसमूह की उपस्थिति में वे निर्भीक होकर जेल यात्रा पर चल दिये उनके मुख की वह मुस्कान और निडरता आज भी नगरवासियों द्वारा भुलाई नहीं जा सकती। उनकी लोक प्रियता का प्रमाण, जनता द्वारा दिये गये अनेकों मान पत्र

तथा पार्टियों से ही प्राप्त हो जाता है जो उन्हें जेल जाने से पूर्व दिये गये।

आप स्वामी कुमारानन्द के अनन्य प्रसंशक रहे हैं। १ अक्टूबर १९४१ को स्वामी कुमारानन्द की रिहाई पर स्थानीय माहेश्वरी भवन में नागरिकों की ओर से स्वामीजी के सम्मान में एक बृहत भोज का आयोजन किया गया। आपने उस समय स्वामीजी को ब्यावर में राष्ट्रीयता के जन्म दाता के रूप में स्मरण कर अपनी सद्भावना के साथ उनके प्रति श्रद्धा का प्रदर्शन किया।

जेल से रिहा होने के बाद आप नगर कांग्रेस कमेटी के कार्य-वाहक अध्यक्ष चुने गये, श्री सेठ घीसूलालजी जाजोदिया उस समय अध्यक्ष थे। फरवरी १९४२ में ठक्कर बापा के ब्यावर आने पर आपने हरिजन सेवक संघ का पुनः संघठन श्री महेशदत्तजी भार्गव की अध्यक्षता में किया तथा आप उसकी कार्य-कारिणी के सदस्य बनाये गये। आप राजपूताना प्रान्तीय कांग्रेस के प्रान्तपति रहे तथा यह हमारे नगर का सौभाग्य है कि अब भी आप ही प्रान्तपति के पद को सुशोभित कर रहे हैं। विभिन्न पदों पर रहते हुए आपने प्रत्येक सार्वजनिक कार्य में अपना पूर्ण सहयोग दिया।

अगस्त १९४२ में महात्मा गांधी ने "अंग्रेजो भारत छोडो" का नारा लगाया और देश में एक भयंकर तूफान आया। देश के कोने २ में क्रांति ज्वाला भड़क उठी। ८ अगस्त १९४२ को रात्रि के २ बजे श्री मुकुटजी को भी प्रान्त की सरकार ने बन्दी बना लिया। १॥ वर्ष तक आप जेल में रहे। इस बीच आपके स्वास्थ्य के समाचारों से जनता चिन्तित हो उठी। यहां तक कि आपके जीवन की आशा भी क्षीण हो चली। जनता हाहाकार कर उठी। जीवन और मृत्यु

का वह कैसा संघर्ष था ? विद्यार्थियों ने जबरदस्त आन्दोलन किया। अपने प्रिय नेता के जीवन के लिये जनता ने सरकार को विवश कर दिया। फलस्वरूप दिसम्बर १९४३ में आपको रिहा कर दिया गया। जेल से आप लौट अवश्य आये किन्तु अपना स्वास्थ्य वहीं छोड़ दिया और आज तक उसे पुनः प्राप्त न कर सके।

१९४५ के अक्टूबर मास में आप पुनः धारा सभा की सदस्यता के लिये कांग्रेस की ओर से निर्वाचित किये गये। उस अवसर पर माननीय पं० नेहरू, श्री के० एम० मुन्शी तथा राजर्षि टन्डनजी पधारे और आपको सहयोग देने का जनता से आग्रह भी किया। प्रान्त ने आपको निर्विरोध चुना। विधान परिषद् का निर्माण होने पर आप उसके सदस्य निर्वाचित किये गये।

मार्च सन् १९४६ में मुकुटजी को ब्यावर म्युनिसिपल कमेटी के अध्यक्ष पद के लिये चुना गया किन्तु अवकाश न मिलने के कारण सन् १९४९ के शुरु में आपने उक्त पद से त्याग पत्र दे दिया।

श्री भार्गव के व्यक्तित्व में एक आकर्षण है जो जनता को अपनी ओर आकर्षित किये बिना नहीं रहता। पं० नेहरू, वर्तमान बंगाल के गवर्नर श्री कैलाशनाथ काटजू, पुनः सं०स्थापन विभाग के मन्त्री श्री मोहनलाल सक्सेना, डॉक्टर अन्सारी, श्री भूलाभाई देसाई, श्री के० एफ० नरीमैन, श्रीमती रामेश्वरी नेहरु आदि अनेकों नेताओं का आतिथ्य सत्कार करने का आपको सौभाग्य प्राप्त हुआ है तथा आपके द्वारा वे प्रभावित हुए हैं। कट्टर सनातनी होने के साथ ही साथ आप हिन्दू-मुस्लिम एकता बोर्ड के अध्यक्ष रहे हैं तथा सदैव हिन्दु-मुस्लिम एकता के पक्षपाती रहे हैं। ब्यावर में जून १९४८ में श्री गाडगिल के सभापतित्व में होने वाली राजनैतिक परिषद् की व्यवस्था में आप

ने पूर्ण सहयोग दिया। आप चीफ कमिश्नर की सलाहकार समिति के उपाध्यक्ष तथा बी० बी० एण्ड सी० आई० रेल्वे बोर्ड के सदस्य हैं।

आपका अध्ययन विशाल है। हर विषय पर आप सुन्दर ढंग से भाषण करते हैं। आप उच्च कोटि के वक्ता हैं। आपके भाषण का एक अंश यहाँ उद्धृत किया जाता है, जो आपने पंचम राजनैतिक परिषद् के स्वागताध्यक्ष पद से २५ जनवरी १९३८ को ब्यावर में दिया—

"अजमेर-मेरवाड़ा राजनैतिक कान्फरेंस के पांचवे अधिवेशन के अवसर पर स्वागत कारिणी समिति और ब्यावर शहर की तरफ से आपका प्रेमपूर्वक और हार्दिक स्वागत करना मैं अपना सौभाग्य समझता हूं।

इस शहर ने अपने महत्व को बराबर कायम रखा है और इसे राजपूताना का मुख्य व्यापारिक केन्द्र कहा जा सकता है। देशकी आजादी की लड़ाई में यह कभी पीछे नहीं रहा है इस अवसर पर अगर मैं स्वर्गीय श्री सेठ दामोदरदासजी राठी के लिए अपनी गहरी श्रद्धा प्रकट करना भूल जाऊं तो मेरे कर्त्तव्य पालन में त्रुटि होगी। स्वर्गीय राठीजी की पवित्र आत्मा आज भी हमारी इस परिषद की ओर टकटकी लगा कर देख रही होगी और हमको आशीर्वाद दे रही होगी। अगरचे सेठजी राजपूताना के धनिक-वर्ग में और एक बड़े घर में पैदा हुए थे फिर भी उन्होंने राजनैतिक जागृति की ज्योति उस समय जगाई थी जिस समय कि भारतवर्ष में राजनैतिक जीवन पैदा भी नहीं हुआ था। वे एक कट्टर देशभक्त ही नहीं, इस प्रान्त में राजनैतिक जागृति करने वालों में अग्रगण्य

थे। अतः उनका नाम मातृभूमि के उद्धार के लिये किये जाने वाले हमारे लम्बे और कष्टप्रद, परन्तु नहीं रुकने वाले प्रयत्नों में हमारा उत्साह वर्धन करता रहेगा।

पिछले सत्याग्रह के युद्धों में आजादी के लिए किए हुए देश के शानदार महायज्ञ में इस शहर ने भी जो आहूतियां दी हैं वे मामूली नहीं हैं। प्रान्त भर में इस नगर को सत्याग्रह आन्दोलन में अपने एक आजमाए हुए कार्यकर्त्ता श्री रामचन्द्र को मातृभूमि की बलीवेदी पर भेंट चढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सन् १९३२ में अपने कठिन कारावास काल में इस व्यक्ति को अपना अमूल्य जीवन माता के चरणों में समर्पित करना पड़ा था। इस नान-रेगूलेटेड प्रान्त में राजनैतिक कैदियों के साथ कैसा निर्दयतापूर्ण और कठोर बरताव होता है यह घटना सदैव उसके स्मारक के तौर पर रहेगी।"

हिन्दू कोड बिल पर भारतीय विधान परिषद् में आपका ३ घंटे तक लगातार प्रभावशाली भाषण हुआ आप हिन्दू कोड बिल के विरोधी हैं जैसा कि कहा जा चुका है कि आप पर सनातन धर्म का प्रभाव है। जून १९३६ में ब्यावर में जगत गुरु गोवर्धन पीठाधीश्वर श्री भारतीय कृष्ण तीर्थ के आगमन पर आपने ही उनकी सब व्यवस्था की तथा आप द्वारा वे प्रभावित भी हुए।

श्री भार्गव मानव प्रकृति को पहिचानने में सिद्धहस्त हैं तथा उनकी पैनी दृष्टि व्यक्तियों को उनके वास्तविक रूप में पहिचानने से कभी नहीं चूकी। आपने कार्य-कर्त्ताओं का चुनाव करते समय सदैव इसका परिचय दिया। पंचम राजनैतिक परिषद् की स्वागत समिति के निर्माण में आपने श्री जयनारायण व्यास, श्री कृष्णगोपाल गर्ग, श्री गोपीकृष्ण विजयवर्गीय का सहयोग प्राप्त

किया। आज इन तीनों व्यक्तियों के व्यक्तित्व से कौन प्रान्त-वासी परिचित नहीं है ?

२४ दिसम्बर १६४१ को आपने श्री नूरी साहब के स्वागत में एक वृहत भोज ब्यावर में दिया था। सन् १६४२ से १६४५ तक आप राजपूताना मध्यभारत प्रान्तीय कांग्रेस के अध्यक्ष भी रहे। ब्यावर के आप प्रथम व्यक्ति थे, जिन्हें यह सौभाग्य प्राप्त हुआ।

आप ब्यावर तथा अजमेर की बार एसोशियेसन के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आप सिविक वैलफेयर कमेटी के अध्यक्ष के रूप में ब्यावर नगर की सेवा कर चुके हैं।

मऊ में होने वाली राजनैतिक परिषद् के मुख्य आयोजकों में श्री भार्गव भी थे। यह परिषद् श्री शंकरराव देव के सभापतित्व में हुई थी। जयपुर कांग्रेस अधिवेशन की स्वागत समिति की कार्य कारिणी के भी आप प्रमुख सदस्य थे।

श्री पं० मुकुटबिहारीलाल भार्गव ने प्रांत की जो सेवाएं की उनका यहां पूर्ण रूप से उल्लेख करना असम्भव है। हर प्रकार की हानि सह कर भी आपने सेवा से कभी मुख नहीं मोड़ा। आप सदैव मजदूरों को भी उचित सलाह देते रहे हैं तथा उनके मुकदमे में भी आपने अथक परिश्रम किया है। जोधपुर के भूत-पूर्व प्रधान-मंत्री श्री जयनारायण व्यास पर चल रहे मुकदमे में भी आप पूर्ण सहयोग दे रहे हैं।

क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्राण, योगीराज अरविन्द
के शिष्य—
श्री स्वामी कुमारानन्दजी
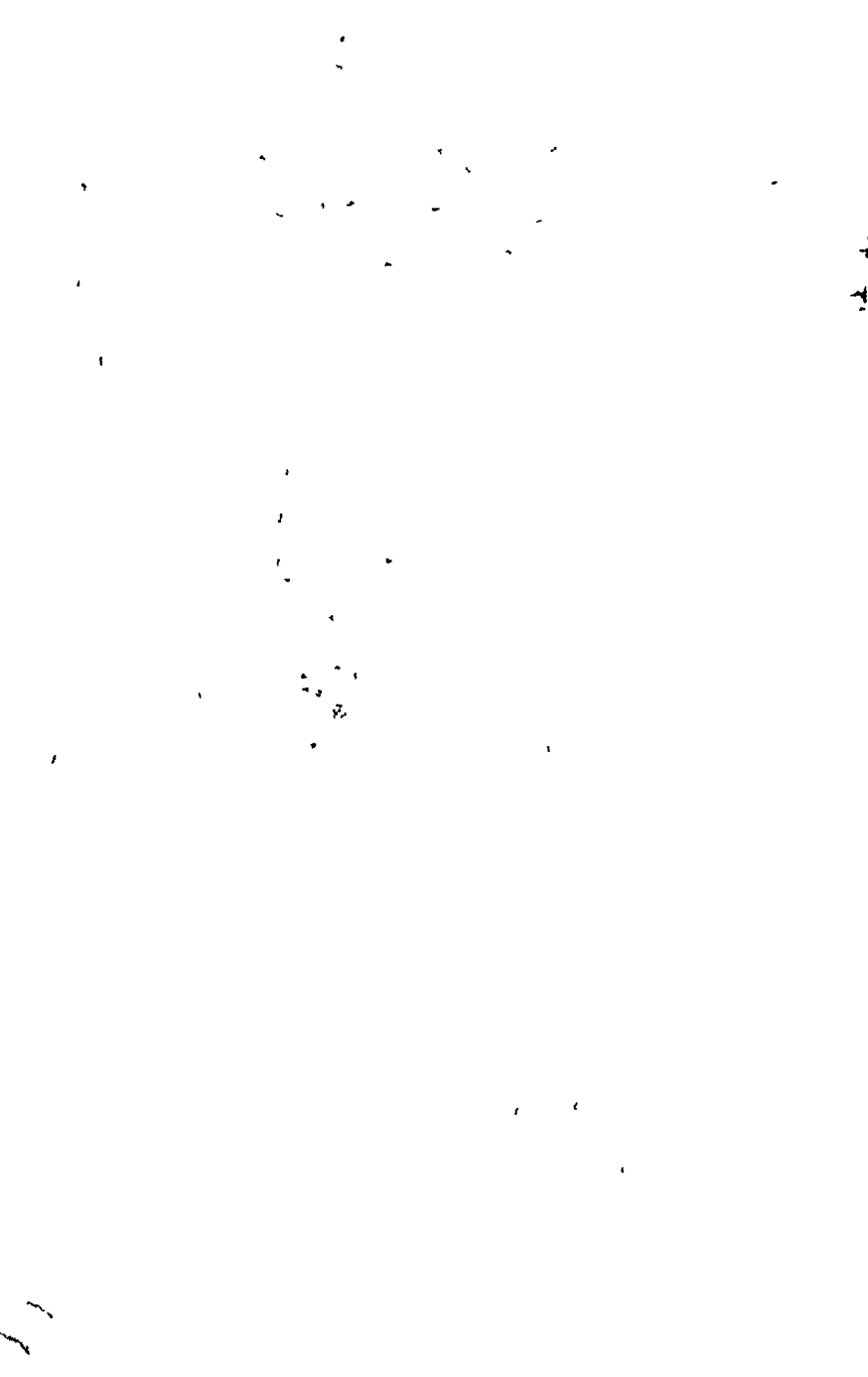
❀ जयहिन्द ❀

आजादी के दीवाने स्वामी कुमारानन्द

"स्वामीजी ब्यावर मे राष्ट्रीयता के जन्मदाता हैं।"

—पं० मुकुट बिहारीलाल भार्गव

[१-१०-४१]

देश के इतिहास में यदि कोई ऐसा व्यक्ति है कि जिसने अपना सम्पूर्ण जीवन निरन्तर कठोर यातनाओं तथा नृशंस अत्याचारों के सहने मे बिताया हो और जिसका क्रान्तिकारी मस्तिष्क मातृभूमि को आजाद कराने के लिए अनेकानेक महत्वपूर्ण योजनाये बनाने में सलग्न रहा हो और जिसने तिल तिल करके अपनी जवानी को देश के लिए होम कर आज एक क्षीण--दृष्टि, हड्डियो का पिंजर मात्र रह गया हो तो वह और कोई नही बल्कि "आजादी के दीवाने" स्वामी कुमारानन्द ही हैं।

स्वामी कुमारानन्द के हृदय में देश भक्ति की जो प्रबल ज्वाला धधक रही है उससे कोई इन्कार नहीं कर सकता। राजस्थान और विशेषतः ब्यावर नगर स्वामीजी का अत्यधिक ऋणी है। आप यहां के राष्ट्रीय आन्दोलन के जन्मदाता तथा अनेक प्रमुख राजनैतिक कार्य--कर्त्ताओं के गुरु रहे है एवं अत्याचार त्रस्त और उत्पीड़ित जनता का नेतृत्व करने में आप सदैव अग्रसर रहे हैं।

स्वामीजी वंगदेश की अनुपम विभूति हैं। आपके पूर्वज ढाका के रहने वाले थे। आपके पिता रंगून के जिला मजिस्ट्रेट थे। आपका जन्म वैसाख शुक्ला ३ सं० १९४५ में हुआ। उस समय कौन यह अनुमान कर सकता था कि एक जिला मजिस्ट्रेट का पुत्र द्विजेन्द्र--कुमार आगे जाकर स्वामी कुमारानन्द के रूप में बृटिश साम्राज्य--शाही के छक्के छुडा देगा। केवल १३ वर्ष की आयु (सन् १९०१) मे आपने अपने खून से यह प्रतिज्ञा लिखी थी कि आजीवन देश की सेवा करूंगा। आप तभी से इस प्रतिज्ञा को पूर्ण रूप से निबाह रहे हैं। आपने इसी कारण नेताजी सुभाष बोस की भांति विवाह बन्धन में फंसना स्वीकार नहीं किया। राजनैतिक कार्य्य--कर्त्ताओ और विशेषतः राजस्थान के नेताओ में आपका यह आदर्श स्तुत्य रहा है। विद्यार्थी जीवन में स्वामीजी बिना पासपोर्ट ही चीन देश में जाकर प्रजातन्त्रीय चीन के पिता स्वर्गीय डा० सनयातसेन के चरणों में रहे और उनसे राजनीति की शिक्षा ग्रहण की। लगभग २० वर्ष की आयु में आपने पाण्डुचेरी आश्रम के योगीराज अरविन्द के साथ क्रांति--कारी प्रवृत्तियो को प्रोत्साहन देने के लिए भारत भ्रमण किया। इस भ्रमण के सिलसिले में अक्टूबर सन् १९०९ में आप प्रथम बार श्री अरविन्द घोष के साथ व्यावर पधारे और तिलक के भामाशाह देश भक्त दामोदरदासजी राठी का आतिथ्य स्वीकार किया। सन् १९१० मे स्वामीजी ने इन्ही अरविन्द घोष के नेशनल कालेज से सम्मान सहित बी० ए० पास किया। योगीराज अरविन्द स्वामीजी से अत्यन्त प्रभावित रहे हैं और पाण्डुचेरी आश्रम मे आने जाने की इनके लिए कभी कोई रोक टोक नहीं रही है।

स्वामीजी को इनके पिता भारतीय सिविल सर्विस की परीक्षा दिलाना चाहते थे किन्तु स्वामीजी की उत्कट देशभक्ति ने इन्हे

कंटकाकीर्ण जीवन के मार्ग को अपनाने के लिए विवश कर दिया और आप सक्रियरूप से सार्वजनिक क्षेत्र मे कूद पड़े। सन् १९११ में आप क्रान्तिकारी प्रवृत्तियो में गिरफ्तार कर लिये गये और अनेक वर्षों तक भारत की विभिन्न जेलो में आपको भयंकर यातनायें सहनी पडीं। बदन में बिजली चढाना, नाखूनों में सूइयां चुभाना, पेशाब पिलाना, जेल मे बिच्छुओं से कटवाना, लाठियों के घाव पर मिर्चें भरना, काल कोठरी में बन्द करना, कोडो की मार, आदि अनेक अनेक नृशस अत्याचार आपने जेलों में भुगते। कई बार विरोध स्वरूप आपने लम्बे २ अनशन भी किये।

सन् १९२१ के आस पास सन्यासी के वेश मे ब्यावर नगर में स्वामीजी का आगमन हुआ और श्री चिरंजीलालजी भगत की बगीची मे ठहरे। धीरे २ ब्यावर इनकी प्रवृत्तियों का केन्द्र बन गया। भारत विख्यात अनेकानेक क्रान्तिकारियों के आप गुरु तो थे ही; इसलिए आपके कारण ब्यावर में श्री एम० एन० राय, चन्द्रशेखर आजाद भगतसिंह, बटुकेश्वरदत्त, हंसराज वायरलेस, काकोरी के शहीद रामप्रसाद बिस्मिल, शौकत उस्मानी आदि का निरन्तर आना जाना रहा।

स्वामीजी अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के बहुत ही पुराने सदस्य रहे हैं। आपने अखिल भारतीय राजनैतिक पीड़ित संघ की स्थापना की, जिसका प्रथम अधिवेशन स्वामी गोविन्दानन्दजी की अध्यक्षता में कानपुर में हुआ। कानपुर कांग्रेस में आपकी सेवाओं के कारण स्वर्गीया श्रीमती सरोजनी नायडू की अध्यक्षता में आपको बारहसौ रुपये की थैली भेंट की गई, परन्तु आपने इस रकम को अपने पास न रख कर क्रान्तिकारी प्रवृत्तियों में दान कर दिया। काशी पधारने पर सुप्रसिद्ध देश-भक्त बाबू श्री शिवप्रसादजी गुप्त ने

आपके सम्मान मे पांच सौ रुपये का चेक भेंट किया। सन् १६२८ मे आपने कलकत्ता कारपोरेशन के सहस्रों मेहतरों की हड़ताल का सफलता पूर्वक नेतृत्व किया।

सन् १६२६ से आपका अधिकतर समय जेलों में ही बीता। अनेक प्रान्तीय सरकारो ने आपका प्रवेश निषिद्ध कर दिया। जब जब आपको जेल से बाहिर रहने का समय मिला तो आप अधिकतर ब्यावर में ही रहे। विद्यार्थी आन्दोलन को भी आपने प्रोत्साहन दिया आपने राजपूताना मध्य-भारत छात्र संघ की स्थापना की। जिसका प्रथम अधिवेशन दिसम्बर १६३७ में स्व० के० एफ० नरीमन की अध्यक्षता में हुवा। श्री सेठ घीसूलालजी जाजोदिया के साथ आपने मिल मजदूर आन्दोलन में भी सक्रिय भाग लिया और अब भी आप ब्यावर के मजदूर आन्दोलन के प्राण है तथा सन् १६४७ से राजपूताना मध्यभारत ट्रेड यूनियन कांग्रेस के प्रधान हैं।

स्वामीजी राजनीति, दर्शन तथा संसार के अनेकानेक धर्मों के प्रकाण्ड पण्डित हैं। देशी विदेशी साहित्य का आपका बहुत विशाल अध्ययन है। आप सस्कृत, बगाल, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू, बर्मी, चीनी आदि अनेक भाषाओं के ज्ञाता है। आपके व्याख्यान बड़े ओजस्वी होते हैं। आपका बड़ा गुण आपकी निर्भीकता है।

ता. १४-५-५० को स्वामीजी की ६२ वी वर्ष गांठ के उपलक्ष्य में व श्री मुकुटविहारीलालजी भार्गव के स्वागत में श्यामजीकृष्ण वर्मा पुस्तकालय मे बाबू चोथमलजी अग्रवाल की ओर से स्वागत भोज का आयोजन किया गया जिसमे प्रान्त व नगर के प्रतिष्ठित महानुभावो ने भाग लिया। श्री स्वामी कुमारानन्दजी, मुकुटविहारीलालजी भार्गव, कृष्णगोपालजी गर्ग, बालकिशनजी गर्ग बालकृष्णजी कौल, जीतमलजी लूणिया, चन्द्रगुप्तजी वार्ष्णेय, दुर्गाप्रसादजी चौधरी, ज्वालाप्रसादजी शर्मा, गुलाबचन्दजी धूत, कन्हैयालालजी

राजस्थान के राष्ट्रीय-तीर्थ ब्यावर की राष्ट्रीय प्रवृत्तियों की आदि केन्द्रस्थली

— श्री चिरंजीलालजी भक्त की बगीची —

इस शिवजी के मन्दिर के प्रांगण में श्री चन्द्रशेखर आजाद और सरदार भगतसिंह अपने अज्ञात-वास मे कुछ दिन रहे थे एवं स्वामी कुमारानन्दजी जब प्रथमवार ब्यावर पधारे तो यही से आपने अपना कार्य प्रारम्भ किया था।

———

श्री चिरंजीलालजी भक्त की बगीची में

ब्यावर में क्रान्तिकारियों का सन् १६१६

— का गो ष्ठी-भ व न —
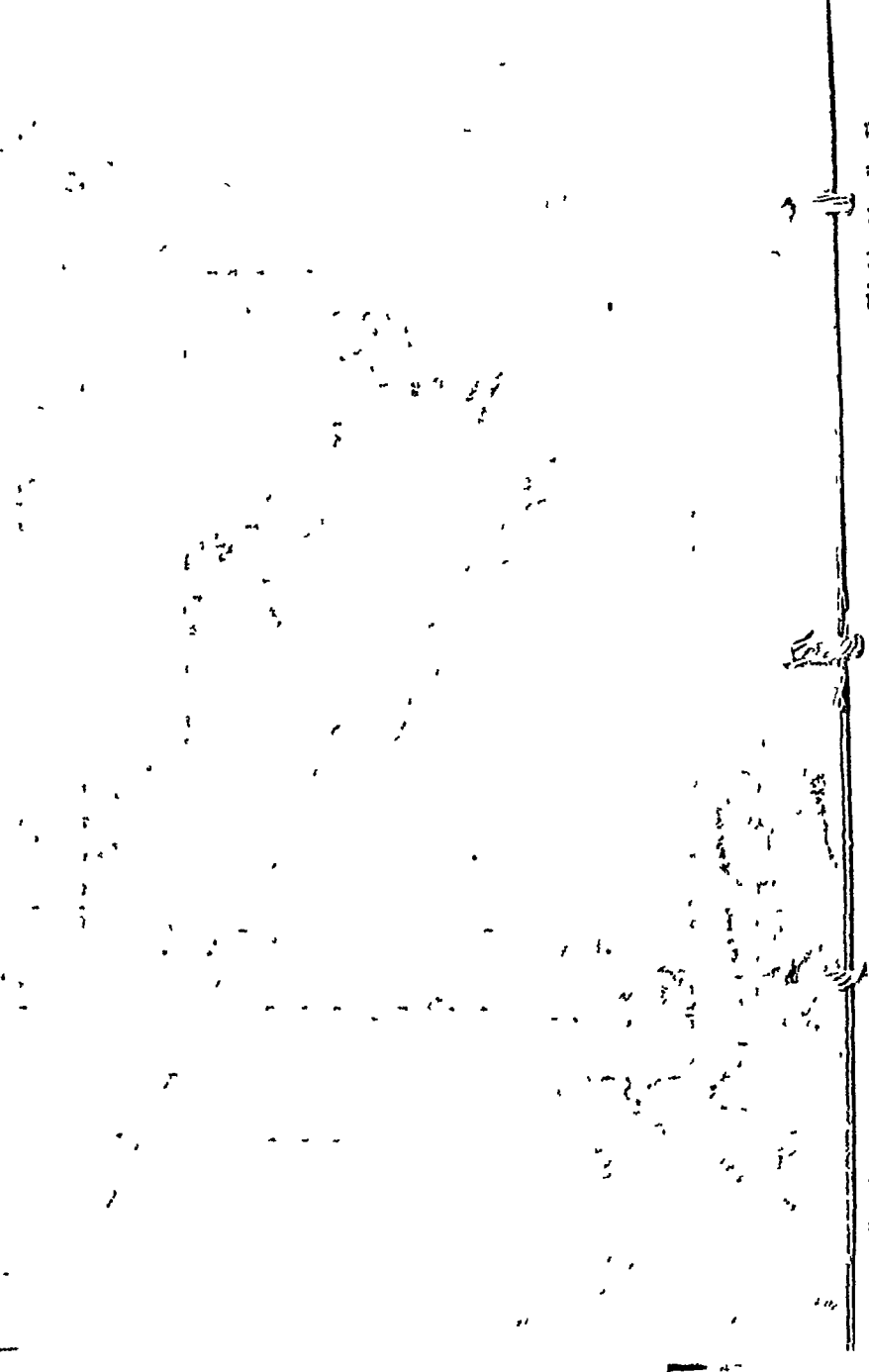
भटेवड़ा, महेशदत्तजी वकील, सहसमलजी बोहरा, चिम्मनसिंहजी लोढ़ा, जगदीशप्रसादजी मैनेजर, चादमलजी मोदी, बंशीधरजी जड़िया, बालमुकुन्दजी अग्रवाल (बम्बई), भंवरलालजी आर्य, जौहरीलालजी बुरड़, दुष्यन्त ओझा आदि २ सज्जन इस आयोजन में सम्मिलित हुए।

रात्रि को ११ बजे श्री भंवरलालजी आर्य की अध्यक्षता में एक सभा हुई जिसमे निम्नलिखित प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ।

"राजस्थान के प्रगतिशील कार्यकर्त्ताओं और ब्यावर के प्रगतिशील नागरिकों की यह सभा स्वामी कुमारानन्दजी की ६२ वीं वर्ष गांठ पर उनको अपने क्रान्तिकारी नेता के रूप में अभिनन्दन करती है और विश्वास प्रकट करती है कि हिन्दुस्तान की और खास तौर पर राजस्थान की मेहनतकश जनता की खिदमत करने के लिए लम्बी आयु हासिल करें। इस अवसर पर उन्हें हमारी हार्दिक बधाई समर्पित है।"

इस समय हम सब का कर्त्तव्य है कि स्वामीजी के त्याग तपस्या तथा बलिदान की गाथा स्मरण कर अपनी कृतज्ञता के फूल उनके चरणो में अर्पित करे।

सहयोगियों की नजरों में स्वामीजी !

'सब से अधिक उल्लेखनीय व्यक्ति थे स्वामी कुमारानन्दजी, ये एक प्रतिष्ठित बंगाली परिवार मे जन्म लेकर क्रान्तिकारी पथ के पथिक बन गये थे सन् १९२१ मे ब्यावर को कार्य क्षेत्र बनाने से पहिले कई बार जेलों की यातनाऐ भुगतकर देशभक्ति की कीमत अदा कर चुके थे। असहयोग आन्दोलन के सिलसिले में कई वर्ष कारावास

भोग करके वे अजमेर लौटे तो सेवा संघ में हम लोगों के अतिथि रहे। इस थोड़े समय में ही इन्होंने सघ परिवार के बालवृद्ध सभी को अपने सरल, स्नेही और विनोदी स्वभाव से प्रभावित कर लिया। राजस्थान मे भी इस त्यागी सेवक ने हर राष्ट्रीय आन्दोलन में अपनी कुर्बानी की परम्परा बराबर कायम रक्खी। जब यह भावुक मन्यासी झूम झूम कर देश प्रेम के बंगला गीत सुनाता है तो श्रोता भी बड़ी स्फूर्ति का अनुभव करते हैं।"

—श्री रामनारायण चौधरी

"चाहे पूंजीवादी कितने ही गन्दे हमले अपने कलंकित हाथों से स्वामीजी पर क्यों न करें किन्तु उनकी अमिट कीर्ति मिट नहीं सकती।"

—श्री नृसिंहदास (बाबाजी)

- स्वामीजी महान् -

'शारदा, तुझे और रमणीक को भारत के बाहर भेजेंगे तुम लोगों को बहुत कुछ करना है।"

ये शब्द पू० स्वामीजी के थे जब १९४० में पहली बार मेरे घर आये शारदा मेरी छोटी बहन है—आज वह भारत के बाहर है। उस समय मैं कोलेज के प्रथम वर्ष में पढ़ रहा था और विद्यार्थी संघ का मुख्य मत्री था वैसे मैं स्वामी कुमारानन्द के पीछे पीछे तिरंगा झडा लिए छोटी आयु मे घूमता था किंतु स्वामीजी क्या हैं वे बाद में मालूम हुआ।

उनके सच्चे जलते हुए हृदय से जो भारत माता के लिए उद्गार निकलते थे वे हर युवक के हृदय को पतंगा बना देते जिनमें अपने देश के हेतु प्राण होम देने का उत्साह और प्रेम कूट कूट कर भरा होता आज उनका वही देश स्वतंत्र है फिर भी जिस सुख और शांति की वे कल्पना करते थे—घंटो हमसे कहते थे—वह सत्य नही हुई।

आज वे दुःखी है उसका मुझे दुःख नहीं क्योकि वे तो फक्कड़ और सच्चे त्यागी हैं किंतु उनके हृदय का दुःख नहीं देखा जाता वह अब भी देश की गरीब जनता के लिए धधक रहा है।

हर देश में ऐसे कई व्यक्ति होते हैं जो उनसे भी अधिक महान होते हैं जिनको विश्व जानता है किन्तु उनकी वैसी पूजा नही होती, अखबार के पन्ने जयजय कार नही करते—और न सच्चे देश सेवक इन चीजों की परवाह करते हैं—इसीलिए ही ऐसे व्यक्ति "कहेजाने वाले महान" से भी महान होते हैं। उन में से एक देश का अमूल्य रत्न स्वामी कुमारानन्द है जो एक रेगिस्तान की गर्म रेत पर पडा अब भी तड़प रहा है।

आज कई वर्षों के सबंध से मैं उनके नजदीक इतना आगया हूँ कि हमारा राजनैतिक संबंध को अलग रख कर यदि कहा जाय तो वे मेरे पिता हैं। समीप रहने के सौभाग्य से मनुष्य उन गुणों को देख सकता है जो व्यक्ति के निज़ी होते हैं। एक दिन की बात है कि एक सज्जन उनको मेरे सामने ५०००) केवल इसलिए देना चाहता था कि उनके विरोध में वे न बोले—मात्र चुप रहें। स्वामी जी का चेहरा लाल हो गया, आंख से अंगारे निकलने लगे—मैं स्वयं भयभीत हो गया क्रोध मे उनके होठ फड़कने लगे इससे पहिले की वे कुछ बोलें वे महाशय उठकर चल दिये—उन दिनो न स्वामीजी के खाने का ठिकाना था—कपड़े भी सब फट चुके थे। ऐसे ही एक

क्षण में तो राणा प्रताप जैसे प्रतापी का दिल भी अकबर की शरण मानने को कह गया था। किंतु धन्य! कुमारानन्द तूने इस रकम को ठोकर मारदी; उसे मंजूर था भूखे नंगे मरना। एसे चरित्र-वान का स्पर्शमात्र मुझ जैसे साधारण मनुष्य के लिए असाधारण था। मै महानता की वास्तविक सजीव मूर्ती देख रहा था उस समय बड़ी कठिनाई से उस शाम को हम दोनो बहन भाई ने मिल कर उन्हें चाय पिलाई। उस घडी को हम आज तक नहीं भूले हैं।

स्वामीजी को कविता, संगीत नृत्य, नाटक, प्रातःकाल और सायंकाल के प्रकृति दर्शन से भी बड़ी रुची है। उनका हृदय गगन की लालिमा को देख कर कविवर रविन्द्रनाथ टेगोर के गीत पुकार उठता है। हम लोग मंत्रमुग्ध से सुनते रहते हैं।

मुझे विश्वास है कि उनका त्याग व्यर्थ नहीं जायगा—एक दिन अवश्य अपना रग दिखायगा। इतना जरूर कहूँगा कि "गंगा किनारे रहने वाले लोग गगा की महानता और उसका अस्तित्व नहीं पहिचानते और न उनके हृदय में वह पवित्र भावना ही आती है"; उन लोगों में से हम भी हैं।

—प्रो० रमणीक एम० ए०

परिचय

(एक रेखाचित्र)

जो पीडित मानवता के साथ एकात्म होगया है जिसका दिल मनुष्य को गरीब और दुखी देखकर मक्खन की तरह पिघल जाता है; किन्तु जो अन्याय और दमन को देखकर अपने अन्दर से आग और तूफान पैदा कर देता है,

जब से होश सभाला तब से बराबर आज तक निःस्वार्थ भाव से गरीब और दुःखी की सेवा की है, जिसमे सन्यास

भाव है, दूसरों के लिए सब कुछ करता है, अपने लिए कुछ भी नही,

जो करोड़ों जन जन की तरह स्वयं गरीब रहता है, धन, वैभव सम्मान और पद को ठुकराता चलता है, जबकि ये उसके पैरों में लौटते हैं.

जो परमहंस रामकृष्ण और विवेकानन्द के पद चिह्नों पर चलता हुवा प्रत्येक नर नारायण के दर्शन करता है और उसके गले से लिपट जाता है, उसकी सेवा करता है जो केवल इतना ही नहीं, किन्तु अपने प्रान्त में समझ और बुद्धि से अपना सानी नहीं रखता जो कि सबके दिल की बात समझता है, सबकी गरीबी जानता है और यह भी जानता है कि उस गरीबी को दूर कैसे किया जावे, जिसके चरणों में रहकर बड़े बड़े बी० ए० और एम० ए० और बड़े बड़े वकीलों ने दर्शन, राजनीति और अर्थशास्त्र का पाठ पढ़ा है।

जिसकी सच्ची जिन्दगी से प्रेरणा पाकर अनेक नौजवान देश की आजादी के लिए हंसते हंसते फांसी के तख्ते पर झूल गये और प्रेम के सामने प्रत्येक सच्चा आदमी नत मस्तक हो जाता है।

ऐसे है हमारे चिर परिचित, गरीब, पीड़ित जन जन के हृदय में वास करने वाले स्वामी कुमारानन्द जिनका अधिकतर जीवन गौरांग शाही की खूनी जेलों में बीता है जो सन् १९४२ में नजरबन्द रखे गये और जबकि प्रान्त के अनेक नेता माफी मांग कर रिहा हुए वे जेल की हवा खाते रहे। जिन्होंने प्रोफेसर रघुराजसिंह और ज्वालाप्रसाद शर्मा को जेल की दिवाल से कूदकर बाहर आजादी की लडाई लडने के लिए अपनी जान खतरे में डाल कर मदद की। जो कि स्वतत्र भारत में भी बारम्बार राष्ट्रीय सरकार द्वारा कृष्ण मंदिर के महमान बनाये गये।

—प्रो० गुप्ता

—

— श्रद्धाञ्जली —

स्वामीजी का प्रथम दर्शन मैंने सन् १६३०-३१ मे किया जब कि मैं यूनिवर्सिटी का विद्यार्थी था। मैंने उनको ब्यावर मे डिक्सन छत्री पर बंगला ढंग से हिन्दुस्तानी में भाषण देते हुए सुना। यद्यपि उनकी हिन्दुस्तानी में हर जगह बंगालीपन टपकता था, फिर भी उनका भाषण अत्यन्त प्रभावशाली आकर्षक हुआ करता था। उनके भाषण के प्रभाव की पृष्ठ भूमि मे उनका त्याग, उनका अनुभव, उनकी सत्यता उनकी स्पष्ट-वादिता थी।

जो यातनायें, दुःख और कष्ट स्वामीजी ने सहे उन्हें सुनकर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। वास्तव में इनके व्यक्तित्व का आधार दृढ निश्चय और अटूट देशभक्ति रहा है। स्वामीजी का अध्ययन पाण्डित्य-पूर्ण है। समय समय पर जब वे अपने कथन की पुष्टि गीता के श्लोकों से किया करते थे तो उसको सुनने मे विशेष आनन्द आता था।

ब्यावर में कांग्रेस दृष्ठि कोण से उन्होने एक नवजीवन पैदा किया; किन्तु खेद है कि कुछ हमारी ही गल्तियों और ज्यादतियों के कारण १६४५-४६ में स्वामीजी को कांग्रेस से दिलचस्पी छोड देने को मजबूर होना पड़ा।

इसके बाद साम्यवादियो ने अवसर पाकर उनका सहयोग लेना आरम्भ कर दिया। यद्यपि आज स्वामीजी पूर्णतया कम्यूनिस्ट पार्टी में सम्मिलित हो चुके हैं, फिर भी उन्होंने जो जागृति पहले पैदा की और जो कुरबानियां की उसके लिये हमे उनका हमेशा कृतज्ञ रहना होगा।

—श्री महेशदत्त भार्गव

स्वामी कुमारानन्दजी के त्याग एवं बलिदान के सम्बन्ध मे दो मत नहीं हो सकते। उनका जीवन काफी तपस्यामय रहा है। ब्यावर की जन-जागृति में उनका गहरा हाथ है।

स्वामीजी जैसे देश भक्त को जिसने कि सारी जिन्दगी विदेशी हुकूमत से लोहा लिया हो, आजादी के बाद भी यातना सहनी पड़े यह दुःखदायी विषय है।

—श्री चिम्मनसिंह लोढ़ा

॥ ॐ ॥

सुभाष सदन ब्यावर की विभिन्न प्रवृतियों का

— संक्षिप्त दिग्दर्शन —

यह तो एक मानी हुई बात है कि एक बड़े से बड़े काम का आरम्भ छोटी सी घटना से हुआ करता है। ठीक यही बात "सुभाष सदन" की स्थापना के सम्बन्ध मे चरितार्थ हुई। १५ अगस्त सन् १९४८ को व्यावर टाउन हॉल (नेहरू भवन) मे अमर शहीद चित्र प्रदर्शनी का आयोजन किया जाने वाला था। मेरी भी इच्छा हुई कि कुछ चित्र भेजूं। सौभाग्य से उस समय नाथद्वारा के कुशल चित्रकार भाई लहरीलाल व्यावर आये हुए थे। उनसे मैंने प्रार्थना करके कुछ प्रमुख राजस्थानी नेताओ के तथा व्यावर के नागरिकों के चित्र तैयार कराके प्रदर्शनी मे भेजे। सवाल इतना सा था कि प्रेषक के स्थान पर किसका नाम लिखा जावे। तब मुझे ऐसा भान हुआ कि देश गौरव सुभाष बोस के नाम पर 'सुभाष सदन' जैसी संस्था द्वारा यह कार्य होतो ठीक होगा। इसकी स्थापना की यही छोटी सी कहानी है। इन चित्रो के बनने का सिलसिला कई दिनो तक चलता रहा व काफी रुपया इन चित्रो के बनाने में आज तक लग गया। कुछ चित्र जयपुर कांग्रेस पर सर्वोदय प्रदर्शनी में

श्री भेजे गये थे। जिनमे राजस्थान केशरी स्वर्गीय ठाकुर केसरीसिंह बारहठ के चित्र का प्रदर्शन किया गया।

सितम्बर सन् १९४७ के प्रथम सप्ताह मे मुझे यह बात सूझी कि जयपुर कांग्रेस में जो कांग्रेस नगर बन रहा है उसका नाम 'अर्जुनलाल सेठी नगर' हो। सेठी नगर का आन्दोलन भी 'सुभाष सदन, ब्यावर' की ओर से चलाया गया। इसमे बहुत सा रुपया खर्च हुआ। बीसियों तरह के पर्चे छापे गये। सैंकड़ो रुपये तार पोस्टेज सफर आदि मे खर्च हुए। सेठीजी के बिल्ले बनाये गये। सेठीजी की जीवनी निकाली गई। यहां तक कि 'गांधी नगर' की स्थापना के रोज २ अक्टूबर सन् १९४८ को आमरण अनशन भी जयपुर में शुरू किया गया। आखिर जयपुर के लोकनायक श्री चिरंजीलालजी वकील के आदेश पर अनशन तोड़ दिया गया। ५ अक्टूबर ४८ को इस सम्बन्ध मे रामगंज बाजार जयपुर मे एक सार्वजनिक सभा हुई जिसमे मुझे भी भाषण देने का सौभाग्य मिला। सेठीजी व सेठी नगर के इस आन्दोलन के सिलसिले मे "जयभूमि", "विश्वमित्र", "अमर भारत", "नेताजी", "मीरा" आदि पत्रो ने तथा कर्मवीर पंडित सुन्दरलालजी, महात्मा भगवानदीनजी, बाबा नरसिंहदासजी, श्री सत्यदेवजी विद्यालंकार, स्वामी भवानीदयालजी संन्यासी, स्वामी नृसिंहदेवजी सरस्वती, स्वामी कुमारानन्दजी, श्री विजयसिंहजी पथिक, श्री रामनारायणजी चौधरी, श्री चिरंजीलालजी वकील, श्री गुलाबचन्दजी, श्री तारानाथजी रावल, श्री जगदीशप्रसादजी 'माथुर' दीपक आदि ने काफी सहयोग दिया। कांग्रेस स्वागत समिति जयपुर ने भी कृपा करके "अर्जुनलाल सेठी द्वार" का सर्वोदय प्रदर्शनी के सामने विशाल रूप में निर्माण कर व

अर्जुनलाल सेठी स्पेशल ट्रेन चलाकर सेठीजी की सेवाओं का मान किया।

ब्यावर टाउन हाल (नेहरू भवन) मे ब्यावर के सेवक तथा नगर पिताओं के चित्र लगाये जावें व उन लोगो के चित्र हटाये जावे जिन्होने ब्रिटिश साम्राज्यवाद को मजबूत करने मे सहयोग दिया इसका आन्दोलन सितम्बर सन् १६४८ के आखिरी सप्ताह मे 'सुभाष सदन' ब्यावर की ओर से चलाया गया व कमेटी से प्रार्थना की गई कि 'सुभाष सदन' स्वर्गीय दामोदरदासजी राठी, सेठ घीसूलालजी जाजोदिया, स्व० नाथुलालजी घीया, श्री यासीन नूरी, श्री मुकुट बिहारीलालजी भार्गव, श्री कन्हैयालालजी वर्मा वकील के चित्र कमेटी को अपनी ओर से भेंट करना चाहता है। इनमे से सेठ घीसूलालजी जाजोदिया का विशाल चित्र तो (जो सदन ने भेजा था) २ अक्टूबर १६४८ को नेहरू-भवन मे लगा दिया गया। राठीजी के चित्र के उद्घाटन के लिये बापू के परम भक्त, सर्वोदय समाज के आचार्य, राठीजी के अनन्य मित्र श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू वर्धा से प्रार्थना की गई थी। उन्होंने प्रार्थना मंजूर करके ब्यावर आना स्वीकार कर लिया, जिसकी सूचना कमेटी को दी गई। कमेटी द्वारा एक आकस्मिक विशेष सभा भी इस सम्बन्ध मे बुलाई गई, मगर खेद है कि किन्ही कारणो से चित्र लगाने की मंजूरी नही दी जा सकी, जिसका मुझे बड़ा भारी रंज रहा। ब्यावर के श्रेष्ठ नागरिक देश-भक्त दामोदर के चित्र का नहीं लगना इस नगर के लिए बड़े दुःख की बात रही। जाजूजी जैसे जन-सेवक का इस काम के लिए ब्यावर आना बेकार रहा और मुझे काफी शर्मिन्दगी उठानी पड़ी।

— सुभाष सदन की अन्य प्रवृतियां —

(१) अर्जुनलाल सेठी राष्ट्रीय ग्रंथमाला का प्रकाशनः—

दिसम्बर सन् १६४८ में इसकी स्थापना सेठीजी की पुन्य स्मृति में की गई, इसके अन्तर्गत अभी तक सात छोटी २ पुस्तिकाये छप चुकी हैः—

१—राष्ट्र-हुतात्मा स्वर्गीय श्री सेठीजी।
२—श्री सेठ दामोदरदासजी राठी।
३—आधुनिक राजस्थान के निर्माता-सेठी, बजाज व पथिक।
४—श्री मुकुट विहारीलालजी भार्गव।
५—श्री गणेशशंकरजी विद्यार्थी।
६—श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा।
७—स्वामी कुमारानन्दजी।

(इसी ग्रन्थमाला में स्वामी भवानीदयालजी संन्यासी व राव गोपालसिंहजी खरवा नरेश की जीवनियां शीघ्र ही प्रकाशित होगी)

श्यामजी कृष्ण वर्मा पुस्तकालयः—

भारत के महान् क्रान्तिकारी, कुशल व्यवसायी, निपुण शासक उद्भट विद्वान् श्री श्यामजी कृष्ण वर्मा के २० वे पुण्य निधन दिवस ता० ३१ मार्च सन् १६५० को उनकी पुण्य-स्मृति में इस पुस्तकालय का उद्घाटन सुप्रसिद्ध देशभक्त श्री चांदकरणजी शारदा के कर-कमलों द्वारा हुआ। एक विराट सभा का आयोजन हुआ, जिसमें अनेको विद्वानों के भाषण हुए।

इस संस्था का आदि रूप "श्री हरि पुस्तकालय" था। इसकी स्थापना मिती श्रावन शुक्ला ३ सं० १९९० मंगलवार ता० २५-७-३३ को सिर्फ ४१) रुपयो की लागत की पुस्तको से हुई। ७ अगस्त सन् १९४१ तक यह पुस्तकालय लेखक के घर पर ही रहा। विद्यार्थी व मित्रगण इसका उपयोग करते रहे। ८ अगस्त सन् १९४१ को ब्यावर में फतहपुरिया बाजार में सेठ लक्ष्मी-नारायणजी मुनीम की दुकान में इसको सार्वजनिक रूप से लाया गया। करीब ६०० पुस्तकें व ४०-४५ पत्रों की व्यवस्था की गई। १२ अगस्त सन १९४२ तक पुस्तकालय व वाचनालय ने ब्यावर जनता की काफी सेवा की। देशभक्ति पूर्ण राष्ट्रीय-साहित्य का प्रचार किया गया। १३ घन्टे रोज पुस्तकालय खुला रहता था करीब २०० पाठक रोजाना आते थे। ब्यावर मे यह उस समय सबसे बड़ा व श्रेष्ठ वाचनालय था। देश के अनेकानेक नेताओं ने इस पुस्तका-लय के लिये अपने आशीर्वाद प्रदान किये और क्रियात्मक सुझाव भी इसकी उन्नति के हेतु भेजे। १३ अगस्त सन् ४२ को मंत्री के अगस्त आन्दोलन के सत्याग्रह में व सरकार के सी० आई० डी० डिपार्टमेंट की कोप दृष्टि के कारण पुस्तकालय बन्द रहा। सरकार की निगाह में पुस्तकालय राष्ट्रीय प्रवृत्तियों का केन्द्र था जिसने सैकड़ो पाठको मे राष्ट्रीय जीवन का संचार किया। स्वतन्त्रता दिवस २६ जनवरी १९४३ को मंत्री के जेल से छूटने पर पुस्तकालय फिर दिसम्बर ४३ तक चलता रहा बाद में मंत्री के ब्यावर छोड़ने पर करीब ४॥ साल तक पुस्तकालय 'साहित्य निकेतन ब्यावर' के नाम से मास्टर मिश्रीलालजी अरोड़ा की संयोजकता में व श्री जौहरीलालजी कांस्टिया तथा श्री बालमुकन्दजी अग्रवाल के सहयोग से ब्यावर नगर की सेवा करता रहा। अप्रेल ४८ में पुस्तकालय फिर मंत्री के घर आया। घर पर पूरा उपयोग न होने से 'हिन्दी साहित्य समिति'

ब्यावर के सहयोग से इस पुस्तकालय को बाजार में ले आया गया। विख्यात देशभक्त श्यामजी कृष्ण वर्मा का ब्यावर से घनिष्ट सम्बन्ध होने से इसका नाम "श्यामजी कृष्ण वर्मा पुस्तकालय" रखा गया। पिछले चार मास से इसका कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। पुस्तकालय में इस समय १००० पुस्तकें हैं और वाचनालय में ६० पत्र पत्रिकायें आती हैं तथा लगभग १२५ व्यक्ति नित्य इसका लाभ उठाते है। इस संस्था का निरीक्षण समय २ पर अनेक विख्यात जन-सेवकों द्वारा होता रहा है और उन्होंने इस कार्य्य की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करते हुए अपने २ बहुमूल्य सुझाव इस सम्बन्ध में प्रदान किये हैं जिनके लिये मै उनका हृदय से आभारी हूँ।

वीर श्रेष्ठ सावरकर—

"श्री हरि पुस्तकालय को सुयश मिले।"

२५-५-४१ बम्बई

देवता स्वरूप भाई परमानन्द—

"हिन्दुस्तान, हिन्दुओं के स्थान, में हिन्दुत्व का उत्कर्ष ही परम पवित्र ध्येय है। ज्ञान का प्रसार भी इसी उद्देश से होना चाहिये"

१-१०-४१ लाहौर

श्री जमनालाल बजाज—

"श्री हरि पुस्तकालय का सूचना पत्र देख कर प्रसन्नता हुई। जमनालाल बजाज का वन्दे मातरम्।"

२८-५-४१ बजाज वाड़ी वर्धा।

श्री श्रीकृष्णदास जाजू—

"मैं आशा करता हूँ, लोग आपके पुस्तकालय से लाभ उठायेंगे"

३-१०-४१ वर्धा

श्री काका कालेलकर—

"वाचनालय के साथ आप पुस्तकालय का संगठन करेंगे ही। उसमें शब्द कोष, ज्ञानकोष, अेटलास, इअर बुक आदि संदर्भ ग्रंथो की शाखा सबसे पहले खोलें तो अच्छा।

वाचनालय के साथ वाचको को सलाह देने वाले किसी वाचक मित्र की भी नियुक्ति हो तो अच्छा। उनका काम होगा कि वाचनालय के सब नियत कालिको को पढ़ कर वाचकों के हित के लिये रोज शाम को १५ मिनट कुछ बातें करें। और कहां क्या पढ़ने लायक है सो उसके महत्व के साथ बतादें। अगर ऐसी सलाह की नोध रखी जाय, तो एक साल के अन्त में वर्तमान जगत, नाम की एक पुस्तिका भी तैयार हो सकेगी। ऐसे एक वाचक मित्र के बिना वाचनालय अपना पूरा कार्य नहीं कर सकेगा।

१८-५-४१ वर्धा

श्री माखनलाल चतुर्वेदी—

"पुस्तकालय का आयोजन स्तुत्य कार्य है। जहां हम, अज्ञान को चुनोती दिया करते हैं, जीवित और स्वर्गीय दोनो प्रकार के साहित्यिक से भावालोक में नित्य मिला करते हैं, सूक्ष के लिये भोजन पाया करते हैं, जीवन गुत्थियो की अन्धकारमयी उलझन मे प्रकाश पाया करते हैं, और मानवपन की जमीन को आसमान से उज्वलतर निर्माण कर सकने के संकेत पाते रहते हैं, उसे पुस्तकालय कहते हैं।"

१७-३-४१ (खण्डवा)

श्री चन्द्रबली पाण्डे—

"मै परमात्मा से प्रार्थना करता हूँ कि आपका वाचनालय हिन्दी के अभिमान का कारण बनें"

२२-३-४२ काशी

श्री हरविलास सारडा—

'यह उपकार का कार्य है, वाचनालय से वड़ा लाभ लोगों को पहुँचता है।

२२-६-४१ अजमेर

प्रो० इन्द्र—

"मेरी ईश्वर से प्रार्थना है कि वह आपके प्रयास मे सफलता प्रदान करे"

२३-६-४१ दिल्ली

श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार—

"पुस्तकालय वड़ा अच्छा मालूम होता है। उसकी संयोजना के लिये आपको अनेक धन्यवाद"

४-१०-४१ रतनगढ़

श्री भगवानदास केला—

"पुस्तकालय द्वारा जनता की जो सेवा हो रही है, वह उत्तरोत्तर वढ़ती रहे"

२०-१०-४१ प्रयाग

श्री रूपनारायण पाण्डेय—

"देश के उत्थान में सवसे वड़ी वाधा जनता का अज्ञान है। उसे दूर करने का सवसे सुलभ साधन पत्र और पुस्तकें हैं। आपका यह कार्य इस दृष्टि से परम उपयोगी और देश के लिये लाभदायक है"

२७-६-४१ लखनऊ

श्री दुलारेलाल भार्गव—

"आपका आयोजन वहुत ही सुन्दर तथा स्तुत्य है। इस तरह के वाचनालय यदि सारे-भारतवर्ष भर मे फैल जांय, तो हिन्दी के प्रचार कार्य मे देर न लगे।"

४-१०-४१ लखनऊ

श्री श्री प्रकाश (वाणिज्य-मन्त्री-भारत सरकार)

"श्री हरि पुस्तकालय को देख कर वड़ा आनन्द हुआ। ऐसी

संस्थाओं द्वारा ही सच्ची प्रौढ़ शिक्षा का प्रचार और विस्तार हो सकता है। उसके कार्य कर्तागण जनता की प्रशंसा और कृतज्ञता के पात्र है। मेरी शुभ कामना है कि इसकी उपयोगिता दिन प्रति दिन बढ़ती जाय" २० जून १६४२ ब्यावर

श्रीमती रामेश्वरी नेहरु, श्री अ० वि० ठक्कर, श्री घीसूलाल जाजोदिया व श्री जयनारायण व्यास—

"आज हमने हरि पुस्तकालय का निरीक्षण किया यह पुस्तकालय जिसमे ६०० पुस्तकें, ३० मासिक ४ दैनिक, ७ साप्ताहिक व २ पाक्षिक पत्रो के अध्ययन की व्यवस्था है, ब्यावर के केन्द्रीय स्थान मे है। यह इस कारण जनता के लिये अत्यन्त उपयोगी है। पुस्तकालय की सारी व्यवस्था श्री० हरिप्रसादजी अपनी ही तरफ से करते हैं। हरिप्रसादजी बहुत धनी नहीं होते हुए भी जो सेवा ज्ञान प्रचार के लिये कर रहे हैं वह स्तुत्य है। हम वाचनालय की सफलता चाहते हैं और आशा करते हैं ब्यावर की जनता इससे पर्याप्त लाभ उठावेगी" १-२-४२ ब्यावर

प्रिन्सीपल श्री किशोरीलाल गुप्त—

"मैंने श्यामजी कृष्ण वर्मा पुस्तकालय का अवलोकन किया। विभिन्न विषयो की कतिपय पुस्तको का सत्र मिलाकर एक सुन्दर समूह यहां है। अभी पुस्तको की संख्या अल्प है। आशा है, यह पुस्तकालय उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त करके ब्यावर की जनता के लिये अधिकाधिक उपयोगी बन सकेगा।" २२ अप्रेल १६५०

श्री जयनारायण व्यास—

"श्यामजी कृष्ण वर्मा पुस्तकालय की मुलाकात लेने का मुझे दो एक बार अवसर मिला है। यहां की पुस्तको और समाचार

पत्रों तथा चित्रो का चुनाव सुन्दर है। संख्या में
है। भाई हरिप्रसादजी की धुन इस संस्था को एक
स्वरूप देगी, इसमे मुझे सन्देह नहीं। मैं पुस्तकालय
चाहता हूँ।" ६-५-५

श्री चन्द्रशेखर शास्त्री सम्पादक 'सन्मार्ग'—

"प्राचीन भारतीय संस्कृति की विचारधाराओं से
साहित्य के संकलन मे यदि प्रगति की गई तो पुस्तकालय
के कार्य मे अधिक अग्रसर हो सकेगा।" ६-५-५०

श्री दुर्गाप्रसाद चौधरी—

"पुस्तकालय मे राजस्थान के नेताओं का मान किया है
उनके चित्र लगाये है व उनकी जीवनी निकाली है ये कार्य सराहनीय
है।

श्री बालकृष्ण गर्ग—

"श्री हरिप्रसादजी का प्रयास सराहनीय है।"

श्री मुकुट विहारीलाल भार्गव—

"पुस्तकालय व वाचनालय के निरीक्षण से मुझे बहुत
सन्तोष है।"

श्री जीतमल लूणिया—

"जनता को पूरा सहयोग देकर इस वाचनालय को आगे
चाहिये।"

श्री कृष्णगोपाल गर्ग—

"आपका प्रयास स्तुत्य है।"

स्वामी कुमारानन्द—

Shyamji Krishna Verma Pustakalaya is doing
good for enlightening the people of Beawar.

श्री बालकृष्ण कौल—

I wish this Vachanalaya success.

१४–५–५० ब्यावर

श्री भंवरलाल सर्राफ—

"साहित्य ही देश का धन है। साहित्य ही देश का जीवन है और उसकी रक्षा करना हमारा परम धर्म है।"

४–६–५० ब्यावर

श्री गोकुलभाई भट्ट—

"श्री श्यामजी कृष्ण पुस्तकालय देखने का आज अवसर मिला। ज्ञान प्रचार का यह एक सराहनीय प्रयास है। आशा है कि यह प्रवृति बढ़ती रहे और अपना लक्ष्य सिद्ध करे।"

१०–६–५० ब्यावर

श्री बावा नृसिंहदास—

"इस पुस्तकालय का उपयोग मजदूर किसानो के लिये होना चाहिये और उनके अनुकूल इसे सुलभ बनाना चाहिये।"

११–६–५० ब्यावर

— मंगल पाण्डे चित्रशाला —

सन् १८५७ के स्वातंत्र्य युद्ध के प्रथम शहीद श्री मंगल पाण्डे की पुण्य स्मृति मे उसकी ६३वी पुण्य निधन तिथि पर ता० ८ अप्रेल सन् ५० को 'मंगल पाण्डे चित्रशाला' की स्थापना की गई।

इसमे करीब ४ दर्जन चित्र है, जिनमे अधिकतर हाथ के है।

श्रेणी एः—

(१) सन् ४३ का बगाल का अकाल ३०×४० (२) तिलक

(३) गांधी (४) नेहरू (५) राजेन्द्र (६) पटेल (७) डा० हेडगेवर (८) सावरकर (६) दयानन्द (१०) अब्दुलगफ्फारखां (११) लाजपत (१२) मालवीय (१३) मोतीलाल (१४) विट्ठलभाई (१५) शिवाजी (१६) विवेकानन्द (१७) कमला नेहरू (१८) गाँधी, नेहरू, आजाद, पटेल, राजगोपालाचार्य (१६) भारतेन्दु (२०) रवीन्द्र (२१) मीराबाई (२२) रामकृष्ण परमहंस (२३) श्यामजीकृष्ण वर्मा।

श्रेणी बी:—

(१) अर्जुनलाल सेठी (२) सेठ दामोदरदास राठी (३) राव गोपालसिंह (४) केसरीसिंह बारहट (५) वीर कुंवर प्रताप (६) विजयसिंह पथिक (७) शौकत उस्मानी (८) जयनारायण व्यास (६) हरिभाऊ उपाध्याय (१०) रामनारायण चौधरी (११) स्वामी कुमारानन्द (१२) बाबा नृसिंहदास (१३) सेठ घीसूलाल जाजोदिया (१४) नाथूलाल घोया (१५) मुकुटबिहारीलाल भार्गव।

— प्रताप-प्रकाशन —

अमर शहीद कुंवर प्रतापसिंह भारतीय क्रांति सेना के एक समर्थ योद्धा थे। आपका समस्त परिवार ही क्रांतिकारी था। यौवन के प्रथम प्रभात में ही, देश की स्वतंत्रता के लिए वे बलि पथ के पथिक बन गए। प्रमुख क्रांतिकारी तथा श्री रासबिहारी बोस के साथी श्री शचीन्द्रनाथ सान्याल ने आपके देहावसान पर कहा था—'भारत का दुर्भाग्य है कि प्रताप सा युवक आज इस जगत में नहीं है। बरेली जेल में अंग्रेजों का दण्ड भोगते भोगते उसका नश्वर शरीर दिव्य आत्मा का साथ न निबाह सका।"

उस महान आत्मा की स्मृति में, जन सेवकों व शहीदों की जीवन गाथा, जन साधारण तक पहुँचाने के लिए, ता० २३ मार्च १६५० को प्रताप प्रकाशन की स्थापना की गई थी। इसके अन्तर्गत अब तक निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं:—

१. गणेशशंकर विद्यार्थी
(प्रकाशित–२५-३-५०, भूमिका ले० श्री विजयसिंह 'पथिक')

२. श्री श्यामजीकृष्ण वर्मा
(प्रकाशित–३१-४-५० भू० ले० डा० सूर्यदेव शर्मा, अजमेर)

३. स्वामी कुमारानन्द
भूमिका लेखक—श्री महेशदत्त भार्गव)

शीघ्र प्रकाशित हो रही हैं:—

१. स्वामी भवानीदयाल संन्यासी
२. राव गोपालसिंह खरवा नरेश
३. सेठ घीसूलाल जाजोदिया
४. जयनारायण व्यास

१३ मार्च सन् १६५० को बरार केशरी श्री बृजलाल वियाणी श्री सत्यदेव विद्यालंकार व श्री जयनारायण व्यास सुभाष सदन का निरीक्षण करने आप मारवाड़ जाते हुए ठहरे। आपके सम्मान में सुभाष सदन की ओर से एक भोज भी दिया गया जिसमें नगर के समस्त वर्गों के प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। श्री वियाणीजी ने निरीक्षण के पश्चात अनेक सुझाव दिये। उनके सुझावों को कार्य रूप में परिणित करने के लिए सुभाष-सदन को संयोजक के निवास स्थान से हटा कर बाजार के प्रमुख स्थान पर

स्थापित कर दिया गया। श्री सत्यदेवजी भी सुभाष सदन से प्रभावित हुए बगैर न रह सके तथा अपनी यात्रा के संस्मरण लिखते हुए आपने "अमर भारत" के २७ मार्च १९५० के अंक में लिखा है—"वहां का सुभाष-सदन सचमुच ही देखने के योग्य है।"

सुभाष सदन ब्यावर के प्रयत्नों के फल स्वरूप निम्न-लिखित सभाओं का आयोजन किया गया :—

(१) सेठ दामोदर दास राठी का ६७ वां जन्म दिवस—

८ फरवरी १९५० को आर्यसमाज भवन ब्यावर में, हिन्दी साहित्य समिति के तत्वाधान में श्रद्धेय श्री कन्हैयालालजी गार्गीय के सभापतित्व में, मनाया गया। सभा में स्व० राठीजी के जीवन पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर व्यास तनसुखजी वैद्य, श्री बद्रीदत्तजी हेडा, श्री कालूरामजी तोषनीवाल, प्रिन्सिपल किशोरी-लालजी गुप्ता, श्री जगन्नाथजी शर्मा, श्री वंशीधरजी जड़िया, श्री हरिप्रसाद आदि ने श्रद्धांजलियाँ अर्पित की तथा स्व० राठीजी की जीवनी की प्रतियां भी वितरित की गई।

(२) भगतसिंह दिवस—

२३ मार्च ५० को श्रीपशुपतिजी आजाद के सभापतित्व में अमर शहीद भगतसिंह स्मृति दिवस मनाया गया। श्री वंसीधरजी जड़िया, श्री भवरलालजी आर्य, श्री हरिप्रसाद आदि ने अमर शहीद के जीवन पर प्रकाश डाला। यह सभा ठीक उसी स्थान पर की गई जहां अमर शहीद भगतसिंह असेम्बली भवन पर बम्ब फेंकने से २ दिन पूर्व ठहरे थे।

(३) गणेश शंकर विद्यार्थी दिवस--

विद्यार्थीजी के परम मित्र तथा बिजौलिया सत्याग्रह के नेता श्री विजयसिंहजी 'पथिक' के सभापतित्व में, एक सभा हिन्दी साहित्य समिति, ब्यावर के तत्वाधान में स्थानीय नेहरु भवन में २५ मार्च १९५० को आयोजित की गई जिसमें सर्व श्री 'पथिक'जी वृज-मोहनलालजी शर्मा वकील, किशोरीलालजी गुप्ता, हरिप्रसाद आदि के भाषण हुए। सभा में अमर शहीद विद्यार्थीजी का संक्षिप्त जीवन चरित्र भी वितरित किया गया ।

(४) श्यामजी कृष्ण वर्मा दिवस--

३१ मार्च १९५० को ब्यावर के प्रमुख नागरिकों की ओर से, फतेहपुरिया बाजार में श्यामजी की २० वीं पुण्य निधन तिथि के उपलक्ष में एक विराट सभा का आयोजन, श्री चांदकरणजी शारदा के सभापतित्व में किया गया। समस्त भारत में, सार्वजनिक रूप से श्यामजी की स्मृति में यह प्रथम सभा थी। इस अवसर पर राष्ट्र भाषा हिन्दी में प्रथम बार उनके जीवन चरित्र पर पुस्तक प्रकाशित की गई। इस अवसर पर नवज्योति सम्पादक श्री दीपकजी, श्री भंवर-लालजी आर्य व श्री बंशीधरजी जड़िया आदि के भाषण हुए। श्यामजी कृष्ण वर्मा पुस्तकालय का उद्घाटन श्री शारदाजी के कर कमलों से इसी दिवस पर हुआ ।

श्यामजी के जीवन पर प्रकाशित पुस्तिका को, प्रमुख हिन्दी दैनिक "नव भारत" ने अपने १ अप्रेल १९५० के अंक अविकल-रूप से प्रकाशित किया जिसके द्वारा देश की अधिक से अधिक जनता को उनके जीवन से परिचित होने का अवसर प्राप्त हो सका।

(५) मंगल पाण्डे दिवस--

प्रो० ऋषिकेशजी डाणी के सभापतित्व में, सन् १८५७ के स्वतन्त्रता युद्ध के प्रथम शहीद स्व० मंगल पाण्डे की स्मृति में ८ अप्रेल १९५० को फतहपुरिया बाजार में एक सभा का आयोजन किया गया। सभा मे बन्शीधरजी जडिया, केशरीमलजी बाकलीवाल व श्री हरिप्रसाद द्वारा स्व० मंगल पाण्डे के जीवन पर विशद रूप से प्रकाश डाला गया तथा कविता पाठ किया गया। इसी अवसर पर "मंगल पाण्डे" चित्रशाला की स्थापना की गई। मंगल पाण्डे का जीवन चरित्र ८ अप्रेल के नवभारत व ९ अप्रेल के अमरभारत में प्रकाशित किया गया।

(६) सूर जयन्ती--

हिन्दी के महान कवि सूर की स्मृति में ता० २२ अप्रेल १९५० को, हिन्दी साहित्य समिति के तत्वावधान में सूर जयन्ती का आयोजन प्रिन्सिपल किशोरीलालजी गुप्त की अध्यक्षता में किया गया।

(७) स्वामी कुमारानन्द का ६३ वां जन्म दिवस--

स्थानीय प्रगति शील सघ की ओर से एक सभा श्यामजी कृष्ण पुस्तकालय मे श्री भवरलालजी आर्य के सभापतित्व में, ता० १४-५-५० को हुई जिसमे स्वामीजी के जीवन पर प्रकाश डाला गया तथा उनके जीवन चरित्र की प्रतिया वितरित की गई। बाबू चौथमलजी अग्रवाल की ओर से स्वामीजी के सम्मान में एक भोज का भी आयोजन किया गया जिसमें नगर के प्रमुख नागरिकों एव प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रमुख सदस्यों तथा राजपूताना सूती मिल फेडरेशन के प्रमुख प्रतिनिधियो ने भाग लिया। स्वामीजी के जीवन

पर प्रकाशित पुस्तिका को 'नव भारत, 'अमर भारत' व 'नेताजी' ने अविकल रूप से प्रकाशित किया।

(८) **अमर शहीद कुंवर प्रतापसिंह**—का विस्तृत जीवन परिचय अमर भारत में ता० १६ मई को उनकी जन्म तिथि के उपलक्ष में प्रकाशित करवाया गया जिसमें कुंवर प्रताप के जीवन तथा कार्यों पर भली प्रकार प्रकाश डाला गया है।

(९) **भवानीदयाल संन्यासी** की मृत्यु पर एक शोक सभा श्री बंशीधरजी जड़िया के सभापतित्व में ता० १२ मई १९५० को श्यामजीकृष्ण वर्मा पुस्तकालय के सामने की गई। उनकी मृत्यु के शोक में पुस्तकालय आधे दिन बन्द रखा गया।

(१०) **घीसूलालजी जाजोदिया**—का ६७ वां जन्म दिवस "नेहरू भवन" में ता० २०-७-५० ई० को पं० बृजमोहनलालजी शर्मा वकील की अध्यक्षता में मनाया गया।

(११) **श्री अर्जुनलाल सेठी वाचनालय**—की स्थापना के उपलक्ष में ता० ३१-७-५० व ता० १-८-५० को नेहरु भवन में वाद-विवाद प्रतियोगिता व कविसम्मेलन श्रद्धेयश्री रामनारायणजी चौधरी व हटूंडी के श्री बाबूरावजी जोशी की अध्यक्षता में धूमधाम से सम्पन्न हुये। प्रतियोगिता के निर्णायक पदों पर श्री जगन्नाथजी वकील व महेशदत्तजी एडवोकेट थे। विजेता विद्यार्थियों को पुरस्कार प्रदान किये गये।

एक अगस्त (तिलक जयन्ती) सन् ५० को 'श्री अर्जुनलाल सेठी वाचनालय' को प्रारम्भ किया गया। जिसमें ६५ (दैनिक, साप्ताहिक, मासिक) पत्रों की व्यवस्था की गई। प्रातः ७ से रात्रि के १० बजे तक अर्थात् १५ घन्टे निरन्तर खोला गया। एक साथ ५०-६० व्यक्तियों के बैठने योग्य स्थान रखा गया।

लखनऊ के सुप्रसिद्ध एडवोकेट स्वर्गीय श्री अजितप्रसाद जैन ने "जैन गजट" में लिखा "This is the only Reading Room in India which opens for fifteen hours contineously."

(१२) लाला लाजपतराय— का २३ वां पुण्य स्मृति दिवस ता० १७-११-५१ को श्री पुरुषोत्तमदासजी खन्ना इ० ए० सी० ब्यावर की अध्यक्षता (कवि सम्मेलन के रूप में) में श्यामजीकृष्ण वर्मा पुस्तकालय में सम्पन्न हुआ।

(१३) अर्जुनलाल सेठी स्मृति दिवस—ता० २२ व २३-१२-५१ को डिक्सन छत्री पर ब्यावर में विराट सभायें स्वामी श्री कुमारानन्दजी व श्री महेशदत्तजी भार्गव की अध्यक्षता में क्रमशः की गईं।

(१४) सरदार पटेल— के विशाल भव्य चित्र का अनावरण ता० १०-१-५२ को श्रीमती विजयलक्ष्मी पण्डित के करकमलों से पटेल मिडिल स्कूल में सम्पन्न हुआ।

(१५) सेठ दामोदरदास राठी–का विशाल भव्य चित्र नेहरू भवन में नवम्बर ५१ में लगाया गया, उद्घाटन के लिये नगर पालिका ने श्रद्धेय श्री श्रीकृष्णदासजी जाजू वर्धा को तार द्वारा आमन्त्रित किया किन्तु अस्वस्थता के कारण वे नहीं आ सके।

राठीजी का ३४ वां पुण्यस्मृति दिवस ता० २ जनवरी १९५२ को डिक्सन छत्री पर ब्यावर में श्री बृजमोहनलालजी शर्मा की अध्यक्षता में मनाया गया। श्री जगन्नाथजी शर्मा एडवोकेट प्रमुख वक्ता थे।